॥ श्रीः ॥

बृहदर्घ्य भार्त्तण्ड का द्वितीय अङ्क।

वृष्टि प्रबोध।

INDIAN METEOROLOGY.

(भारत का वायु शास्त्र।)

प्राचीन वृष्टि विद्या का भण्डार।

सुभिक्ष दुर्भिक्ष को पहिले हीसे जान लेने का उपाय।

भाषा विवरण व्याख्या सहित।

जिसको

प्राचीन ज्योतिः शास्त्रश्रमी दैवज्ञभूषण, ज्योतिप्रत्न आदि

पण्डित मीठालाल अटलदास व्यास ने

अनेक अलभ्य प्राचीन ग्रन्थोंसे अनुभव सहितसंग्रह करके

प्रकाशित करा। मु० ब्यवार—राजपूताना.

द्वितीयावृत्ति १०००] } { मूल्य १।) रुपया।

सं. १९७० वि.

अमदावाद टंकशाल में युनियन प्रीन्टींग प्रेस कं० ली०

मोतीलाल सामळदासने छापा.
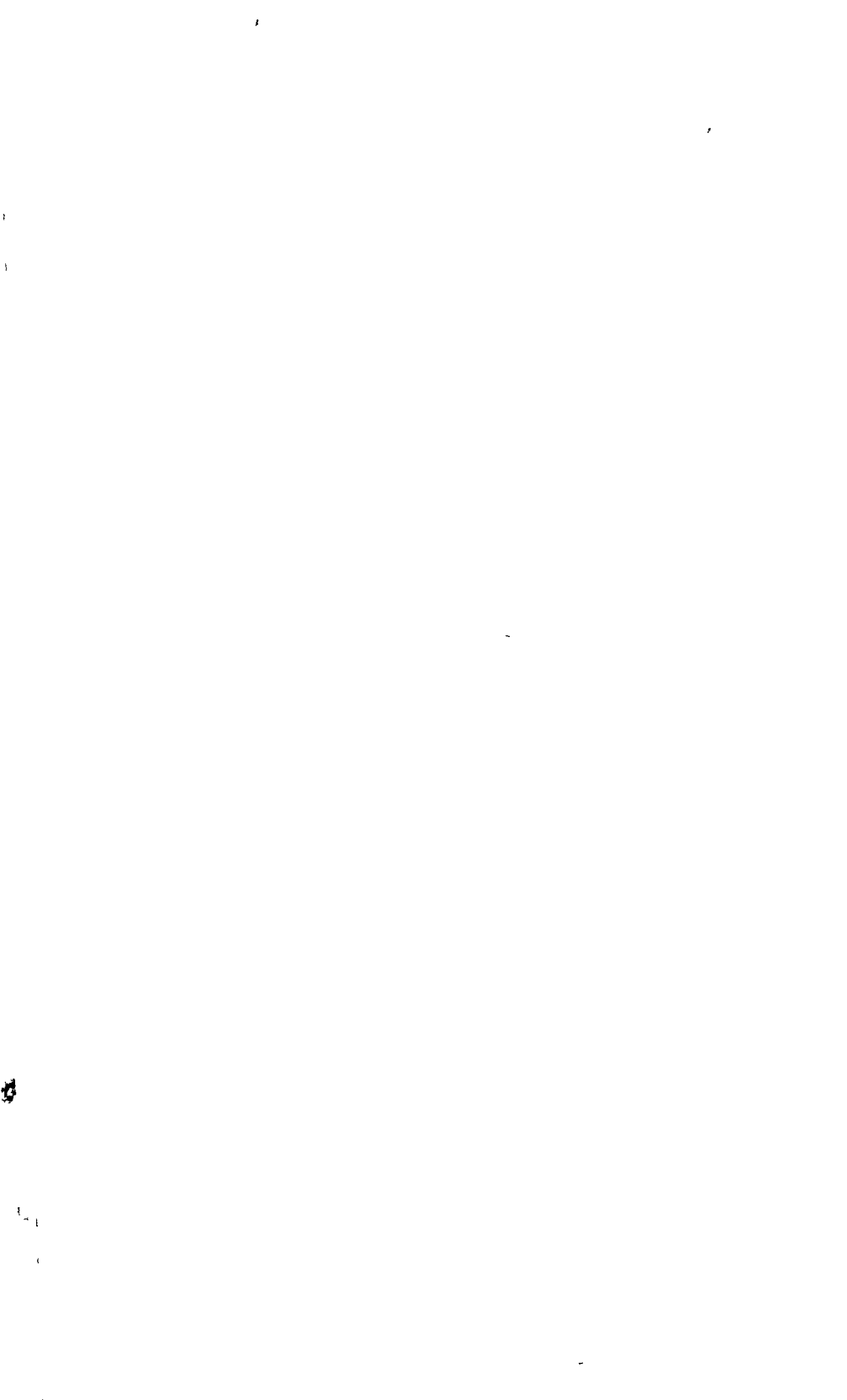
भूमिका।

(१) प्राचीनकालकी समर्घता—

बहुत प्राचीन समय की बात रहने दीजिये अभी तीन चार सौ वर्ष पहले के इतिहास से भी निश्चय होता है कि पहले इस देश में धान्य घृतादि सम्पूर्ण पदार्थ इतने सस्ते थे कि जितने सस्ते भाव हम लोगों को अब स्वप्न में भी दीखने दुर्लभ हो गये हैं। सस्तापन का मुख्य कारण ही यह था कि पहले इस देश में बहुधा सुभिक्ष ही सुभिक्ष होते थे और जो कभी कोई दुर्भिक्ष पड़ भी जाता था तो भी इतने महंगे भाव नहीं होते थे जो आज कल अब सुभिक्ष के समय में रहते हैं।

मुगलों के शासन काल में सं० १६८७ में गुजरात में बड़ा भयानक दुर्भिक्ष पड़ा तब भी दिल्ली में एक रुपये के तीन मन पन्द्रह सेर गेहूं, पांच मन चावल और दो रुपये दस आने मन घी* बिकताथा। इसी प्रकार अन्यान्य वस्तुएं भी इतनी सस्ती मिलती थीं कि जिन का कुछ पारावार नहीं था। उस समय एक अच्छे जवान के एक महीने की खुराक का क्या खर्च होता था सो देखिये—

वस्तु	तौल	मूल्य
आटा	पचीससेर	=) ९ पाई
दाल	पांच सेर	७॥पाई
घी	दोसेर	=)
नमक	एक सेर	२॥ पाई

अर्थात् एक अच्छे जवान आदमी को एक महीने की

---

* यह बात हमारे जैन भाइयोंके धर्म कार्य्य से भी पुष्ट होती है। उन के मन्दिरों में घी देने की मानता की जाती है उस का मूल्य ढाई रुपये मन के हिसाब से देना पडता है। क्या इस से यह स्पष्ट विदित नहीं होता है कि जब यह प्रथा जारी हुई उस समय घी का भाव ढाई रुपये मन था अर्थात एक आने का एक सेर घी मिलता था। इस समय तो इस भाव से दूध भी मिलना दुर्लभ हो गया है।

खुराक के लिये ।≈)७ पाई खर्च करने पड़ते थे† । जिस समय ऐसा सस्ता भाव था उस समय के लोगों की खुशहाली का क्या पारावार होगा? सो जरा सोचिये तो सही । इस समय तो इतने पैसों में एक दिन की खुराक भी पूरी नहीं होती । क्योंकि थोड़े वर्षों से अनेक कारण ऐसे उपस्थित होगये हैं जिससे इश देश में सुभिक्ष की अपेक्षा दुर्भिक्ष अधिक पड़ने लगे है तथा आगे को भी वृद्धि होती जाती है ।

(२) गत १०० वर्षों के दुर्भिक्ष—

इतिहास से पता लगता है कि संवत् १८५९ से संवत् १९११ तक ५२ वर्षो में तेरहवार दुर्भिक्ष पड़े और उनमें ५० लाख मनुष्य भूखे मरे । इस के पीछे २५ वर्ष (संवत् १९११ से १९३६ तक) में ही १६ वार दुर्भिक्ष पड़ गये और उन से एक करोड़ २० लाख मनुष्य भूखे मरे तथा इस के पीछे आज तक जो दुर्भिक्ष पड़े है वें भी कुछ कम नहीं है। ये दुर्भिक्ष इतने भयानक और अधिक थे कि उनका वृत्तान्त लिखते हमारी लेखनी कांपती है । सी· ई मिस्टर रसल के लेखानुसार इन दुर्भिक्षों में ८ करोड से भी अधिक मनुष्य भूखे मरे है । परन्तु इन सब में संवत् १९५६ का दुर्भिक्ष तो इतना भयानक था कि अव भी उस का नाम स्मरण हो आने से लोगो के प्राण कांप जाते है । यद्यपि इस दुर्भिक्ष के समय प्रजापालक राजराजेश्वरी स्वर्गीया महारानी विक्टोरियाने अपने राज्य भर की दीन प्रजा का पालन करने के लिये अपनी ओर से प्रवन्ध किया और उन्हीं के अनुरोध से देशी रईसो को भी अपनी अपनी दीन प्रजा का पालन करने के लिये यथा शक्ति यत्न करना पड़ा था । तिस पर भी दुष्ट काल ने हमारे देश का सत्यानाश कर दिया । यदि पहिले की भांति इस दुर्भिक्ष में भी दीन प्रजा का पालन करने में शिथिलता की जाती या करोड़ों रुपये खर्च कर अकालमोचन के

† इस बात का प्रमाण अजमेर की ख्वाजा साहव की दरगाह के मुजावरों के वेतन से भी मिलता है कि उन्हें महावारी खुराक के लिये पाच आने मुकर्रर हुए थे सो वही पाच आने ही माहवारी खुराक के लिये आज तक पाते आते है।

काम खोलने के प्रवन्ध नहीं किये गये होते तो न जानें इस देश की कैसी दुर्दशा हो जाती।

(३) दुर्भिक्ष की वृद्धि के कारण—

दुर्भिक्ष की वृद्धि अनेक कारणों से हुई है उन में से थोड़े से आगे लिखताहूं कि जिन से अन्य कारणों का भी अनुमान हो जायगा।

(१)—पूर्वकाल में आत्मविद्या और पदार्थविद्या का गूढ तत्व जाननेवाले त्रिकालदर्शी महर्षियोंने प्राणी मात्र को सुख पहुचाने के लिये अग्निहोत्रादि अनेक प्रकार के यज्ञों का प्रचार किया था। जिन में दुग्ध घी आदि पुष्टिकारक, मधु शर्करादि मिष्टताकारक, कर्पूर चन्दनादि सुगन्धिकारक और ब्राह्मी सोमलतादि आरोग्यकारक गुणों से युक्त उत्तमोत्तम पदार्थ वेद मन्त्रों द्वारा अग्नि मे होमे जाते थे। वे पदार्थ अग्नि के योग से सूक्ष्म परमाणु रूप हो कर वायुमण्डल में फैल के सूर्य का तेज (उष्णतादि) बढ़ा देते थे जिस से समय पर पूर्वोक्त पदार्थों के गुणों से युक्त उत्तम जल की वर्षा होतीथी। परन्तु थोड़े समय से अग्निहोत्रादि यज्ञों का प्रचार घटता गया है वैसे ही वर्षा भी कम होने लगी है और जो कभी कुछ अधिक भी हो जाती है तो वह समयानुकूल न होने से उतनी लाभदायक नहीं होती। उस में भी इस समय की वर्षा के जल में निन्दित पदार्थों के परमाणु मिले हुए रहने से महामारी आदि उपद्रवों सहित बहुधा दुर्भिक्ष ही दुर्भिक्ष पड़ने लगे है।

(२)—पहले इश देश में गवादि *पशुओं की इतनी वृद्धि थी कि एक रुपय में तीन गायें वा दो बैल मिलते थे। जिस समय इतनी सस्ती गायें थीं उस समय इस देश में मानों दूध,

---

* इस का प्रमाण धर्मशास्त्रों से भी मिलता है कि यदि कोई मनुष्य धर्म्मकार्य्य में प्रत्यक्ष गोदान न करसके वह पांच आने के पैसे देकर निष्क्रय गोदान का सङ्कल्प कर सकता है। क्योंकि पहले पाच ही आने में एक गाय मिल जाती थी और इसी से तो यह प्रथा चली है। परन्तु इस समय के लोगों को इस बात पर विश्वास करना महा कठिन प्रतीत होगा क्योंकि आजकल तो इतने पैसों में मृतक बकरी का चमडा भी मिलना दुर्लभ हो गया है।

दही, घी आदि की नदियां वहती थीं जिस से खेती करने वाले हरएक प्रकार की सहायता पाते थे। किन्तु जब से ऐसे परोपकारी पशुओं की हिंसा होने लगी है तब ही से बैल तथा खाद की कमी प्रतिदिन होती जाती है इस के अतिरिक्त पशुओं के चरने के लिये पहिले राजाओं की ओर से ऐसी कोई रोक नहीं थी कि उन के चरने में कोई बाधा डाले परन्तु अब शरकार तथा देशी राज्यों के नये नियमानुसार गोचर भूमिका रखना भी कठिण हो गया है जिससे पशुओं को चारापानी यथेष्ट नहीं मिलता और यथेष्ट चारापानी के न मिलने से पशु दुर्बल होते जाते है जिस से जैसी काश्त होनी चाहिये वैसी विलकुल नहीं हो सकती और साथ मे गायों के कमी से दुग्ध घृतादि पदार्थ भी इतने महंगे हो गये हैं कि दीन किसानों को तो क्या धनाढ्य सेठसाहूकारों को भी प्रायः न मिलने से लोगों का शारीरिक बल घटता जाता है। उसी से खेती के लिये उचित परिश्रम न होने से भूमी की पैदावार भी घटती जाती है।

(३)—पहले इस देश में राज्य का भूमि का कर जो किसानों से लिया जाता था वह मनुस्मृति की आज्ञानुसार उसी भूमि में उत्पन्न होने वाले धान्यादि वस्तुओं ही से छठा आठवां वा बारहवां हिस्सा लिया जाता था जिस से राज्य का कर वसूल करने में इस समय की भांति कुछ कठोरता नहीं करनी पड़ती थी। यही नहीं किन्तु राज्य का कर वसूल हो जाने के पीछे भी किसानों के पास अपने कुटुम्ब पालन करने योग्य अन्न तो अवश्य बच रहता था। परन्तु जब से प्राचीन मर्य्यादा टूट कर नकद रुपये लेने की प्रथा जारी हुई है तब ही से न तो राज्य की रकम पूरी वसूल होती है और न किसानों के पास खाने को एक दाना बाकी बचता है। अतः भारतवर्ष जैसे उपजाऊ देश में किसानों की जैसी दुर्दशा हुई है वैसी दुर्दशा अन्य देशों की बनजर भूमि के किसानों की भी नहीं हुई होगी अर्थात् रातदिन परिश्रम उठाने पर भी इस देश के किसान लोग भिक्षुक होते जाते है।

(४)—पहिले इस देश का अन्न बाहरकहीं नहीं जाताथा

जिस से प्रति वर्ष खाने के उपरान्त भी इतना अधिक अन्न बाकी देश में ही बच रहता था कि जिसे रखने के लिये कई वर्षों तक भूमि में गाडने की आवश्यकता पड़ती थी और वह अन्न जब कोई भारी दुर्भिक्ष पड़ता था तब काम में लाया जाता था।

परन्तु थोड़े वर्षों से व्यापार की छूट तथा रेल का विस्तार हो जाने से करोड़ों मन अन्न प्रति वर्ष विदेश को चला जाता है। क्योंकि अन्य देशों में इतनी कहां सामर्थ्य है कि उन की प्रजा का पालन पूरे वर्ष तक होने योग्य अन्न उनके देश की भूमि मे ही उत्पन्न हो जाय। यही तो कारण है कि अन्न का भाव बहुत महगा हो गया है और ओर भी होता जाता है। अनेक कारणों से इतने महंगे भाव का अन्न संग्रह रखने की शक्ति न रहने से इस देश की यहांतक दुर्दशा हो गई है कि दुर्भिक्ष तो क्या सुभिक्ष के समय में भी राजा महाराजाओं तक के धान्य के कोठार में चूहों को उपवास करना पड़ता है। तब भला ऐसी दशा में उन की प्रजा भूख के मारे मरे इस मे आश्चर्य ही क्या है?

हमारे नीतिज्ञ पुरुष इस विषय में उपदेश करते हैं कि:—

यावता त्वैव धान्येन स्वदेश पालनं भवेत्।
तावता दधिकं नैव तदा तत्रैव रोधयेत्॥

"व्यापारी लोग अपने स्वार्थ के लिये स्वदेशी अन्न विदेशों में भेजते है इस लिये राजा तथा प्रजा को उचित है कि यदि अपने सम्पूर्ण देश को कम से कम तीन वर्ष तक पालन करने योग्य अन्न से अधिक देश में न हो तो स्वदेश से बाहर अन्न जाने से बिलकुल रोक दे"।

(५) पहिले इस देश में कारीगरी, खेती और व्यापार की यहां तक वृद्धि थी कि जिस के प्रताप से ही यह देश सम्पूर्ण भूमण्डल का शिरोमणि गिना जाता था। परन्तु थोड़े वर्षों से स्वदेशी कारीगरी का नाश हो जाने और विदेशी वस्तुओं का प्रचार बढ़ जाने के कारण इस देश से असंख्य धन प्रति वर्ष विदेश जा रहा है जिस से दरिद्रता फैलने के साथ ही साथ भिक्षुकों की संख्या भी बढती जाती है। यह संख्या इतनी अ-

धिक है कि जितनी भूमण्डल भर के भिक्षुकों की न होगी अतः रात दिन मांगने पर भी खाने को न मिलने से भूखे मरते हुए लोग चोरी जारी कन्याविक्री नरहत्या आदि अनेक प्रकार के छल कपट करने लग गये हैं तिस पर भी पेट भर कर खाने को न मिलने से सी. ई. मिस्टर रसल के लेखानुसार इस देश में प्रति वर्ष ८० लाख मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होते है। इतने मनुष्य तो अन्य देशों में वर्षों ही क्या कई शताब्दियों में भी युद्ध, भूकम्प महामारी आदि दुर्घटनाओंसे मृत्यु को प्राप्त नहीं होते।

इत्यादि कारणों से साधारण दुर्भिक्ष तो इस देश में सदा ही वना रहता है किन्तु कभी कभी दैवी कारणों के मिल जाने से वहुत ही भयानक रूप धारण कर लेता है उस समय गरीबों को तो क्या राजा महाराजाओं तक को भी अत्यन्त कष्ट उठाना पड़ता है। गत सं० १९५६ में वह कष्ट अनुभव भी हो चुका है तथा उस कष्टने अभीतक हमारा पीछा नहीं छोड़ा है अर्थात् अकालमोचन काम (Famine Relief Work) के लिये प्रति वर्ष असंख्य धन खर्च करना पड़ता है। परन्तु खेद का विषय है कि इतना कष्ट उठाये जाने पर भी इस से छुटकारा पाने के लिये वहुत कम ध्यान दिया जाता है।

(४) दुर्भिक्षों से वचन के उपाय—

इस कष्ट से बचन के लिये मुख्य दो ही उपाय हैं। उनमें प्रथम तो जिन मानुषी कारणों से दुर्भिक्ष की वृद्धि होती जाती है उन को रोकने का यत्न करना और दूसरा दैवी कारणों से पड़ने वाले दुर्भिक्ष को पहिले से जान कर सचेत होना है।

प्रथम उपाय तो इस समय में सिद्ध होने की आशा नहीं होती क्योंकि इस के लिये आज नहीं कई वर्ष पहले से ही अनेक उपाय सोचे और माने गये है, पुकार मचरही है, अनेक निवन्ध समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए वा पुस्तकाकार छपे है परन्तु केवल कागजी घोड़े दौड़ाने वा हिसाव आदि लगाने के अतिरिक्त लाभ होता नहीं दीखता। अतः केवल इस मार्ग के भरोसे ही दुर्भिक्ष दूर होने की आशा रखना देश के अगुओं को शोभा नहीं देता।

दूसरा उपाय इस समय भी इतना कठिन प्रतीत नहीं होता है क्योंकि हमारे प्राचीन महर्षियोंने जैसे परोपकारार्थ अनेक प्रकार की विद्याए प्रकट की थीं वैसे ही "वृष्टि विद्या" का भी पूर्ण प्रचार किया था और होना ही चाहिये था क्योंकि—

अन्नंप्राणो वलं चान्नमन्नसर्वार्थ साधकम् ।
देवासुर मनुष्याश्च सर्वे धान्योप जीविनः ॥

जगत् का प्राण अन्न है जगत् का बल भी अन्न ही है तथा जगत् के सम्पूर्ण कार्य्य भी अन्न से ही सिद्ध होते है । इतना ही नहीं किन्तु देवता दानव और मनुष्यादि का जीवन भी अन्न के ही अधीन है।

अन्नस्तु धान्य सम्भूतं धान्यंकृष्या विना न च ।
तस्मात्सर्व परित्ज्य कृषि यत्नेन कारयेत् ॥
कृषिर्वृष्टिं विना चैव कदाचिदपिनो भवेत् ।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन पूर्व वृष्टिं परीक्षयेत् ॥

जिस अन्न की इतनी महिमा है वह धान्य मे से उत्पन्न होता है और धान्य खेती के विना नहीं हो सकता और जिस खेती के द्वारा राजा तथा प्रजा का पालन होता है वह विना वर्षा के कदापि नहीं हो सकती है अतः सबसे पहले हर उपाय से वृष्टि विद्या जानने की ही पूरी आवश्यकता देख कर ऋषियोंने यह विद्या संसार के लाभार्थ परोपकार दृष्टि से प्रकट की थी जिस के द्वारा सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदि का निर्णय हो जाता था। यदि फेमिन रिलीफ डिपार्टमेन्ट से सहस्रांश धन भी दुर्भिक्ष को पहिले से जानने के प्रवन्ध करने में खर्च किया जाता तो फिर इसके लिये इतना खर्च करने और परिश्रम उठाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती । अब भी यदि दुर्भिक्ष को पहिले से जानने के लिये वृष्टिविद्या की ओर ध्यान नहीं दिया जावेगा और दुर्भिक्ष की यों ही वृद्धि होती रही तो न जाने आगे को फिर कैसे कैसे कष्ट उठाने पड़ेंगे।

(५) सुभिक्ष दुर्भिक्ष के आगम ज्ञान की आवश्यकता—

पहले इस देश में इतने कहां दुर्भिक्ष पड़ते थे तिस परभी

इस दुष्ट से वचने के लिये सभी राजा महाराजा अपने राज्य में वृष्टिविद्या के पूर्ण विद्वानों द्वारा इसे जानने का प्रवन्ध रखते थे जिस से दुर्भिक्ष पड़ने पर भी उन को इस समय के राजा महाराजाओं की भांति इतना कष्ट नहीं उठाना पड़ता था। कर्पूर चक्र नामक ज्योतिप का ग्रन्थ पढ़ने से विदित होता है कि पूर्वकाल में श्रीमान् विक्रमादित्य नरेश्वर के समय में 'कर्पूर' नामक दैवज्ञ द्वारा सुभिक्ष दुर्भिक्ष को पहिले से जानने के लिये प्रवन्ध किया गया था। उस से निश्चय होता है कि संवत् का भावीफल पहले से जानने की आवश्यकता केवल प्रजा को ही नहीं थी किन्तु प्रजा से भी कई गुनी अधिक आवश्यकता राजा महाराजाओं की थी और वास्तव में इन्हीं को होनी चाहिये क्योंकि प्रजा की हानि वृद्धि का मुख्य आधार संवत् के सुभिक्ष दुर्भिक्ष पर है और राज्य की हानि वृद्धि का मुख्य आधार प्रजा के सुख दुःख पर है।

राजा वृक्ष सु प्रजा तस्य मूलं
भृत्या पर्णा मंत्रिणो तस्य शाखा।
तस्माद्राज्ञ स्वप्रजा रक्षणीयं
मूले गुप्ते नास्ति वृक्षस्य नाशः॥

परन्तु आज इस समय ऐसे वाक्यों पर ध्यान देने वाले वहुत थोड़े राजा महाराजा देखे वा सुने जाते हैं पर हमारी प्रजा पालक अंग्रेज सरकारने प्रजा के सुख दुख पर ध्यान दे के संवत् का अच्छा बुरा अर्थात् फसल की हानि वृद्धि के लिये किस किस देश में कव कव कैसी कैसी वर्षा होगी सो जानने के लिये यथा साध्य प्रवन्ध कर रखा है।

सरकार की ओर से देश के मुख्य मुख्य कई स्थानों पर आवजरवेटरियां (वायुविज्ञान शालाएं) स्थापित की गई है। जिन में वैरोमीटर, थर्मामीटर, हाइग्रोमीटर, एनिमोमीटर और विण्डवेन, रेंनगेंज आदि वहुमूल्य यंत्र रखे गये है। इन यंत्रों से प्रतिदिन की वायु का फेरफार विदित होता रहता है जिन की खवर शिमले, वंवई आदि स्थानों मे प्रधान वायुशास्त्रियों के पास तार

द्वारा पहुंचाई जाती है। वे *वायु शास्त्री-नवीन वृष्टि विद्या के विद्वान् उसके आधार पर प्रति दिन "डेलि वेदर रिपोर्ट" द्वारा सूचित कर देते है कि अमुक अमुक प्रदेश मे इतनी इतनी वर्षा हुई है और अमुक अमुक प्रदेश में अब एक दो दिन में ऐसी ऐसी वर्षा होने की आशा की जाती है। यह बात इन की बहुत ठीक मिलती है क्योकि हमारी प्राचीन वृष्टि विद्या के अनुसार वर्षा बतलाने वाले वायु के दो भेद है। उन में एक तो बहुत अधिक समय पहले और एक बहुत थोड़े ही समय पहिले से वर्षा को बतलाता है। जिस वायु से बहुत थोड़े समय पहले से वर्षा का ज्ञान होता है वही इस नवीन वृष्टि विद्या के यन्त्रों द्वारा जानी जाती है इस लिये इन की यह यन्त्र विद्या सद्योवृष्टि-तत्काल में होने वाली वर्षा-को एक वा दो दिन पहले बतलाने में परम उपयोगी होने से प्रशंसनीय है। किन्तु अधिक समय पहले से बतलाने वाली वायु का ज्ञान इन्हें न होने से सम्पूर्ण वर्षा काल में होने वाली वर्षा को बहुत अधिक समय पहिले से बतलाने में नवीन वृष्टि विद्या अभी तक पूर्ण उपयोगी नहीं हुई जैसी कि पूर्व काल में हमारी प्राचीन वृष्टि विद्या थी।

हमारी प्राचीन वृष्टि विद्या के सिद्धान्तानुसार भौम, आन्तरिक्ष और दिव्य के निमित्तों द्वारा दोनों प्रकार की वायु का ज्ञान हो जाता था। जिस से सद्योवृष्टि तथा विलम्ब में होने वाली वर्षा को कई दिनों, कई महीनों और कई वर्षों पहिले से निश्चय किया जा सकता था कि अमुक अमुक प्रदेश में और अमुक अमुक समय मे ऐसी ऐसी वर्षा होगी। इतना ही नहीं उस का प्रबन्ध करने मे भी न तो इस समय की भांति इतना धन खर्चने

---

* गवर्नमेण्ट मेटियारालोजिकल प्रधान रिपोर्टर-सरकारी वायु शास्त्री-सर जान इलियट के० सी० आई० ई० शिमला, के साथ मैंने स० १९५१ में पत्र व्यवहार किया। उन्हों ने कृपा कर मुझे डेली वेदर रिपोर्ट बिना मूल्य दो वर्ष तक भेजी जिस से मुझे भी पाश्चिमात्य नवीन वृष्टि विद्या के यन्त्र मंगा के थोड़ा बहुत अभ्यास करने का अवसर प्राप्त हुआ है अतः मैं इस उपकार के लिये उक्त महोदय को अनेकानेक धन्यवाद देता हूं।

/

की आवश्यकता पड़ती थी और न इतना परिश्रम ही उठाना प-ड़ता था। क्योंकि पूर्व काल में इस देश में ज्योतिष विद्या का पूर्ण प्रचार था जिस से इस विद्या के विद्वान् सर्वत्र मिलते थे। वे विद्वान् *संवत् का भावी फल अर्थात् वृष्टि, अनावृष्टि, सुकाल, महा मारी आदि पहले से प्रकट कर देते थे जिस से सचेत हो के सभी लोग इस कष्ट से बचने का उपाय सहज ही में कर लेते थे। यही तो कारण है कि इस देश में वर्ष के आरम्भ में—चैत्र सुदि १ को नवीन पचाङ्ग सुनाने की प्रथा पहले से चली आती है परन्तु थोड़े समय से इस विद्या के विद्वानों को राजा महाराजाओं से कुछ भी सहायता न मिलने के कारण इस विद्या का प्रचार उठ जाने से साधारण मनुष्य तो क्या विद्वान् लोग भी इस विद्या के तत्व को भूल गये। इस से आजकल के प्रायः ज्योतिषी लोग केवल तिथि पत्र (पंचांग) के आधार पर ही सं-वत् का भावी फल बतलाने लग गये जिस से उन की बात ठीक न मिलने से लोगों का इस विद्या पर से रहा सहा विश्वास भी उठता जाता है।

(६) प्राचीन वृष्टि विद्या जानने में बाधा और उसका उपाय—

आज वृष्टि विद्या की चर्चा देश में न होने से लोगो को वर्षा काल के आते ही दुर्भिक्ष पड़ जाने की चिन्ता लग जाने से वर्षा काल बीत जाने तक आकाश की ओर ऊंचा मुंह किये ताकते रहना पड़ता है कि इस वर्ष में वर्षा कैसी होगी? कि-न्तु हमारी प्राचीन वृष्टि विद्या का प्रचार बन्द नहीं हुआ होता तो इतना चिन्तातुर होने की कोई आवश्यकता नहीं थी। अब

---

* ऐसा भावी फल हमारा भतीजा व्यास तन सुख विद्यार्थी ज्योतिष शास्त्र के प्रमाण सहित तथा अनुभव सिद्ध सरल हिन्दी भाषा टीका सहित बना के संवत् १९६२ से प्रति वर्ष प्रकाशित करता है। जिस में सुभिक्ष दुर्भिक्ष आदि का निर्णय तथा व्यापारियों के उपयोगी अफ़ीम, रुई, गेहूं, अलसी, सरसों, गुड़, चांदी, नोट आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी लिखी रहती है। इस के बनाने में अत्यन्त परिश्रम होने पर भी सर्व साधारण के लाभ के लिये उस का मूल्य केवल दो आना मात्र ही रखा है। हिन्दी भाषा में इस ढंग की यह पहली ही पोथी है।

भी यदि हमारी प्राचीन वृष्टि विद्या के सिद्धान्तानुसार निमित्तों के देखने का पीछा प्रबन्ध किया जावे तो यह चिन्ता मिट सकती है। परन्तु प्राचीन आचार्यों के कहे हुये वृष्टि विद्या के सिद्धान्त जुदे २ ग्रन्थों में होने से और इस समय बहुधा वे ग्रन्थ ही न मिलने से प्राचीन वृष्टि विद्या का प्रचार होने में आपत्ति पड़ती थी। वह दूर करने के लिये अनेक सज्जनों ने प्राचीन ज्योतिष विद्या के अलभ्य २ ग्रन्थ खोज २ के प्रकाशित करने प्रारम्भ किये है जिस से इस विद्या का पुनः प्रचार होने में बहुत सहायता मिलने लगी है किन्तु वे ग्रन्थ भी प्राचीन रुढ़ि के अनुसार अनेक विषयो से युक्त बहुत बड़े २ होने से इस समय के अल्पज्ञ विद्यार्थियो के लिये उन का पढ़ना मानो हाथों से तैर के समुद्र को पार करना है। यदि कोई इस प्रकार साहस भी करे तौ भी पार होना सहज नहीं है क्योंकि:—

'मूढ़ लेखको के दोष से शीघ्रबोध मयूर चित्र आदि की कई पुस्तकों मे तो लिखा है कि श्रावण के महीने में चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्रों के दिन वर्षा हो जावे तो बड़ा भारी दुर्भिक्ष पडे किन्तु वर्षप्रबोध मेघ माला आदि कई पुस्तकों में लिखा है कि वर्षा न हो तो दुर्भिक्ष पड़े। भला ऐसे २ परस्पर विरुद्ध पाठों में सत्यासत्य का निर्णय करना कितना कठिन है? यही नहीं उन *ग्रन्थों में के कई प्रकरणों में तो कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तक और कई प्रकरणों में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्ष की अमावस्या तक मास माना है। इन में शुक्ल पक्ष तो दोनों ही का एक मिल जाता है परन्तु कृष्ण पक्ष में एक मास का अन्तर पड़ता है। क्योंकि कृष्ण पक्षादि से मास मानने वालों ने जहां श्रावण कृष्ण लिखा है उसी को शुक्ल पक्षादि से मास मानने वालों ने आषाढ़ कृष्ण लिखा है। ऐसे २ स्थलों में कौन सा पाठ कृष्ण पक्षादि है और कौन सा पाठ शुक्ल पक्षादि है यह समझे विना तिथियों का फल देखने में

* इस ग्रन्थ में केवल मेघ गर्भ प्रकरण को छोड के और सब जगह तिथियों का फल कृष्ण पक्षादि से मास मान के लिखा है।

बहुत आपत्ति पड़ती है। उस में भी इस समय के प्रायः ग्रन्थ प्रकाशक वा भाषा टीका बनाने वाले विद्वान् लोग लोभ वश हो के ग्रन्थों को छोटा करने के लिये प्राचीन ग्रन्थों में से प्रकरण छोड़ देते हैं तथा बीच २ में से कई स्थानों के श्लोक भी निकाल देते हैं जिस से ग्रन्थ का पूर्वापर सम्बन्ध टूट जाता है और उन के अर्थ साधारण लोगों की समझ में आ जाने के लिये जो भाषा टीका बनाई जाती है वह भी प्रायः ज्योतिष विद्या से अनभिज्ञ केवल व्याकरणी पण्डितों द्वारा बनी हुई होती है। वे ग्रन्थ का असली आशय न समझ के कई जगह अर्थ का अनर्थ कर बैठते है जिस से ऐसे ग्रन्थों से जैसा लाभ होना चाहिये वैसे की सम्भावना नहीं होती है। इत्यादि कारणों से उन ग्रन्थों द्वारा इस समय प्राचीन वृष्टि विद्या का पुनः प्रचार करने में बहुत बाधा पड़ती है। अतः इस समय के लिये प्राचीन वृष्टि विद्या सम्बन्धी सुबोध ग्रन्थ की परम आवश्यकता देख के मै ने कई वर्षों के अति परिश्रम द्वारा ज्योतिष शास्त्र के यथा लब्ध ग्रन्थों का सार रूप संग्रह कर के इस समय में परम उपयोगी होने योग्य "वृहदर्घ्य मार्तण्ड" नामक एक महान् ग्रन्थ सरल हिन्दी भाषा टीका सहित बनाया है। इस में कई अंक है जिन में से *"सर्वतोभद्र चक्र" नामक एक अंक तो पहिले प्रकाशित हो चुका है और अब यह वृष्टि प्रबोध-हिन्दी वायु शास्त्र-नामक दूसरा अंक भी आप सज्जनों की सेवा मे भेट करता हूं। जिस को देखने से सर्व साधारण लोगों पर भी हमारी प्राचीन वृष्टि विद्या का महत्व प्रगट होगा कि हमारे प्राचीन आचार्यों ने कैसी २ गूढ़ विद्यायें सरल भाव से प्रगट की थी।

इस ग्रन्थ में वर्षा जानने की आवश्यकता, वर्षा जानने की

---

* सर्वतो भद्र चक्र (त्रैलोक्य दीपक) ग्रन्थ में ग्रहों के वेध द्वारा मनुष्य पशु पक्षी देश ग्राम आदि का शुभाशुभ फल और व्यापारियों के उपयोगी अफीम, रुई, गेहू, अलसी, गुड, चांदी आदि प्रत्येक वस्तु की किस२ देश और कब २ कितनी २ तेजी वा मन्दी होगी। इत्यादि कई बातों का निर्णय हो सकता है।

विधि और वर्षा होने का उपाय—ये तीनों विषय विस्तार से वर्णित हैं। वर्षा जानने की विधि में गर्गादि महर्षियों से ले के भड्डली पर्यन्त की कही हुई अनेक प्रकार की युक्तियें एकत्र की गई है जिन के द्वारा विद्वान् तो क्या साधारण से साधारण मनुष्य को भी सुगमता पूर्वक बहुत समय पहिले ही से वर्षा का ज्ञान हो के सुभिक्ष दुर्भिक्ष जानने में अवश्य सहायता मिलेगी जिस से सचेत हो के दुर्भिक्ष से बचने का उपाय पहिले से कर सकेंगे। ऐसी पुस्तक आज तक किसी भाषा में प्रकाशित नहीं हुई है।

हस्ती समुद्रादादाय करेण जलमीप्सितम्।
दद्याद् घनाय तद्दद्याद्वातेन प्रेरितोघनः॥
स्थाने स्थाने पृथिव्याश्च काले काले यथोचितम।
तत्सर्वं परिज्ञानार्थं निमित्तं मुख्यकारणम्॥

प्राचीन वृष्टि विद्या में लिखा है कि सूर्य अपनी किरणों द्वारा समुद्रादि में से जल को ऊपर खींच के बादलों को देता है अर्थात् सूर्य की गर्मी से जल के परमाणु सूक्ष्म हो के ऊंचे जाते हैं और उन के साथ वायु के परमाणु मिल के बादल बन जाते हैं फिर वे बादल वायु की प्रेरणा से जिस २ देश तथा जिस२ काल में जितना २ जल वर्षना हो उतना २ वहां २ वर्षते हैं। परन्तु किस समय का खींचा हुआ जल पीछा किस समय कितने दिन तक कितना वर्षेगा इत्यादि बातों को जानने के लिये निमित्तों का ज्ञान ही मुख्य है। सृष्टि के जिन २ पदार्थों से वर्षा सम्बन्धि ज्ञान होता है उन्हे निमित्त कहते है, और ये चार भागों मे भौम अन्तरिक्ष दिव्य और मिश्र के भेद से बांटे गये हैं।

(७) वर्षा जानने के निमित्त—

देश, मनुष्य. पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि द्वारा वर्षा का ज्ञान हो उस को भौम निमित्त कहते है।

वायु, बादल, बिजली. गाज. वर्षा, सन्ध्या दिग्दाह, मोघ प्रति सूर्य. तारा कुण्डल. आंधी. गन्धर्व नगर, इन्द्र धनुष से

गर्भ, वायु धारणा, प्रवर्षण आदि द्वारा वर्षा का ज्ञान हो उस को आन्तरिक्ष निमित्त कहते हैं।

चन्द्र सूर्य का ग्रहण, पुच्छल तारा, सूर्य में कालादाग, नक्षत्र योग, सप्त नाडी चक्र, सूर्य से शनि पर्यन्त ग्रहों का उदय अस्त वक्र मार्ग राशि नक्षत्र चार आदि, संक्रान्ति, ग्रह योग, अगस्त्य योग, वर्षा की जन्म पत्री, प्रश्न, रमल, स्वरोदय आदि द्वारा वर्षा का ज्ञान हो उस को दिव्य निमित्त कहते हैं।

कार्त्तिक से ले के आश्विन पर्यन्त बारह महीनों के दीप मालिका, होली, अक्षय तृतीया, आषाढ़ी पूर्णिमा आदि अनेक योगों द्वारा वर्षा का ज्ञान हो उस को मिश्र निमित्त कहते हैं।

यही निमित्तों के भेद हैं। इन में भौम निमित्त की अपेक्षा आन्तरिक्ष और आन्तरिक्ष की अपेक्षा दिव्य निमित्त एक दूसरे से बलवान् है क्योंकि भौम निमित्त का फल बहुधा एक तहसील तक ही आन्तरिक्ष का फल एक जिले तक, दिव्य का फल एक प्रान्त तक और मिश्र का फल सर्वत्र होता है।

भौम निमित्त से प्रायः कर के सद्योवृष्टि का ज्ञान होता है। कई महीनों पहले से वर्षा आन्तरिक्ष निमित्त द्वारा जानी जाती है। कई वर्षों पहिले से वर्षा का भविष्य दिव्य निमित्त द्वारा ज्ञात होता है और मिश्र निमित्त से तो कई दिनों कई महीनों और कई वर्षों पहिले की वर्षा का ज्ञान हो जाता है। देखिये! हमारी वृष्टि विद्या में कितना सूक्ष्म विचार है। आज नवीन वृष्टि विद्या में आन्तरिक्ष निमित्त ही के पदार्थों में से केवल एक वायु के ज्ञान को-सो भी पूर्ण नहीं किन्तु सद्योवृष्टि बताने वाले एक अंश को-जानने के लिये ही बहु मूल्य यन्त्रों की सहायता लेनी पड़ती है उसी संद्यो वृष्टि को पूर्व काल में केवल एक भौम निमित्त के देश, वृक्ष, पशु, कीट, पतंग आदि पदार्थों की चेष्टा पर से ही चलते फिर स्वतन्त्रता पूर्वक साधारण मनुष्य भी जान लेते थे।

प्रकृतेः स्वानुकूले चत्सुवृष्टिः क्षेमकृत्सदा।
प्रकृतेश्चान्यथा भावे ह्युत्पातः स्यादनेकधा॥

इन्हीं चारों निमित्तों के पदार्थों में जब सृष्टि नियम के वि-

रुद्ध अपनी अवस्था में कुछ फेर फार होता है, प्रकृति भाव बद-
लता है तब अनावृष्टि होती है और जब वे ही पदार्थ सृष्टि निय-
मानुसार अपनी२ प्रकृति के अनुकूल रहते हैं तब सुवृष्टि होती है।

किस पदार्थ की कैसी अवस्था होने से वह स्वभावानुकूल
प्रकृति भाव कहलाता है। वही सब इस ग्रन्थ द्वारा आप को
विदित होगा।

देश के हित के लिये प्राचीन वृष्टि विद्या की मुख्य२ बातें
यदि स्कूलों के विद्यार्थियों को सिखलाई जावें तो इस विद्या का
पुनः प्रचार होने में बहुत सहायता मिलेगी। आशा है कि श्री-
मति भारत गवर्नमेन्ट तथा देशी राजा महाराजा इस ओर अव-
श्य ध्यान देंगे।

इस पुस्तक की भाषा और प्रूफ आदि शोधने में हमारे प-
रम प्रिय रईस श्रीमान् *महता चिमनसिंहजी साहिब म्यूनिसि-
पल कमिश्नर और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर जो इस नगर में
बड़े प्रतिष्ठित और विद्वान् पुरुष हैं जिन का पीढ़ियों से उदयपुर
राज्य से सम्बन्ध है, पूर्ण प्रेम और बड़े परिश्रम से सहायता दी
है इस के लिये मैं उक्त महोदय को अनेकानेक धन्यवाद देता हूं।
आप ही के उत्साह से आज वृहद्दर्घ्य मार्तण्ड के दो अंक प्रका-
शित हो सके हैं।

(८) परिशिष्ट—

अक्षय तृतीया रविवार सं० १९६५.	प्राचीन ज्योतिःशास्त्रश्रमी दैवज्ञभूषण पं० मीठालाल व्यास. ब्यावर-राजपुताना.

---

* इन के प्रपितामह श्रीमान् महता रामसिंहजी साहिब श्रीमान् हिन्दू-
पति महाराजा उदयपुर के प्रधान मन्त्री थे जिन्हों ने बडी योग्यता के साथ
राज्य शासन किया था। जिन के विषय में कर्नल टाड साहिब ने अपने
सुप्रसिद्ध राजस्थान इतिहास में बहुत कुछ लिखा है।

द्वितीयावृत्ति की प्रस्तावना ।

इस पुस्तक के प्रकाशित होने में तो बहुत अधिक समय लगा था किन्तु बिक्री होने में कुछ भी देर न लगी क्योंकि इस पुस्तकद्वारा हिन्दी साहित्य में एक अत्यन्त आवश्यकीय विषयकी पूरती होजानी मानकर देश के मुख्य२ सभी समाचार पत्रों ने इस की खूब प्रशंसा की थी। तथा इस की भूमिका कलकत्ते के भारतमित्र मे लेखद्वारा कई अंकों में प्रकाशित हुई थी। इसी प्रकार नागपुर के मारवाड़ीने भी इस मे का भौम प्रकरण और भूमिका को प्रकाशित की एवं अन्यान्य विद्वानों से ले के सर्व साधारणने भी इस की उपयोगता का बहुत आदर करके सेकडों प्रशंसा पत्र भेजकर हमारा उत्साह बहुत बढा दिया जिससे उत्साहित होकर यह द्वितायावृत्ति पहिले से भी अधिक स्पष्ट उपदेशों सहित तथा परिशिष्ट भाग युक्त प्रकाशित की है जिससे आशा करता हूं कि पाठकगण इसे देखकर अवश्य आनन्दित होंगे और मेरे परिश्रम को पहिलेसे भी विशेष सफल करेंगे इत्यलम् ।

सं० १९७०
ज्येष्ठ सुदि ४
पाली–मारवाड़

प्राचीन ज्योतिःशास्त्रश्रमि, दैवज्ञभूषण,
ज्योतिः रत्न आदि
पण्डित मीठालाल व्यास.
व्यावर—राजपूताना ।

वृष्टि प्रबोध का सूचीपत्र ।

ॐ

वृष्टिप्रबोध।

(भारत का वायुशास्त्र।)

Indian Meterology.

पर्जन्यमिन्द्रं वरुणञ्च वायुम्
चन्द्रन्तथा पूषणनागमुख्यान्।
स्मृत्वा तु कुर्वेऽखिलशास्त्रसारम्
वृष्टिप्रबोधं विदुषां सुतुष्ट्यै ॥ १ ॥

पर्जन्य, इन्द्र, वरुण, वायु, चन्द्र, सूर्य, और नाग आदि वृष्टि सम्बन्धी देवताओं का स्मरण कर वर्षा के उपयोगी हमारे आर्यावर्त्त देशके प्राचीन वायुशास्त्र के सम्पूर्ण शास्त्रों का साररूप 'वृष्टिप्रबोध'–भारत का वायु शास्त्र–नामक यह ग्रन्थ राजाओं, ज़मीन्दारों और कृषिजीवियों ही के लिये नहीं किन्तु देश के सभी श्रेणियों के मनुष्यों के हितार्थ विद्वानों की प्रसन्नता के लिये हिन्दी साहित्य की सेवा करता हुआ यह परिवर्धित तथा परिशोधित द्वितीय संस्करण बनाता हूं।

किमर्थं वृष्टिं जानीयात् वृष्टिज्ञानं कथम्भवेत्।
केनोपायेन वृष्टिः स्यात्तत्सर्वं प्रवदाम्यहम् ॥२॥
सर्वेषां सुखबोधाय प्रजाराजहिताय च।
मोठालालकविर्व्यासः परीक्ष्य च पुनः पुनः ॥ ३ ॥

कवन हेतु सब सृष्टि वृष्टिकी दृष्टि सु चावत ।
क्योंकर कब वह होत ज्ञान यह कैसे पावत ॥
रंक राउ के आदि मोद बुध जन उपजावत ।
पण्डित मीठालाल व्यास वृष्टी गुण गावत ॥ ४ ॥

वर्षा जाननेकी क्या आवश्यकता है? वर्षा किस प्रकार से जानी जा सकती है? और वर्षा वर्षानेका क्या उपाय है?; ये तीनों विषय प्राचीन महर्षियोंने संसारके लाभार्थ भले प्रकार से वर्णन किये है। उनको मैं-पं० मीठालाल व्यास-स्वयं वारवार अनुभव करके प्रजा तथा राजाओं दोनोंके हितके लिये बहुत सरलतासे वर्णन करता हूं कि जिससे सब कोई मनुष्य विना किसीकी सहायताके स्वयं ही भले प्रकार से वृष्टि अनावृष्टि और सुभिक्ष दुर्भिक्षके ज्ञानको समझ सकेंगे ।

वर्षा जाननेकी आवश्यकता।

अन्नकी प्रधानता ।

अन्नं प्राणा बलं चान्नमन्नं सर्वार्थसाधकम् ।
देवासुर मनुष्याश्च सर्वे धान्योपजीविनः ॥ ५ ॥

जगत्का प्राण अन्न है, जगत्का बलभी अन्न है तथा जगत के सम्पूर्ण कार्य भी अन्नसे ही सिद्ध होते है; इतना ही नहीं किन्तु देवता दानव और मनुष्यादिका जीवन भी अन्नके ही आधीन है।

अन्न संग्रह रखने में महर्षियों का उपदेश ।

धान्याना सङ्ग्रहः कार्यो वत्सरत्रयपूर्तिदः ।
तत्तत्काले स्वराष्ट्रार्थे नृपेणात्महिताय च ॥ ६ ॥

इसलिये नीतिशास्त्रके सिद्धान्तानुसार राजा महाराजाओंको चाहिये कि अपने २ राज्यकी सम्पूर्ण प्रजाका जितने अन्नसे

तीन वर्ष तक निर्वाह हो सके उतना अन्न अपने २ देश में सदा संग्रह रखने का उचित प्रबन्ध कर दें—इसी में राजाओं का कल्याण है।

कुशूलधान्यको वा स्यात्कुम्भीधान्यक एववा।
त्र्यहैहिको वापि भवेदश्वस्तनिक एव वा ॥ ७ ॥

ऐसेही प्रजाको भी चाहियेकि अपने कुटुम्बका जितने अन्न* मे तीन वर्ष तक निर्वाह हो सके उतना अन्न अपने घरमें सदा संग्रह रखे, यदि इतनी सामर्थ्य न हो तो भी एक वर्षके निर्वाह योग्य अन्न तो अवश्य संग्रह रखे। यहां तक कि जो कोई बिलकुल ही दरिद्री हो वह भी तीन दिन तकके निर्वाह होने योग्य अन्न का तो अवश्य संग्रह रखे-इसी में प्रजाका कल्याण है।

अन्नको विदेशमें भेजनेका परिमाण और उससे देशको लाभ।

यावता चैव धान्येन स्वदेशपालनं भवेत्।
तावतादधिकं नैव तदा तत्रैवरोधयेत् ॥ ८ ॥

प्रायः देखा गया है कि व्यापारी लोग केवल अपने स्वार्थ के लिये देशका अन्न विदेशोंमें भेज देते हैं। इसलिये राजा तथा प्रजाको उचित है कि यदि अपने सम्पूर्ण देशको कमसे कम तीन वर्ष तक पालन करने योग्य अन्नसे अधिक अन्न देशमें नहीं हो तो अन्नका विदेश भेजा जाना बिलकुल रोक दें। क्योंकि-

सुवर्णरौप्यमाणिक्यवसनैरपि पूरितः।
तथापि प्रार्थयन्त्येव कृषकान् भक्ततृष्णया ॥ ९ ॥

सोना चांदी तथा रत्न और वस्त्र आदि अनेक बहु मूल्य पदार्थ विद्यमान होने पर भी इनसे क्षुधा मिट नहीं सकती, किन्तु क्षुधा मिटानेके लिये तो केवल एक अन्न ही काममें आता है।

---

* अधिक समय तक धान्य पड़ा रहनेसे प्रायः बिगड़ जाया करता है, अतः इसको बहुत दिन सुरक्षित रखनेकी विधि पुस्तकके [illegible] में लिखेंगे।

अतः ऐसे समयपर अपने प्राणोंकी रक्षाके लिये धनाढ्योंको भी उन्हीं दीन कृषकोंकी याचना करनी पड़ती है कि जिनके पास अन्न होता है।

तस्माद्धया कया च विधया वह्वन्नं प्राप्नुयात् ॥ १० ॥

इसीलिये महर्षियोंने मनुष्य मात्रको उपदेश किया है कि "जहांतक हो सके अपनी सामर्थ्यके अनुसार वहुतसे अन्नका सदा संग्रह रखे"। संग्रहीत अन्न प्रायः दुर्भिक्ष पड़नेपर प्रजाका प्राण वचाने के लिये एक अद्वितीय साधन होता है।

खेती करनेकी आवश्यकता।

अन्नन्तु धान्यसम्भूतं धान्यं कृष्या विना न च।
तस्मात्सर्वं परित्यज्ये कृषिं यत्नेन कारयेत् ॥ ११ ॥

जिस अन्नके संग्रह रखनेकी इतनी आवश्यकता वताई गई है वह अन्न धान्यमेंसे उत्पन्न होता है और धान्य खेतियोंके विना नहीं हो सकता; अतः अन्न प्राप्तिके अर्थ सव कार्य छोड़कर खेती के लिये पूर्ण यत्न करना चाहिये।

खेतीमें वृष्टिकी प्रधानता।

कृषिर्वृष्टिं विना नैव कदाचिदपि नो भवेत्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूर्वं वृष्टिं परीक्षयेत् ॥ १२ ॥

जिस खेतीके द्वारा राजा तथा प्रजाका पालन होता है वह विना वर्षाके कदापि नहीं हो सकती; अतः वर्षाकालमें खेतीके उपयोगी वर्षा होगी वा नहीं यह वात पहिलेही से जाननेका पूरा यत्न करनेकी परम आवश्यकता है। क्योंकि—

सुभिक्षं वापि दुर्भिक्षं वृष्ट्यधीनं प्रजायते ॥ १३ ॥

संवत्का अच्छा वा बुरा होना वर्षाके ही आधीन है। इसी लिये तो महर्षियोंने वृष्टि अनावृष्टि आदिको पहिलेही से जाननेके लिये विविध प्रकारसे सबको उपदेश किया है।
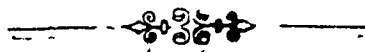
वर्षा जाननेकी विधि ।

हस्ती समुद्रादादाय करेण जलमीप्सितम् ।
दद्याद् घनाय तद्द्याद्वातेन प्रेरितो घनः ॥ १४ ॥
स्थाने स्थाने पृथिव्याञ्च काले काले यथोचितम् ।
तत्सर्वं परिज्ञानार्थं निमित्तं मुख्यकारणम् ॥ १५ ॥

प्राचीन वृष्टि विद्याके सिद्धान्तानुसार सूर्य अपनी किरणों द्वारा समुद्रादिमेंसे जलको ऊपर खींचके बादलोंको देता है (अर्थात् सूर्यकी गर्मीसे जलके परमाणु सूक्ष्म भाफरूप होकर ऊंचे जाते हैं और उनके साथ ऊपरके शीतल वायुके परमाणु मिलके बादल बन जाते हैं) फिर वे बादल वायुकी प्रेरणासे जिस १ देश तथा जिस २ कालमें जितना २ जल वर्षना हो उतना २ वहां २ वर्षते है। परन्तु किस समयका खींचा हुआ जल पीछा किस समय किस प्रदेशमें कितने दिन तक कितना वर्षेगा?—इन सब बातोंको जाननेके लिये निमित्तोंका ज्ञान ही एक मुख्य कारण है। क्योंकि—

वृष्टिर्निमित्तनिघ्ना स्यात् निमित्तं च विलोकयेत् ॥ १६ ॥

वर्षाका कम वा अधिक होना तथा समयपर सुभिक्षकारक वर्षना इत्यादि सब निमित्तोंकि प्रकृतिके आधारपर है। अतः वर्षा सम्बन्धी ज्ञानके लिये निमित्तोंके देखनेकी पूरी आवश्यकता है।

निमित्तोंकी संज्ञा तथा भेद ।

भौमान्तरिक्षदिव्याणि निमित्तं त्रिविधं स्मृतम् ।
विस्तरेण प्रवक्ष्यामि फलं तेषां पृथक् पृथक् ॥ १७ ॥

सृष्टिके जिन २ पदार्थोंसे वर्षा सम्बन्धि ज्ञान होता है—उन्हें निमित्त कहते हैं। इनके तीन भेद हैं: एक भौम, दूसरा आन्तरिक्ष और तीसरा दिव्य। इनमें देश मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि द्वारा वर्षाका ज्ञान हो उसको भौम निमित्त कहते हैं।

वायु, बादल, बिजली, गाज, वर्षा, सन्ध्या, दिग्दाह, मोघें, प्रति सूर्य, तारा, कुण्डल, आंधी, गन्धर्वनगर, इन्द्रधनुष, मेघगर्भ, वायु धारणा, प्रवर्षण आदि द्वारा वर्षाका ज्ञान हो उसे आन्तरिक्ष निमित्त कहते हैं। चन्द्र सूर्यका ग्रहण, पुच्छल तारा, सूर्यमें काला दाग, नक्षत्रयोग, सप्तनाड़ीचक्र, सूर्यसे शनि पर्यन्त ग्रहोंका उदय, अस्त, वक्र मार्ग राशि नक्षत्र चार आदि, संक्रान्ति, ग्रहयोग, अगस्त्य योग, वर्षाकी जन्मपत्री, प्रश्न, रमल, स्वरोदय आदि द्वारा वर्षाका ज्ञान हो उसको दिव्य निमित्त कहते है। चौथा मिश्र निमित्त एक और है जिसमें इन तीनों भौम आन्तरिक्ष और दिव्यके एकत्र पदार्थों द्वारा वर्षाका ज्ञान होता है—जैसे कार्त्तिकसे लेके वर्ष पर्यन्त बारह महीनोंके दीपमालिका, होली, अक्षयतृतीया, आषाढ़ी पूर्णिमा आदि अनेक 'तिथ्यादियोग' इत्यादि।

प्रकृतेः स्वानुकूले चेत्सुवृष्टिः क्षेमकृत्सदा।
प्रकृतेश्चान्यथा भावे उत्पातः स्यादनेकधा ॥ १८ ॥

निमित्तोंके पदार्थ सृष्टि नियमानुसार जिस देशमें अपने २ स्वभावानुकूल रहते है, तब तो उस देशमें सुवृष्टि सुभिक्ष, क्षेम कल्याण, आरोग्य, आदिसे राजा तथा प्रजाकी वृद्धि होती है; और जो इनमें किसी पदार्थका प्रकृति भाव बदलकर विकृति हो जाता है तब वहां अनावृष्टि दुर्भिक्ष महामारी आदि उत्पातोंसे राजा तथा प्रजाकी हानि होती है। इसी लिये निमित्तोंके किस पदार्थ की कैसी अवस्था होनेसे प्रकृतिभाव और कैसी होनेसे विकृति भाव कहलाता है, यही सब विस्तारसे इसमें बताया गया है।

राजाओं द्वारा निमित्त देखनेके प्रबन्धकी आवश्यकता।

यस्तु सम्यग्विजानाति होरागणितसंहिताः।
अभ्यर्च्यः स नरेन्द्रेण स्वीकर्तव्यो हितैषिणा ॥ १९ ॥

न चैकाकिना शक्यन्तेऽहर्निशमवधारयितुंनिमित्तानि।
तस्मात्सुभृतेनैव दैवज्ञे नान्येऽपि तद्विदश्चत्वारः कर्तव्याः ॥२०॥

राजा महाराजाओंको योग्य है कि अपने २ हितके लिये

स्वस्वराज्योंमें सदा निमित्तोंको देखनेके लिये ज्योतिष विद्याके तीनों भेद-होरा, गणित और संहिताके जाननेवाले दैवज्ञको नियत कर रखे। परन्तु एक ही मनुष्य लगातार रात दिन निमित्तोंको नहीं देख सकता इस लिये राज्यका प्रधान ज्योतिषी अपने सहकारी चार ज्योतिषियोंको और रख ले जिससे कि वे लोग अपने २ नियत समयपर निमित्तोंको भलेप्रकारसे देखते रहें। जिससे दैवी कारणों द्वारा पड़नेवाले दुर्भिक्षका ज्ञान बहुत समय पहिलेसे होकर प्रजा को कालके कष्टसे बचानेमें बहुत सहायता मिलसके।

निमित्त देखने की विधि।*

(१) प्रत्येक देश में निमित्त देखने के लिये एक एक मुख्य 'निमित्त शाला' स्थापित हो।

(२) प्रबन्ध करने के लिये एक मुख्य निमित्तज्ञ ज्योतिषी हो जिस की सम्मति से निमित्त देखने आदि के सब कार्य किये जावें।

(३) देश के विस्तारानुसार अन्य स्थानों में भी एक एक साधारण ज्योतिषी नियत हों। वे लोग प्रतिदिन अपने यहां के निमित्तों को देख कर रजिस्टर आदि में खानापूरी करलें और उन की साप्ताहिक रिपोर्ट मुख्य निमित्त शाला में भेज दिया करें।

(४) मुख्य निमित्तशाला में एक तो बाहर से आई हुई रिपोर्टें यथा स्थान रजिस्टर में लिख ली जांय और दूसरे अपने यहां के निमित्तों के देखने का भी प्रबन्ध रहे।

(५) मुख्य निमित्तज्ञ ज्योतिषी अपने संपूर्ण देश के देसे

---

* निमित्त देखने का प्रारम्भिक कार्य किस शैली से आरम्भ किया जाय और देश के विस्तारानुसार कहां किस देशमें कितने ज्योतिषी रखने होंगे और इस कार्य में वार्षिक व्यय कितना किस प्रकार से होगा इत्यादि सब बातों का विवरण—निमित्त देखने के प्रबन्ध कर्ताओं को पूछने पर हमारे यहांसे बताया जासकता है।

हुये निमित्तों से सारांश निकाल के वर्ष में चार विस्तार पूर्वक रिपोर्टें प्रकाशित करें कि कौन कौन से ज़िले में कब और कितनी वर्षा होगी। जिन में से पहिली तो फाल्गुन में, दूसरी ज्येष्ठ में, तीसरी आषाढ में और चौथी आश्विन में प्रकाशित होनी चाहिये।

(६) निमित्त देखने का प्रारम्भ कार्त्तिक वदि ३० (दीपमालिका) से किया जावे। इत्यादि प्रकार से निमित्त देखे जानेसे अधिक सरलता तथा सफलता प्राप्त होगी।

निमित्त देखने वाले ज्योतिषियोंको सूचना।

दैवज्ञा स्वस्वदेशेषु निमित्तानिक्षितानिचेत्।
परस्परं प्रकाश्यंते तानि दूरनिवासिने॥ २१॥

सम्पूर्ण देशके निमित्तज्ञ ज्योतिषियोंको आवश्यक है कि अपने अपने देशमें देखे हुये निमित्त परस्पर पत्र द्वारा दूर देशमें रहनेवाले ज्योतिर्विदोंको सूचनार्थ लिखा करें। ऐसा करनेसे सहज हीमें अपने तथा अन्य-दोनों देशोंके निमित्तोंकी अवस्था परस्पर एक दूसरेको मालूम हो जायगी, जिससे किस २ देशमें सुभिक्षकारक सुवृष्टि और किस २ देशमें दुर्भिक्षकारक अनावृष्टि होगी सो सारे आर्यावर्त्त देशकी प्रगट करनेमें सहायता मिलेगी। अतः देशके ज्योतिषियोको सदा आपस मे पत्र व्यवहार रखना चाहिये।

विधिपूर्वक निमित्त देखनेसे यथेष्ट लाभ।

दैवविद्विहितचित्तो द्युनिशं यो गर्भलक्षणे भवति।
तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्याऽम्बुनिर्देशे॥ २२॥

जिस दैवज्ञका चित्त एकाग्र होके रात दिन उपरोक्त प्रकार से निमित्त देखनेमे लगा रहता है उसकी भविष्यवाणी 'वर्षा कब २ कहां २ कितनी २ होगी सो बतलानेमें मुनियोंकी वाणी के तुल्य सदा सर्वदा सत्य होती है, कभी भी मिथ्या नहीं होती

विधि पूर्वक निमित्त देखे विनाभी वर्षा का ज्ञान ।

आरख आवे दृष्टिमें अथवा सुनले कान ।
वर्ष शुभाशुभ मेघगति जाने सकल जहान ॥ २३ ॥

यदि निमित्तों के देखने का पूरा प्रवन्ध न हो सके तो भी अपने२ देश में सुभिक्ष दुर्भिक्षोपयोगी वर्षा का ज्ञान तो इस ग्रन्थ द्वाराभी विना परिश्रम केही प्रत्येक साधारण मनुष्य को भी चलते फिरते सहज ही में हो सकेगा।
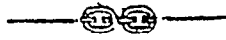
भूमिके निमित्त ।

भूमावुत्पत्यते यच्च स्थावरं वाऽथ जङ्गमम् ।
तदेक दैशिकं भौमनिमित्तं परिकीर्त्तितम् ॥ २४ ॥

पृथिवीपर उत्पन्न होनेवाले-वृक्ष गुल्म लतादि स्थिर तथा मनुष्य पशु पक्षी कीट आदि चर-प्राणि भूमिके निमित्त है ।

आज नवीन वृष्टि विद्यामें आन्तरिक्ष निमित्त होके पदार्थोंमें से केवल एक वायुके ज्ञानको सोभी पूर्ण नहीं किन्तु सद्यो वृष्टि वतानेवाले एक अंसको—जाननेके लियेही वहु मूल्य यन्त्रोंकी सहायता लेनी पड़ती है। उसी सद्यो वृष्टिको पूर्व कालमें केवल एक भौम निमित्त के देश वृक्ष, पशु, पक्षी कीट, पतंग, आदि पदार्थों की चेष्टा परसे चलते फिरते स्वतंत्रतापूर्वक साधारण मनुष्य भी जान लेते थे। केवल कृत्रिम यंत्र ही नहीं इश्वरीय यंत्रोंसे भी वृष्टि अनावृष्टि निश्चय करनेका मार्ग पूर्वाचार्योंने वताया था।

यदि कुछ दिन पहले से वर्षा मालूम करनी हो. केवल सद्यो वृष्टि ही जाननी हो तो विशेष कर के भौम निमित्त देखना चाहिये।

—•—

देश प्रकरण ।

अनूपो जाङ्गलो मिश्रस्त्रिधा देशो बुधैर्मतः ।
तत्तत्स्वभावं विज्ञाय जलवृष्टिं निवेदयेत् ॥ २५ ॥

सृष्टि नियम है कि सूर्य की किरणें जहां सिधी पड़ती है वहां वृष्टि खूब हुआ करती है । यही कारण है कि विषुवृत्त रेखा के आसपास जल बहुत वर्षता है और उस से उत्तर दक्षिण ज्यों दूर बढ़ते जाय वर्षा भी कम होती है। हमारा आर्यावर्त्त देश रेखा के निकट ही होने से यहां प्रति वर्ष एक नियमित वर्षाकाल आता है। यह कृषि प्रधान देश में भगवान् की कृपा ही समझनी चाहिये। अन्य देशो में ऐसा नहीं होता। कहीं२ बारहों महिने जब कभी वर्षा होती रहती हे। विलायत में ऐसा ही हाल है । अमेरिका आ-स्ट्रेलिया जंगबार नेताल और चीन आदि देशों में हमारे साथ२ ही चौमासा नहीं लगता है । हमारे यहां प्रायः जून से सितम्बर मासतक वर्षा कालका मुख्य समय माना जाता है । हमारे देश भिन्न२ प्रान्तों में प्रायः पहाड़, समुद्र समीप वा दूर, जंगल, और मरु स्थल आदि के कारण स्वभाव ही से हमेशा वर्षा कम वा जादा हुआ करती है। जिस के लिये ही हमारे वर्षा जानने वाले निमित्तज्ञोने,-(१) अनूप (२) जांगल और (३) मिश्र—ये तीन भेद देश के किये है; इनके पृथक्२ स्वभावों को जानकर ही वर्षा बतलाना चाहिये क्योंकि न्यूनाधिक वर्षा होने में एक देश ही प्रथम कारण है ।

अनूप देश की व्याख्या—

नदी पल्वलशैलाढ्यः मृदुवाता तपान्वितः ।
अनेकवनशस्याढ्यः सोऽनूपो देश उच्यते ॥ २६ ॥

जिस प्रदेश में नदी, तालाव, पर्वत, वृक्ष, शीतल वायु, बहुत से वन जंगल, हरीं२ खेतियें अधिक और समुद्र तट निकट हो (जहां २५ इंच से अधिक का औसत वर्षा का हो) उसको अ-नूप देश कहते हैं; जैसे मालवा गुजरात कोंकन आदि ।

जाङ्गल देश की व्याख्या—

स्वल्पोदक तृणो यस्तु प्रवातः प्रचुरातपः।
सज्ञेयो जाङ्गलो देशो बहुधान्यादि संयुतः॥ २७॥

जिस प्रदेश में जल तथा घास की कमी हो पहाड़ बहुत ऊंचे न हों, वायु तथा धूप की अधिकता हो, मरुस्थल निकट ही हो समुद्र तट समीप न हो और ज्वार बाजरा आदि धान्य अधिक पैदा होते हों (जहां १०। १५ इंच पानी वर्ष में होता हो) उस को जांगल देश कहते हैं; जैसे मारवाड़ सिन्धु कच्छ आदि।

मिश्र देश की व्याख्या—

संसृष्ट लक्षणो यस्तु देशः साधारणो मतः।
समा साधारणे यस्माच्छीत वर्षोष्णमारुतः॥ २८॥

जिस प्रदेश में अनूप और जांगल दोनों के लक्षण मिलते हों उसको मिश्र देश कहते हैं। (यहां प्रायः १५ से २५ इंच तक वर्षा बारह महिनों तक में हुआ करती है) जैसे मेवाड़ ढूंढ़ाड़ हाडौती आदि।

तच्च साधारणाद्द्विधाऽनूप जाङ्गलयोः परम्।
यत्र यस्य गुणाधिक्यं तत्र तस्य गुणं भजेत्॥ २९॥

परन्तु मिश्र के दो भेद हैं, एक 'अनूप मिश्र' और दूसरा 'जांगल मिश्र'; जिस देश में अनूप के लक्षण अधिक मिलते हों वह अनूप मिश्र और जांगल के अधिक मिलते हों वह जांगलमिश्र जानना चाहिये; क्योंकि जिस के लक्षण अधिक मिलते हों उस में उसी का विशेष स्वभाव रहता है।

देश भेद से वर्षा का ज्ञान।

अनूपे भूयसी वृष्टिः स्वल्पा वृष्टिस्तु जाङ्गले।
मध्यमा मिश्र देशेतु स्वभावैश्च प्रजायते॥ ३०॥

अनूप देशों में अधिक वर्षा, जांगल देशों में कम वर्षा और मिश्र देशों में साधारण वर्षा स्वभाव ही से हुआ करती है।

तस्मान्मालव देशादौ समानेऽपि ग्रहोदये।
वृष्टिः स्यादेव नियता कालात्क्षेत्रे बलिष्टता ॥ ३१ ॥

इसी लिये मालवा आदि अनूप देशों में यदि कम वर्षा करने वाले अशुभ ग्रहों का योग हो तथापि उन देशों में वर्षा कम नहीं होती; क्योंकि उन देशो में स्वभाव ही से वर्षा अधिक हुआ करती है।

तदा दुष्टग्रहादीनां योगे दुर्भिक्षता नहि।
किन्तु विग्रहमर्यादि तत्कृतं वैकृतं भवेत् ॥ ३२ ॥

कदाचित् अनूप देशों में कम वर्षा करनेवाले दुष्ट ग्रहों का योग भी आ जाय तौभी वहां प्रायः दुर्भिक्ष नहीं पड़ता किन्तु युद्ध महा मारी आदि कोई अन्य उपद्रव हो जाते है।

एवमरुस्थलादौस्याद्यदाशुभ ग्रहोदयः।
तथाप्यवग्रहोवृष्टेर्वाच्यः स्वल्पोऽपिधीमता ॥ ३३ ॥

इसी प्रकार मारवाड़ आदि जांगल देशों में यदि अधिक वर्षा करने वाले शुभ ग्रहों का योग भी आ जाय तौ भी वहां बहुधा अधिक वर्षा नहीं होती क्योंकि उन देशों में स्वभावही से वर्षा कम हुआ करती है।

---

*वृक्ष प्रकरण।

वृक्षों से वर्षा का ज्ञान।

माघ, फाल्गुन चैत्र में बिरछां झडे न पान।
गायां तरसे घास बिन नर तरसे बिन धान ॥ ३४ ॥

यदि माघ फाल्गुन और चैत्र में वृक्षोंके पूराने पत्ते न झडे तो

---

* इस प्रकरण का बहुत सा अंश नागपूर के मारवाडी पत्र में माघ वदि ३० स. १९६६ को सम्पादकीय लेख से प्रकाशित हो चुका है।

समझना चाहिये कि इस वर्ष ऐसा दुर्भिक्ष पड़ेगा कि पशुओं के चारा और मनुष्योंको अन्न प्राप्त न होगा।

> पात झडे भूपर पडे वृक्ष नग्न हो जाय।
> तो निश्चय कर जानिये जग सुभिक्ष होजाय ॥ ३५ ॥

यदि उक्त तीनों महिनों में वृक्षोंके पुराने पत्ते भूमिपर गिर जांय तो समझना चाहिये कि अच्छी वर्षा होके खुब अन्न और चारा उत्पन्न होगा।

> जो वसन्त फूले नहीं फले नहीं वनराय।
> राजा परजा सब दुखी दुखिया गोधा गाय ॥ ३६ ॥

यदि चैत्र और वैशाख में वनस्पतियोंपर फूल फल न लगें तो समझना चाहिये कि ऐसा दुर्भिक्ष होगा कि जिसमें राजा प्रजा और पशु पक्षियोंको भी महा कष्ट होगा।

> मधू मास वैशाख में सब फूलै वन राय।
> रय्यत सुखी राजा सुखी सुखिया गोधा गाय ॥ ३७ ॥

यदि चैत्र वैशाख में जंगलकी सब वनस्पतियां फूलें और फलें तो समझना चाहिये कि राजा प्रजा तथा गवादि पशु सुखी हो जावें—ऐसा सुभिक्ष होगा।

> अर्ध वृक्ष फूलै फलै आधो अफल रहाय।
> तो जाणीजे मायजी वर्ष करवरो थाय ॥ ३८ ॥

यदि आधे वृक्षके तो फल फूल लगें और आधेके नहीं लगें तो समझना चाहिये कि साधारण संवत् होगा।

> फूल मारतोकर वरो फलसूखां कण हाण।
> भेद वता ऊं मायजी वृक्षा यहि मांहि धाण ॥ ३९ ॥

यदि वृक्षों में फूल कम लगें तो समझना कि फसल मध्यम होगी और जो फल लगकर वृक्षों पर ही सूख जांय तो समझना चाहिये कि कुछ भी अन्न उत्पन्न नहीं होगा।

विरछां लम्बी कूपलां जो फल फूल न होय ।
घास घणां सुण माधजी अन्न न उपजे कोय ॥ ४० ॥

यदि वृक्षोंपर लम्बी लम्बी कूपलें निकले परन्तु फूल फल कुछ भी न लगे तो समझना चाहिये कि घास फूंस तो बहुत उत्पन्न होगा परन्तु अन्न कुछ भी न होगा ।

फूल झडे वन रायके अफलया वृक्ष रह जाय ।
झोलो लागे शाखमें अन्न महंगो हो जाय ॥ ४१ ॥

यदि वृक्षोंमें फूल लगकर गिर जांय और फल न लगें तो समझना चाहिये कि अन्न महंगा हो जायगा ।

पत्रनमें जालो पडे फल फूलनमें कीट ।
झोलो लागे शाखमें समयो जासी सीठ ॥ ४२ ॥

यदि वृक्षोंके पत्तों में जाले लग जाय फूले और फलोंमें कीडे पड जाय और वृक्षोंकी शाखाओंपर बन्देलग जांय तो समझना चाहिये कि समय खराब होगा और दुर्भिक्ष पडेगा ।

लाख गोंद और गूगल से वर्षा का ज्ञान ।

जो वृक्षोके सूखी लाख रोली पील्यो विगडे शाख ।
लचपच गूंद लाख रस.चूवे आफू तेलघी गुड हूवे ॥ ४३ ॥

लाख, गूंद और गूगल आदि वृक्षोंके रस वृक्षोंपर ही सुख जांय तो समझना चाहिये कि रोली और पीलिया आदि रोगोंसे खेतीका नाश हो जायगा और उक्तरस वृक्षोंपर न सूखें बल्कि टपक टपकके जमीनपर गिरे तो समझना चाहिये कि अफीम तेलघी और गुड सस्ते बिकेंगे ।

आम से वर्षा का ज्ञान ।

अपने अपने देशमें देखे आम फल फूल ।
जा दिशि डार सुनिर्फली वा दि शिमेह न मूल ॥ ४४ ॥

आमके वृक्षोंको देखले कि जिस दिशामें फूल और फल न

लगे हो समझ लेना चाहिये कि उसी दिशामें वर्षा न होगी और जिस दिशामें फल फूल लगें हों उसी दिशामें वर्षा अच्छी होगी।

आम आंवला सुरजना और मोरसरी से वर्षा का ज्ञान।

आम आमला सुरजणो मोल सिरी झड जाय ।
ऊनाळी झोलो लगे कार्तिक साख न थाय ॥ ४५ ॥

यदि आम, आमले सैजणें और मौल सिरीके फूल झड जांय और फल न लगें तो समझना चाहिये कि रवी फसल (गेहुं चने आदि) को हानि पहुंचेगी और खरीफ की फसल (ज्वार बाजरी आदि) पैदा ही न होगी।

नीम से वर्षा का ज्ञान।

नीमां अधर निमोली सूके काल पडे कधी नहीं चूके।
आधोपके आधो सूखे कठेक निपजे कठेक डूबे ॥ ४६ ॥

यदि नामकी निमोलिया पककर जमीनपर न गिरें और वृक्ष पर ही सूख कर रह जाय तो समझना चाहिये कि दुर्भिक्ष जरूर पडेगा और जो कुछ निमोली गिर जॉय तो समझना चाहिये कि खंड वर्षा होगी।

छोटे बेर और खेजड़ी से वर्षा का ज्ञान।

वन वेरी अरुखेजडी सकल पात झडजाय ।
शुख आरख आषाढ यह समो सरस निप जाय ॥ ४७ ॥

आषाढ महीने में यदि जंगलकी झड बेरि और खेजडियों के पत्ते गिर जॉय तो समझना चाहिये कि वर्षा होगी और सुभिक्ष होगा।

वनवेरी अरु खेजडी अर्धपात झड़ जाय ।
अर्धपात साबित रहै करसन समो कहाय ॥ ४८ ॥

यदि जंगलकी झडबेरि और खेजडियों के पत्ते आधे तो भूमि पर गिर पड़ें और आधे वृक्षों पर ही लगे रहें तो समझना चाहिये कि आधा संवत् होजाय उतनी ही वर्षा होगी।

वनवेरी फूले फले यों खेंजड ढहगट ।
नहीं अंकुरे वड जटन ह्वै दुर्भिक्षहगट ॥ ४९ ॥

यदि जंगलकी वेरियोंपर तथा खेजडियों पर आषाढ मासमें खूबही पत्ते आवे और फल फूल भी आवें और वट वृक्षकी दाहडीमें अंकुर न आवे तो समझना चाहिये कि वर्षा बिलकुल न होगी और भयानक दुर्भिक्ष पड़ेगा।

परन्तु जिस वर्ष सुभिक्ष होने को होता है उस वर्ष वड़े के अंकुर-जटा-वैशाख ज्येष्ठ में कूटने लगती हैं। जो वह वेंत डेढ वेंत लम्बी हो तो समझना चाहिये कि सुभिक्ष योग्य अच्छी वर्षा होगी। बहुत लम्बी न हो तो कम वर्षा होगी और जो समय के पहिले ही लग जाय तो वर्षाकाल शीघ्र लगेगा अन्यथा देर होगी।

ऊंट कंटाला, कटेली और शंखावली से वर्षा का ज्ञान।

ऊंट कटारो रिंगणी शंखाहुली फूले ।
माय विसारे डीकरा गाय वाछडा भूले ॥ ५० ॥

यदि वर्षा ऋतुमें ऊंटकटेलेपर, रिंगणी पर और शंखाहूलीपर फूल लगे तो ऐसा दुर्भिक्ष पडे कि माता अपने पुत्रको और गौ अपने बच्चेको भूल जाय।

भूमि पर फैलनेवाली जड़ी बूटियों से वर्षा का ज्ञान।

भू पसरी बूंटी फल फूल पाके अर्क उडावे तूल ।
उपजे अडक धान कहूं तोय चवडा चिणा मोठ तिलहोय ॥५१॥

भूमिमें फैलने वाली जडी बूटियों मे यदि फूल लगे और आक के फल पकके फुटे और उनसे रुई उडने लगे तो चावल, चने, मोठ, तिल और जंगली धान्य अधिक उत्पन्न होंगे।

फोग, खेजड़ी बंबूल नीम ओर बड़ से वर्षा का ज्ञान।

फोगां निपजै वाजरो सांगर मोठ सवाय ।
बांवल चंवला नीम तिल वड़ां ज्वार कैवाय ॥ ५२ ॥

यदि फोगका वृक्ष फले तो समझना चाहिये कि बाजरा, खेजड़ी फले तो मोठ, बंबूल फले तो चवला, नीम फले तो तिल, और वड़ फले तो ज्वार पैदा होगी।

पीपल से वर्षा का ज्ञान।

कहै फोगसी माघजी पीपल फलियो जोय।
मोठ बाजरा थोड़ा होसी अड़क नाज कछु होय॥ ५३॥

यदि पीपल फले तो समझना चाहिये कि मोठ तथा बाजरा तो कम पैदा होंगे किन्तु जंगली धान्य की पैदावारी अधिक होगी।

पलास और कैर से वर्षा का ज्ञान।

पतझड़ फलै पलास निज सातूं अन्न नीपजै।
कैरांहीं घणो कपास कूरी मंडवोकांगणी॥ ५४॥

यदि पलाश वृक्ष के सब पत्ते गिर जावें और बिना पत्तों ही के सम्पूर्ण वृक्ष के फल फूल लगें तो समझना चाहिये कि सातों ही धान्य पैदा होवें। और कैर के अधिक फलने से कपास तथा कूरी मंडवा कांगणी आदि धान्य अच्छा पैदा होंगे।

पलाश से वर्षा का ज्ञान।

निर्मल बीज पलाशका तो अन्न निर्मल होय।
कीड़ो लागो डाडको थोथै थोथो जोय॥ ५५॥

जिस वर्ष पलाश के बीज स्वच्छ रहें उस वर्ष समझना चाहिये कि अन्न भी स्वच्छ पैदा होगा और जो उनमें कीड़े लगें तो अन्न को भी कीड़े लगेंगे जिससे हानि होगी।

ईख तथा चावल से वर्षा का ज्ञान।

नीची नेपे गलित सब निपजे साकर साल।
भये किरात निःशंक यों गेहूं चने संभाल॥ ५६॥

यदि ईख तथा चावल अधिक पैदा हों तो समझना चाहिये कि गेहूं तथा चने भी अधिक पैदा होंगे।

सालर से वर्षा का ज्ञान।

यों सालर समसत फलें निपजें सातों तूर।
भील भाव यह निरखके भये मग्नभपूर ॥ ५७ ॥

ऐसेही सालर सम्पूर्ण फले तो समझना चाहिये कि सातों ही धान्य पैदा होंगे—अर्थात् दोनों ऋतुओं की खेतियों के उपयोगी अच्छी वर्षा होगी।

आकपर हरे रंग की टीडी तथा विच्छू से वर्षा का ज्ञान।

आकन घोड़े सब्ज अति विच्छू थलन अपार।
अनपाढ़िये इन आरखन नेपे कहै जवार ॥ ५८ ॥

यदि आक के वृक्षों पर हरे रंगकी टीड़ी जैसे पक्षी अधिक बैठें वा भूमि पर विच्छू अधिक हों तो समझना चाहिये कि ज्वार बहुत पैदा होगी।

आक नीम अरज आम और गूलर से वर्षा का ज्ञान।

आकां गेहूं नीम तिल अरजे अरस सवाय।
आमां आफू नीपजै गूलर सूं गुड थाय ॥ ५९ ॥

यदि बहुत आक फले तो गेहूं, नीम फले तो तिल, अरज फले तो अरस (?) आम फले तो अफ़ीम, और गूलर फले तो गुड़ पैदा होगा ऐसा समझना चाहिये।

केर और बोर से वर्षा का ज्ञान।

काले केरडां अने सुगाले बोर ॥ ६० ॥

जिस वर्ष में केर बहुत हों तो समझना चाहिये कि सम्वत् कुरवा होगा और जो बोर बहुत हों तो सुगाल हो ऐसी वर्षा होगी।

कैर कैरोदां और गूंदे तथा जामुन आम और खजूर से वर्षा का ज्ञान।

कैर कैरूंदा गूंदा पाकै। दुनिया सरस छऊं रस चाखै।
पाकै जांबू आम खजूर माघा निपजै सातूं तूर ॥ ६१ ॥

कैर, कैरूंदे और गूंदे पकें तो छओं रसोंकी वृद्धि होगी तथा जामुन, आम और खजूर पकें तो सातोंही धान्य पैदा होंगे ऐसा समझे।

कैर बोर पीलू नीम और आम से वर्षा का ज्ञान।

कैर बोर पीलू पक्कै नीम आम पक जाय।
दूध दही रस कस घणा कार्त्तिक साख सवाय। ॥ ६२ ॥

कैर, बेर, पीलू, नीम और आम पकें तो समझना चाहिये कि दूध दही आदि रसकसकी वृद्धि होगी तथा ख़रीफ़ (श्रावणू) साखकीभी अच्छी पैदावारी होगी।

निमोली आम जामुन इमली अनार और दाख से वर्षा का ज्ञान।

पाकै गुट्टा नीमका आमां टपकै साख।
पाकै जांबू आमली पाकै दाड़म दाख ॥ ६३ ॥
फल पाकै नीचै झड़ै रस सूखै नहिं मास।
अन्न निपजै सुण माधजी भरसी खाई खात ॥ ६४ ॥

यदि निमोली, आम, जामुन, इमली, अनार और दाख पक कर रस भरे हुये भूमिपर गिरने लगें तो अन्न इतना अधिक निपजेगा कि खाइयां तक भर जायगी।

वृक्षों के फल विपरीत लगने से वर्षा का ज्ञान।

वृक्षन फल विपरीत जब उलट पुलट लागन्त।
पड़े काल भयभीत यों आगम लखियो मिन्त ॥ ६५ ॥

जब कभी वृक्षोंपर एक दूसरे के विपरीत उलट पलट फल लगें तो समझना चाहिये कि बड़ा भयानक दुर्भिक्ष पड़ेगा।

अकाल में फल फूल लगने से वर्षा का ज्ञान।

अकाले च फलं पुष्पं वृक्षाणां यत्र जायते।
ऋतोर्विपर्य्ययश्चैव दुर्भिक्षं तत्र मण्डले ॥ ६६ ॥

जिस वर्ष जिस देश में विना समयही वृक्षों के फल फूल लगने लगें अथवा ऋतु विपरीत होजाय तो समझना चाहिये कि उस देश में बड़ा दुर्भिक्ष पड़े ऐसी अनावृष्टि होगी।

थुहरसे वर्षा का ज्ञान।

वर्षा प्रारम्भ जानिये निकले थूहरपात ॥ ६७ ॥

वर्षाकाल के प्रारम्भ में जब थूहर के नये पत्ते निकलने लगें तो समझना चाहिये कि वर्षा शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाली है।

वृक्षलतादि के पत्ते स्निग्ध और छिद्र रहित होने से वर्षा का ज्ञान।

यस्मिन् कालेस्निग्धनिश्छिद्रपत्राः सन्दृश्यन्ते वृक्षगुल्मा लताश्च।
तस्मिन् वृष्टिः शोभना सम्प्रदिष्टा रूक्षैश्छिद्रैरल्पमम्भः प्रदिष्टम्॥६८

जिस वर्ष वर्षाकाल में वृक्ष और लत्तादि के पत्ते चिकने और छेद रहित हों उस साल अच्छी वर्षा होगी और जिस साल पत्ते रुखे और छेद युक्त हों उस साल वर्षा कम होगी ऐसा समझना चाहिये।

मनुष्य प्रकरण।

पित्त प्रकृतिवाले मनुष्य को वर्षा का ज्ञान।

अतिपितवारो आदमी सोवै निद्रा घोर।
अनपढ़ियौं अपदेहतें कहै मेघ अतिज़ोर ॥ ६९ ॥

वर्षाकालमें पित्त प्रकृतिवाला मनुष्य घोर निद्रामें सोवे तो वर्षा बहुत ज़ोरसे होवे।

वातपित्त प्रकृतिवाले मनुष्य को वर्षाका ज्ञान।

वात पित्त युत देहजो रहै मेघसो घूम।
अनपढ़िया आतम थकी कहै मेघ अतिधूम ॥ ७० ॥

वातपित्त प्रकृतिवाले मनुष्यका शिर गर्मीसे घूमजाय तो स-समझना चाहिये कि वर्षा बहुत ज़ोरसे होगी।

लेखक को वर्षा का ज्ञान।

आगम सूझे सबनको माधव आवनहार।
काग़ज़ फूटे लेखनी लेहालेह विचार ॥ ७१ ॥

लिखनेके समय अक्षरोंकी स्याही पत्रकी दूसरी ओरको फूट निकले तथा शीघ्र सूखे नहीं तो वर्षा होवे।

अफ़ीमची, पंसारी और गड़रियों को वर्षा का ज्ञान।

अमली अमलसूं ऐलरया गांधी गलन किरान।
गाडर गूंदसूं चीकणी मेहा मुक्ति बखान ॥ ७२ ॥

अफ़ीम गुड़ नमक़ नवसादर आदि गलने लगें वा भेड़ गूंद जैसी चिकनी हो जावे तो वर्षा होवे।

ग्वाले तथा बाग़वानको वर्षा का ज्ञान।

गोबरकीड़े देख अति जब मेह कहे गवाल।
तब असवारी मेघकी (जब) कोकिल मोर कुरलाल॥७३॥

गोबर गल जावे, उसमें बहुतसे कीड़े पड जावें, वा कोकिल या मोर बहुत शब्द करे तो वर्षा होवे।

दही मथनेवालीको वर्षा का ज्ञान।

बिगड़े घृत्त विलोवने वनिता होय उदास।
जब असवारी मेघकी (तब) नहीं आज्य की आस ॥७४॥

दही मथनेपर यदि मक्खन न निकले तो वर्षा ज़ोरसे होवे।

खाटी होगइ छाछ दूध मिचल दधि गीनलै।
आसो मेह अथार पहियां पछला गाय जी ॥ ७५ ॥

छाछ बहुत खट्टी हो जावे वा दूध वा दही में खंमीर आ जावे तो अति शीघ्र वर्षा होवे।

माखण ठरियो माट छिण छिण छायो छाछ पर।
गई मेघ की आश वृद्ध हुआ मेह माघजी॥ ७६॥

दही मथने के समय यदि मक्खन छाछ पर शीघ्र ही आ जावे तो समझना चाहिये की अभी कुछ दिन वर्षा नहीं होगी।

जड़िये वा सुनार को वर्षा का ज्ञान।

कुन्दन जमे न जड़ाव पर जमे सलायन कीठ।
जड़िये सोनी सब कहें उड़े मेघ अति रीठ॥ ७७॥

जड़ने की वस्तु पर कुन्दन नहीं लगे और कुन्दन जड़ने की लोहे की सलाइयों पर काट आ जावे तो वर्षा ज़ोर की होवे॥

सुनार तथा साबुनगर को वर्षा का ज्ञान।

योंही साबुन नोन ज्यों नवसादर गल जाय।
सोनी साबुनगर कहें वर्षा करे अन्याय॥ ७८॥

साबुन नमक वा नवसादर गल जावे तो वर्षा अधिक होवे।

कसारे तथा लोहार को वर्षा का ज्ञान।

पीतल कांसी लोह नै जिण दिन काट चढ़न्त।
तो जाणीजे भड्डली जल धर जल वर्षन्त॥ ७९॥

पीतल कांसी वा लोहेको काट आजावे तो वर्षा होवे!

बढ़ई को वर्षा का ज्ञान।

साल वसोला वींदनी कठिन कुहाड़ा होय।
तब लों जोरे मेघ अति कहें सुथारे सोय॥ ८०॥

साल वसोला वींदनी कुल्हाड़ी आदि से लकड़ी काटने वा छीलने में कठिनता पड़े तो वर्षा ज़ोर से होवे।

धोबी को वर्षा का ज्ञान।

धोबिन धोखा मिट गया मनमें हुआ हुलास।
देख सोदनी बजबजी हुई मेघ की आस ॥ ८६ ॥

धोबी के कपड़े खूम में देने के माट में खंभीर उठे तो वर्षा शीघ्र होवे।

कोरे कपड़े सोदनी जब अति गर्मी होय।
सूक्ष्म कीड़े सोदनी मेवा कमी न कोय॥ ८७ ॥

पान कोर कपड़ों को जिस बर्त्तनमें खूम दे उस में बहुतगर्मी हो जावे तथा छोटे छोटे कीड़े पड़ जावें तो वर्षा बहुत होवे।

जूते बनाने वाले को वर्षा का ज्ञान।

देख खुररी कहै ढेढ़नी कन्था टूटे नेह।
लेहई चढ़े न चर्म पर मुक्ता वर्षे मेह ॥ ८८ ॥

जूते बनाते समय चमड़े पर यदि लेही न चिपके तो वर्षा बहुत होवे।

जुलाहे को वर्षा का ज्ञान।

बुन कर केरी पांजनी सूखे नहीं सताव।
तब असवारी मेघ की (जब) लाल रंग लखि आव ॥८९॥

कपड़ा बुनने के ताने पर लगाई हुई पान शीघ्र न सूखे तो वर्षा बहुत होवे।

ढोली को वर्षा का ज्ञान।

ढोल दमामे दुरवरी बोरे सादर बाज।
कहै डोम दिन तीन में इन्द्र करे आवाज ॥ ९० ॥

ढोल नक्कारा तासा आदि चमड़े से मढ़ा हुआ बाजा यदि ठीक न बजे तो तीन दिन में वर्षा होवे।

भील आदि को वर्षा का ज्ञान।

अति काली भू मक्कड़ी वांवी देख सुढंक ।
वर्ष भला वर्षा वहुत हुये किरात निःशंक ॥ ९१ ॥

भूमि पर वहुत काले रंग की मकड़ियें अधिक दीखें तो ज़माना श्रेष्ठ तथा वर्षा अधिक होवे।

साधारण मनुष्य को वर्षा का ज्ञान ।

जब लग जल शीतल नहीं उमच मिटी नहिं देह ।
अन पढ़िये सब यों कहें तब लों जोरे मेह ॥ ९२ ॥

तालाव आदि का पानी ठंढा न होवे वा पीने से स्वाद न लगे वा गर्मी से शरीर बहुत व्याकुल हो जावे तो वर्षा जोरसे होवे।

वर्षा जानने की युक्ति ।

जल का लोटा नीके भरिये । उस पर गीला कपड़ा धरिये ।
टपके नीर घड़ा हो खाली । मानो गंग जटा शिव चाली ॥९३॥
यह कौतुक नित देखे कोय । मेघागमन परख यों होय ।
जो नहि द्रवै बूंद सुन माघ । दिन दश पवन झकोले फाग॥९४॥

एक लोटा जल से पूर्ण भर के उस के मुख पर पानी से भीगा कपड़ा ढांक दे, उस के सहारे से लोटे में का जल बाहर टपकने लगे जिस से लोटा कुछ खाली हो जावे तो वर्षा होवे. और जो कुछ भी पानी नहीं टपके तो उस दिन तक वर्षा नहीं होवे किन्तु वायु चले ऐसा समझना चाहिये ।

———

पशु प्रकरण ।

ऊंटनी से वर्षा का ज्ञान ।

आगम रुत के ऊंटनी दौड़े पवन अपार ।
पग पटके बैठे नहीं माधव आवन हार ॥ ९५ ॥

धोबी को वर्षा का ज्ञान।

धोबिन धोखा मिट गया मनमें हुआ हुलास।
देख सोदनी वजवजी हुई मेघ की आस ॥ ८६ ॥

धोबी के कपड़े खूम में देने के माट में खंभीर उठे तो वर्षा शीघ्र होवे।

कोरे कपड़े सोदनी जब अति गर्मी होय।
सूक्ष्म कीड़े सोदनी मेघा कमी न कोय॥ ८७ ॥

पान कोर कपड़ों को जिस बर्त्तनमें खूम दे उस में बहुतगर्मी हो जावे तथा छोटे छोटे कीड़े पड़ जावें तो वर्षा बहुत होवे।

जूते बनाने वाले को वर्षा का ज्ञान।

देख खुररी कहे ढेढ़नी कन्था टूटे नेह।
लेई चढ़े न चर्म पर मुक्ता वर्षे मेह ॥ ८८ ॥

जूते बनाते समय चमड़े पर यदि लेही न चिपके तो वर्षा बहुत होवे।

जुलाहे को वर्षा का ज्ञान।

बुन कर केरी पांजनी सूखे नहीं सताव।
तव अमवारी मेघ की (जब) लाल रंग लखि आव ॥८९॥

कपड़ा बुनने के ताने पर लगाई हुई पान शीघ्र न सूखे तो वर्षा बहुत होवे।

ढोली को वर्षा का ज्ञान।

ढोल दमामे दुरवरी वोरे सादर बाज।
कहे डोम दिन तीन में इन्द्र करे आवाज ॥ ९० ॥

ढोल नकारा तासा आदि चमड़े से मढ़ा हुआ बाजा यदि ठीक न बजे तो तीन दिन में वर्षा होवे।

भील आदि को वर्षा का ज्ञान।

अति काली भू मक्कड़ी बांबी देख सुढंक ।
वर्ष भला वर्षा बहुत हुये किरात निःशंक ॥ ९१ ॥

भूमि पर बहुत काले रंग की मकड़ियें अधिक दीखें तो ज़माना श्रेष्ठ तथा वर्षा अधिक होवे।

साधारण मनुष्य को वर्षा का ज्ञान ।

जब लग जल शीतल नहीं उमच मिटी नहिं देह ।
अन पढ़िये सब यों कहें तब लों जोरे मेह ॥ ९२ ॥

तालाब आदि का पानी ठंढा न होवे वा पीने से स्वाद न लगे वा गर्मी से शरीर बहुत व्याकुल हो जावे तो वर्षा जोरसे होवे।

वर्षा जानने की युक्ति ।

जल का लोटा नीके भरिये । उस पर गीला कपड़ा धरिये ।
टपके नीर घड़ा हो खाली । मानो गंग जटा शिव चाली ॥९३॥
यह कौतुक नित देखे कोय । मेघागमन परख यों होय ।
जो नहि द्रवै बूंद सुन माघ । दिन दश पवन झकोले फाग॥९४॥

एक लोटा जल से पूर्ण भर के उस के मुख पर पानी से भीगा कपड़ा ढांक दे, उस के सहारे से लोटे में का जल बाहर टपकने लगे जिस से लोटा कुछ खाली हो जावे तो वर्षा होवे, और जो कुछ भी पानी नहीं टपके तो दस दिन तक वर्षा नहीं होवे किन्तु वायु चले ऐसा समझना चाहिये ।

पशु प्रकरण ।

ऊंटनी से वर्षा का ज्ञान ।

आगम लख के ऊंटनी दौड़े थलन अपार ।
पग पटके बैठे नहीं माधव आवन हार ॥ ९५ ॥

ऊंटनी भूमि पर इधर इधर दौड़े और पैरों को पछाड़े किन्तु बैठे नहीं तो शीघ्र वर्षा होवे।

बैल तथा गाय से वर्षा का ज्ञान।

बैल शब्द जो रातूं करै। सुख सम्पति की आशा सरै।
रातूं गाय पुकारै बांग। काल पड़ै कै अद्भुत सांग॥ ९६॥

रात्रि में बैल शब्द करे तो सुख सम्पत्ति होवे और जो गाय रात्रि में शब्द करे तो दुर्भिक्ष पड़े वा कोई और उपद्रव होवे। इस की विशेष चेष्टा 'रोहिणी' तथा 'श्रावणी' योग में देखो।

बकरी से वर्षा का ज्ञान।

अजया के सुत दोय हों समया सखरा जोय।
तीन जने शिशु बाकरी तो घृत महंगा होय॥ ९७॥

बकरी के बच्चे २ होंतो ज़माना अच्छा होवे और जो ३ हों तो घृत बहुत महंगा होवे।

छींकें छाली बालका डाडम दिशि असवाय।
कहे गूजर को पुत्र यों वर्षा करं अन्याय॥ ९८॥

बकरी के बच्चों को छींके अधिक आवें तो वर्षा बहुत ज़ोरसे होवे।

भेड़ से वर्षा का ज्ञान।

साबुन केसे झाग पुनि गाडर कुतसी हुन्त।
दौड़े सन्मुख पवन के जल थल ठेल भरन्त॥ ९९॥

भेड़ के साबुन जैसे झाग आ जावें और वायु के सन्मुख दौड़े तो वर्षा अधिक होवे।

बिल्ली से वर्षा का ज्ञान।

मंजारी कै एक सुत माघ जानियै काल।
दोयां होसी करवरो तीनां होय सुकाल॥ १००॥

बिल्ली के बच्चा १ हो तो दुर्भिक्ष पड़े, २ हों तो करवरा संवत् होवे और जो ३ हों तो सुभिक्ष होवे।

बिल्ली तथा कुतिया से वर्षा का ज्ञान।

चार जणै मंजारड़ी चार श्वानड़ी जोय।
कहै फोगसी माघ जी समियो सखरो होय ॥ १०१ ॥

बिल्ली वा कुतिया के ४।४ बच्चे हो तो बहुत श्रेष्ठ सुभिक्ष होवे।

श्वान मंजारी पांच रु छव। काल पड़ै सुण अति रौरव।
कठैक खांडो बहै दुधार। सात आठ जण नृप की हार॥ १०२॥

बिल्ली वा कुतिया के ५ वा ६ बच्चे हों तो बड़ा भयानक दुर्भिक्ष पड़े तथा कहीं युद्ध होवे, और जो कभी ७ वा ८ बच्चे हों तो राजा की हार होवे।

श्वान से वर्षा का ज्ञान।

उद्घाट्य चेद्दक्षिणमक्षिलीढे नाभिं स्वकीयामथवाधिरूढः।
शेते गृहस्योपरिजागरूकस्तदाम्बुदोऽम्बुक्षिपति प्रभूतम्॥ १०३॥

श्वान अपनी दाहिनी आंख खोल कर नाभि को चाटे अथवा घर की छत पर सोवे तो बहुत वर्षा होवे।

वर्षासु दृष्टेः सलिले निमग्नाः कुर्वन्ति चक्र भ्रमणाद्विशेषात्।
आपो विधुन्वन्ति पिबन्ति तोयं पक्षान्तरेऽन्यत्र जलागमाय॥१०४॥

वर्षा काल में श्वान यदि जल में निमग्न हो तो अच्छी वर्षा हो, जल में चक्रवत् फिरे तो विशेष वर्षा हो, और जो जल को कंपावे वा पीवे तो १५ दिन के पीछे किसी अन्य स्थान में वर्षा होवे।

निर्गत्य तोयादधिरुह्य पालीं कौलेयकश्चेद्विधुनोति कायम्।
तन्निश्चितम्पाद्यपि वृष्टिमन्दं कृषीवलाप्रीतिकरीं करोति ॥१०५॥

वर्षा काल में श्वान यदि जल में स्नान कर के बाहर आ के ऊंचे स्थान पर खड़ा हो के अपने अंग को कंपावे तो खेतियों के उपयोगी अच्छी वर्षा होवे।

जृम्भाम्प्रकुर्वन् गगनं विलोक्य यो जागरूकः कुरुतेऽश्रुपातम् ।
स जल्पति प्रावृषमम्बुपूरप्लुतावनिं सर्वसमृद्धिशस्यम् ॥१०६ ॥

वर्षा काल में श्वान यदि जंभाई खाता हुआ और नेत्रों से आंसू गिराता हुआ आकाश की ओर देखे तो खेतियों के उपयोगी बहुत उत्तम वर्षा होवे ।

उच्चैः स्वराः स्युस्तृणकूटसंस्थाः प्रासादवेश्मोत्तमसंस्थितापा ।
वर्षासु वृष्टिं कथयन्ति तीव्रामन्यत्र मृत्युन्दहनं रुजश्च ॥ १०७ ॥

वर्षा काल में श्वान यदि तृण के ढेर, महल, वा उत्तम स्थान पर चढ़ के ज़ोर से शब्द करे तो बहुत ज़ोर की वर्षा होवे परन्तु वर्षा काल के विना ऐसी चेष्टा करे तो महा मारी आदि रोगों तथा अग्नि का उपद्रव होवे ।

न नीरदो मुञ्चति केनचिच्चेद्दोषेण चेष्टा प्रभवेण वृष्टिम् ।
अचिन्तितास्तत्र पतन्त्यनर्थाश्चौराग्निभीरुमरकप्रकाराः ॥ १०८ ॥

श्वान के पूर्वोक्त चेष्टा करने पर भी दैव योग से वर्षा न हो तो वहां अचानक ही चौर आग्नि भय महा मारी आदि कोई उपद्रव अवश्य होवे ।

स्याल से वर्षा का ज्ञान ।

जम्बुकनी बोले दुखवाय। राज विग्रह दुर्भिक्ष थाय ।
दिन में स्याल शब्द जो करे। निश्चय काल हलाहल परे ॥१०९॥

यदि स्यालनी दुःखी होकर शब्द करे तो राज्य विग्रह, तथा दुर्भिक्ष होवे। और दिन में स्याल जो शब्द करे तो दुर्भिक्ष पड़े। (स्याल की विशेष चेष्टा 'अक्षय तृतीया योग' में देखो।)

लोमड़ी से वर्षा का ज्ञान ।

ठंढ पड़ै पालो जमै पौष माघ में जोय ।
रातूं टउंके लूंकड़ी सही ज़मानो होय ॥ ११० ॥

पौष तथा माघ में ठंढ से पानी जम जाय और रात्रि के समय लोमड़ी शब्द करे तो आगे वर्षा काल में अच्छी वर्षा होवे।

धुर वरसाले लूंकड़ी ऊंचो विल खिणन्त।
भेली होय रवल करै जल धर अति जाणन्त ॥ १११ ॥

वर्षा काल के प्रारम्भ में यदि लोमड़ी ऊंचे स्थान पर गुफा बनावे वा बहुतसी एकट्ठी हो कर आपस में खेल करें तो वर्षा अधिक होवे।

अथवा कूआ ना खिणै तो वरसात न हुन्त।
भडली कहै तुम जाणजो न करो मन नै भ्रान्त ॥ ११२ ॥

यदि वर्षा काल के प्रारम्भ में लोमड़ी अपने लिये गुफा नहीं बनावे तो वर्षा नहीं होवे।

पक्षी प्रकरण।

प्रात चैत्र वैशाख में वन पक्षी ध्वनि धीर।
सखरे बोल सुहावने श्रावण वर्षे नीर ॥ ११३ ॥

चैत्र वैशाख में प्रातः काल को पक्षी मधुर शब्द करें तो श्रावण में अच्छी वर्षा होवे ॥

घरों में की चिड़िया से वर्षा का ज्ञान।

करे घोंसले घर विषय चिड़िया आगमजान।
मास चार निर्झड़ झरे अन्न धन अधिक वखान ॥ ११४ ॥

वर्षा काल से पहिले घर में की चिड़िया अपना घोंसला घर के भीतर कोठे आदि में बनावे तो चारों महीनों में अच्छी वर्षा होवे ॥

करे परल से पीछले मेघ पछाड़ी होय।
आगे आगम जानिये कहैं लोग सव कोय ॥ ११५ ॥

यदि घर के पिछले भाग में बनावे तो वर्षा पीछे से होवे, और अगले भाग में बनावे तो वर्षा भी आगे से होवे॥

करे घोंसला भीत में करसन समा सुजान।
करमा धरमी नीपजे जैसा समा बखान॥ ११६॥

यदि घर के बाजू की भीत में बनावे तो वर्षा मध्यम होवे जिस से खेतियां कहीं तो पैदा हों और कहीं न हों॥

चिड़िया न्हावे धूल में कहूंक वर्षा योग।
झड़ जल में झूले चिड़ी वर्षा विदा वियोग॥ ११७॥

चिड़िया यदि रेत में स्नान करे तो वर्षा होवे, और जो बरसते हुए जल में स्नान करे तो वर्षा बन्द हो जावे॥

मुर्गे से वर्षा का ज्ञान।

अस्त समय कुर्कुट रवे विघ्न नगर में होय।
छत्र पड़े दुर्भिक्ष करे मरी बरका होय॥ ११८॥

मुर्गा यदि सूर्यास्त के समय शब्द करे तो गांव में विघ्न वा दुर्भिक्ष वा महा मारी आदि का उपद्रव होवे, और जो आधी रात्रि के समय शब्द करे तो वर्षा होवे॥

काली चिड़िया से वर्षा का ज्ञान।

काल चिड़ी के अण्डा एक। रस कस सस्ते अन्न विशेक।
काल चिड़ी के अण्डे दोय। खड़ थोड़ा पर अन्न कछु होय॥ ११९
काल चिड़ी के अण्डे तीन। आधा काल माघ जी चीन।
अण्डा चार कालकी धरे। जूंझे राय देश वित्त हरे॥ १२०॥

काली चिड़िया के अण्डा १ हो तो सुभिक्ष होवे, २ हों तो घास कम पैदा होवे परन्तु धान्य पैदा हो जावे, ३ हों तो आधा काल पड़े और ४ हों तो बड़ा भयंकर दुर्भिक्ष पड़े॥

काल चिड़ी के अण्ड तल ऊन केश जट जोय ।
जिस जिस के सुन केश हों मरी रोग अति होय ॥ १२१ ॥

अण्डों के नीचे जिन२ जीवों के केश ऊन जट आदि हों उन२ जीवों में मरी आदि रोग होवे ॥

सूत रूत नारेल जट मक्कई शिखा जो होय ।
शण रेशम अंबाड़ि तृण सोहि महर्घता होय ॥ १२२ ॥

घास फूस जड़ तूळ हो तो जानो तृण हान ।
ग्वाल कहे सुन माय जी काल चिड़ी सहि थान ॥ १२३ ॥

अण्डों के नीचे सून, रुई, नारियल वा मक्का की जटा, शण, रेशम, अंबाड़ी, घास आदि जो जो वस्तु रखी हो वह वह वस्तु तेज़ हो जावे । और घास फूस वृक्षादि की जड़ छाल आदि वस्तु रखी हो तो घास उत्पन्न नहीं होवे ॥

जो अण्डा ऊंचा धरे तीन हाथ परिमाण ।
इस से नीच देखिये तो वर्त्ते कुछ हाण ॥ १२४ ॥

अण्डे भूमि के ऊपर ३ हाथ से नीचे स्थान पर रखे तो श्रेष्ठ नहीं किन्तु इस से ऊंचे रखे तो श्रेष्ठ फल होवे ॥

खंजनसे वर्षा का ज्ञान ।

खंजन शिखा उतार दृष्ट पड़्यो वध माघ मेह ॥ १२५ ॥

वर्षा काल से पहिले खञ्जन पक्षी के शिर पर शिखा निकलती है, जिस से वह दृष्टि में नहीं आता है । और जब भादों आसोज में इस की शिखा टूट पड़ती है तब वह पीछा दीखने लगता है । अतः जब खञ्जन दीखने लगे तब जाने कि वर्षा काल समाप्त हुआ, अर्थात् अब वर्षा का ज़ोर नहीं रहा ॥ (इसका विशेष खुलासा 'दीपमालिका योग' मे देखो ।)

कुरज से वर्षा का ज्ञान ।

कुरज उड़ी कुरलाय वृद्ध हुआ मेह माघ जी ॥ १२६ ॥

कुरज (पक्षी) शब्द करता हुआ उडने लग जावे तो वर्षा काल बीत गया जाने।

रुपारेल से वर्षा का ज्ञान।

करोतिनीडं भुवि चेद्वराही समान्यपत्यानि विजायते वा।
समुद्भवो भानुमयूखवह्निर्ज्ज्वलयंते तज्जगतीं समस्ताम्॥ १२७॥

वर्षा काल के पहिले यदि रूपारेल (शकुन चिड़िया) अपने अण्डे भूमि पर रखें और वे सम संख्या के (२ वा ४) हों तो उस देश में वर्षा नहीं होवे किन्तु धूप बहुत पड़े॥

गर्त्ते सरिद्रोधसि वा वराही शात्रान युग्मानपि चेत्प्रसूते।
नाम्भो धरो मुञ्चति तावदम्भो यावत्समुज्झीयनते व्रजन्ति॥१२८॥

यदि अण्डे खड्डे में वा नदी तालाब आदि जलाशय में रखे और वे अण्डे सम संख्या के हों तो उन अण्डों में के बच्चे अपनी पंखों से उड़के वहां से न चले जावें तब तक वर्षा नहीं होवे॥

द्वारादिदेशेषु गृहस्य यस्य प्रत्यक्षरूपा कुरुते कुलायम्।
अम्भो धरो वर्षति चेत्तथापि तच्छून्यतां याति च भज्यते वा॥१२९॥

यदि घोंसला किसी घर के द्वार आदि पर बनावे तो वर्षा होवे; परन्तु वह स्थान शून्य हो जावे वा गिर जावे॥

प्रासादशैलद्रुमकोटरेषु तुङ्गेषु चान्येषु विधाय नीडम्।
प्रसूयते यद्यसमैरपत्यैः श्यामा तदम्भो भवति प्रभूतम्॥ १३०॥

यदि घोंसला कहीं सुन्दर घर की वा पर्वत की वा वृक्ष की खोखाल में अथवा और किसी ऊंचे स्थान पर बना के विषम संख्या के (१, ३, ५) अण्डे रखे तो बहुत वर्षा होवे॥

कपोती से वर्षा का ज्ञान।

मधू मास वैशाख में गर्ग समय नित जोय।
रटे कपोती ध्वनि करे सही ज़माना होय॥ १३१॥

चैत्र वैशाख में सूर्योदय से पहिले कपोती (पक्षी) नित्य शब्द करे तो सुभिक्ष के उपयोगी अच्छी वर्षा होवे ॥

टिटहरी से वर्षा का ज्ञान।

टीटोड़ी के अण्डा एक । कहे फोगसी काल [विशेष] ।
अण्डे दो टीटोड़ी धरे । अर्द्ध कालपरजा अनुसरे ॥ १३२ ॥
टीटोड़ी के अण्डे तीन । रोग दोष में परजा क्षीन ।
टीटोड़ी के अण्डे चार । नव खँड निपजे माघ विचार ॥१३३

टिटहरी के अण्डा यदि १ हो तो दुर्भिक्ष, २ हो तो आधा काल, ३ हों तो रोगादि का उपद्रव और ४ हों तो वहुत उत्तम सुभिक्ष होने योग्य वर्षा श्रेष्ठ होवे ॥

चत्वारि टिट्टिभाण्डानि मासाश्चत्वार आहिताः ।
अधोमुखाण्डमासैः स्याद्वृष्टिर्नोर्द्ध्वमुखाण्डके ॥ १३४ ॥

देख अण्ड आषाढ़ में टीटोड़ी के चार ।
अण्ड चार चतु मास के वर्षा विषय विचार ॥ १३५ ॥

ऊगमना आषाढ़ का दक्षिण श्रावण जान ।
पश्चिम भाद्रव जानिये उत्तर आसु वखान ॥ १३६ ॥

ईशाना आषाढ़ का अग्नि श्रावण धार ।
नैर्ऋत भाद्रव जानिये वायव्य आसु विचार ॥ १३७ ॥

आषाढ़ के प्रारम्भ में टिटहरी के वहुधा चार अण्डे होते हैं, उन को देखे; फिर वर्षा काल के चार महीनो के लिये उन को कल्पना करे। पूर्व वा ईशान में के अण्डे से आषाढ़ में, दक्षिण वा अग्नि में के अण्डे से श्रावण में, पश्चिम वा नैर्ऋत्य में के अण्डे से भाद्रवे में और उत्तर वा वायव्य में के अण्डे से आसोज में वर्षा का विचार करे।

जाहि मास के नाम का टिट्टी अण्डा होय ।
ताहि मास लों वर्षना कहें भील सव कोय ॥ १३८ ॥

जिस महीने के नाम का अण्डा हो उस महीने में वर्षा होवे और जिस महीने के नाम का अण्डा न हो उस महीने में वर्षा न होवे। परन्तु—

नूंख भूमि दिशि देखिये वर्षा उतने मास।
नूंख न दीखे भूमि दिशि उतने मास निरास॥ १३९॥

चारों अण्डों में से जिस २ महीने के अण्डे की तीखी अणी भूमि की ओर नीचे को हो उस २ महीने में वर्षा होवे, और जिस २ महीने के अण्डे की तीखी अणी आकाश की ओर ऊंची हो उस २ महीने में वर्षा न होवे।

जो अण्डां का ऊंचा मूंडा। नीर निवांणां लाधै ऊंडा।
ऊंधै मूंडै अण्डा धरे। चार मास मांग्या मेह करै॥ १४०॥

चारों अण्डों की तीखी अणियें यदि आकाश की ओर ऊपर को हों तो चारों महीनों में वर्षा न होवे जिस से कूओं का पानी भी सूंख जावे, और जो चारों की अणियें भूमि की ओर नीचे को हों तो चारों महीनों में मन चाही वर्षा होवे।

जो अण्डा जिस कोण का अणि जो वांकी होय।
खुररी खंच उस मास में अन्न पण महंगा जोय॥ १४१॥

जिस महीने के अण्डे की अणी नीचे ऊपर को न होवे किन्तु आडी वा तिरछी होवे तो उस महीने में वर्षा की खंच होवे जिस से धान्य भी तेज हो जावे।

चारूं अण्डा चित्रवत् धरे अधो मुख जोय।
फोग कहे सुन माघजी समया सखरा होय॥ १४२॥

यदि चारों अण्डों की तीखी अणिये तो नीचे और पीठ ऊपर हों और देखने में सुन्दर चित्रवत् धरे हों तो चारों ही महीनों में उत्तम वर्षा होवे जिस से संवत् बहुत अच्छा होवे।

उच्च भागे टिट्टिभाण्डमुक्त्या मेघमहोदये।
जलप्रवाहेऽप्यण्डानामुक्तिर्दृष्टिनिरोधिनी॥ १४३॥

टीटी अण्डा ऊंचा धरे । चार महीना निर्झर झरे ।
रखे अण्डा नदी निवान । कहे फोगसी मेह की हान ॥ १४४ ॥

टिटहरी अपने अण्डे ऊंची भूमि पर धरे तो वर्षा वहुत, नीची भूमि पर धरे तो कम, और यदि नदी तालाव आदि जलाशय में धरे तो वहुत कम होवे ।

टीटोड़ी अण्डा धरे नाडी नदी निवान ।
पाच फूट पर से उड़े फिर वरसे मेह जान ॥ ॥ १४५ ॥

यदि अण्डे नाडी नदी तालाव आदि में धरे तो उन अण्डों में के वच्चे वहां से उड़ के चले जावें तव फिर वर्षा होवे ॥

टीटोड़ी सर तीर तज पाखति कहीं वियाय ।
तो मेहा वरसे घना जल थल एक कराय ॥ १४६ ॥

यदि तालाव आदि जलाशय को छोड़ के उन्हीं की ऊंची पाल पर अण्डा धरे तो वहुत वर्षा होवे ॥

अण्डे ऊंची भूमि शुभ सम भूमी सम राश ।
छगन घास पतली अशुभ चतु पद करत विनाश ॥ १४७ ॥

अण्डे ऊंची भूमि पर हों तो संवत् श्रेष्ठ, मध्यम भूमि पर हों तो मध्यम, नीची भूमि पर हों तो नेष्ट और अण्डों के नीचे सूखा गोवर वा घास आदि हो तो चौपायों का नाश होवे ॥

छछरियां अण्डा तले टीटोड़ी मेलन्त ।
रस कस अति महंगा करे चतुपद भार पड़न्त ॥ १४८ ॥

हाड सीप तल देखिये मरी वरका होय ।
हहाकार उस देश में विरले जु वचें कोय ॥ १४९ ॥

अण्डे छछरियों पर रखे हों तो रस कस वहुत तेज होंवे तथा पशुओं को कष्ट होवे और जो हड्डी वा सीप पर रखे हों तो उस देश में महा मारी आदि रोगों से हाहा कारमच जावे ।

वगुले से वर्षा का ज्ञान ।

बुग पावस दृढ़ वैठ के संयम से चुग लेय ।
सामा माजर चुग उड़े काल न कहिये जेय ॥ १५० ॥

वर्षा काल से पहिले वगुला हिंसा धर्म छोड़ अहिंसा व्रत धारण कर के वृक्ष पर स्थिर हो के वहुत दिनों तक वैठा रहे और भक्ष्य भी उस की वगुली ला के देवे तो वर्षा वहुत होवे ॥

जिस ही दिश वगुली गई उस ही दिश चुग लेय ।
दृढ़ पावस यों जानिये जय जय कार करेय ॥ १५१ ॥

भक्ष्य लेने को वगुली जिस ओर जावे उसी दिशा से भक्ष्य ले आवे तो भी वर्षा वहुत होवे ॥

सामा माजर ना चुगे वेगा ही उड़ जाय ।
दृढ़ पावस नहिं जानिये करवर समा कहाय ॥ ५२ ॥

यदि वगुला ऐसे व्रत का पालन थोड़े ही दिनों तक करे तो वर्षा मध्यम होवे और जो विलकुल व्रत धारण ही न करे तो वर्षा अल्प होवे ॥

कौवे से वर्षा का ज्ञान ।

वैशाख मासे निरुपद्रवेषु द्रुमेषु काकस्य शुभाय नीडम् ।
निन्द्येषु शुष्केषु सकण्टकेषु वृक्षेषु दुर्भिक्षभयाय हेतुः ॥ १५३ ॥

वैशाख में कौवा अपना घौंसला किसी उत्तम वृक्ष पर वनावे तो वर्षा अच्छी होवे, और जो किसी निन्दित वा सूखे वा कांटों वाले वृक्ष पर वनावे तो वर्षा नहीं होवे जिस से दुर्भिक्ष पड़े ॥

काकालयः प्राग्दिशि भूरुहस्य सुभिक्षकृत् स्वल्पघनस्तथाग्नौ ।
मासद्वयं वृष्टिकरोति पूर्वं ततो नवृष्टिर्हियमात एव ॥ १५४ ॥
पूर्वं न वृष्टिर्निरृत पयोदाः पश्चाद्घनो लोकसरोगता च ।
मासद्वये ऽतीवघनः प्रतीच्यां निष्पत्तिरन्नस्य तदोच्चभूम्याम् ॥ १५५ ॥

ततोल्प वृष्टिर्यदि वाल्पवर्षा सवातवृष्टिः पवनस्य कोणे ।
स्यादुत्तरस्यां भवने सुभिक्षमीशानभागेऽपि सुखं सुभिक्षम्॥१५६॥

कौवा अपना घौंसला वृक्ष पर पूर्व में वनावे तो श्रेष्ठ वर्षा, अग्नि कोण में वनावे तो अल्प वर्षा, दक्षिण में वनावे तो वर्षा काल के प्रारम्भ ही के २ महीनों में वर्षा, नैऋत्य कोण में वनावे तो पीछे के ही २ महीनों में वर्षा, पश्चिम में वनावे तो मध्य के ही २ महीनों में अत्यन्त वर्षा, वायव्य कोणमें वनावे तो वायु सहित अल्प वर्षा, और उत्तर वा ईशान मे वनावे तो श्रेष्ठ वर्षा होवे।

वृक्षाग्रे तु महा वर्षा वृक्षमध्ये तु मध्यमा ।
अधः स्थाने नैव वर्षा वृक्षे काकालयाद्वदेत् ॥ १५७ ॥

कौवा अपना घौसला वृक्ष के ऊपर के अग्र भाग पर वनावे तो वर्षा अति, मध्य मे वनावे तो मध्यम, और नीचे के भाग में वनावे तो अल्प वा कुछ भी नहीं होवे। उपरोक्त दिशाओं की अपेक्षा यह फल स्पष्ट है ॥

अवृष्टिरोगारिभयादिवृद्धिं विद्याच्च भूमौ बलिभुक्कुलाये ।
शुष्के च वृक्षे डमरान्ननाशः प्राकाररन्ध्रे ऽरिभयं प्रभूतम् ॥१५८॥
निम्नप्रदेशे तरुकोटरे वा वल्मीकरन्ध्रे अत्रनिष्वपीह ।
काकस्य नीडे रुगवृष्टिदोषैर्भवन्ति शून्या नियमेन देशाः ॥१५९॥

कौवा अपना घौसला भूमि पर वनावे तो अवृष्टि दुर्भिक्ष रोग शत्रु आदि भय की वृद्धि, सूखे वृक्ष पर वनावे तो डमर (शस्त्र कलह वा पर चक्र भय) तथा अन्न का नाश, परकोटे की भित्ति के छिद्र में वनावे तो शत्रु से वहुत भय, वृक्ष की खोखाल में वा सर्पादि की वंबी के मुख पर वनावे तो महा मारी आदि रोगों तथा अनावृष्टि दुर्भिक्ष आदि की पीड़ा से वह देश शून्य हो जावे।

कावा जव ही घर करे ले लकड़ी आषाढ़ ।
अध विच पकड़े लाकड़ी दोनू साख सवाय ॥ १६० ॥
छेली पकड़े साख इक ऊभी पकड़े काल ॥ १६१ ॥

आषाढ़ में यदि कौवा अपने घोंसले के लिये लकड़ी को बीच में से पकड़ के लावे तो दोनों साखें (ख़रीफ़ तथा रवी) उत्पन्न होवें, एक किनारे से पकड़ के लावे तो एक ही साख उत्पन्न होवे और जो खड़ी पकड़ के लावे तो दुर्भिक्ष पड़े।

काक्या भवेद्वारुणमण्डकं चेत्पृथ्वी तदा नन्दति सर्वशस्यैः।
मन्दप्रवर्षेऽनलसंज्ञकाण्डे नोप्तस्य वीजस्य भवेत्प्ररोहः॥ १६२॥

जातानि शस्यानि समीरजेऽण्डे खादन्ति कीटाः शलभाः शुकाद्याः।
क्षेमं सुभिक्षं सुखिता धरित्री स्यादिन्द्रजेऽण्डेभिमितार्थवृष्टिः॥१६३॥

कागली के अण्डा यदि १ हो तो सम्पूर्ण प्रकार की खेतियां उत्पन्न होवें, २ हों तो वर्षा बहुत थोड़ी होवे जिस से बोया हुआ धान्य उत्पन्न न होवे, ३ हों तो वर्षा तो खेतियों के उपयोगी होवे परन्तु कीड़े टिड्डी तोता आदि जन्तुओं से खेतियों को हानि पहुंचे, और ४ हों तो क्षेम कल्याण सुभिक्ष आदि सुखों को करने वाली उत्तम वर्षा होवे।

इदं त्विहोत्पातयुगं पृथिव्यां महाभयं शाकुनिका वदन्ति।
यद्वायसो मैथुनसन्निविष्टो दृश्येत यद्वा धवलः कदा चित्॥१६४॥

देशे तु यत्राद्भुतमेतदुग्रमालोक्यते तत्र समापतन्ति।
अवृष्टिदुर्भिक्षभयोपसर्गचौराग्निशत्रूद्भवधर्मनाशाः॥ १६५॥

जिस देश में कौवा और कागली मैथुन करते हुए दीखें अथवा श्वेत कौवा दीखे उस देश में अनावृष्टि दुर्भिक्ष महा मारी चौर अग्नि शत्रु आदि उपद्रवों से देश तथा धर्म का नाश हो जावे। और देखने वाले को भी दुःख होवे अतः उस को भी इस की शान्ति करनी योग्य है।

रजनी कुरले काग अति कृष्ण पक्ष जो होय।
पड़े काल उस देश में रोग शोक अति होय॥ १६६॥

कृष्ण पक्ष की (अंधेरी) रात्रि में बहुत से कौवे सदा ही शब्द करें तो उस देश में दुर्भिक्ष वा महा मारी आदि का उपद्रव होवे।

और वर्षा कालमें यदि चांदनी रात्रि में भी शब्द करें तो भी पूर्वोक्त अशुभ फल होवे। किन्तु वर्षा ऋतु के विना चांदनी रात्रि में शब्द कर तो अशुभ नहीं है।

ग्रामाद्बहिश्च निर्गत्य स्वस्थाने मण्डलं लिखेत्।
सम्पूज्य शकुनं वीक्ष्य काकेङ्गितविनिर्णयः ॥ १६७ ॥

शाल्योदनेन साज्येन कृत्वा पिण्डत्रयं बुधः।
सम्मार्जिते शुभे स्थाने स्थापयेन्मन्त्रपूर्वकम् ॥ १६८ ॥

वर्षाज्ञानाय संस्थाप्यं प्रथम पिण्डके जलम्।
द्वितीये मृत्तिका स्थाप्या तृतीयेऽङ्गारकः पुनः ॥ १६९ ॥

कपिलानां शतं हत्वा ब्राह्मणानां शतद्वयम्।
तत्पापं परिगृह्णासि यदि मिथ्यां वलिं हरेत् ॥ १७० ॥

ग्राम के बाहर दक्षिण को छोड़ के अन्य किसी दिशा में जहां वहुत से कौवे रहते हों ऐसे वटादि वृक्ष के नीचे उत्तम भूमि को गोवर से लीप के मण्डल वनावे। फिर पकाये हुए चावलों में दही तथा घी मिला के तीन पिण्ड वना के "ॐ इरिटि सिरिटि काकचाण्डालिनी स्वाहा" इस मन्त्र से ७। ७ वार मन्त्र के मण्डल में १। १ हाथके अन्तर से रख दे। फिर वर्षा जानने के लिये प्रथम पिण्ड पर जल, दूसरे पर मृत्तिका का ढेला और तीसरे पर कोयला रख दे। फिर कौवे से प्रार्थना करे कि "हे काक आप को मैने यह वलि वर्षा जानने के लिये अर्पण की है सो मेरे प्रश्न को सत्य सत्य वतलाना। यदि मिथ्या कहा तो आप को एक सो गो हत्या ओर दो सौ ब्रह्म हत्या लगेगी"। फिर आप उस स्थान से पीछा हट के खड़ा हो के देखे कि कौवा सब से पहिले किस पिण्ड को खाता है।

शीघ्रं वर्षति पानीये मृतिकायास्तु पिण्डके।
पक्षान्ते खलु वृष्टिः स्यादङ्गारे नास्ति वर्षणम् ॥ १७१ ॥

यदि जल वाला पिण्ड खावे तो वर्षा शीघ्र, मृत्तिका वाला

पिण्ड खावे तो एक पक्ष के पीछे होवे और कोयले वाला पिण्ड खावे तो नहीं होवे। (इसका विशेष खुलासा 'अक्षय तृतीया योग' में देखो।)

यः स्नाति धूल्यांबुविलोक्य रौति वृष्टिं समाशंसति वायसोऽसौ।
जलस्थलप्राणविपर्ययेणवर्षासु वृष्टिर्भयमन्यथा तु ॥ १७२ ॥

यदि कौवा रेती में स्नान कर के जल की ओर देख के शब्द करे तो अवश्य वर्षा होवे। और जो जल में स्नान कर के भूमि की ओर देख के शब्द करे तो वर्षा काल हो तब तो वर्षा होवे और अन्यकाल हो तो किसी प्रकार का भय होवे।

चील से वर्षा का ज्ञान।

टोले मिल के कांवली आय थलन वैठन्त।
अथवा बहु ऊंची चढ़े वर्षा कहो अनन्त ॥ १७३ ॥

बहुत सी चीलें एकत्र हो के भूमि पर आ बैठें वा आकाश में बहुत ऊंची चढ़ें तो चौथे वा पांचवें दिन अधिक वर्षा होवे।

गीध से वर्षा का ज्ञान।

दिन में गीध शब्द जो करे। विघ्न उपावे दुर्भिक्ष परे ॥१७४॥

गीध दिनमें शब्द करे तो कोई विघ्न होवे वा दुर्भिक्ष पड़े।

पपीहा तथा मोर से वर्षा का ज्ञान।

पप्पैयो पिउ पिउ करै मोरां घणी अजग्ग।
छत्र करै मोरयो सिरै नदियां वहै अथग्ग ॥ १७५ ॥

पपीहा (चातक) पिउ २ शब्द करे, वा मोर वार २ शब्द करे तथा पंखों का छत्र बनावे तो बहुत वर्षा होवे।

सारस लखारी तथा तित्तरी से वर्षा का ज्ञान।

सारसरे श्रृङ्गन भ्रमें लख्यारी कुरलेह।
अति तरनावे तित्तरी तव अति ज़ोर मेह ॥ १७६ ॥

सारस पर्वतों के शिखरों पर भ्रमे, लखारी शब्द करे वा तित्तरी अति ज़ोर से शब्द करे तो वर्षा होवे।

बगुला आदि पक्षी तथा तीतर से वर्षा का ज्ञान।

खग पंखा फैलाय उझकि चौंच पवना भखे।
तीतर गूंगा थाय इन्द्र धडूके माघ जी ॥ १७७ ॥

बगुलादि पक्षी पंख फैला के बैठे तथा चोंच से वायु को भक्षण करे, वा तीतर शब्द न करे तो वर्षा होवे।

कीट प्रकरण।

चींटी से वर्षा का ज्ञान।

कीड़ी कण आषाढ़ में बाहर डाले आन।
वर्ष भला वर्षा बहुत भीलन कहा बखान ॥ १७८ ॥

चींटियें यदि पहिले से संग्रह किये हुये धान्य को आषाढ़ में अपने बिल से बाहर डाल दें तो संवत् उत्तम तथा वर्षा बहुत होवे॥

कीड़ी कण आषाढ़ में दर ले जाती देख।
तौ अन्न तृण का काल तहं भीलन कहा विशेष ॥ १७९ ॥

और जो बाहर नहीं डालें किन्तु अधिक संग्रह के लिये धान्यादि को बाहर से दर में ले जावें तो अन्न तथा घास कुछ भी पैदा नहीं होवे, ऐसा दुर्भिक्ष पड़े॥

कीड़ी मुख में अंड ले दर तज भूमि भ्रमन्त।
वर्षा ऋतु विशेष यों जल थल ठेल भरन्त ॥ १८० ॥

याम दोय के तीन में के यों दिनन प्रमाण।
करे मेघ की वृष्टि अति कहे नन्द निर्वाण ॥ १८१ ॥

वर्षा काल में बिना किसी कारण के यदि चींटिये अपने

अण्डों को मुख में लेकर भूमि पर इधर उधर फिरें तो २। ३ प्रहर में वा २। ३ दिन में निश्चय वहुत वर्षा होवे।

मकड़ी से वर्षा का ज्ञान।

मकड़ी जाल गुंभार में मेघ दृष्टि अति होय।
जाले वृक्षों पर करे मेघ स्वल्प ही होय ॥ १८२ ॥

वर्षा काल के प्रारम्भ में मकड़ी कोठे आदि के भीतर जाले बनावे तो वर्षा वहुत तथा वाहर कहीं वृक्षादि पर वनावे तो वर्षा कम होवे। और वर्षा काल के अन्त में जब वृक्षादि पर जाला वनाना प्रारम्भ कर दे तब वर्षा काल समाप्त हुआ जाने।

सांडे से वर्षा का ज्ञान।

धुर आषाढ़े दूवरे सांडा जाय पंयाल।
दर मुख दपटे गार से वर्षा होय विशाल ॥ १८३ ॥

वर्षा काल के प्रारम्भ में सांडा दुर्वल हो जावे और अपने दर में घुस के भीतर से दर का मुख मिट्टी से वन्द कर लेवे तो वर्षा वहुत होवे।

सांडा शीतल भय थकी पैठे जाय पंयाल।
दर मुख मूंदन कठिन दे ले घासन की गाल ॥ १८४ ॥

सांडा वर्षा काल के प्रारम्भ की शीतल पवन के भय से ज़मीन में घुस के दर को घास मिट्टी आदि से वहुत मजबूत वन्द कर देवे तो वर्षा वहुत होवे।

सांडा दर दपटे नहीं काया मैमत होय।
निश्चय दुर्भिक्ष जानिये कहें भील सब कोय ॥ १८५ ॥

सांडे यदि दर का मुख वंद नहीं करें किन्तु शरीर से पुष्ट हुये हुये जहां तहां दिखाई दें तो वर्षा नहीं होवे, जिस से दुर्भिक्ष पड़े।

मेंडक से वर्षा का ज्ञान ।

दादुर पानी छोड़ के बाहर बैठे आय ।
अथवा गंजे ज़ोर से वर्षा करे अन्याय ॥ १८६ ॥

जिस हौज़ आदि में मेंडक रहते हों उस में लकड़ी की छोटी २ सीढ़ियें आधी पानी में और आधी बाहर रहें ऐसे रख दे। जब मेंडक पानी से निकल के उन सीढ़ियों पर आ बैठे वा बहुत ज़ोर से शब्द करे तो वर्षा होने वाली जाने।

जलौका से वर्षा का ज्ञान ।

स्थिर चञ्चल ऊपर चढ़े यों जल में की जोख ।
शान्त तूफ़ानी वृष्टि का क्रम से जानो योग ॥ १८७ ॥

एक जलोख को काच की बड़ी बोतल में डाल दे, फिर उस बोतल को स्वच्छ पानी से मुंह तक भर दे तथा उस में कुछ काली मिट्टी वा शक्कर डाल दे (जिस से जलोख को ख़ूराक मिले); फिर उस का मुख महीन कपड़े से ढांक कर बांध दे। परन्तु ८। ८ दिन से बोतल में का पानी निकाल के उसे धो के दूसरा पानी आदि भर दे। फिर इस जलोख की चेष्टा को देखता रहे। यदि वह जलोख बोतल के पैंदे में शान्ति से जा बैठे तो हवा शान्त, और जो नीचे से ऊपर तथा ऊपर से नीचे अति चपलता से घूमती रहे तो तूफ़ान, और जो बोतल के मुख पर आ बैठे तो वर्षा होने वाली जाने।

मच्छी से वर्षा का ज्ञान ।

जल मच्छी अति ऊछले फड़ा फड़ी अति होय ।
ज्यों लों ज़ोरे मेघ अति कहें लोग सब कोय ॥ १८८ ॥

मच्छियें यदि जल के ऊपर बहुत ज़ोर से उछलें तो वर्षा होवे ।

छोटी मच्छी तथा मगर से वर्षा का ज्ञान।

झींगा मच्छी तरवरे मगर युद्ध अति शोर ।
याम दोय के तीन में चढ़े घटा चहुं ओर ॥ १८९ ॥

छोटी मच्छी जल के ऊपर तड़फे, वा मगर आपस में युद्ध करें वा शोर मचावें तो २ वा ३ प्रहर में चारों ओर वर्षा की घटा चढ़े।

सर्प से वर्षा का ज्ञान।

सर्प जु निगले सर्प को श्याम श्वेत का भेद।
काल पड़े काला गिले सम्वत् करे सफ़ेद॥ १९०॥

काला सर्प यदि श्वेत सर्प को निगल जावे तो दुर्भिक्ष पड़े और जो श्वेत सर्प काले सर्प को निगल जावे तो सुभिक्ष होवे।

जिस वर्ष रेलिआ सांप बहुत हो उस वर्ष वर्षाकाल में जोर जोर से वर्षा होवे।

सांप गोहिड़े मेंडक चींटी तथा मकोड़े से वर्षा का ज्ञान।

सांप गोहिड़े डेडुरे कीड़ी मकोड़े जान।
दर छोड़े स्थल पर भ्रमें मेहा मुक्ति बखान॥ १९१॥

सांप गोहिड़ा मेंडक चींटी वा मकोड़ा अपने दर से निकल के भूमि पर इधर उधर फिरने लगे तो शीघ्र वर्षा होवे।

गिरगट मक्खी तथा तिंवरी से वर्षा का ज्ञान।

गिरगट रंग विरंग हो मक्खी चटके देह।
माकड़ियें चहचह करें तब अति ज़ोरे मेह॥ १९२॥

गिरगट बार बार रंग बदले, मक्खी मनुष्यों की देह पर चपके वा तिंवरी लगातार शब्द करे तो वर्षा ज़ोर से होवे।

मक्खी मच्छर डांस तथा विषैले जन्तुओं से वर्षा का ज्ञान।

मक्खी मच्छर डांस हों माघ ज़माना जान।
उपजें ज़हरी जानवर काल तना सहि धान॥ १९३॥

जिस वर्ष में मक्खी मच्छर वा डांस अधिक उत्पन्न हों उस वर्ष में सुभिक्ष होवे और जो विषैले ज़न्तु अधिक उत्पन्न हों तो दुर्भिक्ष पड़े।

दीमक कसारी तथा छिपकली से वर्षा का ज्ञान।

उदेई ऊठे घनी कस्यारी चमचाय ।
रातों बोले विसमरी इन्द्र महोत्सव आय ॥ १९४ ॥

दीमक अधिक निकले, कसारी बहुत शब्द करे, वा रात्रि में छिपकली शब्द करे तो वर्षा होवे।

भूकम्प प्रकरण ।

ज्योतिष् शास्त्र में भूकम्प का फल वायु, अग्नि, पृथ्वी और जल तत्व के आधार पर माना है। इन तत्वों का अधिकार एक तो वेला पर और एक नक्षत्रों पर है जैसे-दिनके अगले २ प्रहर पर वायुका, पिछले २ प्रहर पर अग्नि का, रात्रि के पहिले २ प्रहर पर पृथ्वी का और पिछले २ प्रहर पर जल तत्व का। ऐसेही अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा और स्वाति इन ७ नक्षत्रोंपर वायुका; भरणी, कृत्तिका, पुष्य, मघा पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा और पूर्वा भाद्रपदा इन ७ पर अग्नि का; रोहिणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अभिजित्, श्रवण और धनिष्ठा इन ७ पर पृथ्वी का और आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, पूर्वाषाढा, शतभिषा, उत्तरा भाद्रपदा और रेवती इन ७ पर जल तत्व का अधिकार है ।

इन में वायु तथा अग्नि तत्व तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, वायु अग्नि आदि का उपद्रव कारक हैं और पृथ्वि तथा जल तत्व सुवृष्टि, सुभीक्ष, खेम, कल्याण आदि शुभ फलकारक है। यदि भूकम्प के समय वेला और नक्षत्र दोनो किसी एक ही तत्व के हों तब तो ठीक उसी तत्व के अनुसार शुभ वा अशुभ फल होता है किन्तु इन में एक तो शुभ फल कारक और एक अशुभ फल कारक हो तो फिर दोनों ही के फलों का नाश हो जाता है अर्थात् भूकंपका कुच्छ भी शुभाशुभ फल नहीं होता है।

अन्तरिक्षके निमित्त।

वाय्वभ्रसन्ध्या दिग्दाह परिवेप तमांसिच ।
खपुरं चेन्द्रचापं च तद्विन्द्यादन्त रिक्षजम् ॥ १९५ ॥

वायु, वादल, सन्ध्या फूलना, दिग्दाह (दिशाओं का फूलना), परिवेप (सूर्य तथा चन्द्र के कुण्डल), अन्धकार, गन्धर्व नगर और इन्द्र धनुप आदि अन्तरिक्ष के निमित्त हैं।

वायु प्रकरण ।

ज्ञेयो वातश्च योगेन देशे वर्ष शुभा शुभम् ।
तेनाय वलवान्सर्वे जलयोगेभ्य इष्यते ॥ १९६ ॥

संवत् का अच्छा वुरा होना वर्षा के आधीन है और न्यूनाधिक वर्षा होने में वायु मुख्य कारण है। अर्थात् जिन जिन देशों में वायुकी अनुकूलता होवे वहां २ सुवृष्टि और प्रतिकूलता होवे वहां २ अनावृष्टि होती है। इसलिये वायुका ज्ञान होना परमावश्यक है।

वातस्तु त्रिविधः प्रोक्तः पावकः स्थापकोऽपरः ।
तृतीयो ज्ञापको वृष्टेः स्थानाङ्गे मध्यसङ्ग्रहात् ॥ १९७ ॥

वर्षा जानने के लिये शास्त्रकारोंने वायु के तीन भेद कहे हैं हैं (१) पावक, (२) स्थापक, और (३) ज्ञापक।

आद्यस्तूत्पादकोऽभ्रादेः परो नविशरारु कृत् ।
तृतीयो भाविनी वृष्टिं पूर्वमेव निवेदयेत् ॥ १९८ ॥

दिशाओं से सम्बन्ध रखनेवाला पावक वायु वादलों को उत्पन्न करता है, ऋतुओं से सम्बन्ध रखनेवाला स्थापक वायु वादलों को जहां तहां ले जाता है और तिथियों से सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञापक वायु आगे होनेवाली सुभिक्ष दुर्भिक्षोपयोगी वर्षा को पहिले से वतलाता है।

तत्काल दृष्टि कृत्कालान्तरे वाद्योपि च द्विधा ॥ १९९ ॥

वादलों को उत्पन्न करनेवाले पावक वायु के दो भेद हैं। एक तो बहुधा वर्षा कालमें वादलों को उत्पन्न करते ही तत्काल वर्षा करता है (जिनका निर्णय मेघ तथा सन्ध्या प्रकरण में करेंगे), और दूसरा शीतकाल में वादलों को उत्पन्न कर के बहुत मुद्दत पीछे वर्षा करता है (इन वादलों का निर्णय मेघ गर्भ प्रकरण में करेंगे)।

पावक (पृथक् २ दिशाओं की) वायु से वर्षा का ज्ञान।

जब कभी वायु बहुत ज़ोर का चले तो जाने कि ४०० कोश के भीतर कहीं वर्षा ओले वा वर्फ गिरता है, क्योंकि इन कारणों के विना वायु ज़ोर से कभी भी नहीं चलता है। इसमें यह क्रम है कि-वायु पूर्व का हो तो दक्षिण में, उत्तरका हो तो पूर्व में, पश्चिम का हो तो उत्तर में और दक्षिण का हो तो पश्चिम में वर्षा आदि होते हैं। क्योंकि वायु की गति सदा अप्रदक्षिण (पूर्व से उत्तर, उत्तर से पश्चिम, पश्चिम से दक्षिण और दक्षिण से पूर्व की ओर गोलाकार) होती है।

अग्निकोण वा दक्षिण का वायु वर्षा काल में चले तब तो वादलों को विखेर देता है किन्तु अन्य काल में चले तो तत्काल वादलों को उत्पन्न कर देता है।

पूर्वस्यामथ वोदीच्यांपवनः शीघ्र वृष्टये।
दक्षिणस्यां वृष्टिनाशं पश्चिमायां विलम्बकः ॥ २०० ॥

वायु पूर्व वा उत्तर का हो तो तत्काल वर्षा, दक्षिण का हो तो वर्षा का नाश, और पश्चिम का हो तो विलम्ब से वर्षा होवे।

आग्नेयो विग्रहं वन्हेर्भयं वृष्टि विघातनम्।
नैर्ऋतः पवनो यावत्तावत्कुर्यान्महा तपम् ॥ २०१ ॥

वायु अग्निकोण का हो तो अग्नि का भय तथा वर्षा का नाश और नैऋत्यकोण का हो तो गर्मी का वहुत ज़ोर होवे।

वायव्यो वायु कुरुते वृष्टिं पवन संयुताम्।
ततस्तीडा मत्कुणाद्या इतयो जीव तर्पणम् ॥ २०२ ॥

वायु वायव्यकोण का हो तो वायु सहित वर्षा तथा टीड खटमल आदि जीवों की उत्पत्ति होवे।

ऐशानः पवनो विश्वहिताय जलवृष्टये।
आनन्दन्नन्दयेल्लोके वायुचक्रमिदम्मतम् ॥ २०३ ॥

वायु ईशानकोण का हो तो जगत् में कल्याण तथा आनन्द करने योग्य उत्तम वर्षा होवे।

आग्नेयां न कदापीष्टं ईशानः सर्वदा शुभः।
नैर्ऋतो विग्रहं रोगं दुर्भिक्षं कुरुते भयम् ॥ २०४ ॥

वायु अग्निकोण का कभी श्रेष्ट नहीं ईशान कोण का सदा श्रेष्ट और नैर्ऋत्यकोण का विग्रह रोग दुर्भिक्ष आदि उपद्रव करता है।

महतोपि समुद्भूतः सतडित्साभि गर्जितः।
मेघान् विहनने वायुर्नैर्ऋतो दक्षिणाग्निजः ॥ २०५ ॥

नैर्ऋत्य दक्षिण वा अग्निकोण का वायु यदि २ घड़ी तक भी चलता रहे तो विजली तथा गाज से युक्त महान् मेघोंको भी छिन्न भिन्न कर दे, अर्थात् वर्षा को बिलकुल रोक दे।

पूर्ववातो भवेत्पूर्वं पश्चाद्भवति दक्षिणः।
त्रीणि दिनानि हित्वा च पश्चाद्वर्षन्ति नित्यशः ॥ २०६ ॥

पूर्व दिशाका चलता हुआ वायु बन्द हो के पश्चिम का चलने लगे तो तीन दिनके बाद वर्षा प्रारम्भ हो जावे।

उत्तरो वहते वायुः पश्चाद्भवति पूर्वतः।
पञ्चदिनानि हित्वा च पश्चाद्वर्षन्ति सर्वतः ॥ २०७ ॥

उत्तर दिशा का चलता हुआ वायु वन्द हो के पूर्व का चलने लगे तो पांच दिन के बाद वर्षा होवे।

पश्चिमो वहते वायुः पश्चाद्भवति नैर्ऋतः।
वातवृष्टिं च मुञ्चन्ति स्तोकं जलं विनिर्दिशेत् ॥ २०८ ॥

पश्चिम का चलता हुआ वायु बन्द हो के नैर्ऋत्य का चलने लगे तो वायु ज़ोर का चले तथा थोड़ी वर्षा होवे।

जो चौवाया चहुं दिशां जब तब बाजे जोय।
तो निश्चय कर जानिये कहूंक वर्षे तोय ॥ २०९ ॥

जब कभी चारों दिशाओं का वायु जोर से चले तो जाने कि कहीं वर्षा हो रही है।

ग्रह कुण्डल धनु कछु न हो वहे चौ वाया वाय।
दूर दिशान्तर वर्षती लावे घटा उड़ाय ॥ २१० ॥

सूर्य चन्द्र आदि ग्रहों के कुण्डल न होवे तथा इन्द्र धनुष भी न हुआ होवे ओर वायु चारों दिशाओं का बहुत ज़ोर से चले तो जाने कि कहीं दूर देश में वर्षा हो रही है सो यहां आनेवाली है।

स्थापक (पृथक् २ ऋतुओंमें पृथक् २ दिशाओं का) वायु से वर्षा का ज्ञान।

हेमन्ते दक्षिणो वायुः शिशिरे नैऋतः शुभः।
वसन्ते वारुणः श्रेष्ठः फलदायी शरत्सु सः ॥ २११ ॥

हेमन्त ऋतु (मिगशिर पौष) में दक्षिण का शिशिर ऋतु (माघ फाल्गुन) में नैऋत्यका और वसन्त ऋतु (चैत्र वैशाख) में पश्चिम का वायु श्रेष्ठ, तथा शरद ऋतु (आश्विन कार्त्तिक) में पश्चिम के वायु से फलों की वृद्धि होवे।

शरत्काले तु पूर्वस्य समीरः फल नाशनः।
वसन्ते चोत्तरो वायुः फल पुष्पाणि नाशयेत् ॥ २१२ ॥

शरद् ऋतु में पूर्व के और वसन्त ऋतु में उत्तर के वायु से फल तथा फूलों का नाश होवे।

पृथक् २ महिनोंमें पृथक् २ दिशाओं की वायु से वर्षा का ज्ञान।

नभसे मुख्यतः प्राच्यो श्रावणे चोत्तरानिलः।
वृष्टिं दृढतरं कुर्या च्छेपमासेषु वारुणः ॥ २१३ ॥

मुख्य कर के भाद्रपद में पूर्वके, श्रावण में उत्तर के, और आषाढ़ तथा आश्विन में पश्चिम के वायु से वहुत दिनोंतक वर्षा होती है।

आषाढ़ां वायव चलै श्रावण पूरव वाय ।
भाद्रवड़ै पश्चिम चलै अन्न महूंगो थाय ॥ २१४ ॥

आषाढ़ में वायव्य का श्रावण में पूर्व का और भाद्रवे में पश्चिमका वायु चले तो वर्षा की कमी से धान्य महंगा होजावे।

आषाढ़ा वायव चलै कवहुंक उत्तर वाय ।
श्रावण में ईशानड़ी (तो) भाद्रव कोरो जाय ॥ २१५ ॥

आषाढ़ में वायव्यकोण का वायु चले तथा कमी २ उत्तर का भी चले और श्रावण में ईशान का चले तो भाद्रवा में वर्षा नहीं होवे।

आषाढ़ां दक्षिण चलै श्रावण पूरव वाय ।
भाद्रवड़ै उत्तर चलै पाणी परत न थाय ॥ २१६ ॥

आषाढ़ में दक्षिण का श्रावण में पूर्व का और भाद्रवा में उत्तर का वायु चले तो वर्षा विलकुल नहीं होवे।

आषाढ़ा नैऋत चलै श्रावण दक्षिण वाय ।
अग्नि कोण आसोज में ऊभी साख सुखाय ॥ २१७ ॥

आषाढ़ में नैऋत्यका श्रावण में दक्षिण का और आसोजमें अग्निकोण का वायु चले तो वर्षा की कमी से खेतियें सूख जावें।

अग्नि कोण श्रावण में वाजै। भाद्रवड़े नैऋत नाहिं गाजै ।
जो वर्षै तो लूंवां वरसै । गाज वीजकितहू नाहिं दरसै॥ २१८॥

श्रावण में अग्निकोण का और भाद्रवा में नैऋत्य का वायु चले तो सूर्य की धूप अधिक पड़े किन्तु वर्षा कहीं नहीं होवे।

श्रावण वाजै पश्चिम वाय । भाद्रवड़ै नैऋत भरणाय ।
आश्विन पूरव फल सब झड़ै । फूलमार कै कीड़ो पड़ै ॥२१९॥

श्रावण में पश्चिमका भाद्रवे में नैऋत्य का और आसोज में पूर्व का वायु चले तो फल फूल झड़ें तथा कीड़े पड़ें।

श्रावण में नैऋत चलै भाद्रव दक्षिण वाय।
आसोजां पूरव चलै ऊभी साख सुखाय॥ २२०॥

श्रावण में नैऋत्य का भाद्रवे में दक्षिण का और आसोज में पूर्व का वायु चले तो वर्षा की कमी से खेतियें सूख जावें।

भाद्रवड़ै पूरव पवन अग्नि कोण की धार।
कांना काचर काकड़ी पोटे जाय जवार॥ २२१॥

भाद्रवे में पूर्व वा अग्निकोण का वायु चले तो काचरे ककड़ी आदि फलों में कीड़े पड़े तथा ज्वार की खेतियों में रोग हो जावे।

जो भाद्रवड़ै दक्षिण वाजै। वाय वीजला गोरम गाजै।
धूजै धरती थरकै नाग। सोखै नदियां सूखै बाग॥ २२२॥

भाद्रवे में दक्षिण का वायु चले और निर्जल बिजली चमके तथा विना वादलों के आकाश गाजे तो वर्षा के अभाव से नदी तालाव आदि सूख जाने से बाग बगीचे सूख भी जावें॥

कहै फोग सुण माघ जी भाद्रव पश्चिम वाय।
खंडे (तो) कोरो करवरो मंडै (तो) झड़ी लगाय॥२२३॥

भाद्रवे में यदि पश्चिम का वायु चले तो वर्षा बन्द हो जावे परन्तु जो कभी प्रारम्भ हो जावे तो बहुत दिनों तक वर्षती रहे॥

भाद्रवड़ै चारूं दिशां वाजै आठूं कूण।
आया मेह उड़ाय दै परज रहै सिर धूण॥ २२४॥

भाद्रवे में यदि चारों दिशाओं वा चारों कोणों का वायु चले तो वरसने को आई हुई घटा को भी वहां से कहीं अन्यत्र ले जावे॥

श्रावण वाजै सूरियो भाद्रवड़े परवाई ।
आसोजां में पश्चिम वाजै कातिक साख सवाई ॥ २२५ ॥

यदि श्रावण में उत्तर वा वायव्य का भाद्रवे में पूर्व वा ई-शान का और आसोज में पश्चिम वा नैऋत्य का वायु चले तो कार्तिक में पकने वाली खेतियें बहुत अच्छी पैदा होवें ॥

ज्ञापक (तिथियों से सम्बन्ध रखने वाले) वायु का निर्णय दीपमालिका आदि योग प्रकरण में किया जावेगा।

मेघ प्रकरण ।

शुक्ल वर्णो यदा मेघः शान्तायां दिशि दृश्यते ।
स्निग्धो मन्द गतिश्चापि निवृत्तः स जलावहः ॥ २२६ ॥

रक्तवर्णो यदा मेघः शान्तायां दिशि दृश्यते ।
स्निग्धो मन्दगतिश्चापि तदा विद्याज्जलं शुभम् ॥ २२७ ॥

यदाञ्जननिभो मेघः शान्तायां यदि दृश्यते ।
स्निग्धो मन्द गतिश्चापि तदा विद्याज्जलं शुभम् ॥ २२८ ॥

पीत पुष्प निभो यस्तु यदा मेघः समुत्थितः ।
शान्तायां यदि दृश्येत स्निग्धो वर्षं तदुच्यते ॥ २२९ ॥

श्वेत लाल पीत वा कृष्ण वर्ण के स्निग्ध और मन्द गति वाले मेघ यदि §शान्त दिशा में हों तो श्रेष्ठ वर्षा होवे ॥

स्निग्ध वर्णाश्च ये मेघाः स्निग्धनादाश्च ये सदा ।
मन्दगाः सुमुहूर्त्ताश्च ये सर्वत्र जलावहाः ॥ २३० ॥

---

§ सूर्य आठ प्रहर में आठों दिशामें पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर और ईशान में इस क्रम से रहता है । अतः सूर्य जिस प्रहर में जिस दिशा में हो उस प्रहर में वह तथा उसके आगे पीछे की ये तीनों दिशायें दीप्त कहाती हैं और शेष पाच दिशायें शान्त कहाती है ।

स्निग्ध वर्ण वाले, मधुर गाजने वाले, वा मन्दगति वाले मेघ यदि अच्छे मुहूर्त्त में उत्पन्न हों तो सर्वत्र वर्षा होवे॥

मेघाः सविद्युताश्चैव सुगन्धाः सुस्वराश्च ये।
सुवेषाश्च सुवाताश्च सुधायाश्च सुभिक्षदाः॥ २३१॥

विजली युक्त, सुगन्धि वाले, श्रेष्ठ गाजने वाले, उत्तम वर्ण वाले, शुभ वायु से युक्त और मीठा जल वर्षने वाले मेघों से सुभिक्ष करने वाली उत्तम वर्षा होवे॥

रूक्षा वातं प्रकुर्वन्ति व्याधयो विष्ट गन्धिनः।
कुशब्दाश्च विवर्णाश्च मेघा वर्षं न कुर्वति॥ २३२॥

मेघ यदि रूक्ष हों तो वायु चले दुर्गन्धित हों तो रोग करे और टूटे फूटे वर्त्तन के शब्द जैसे गाजने वाले तथा ख़राब वर्ण के हों तो वर्षा नहीं होवे॥

पृथक् २ दिशाओं के मेघों से वर्षा का ज्ञान।

दक्षिणां दिशिमाश्रित्य आग्नेयां यदि गच्छति।
कुङ्कमोदक संकासा नील वर्ण समप्रभा॥ २३३॥
वृष्टिर्भवति तत्रैव निर्दिशेन्नात्र संशयः॥ २३४॥

पीले तथा नीले वर्ण के मेघयदि दक्षिण दिशासे आग्निकोण को जावें तो अवश्य वर्षा होवे।

दक्षिणां दिशिमाश्रित्य मेघा गच्छन्ति चोतरे।
सर्ववातं वहेत्क्षिप्रं पश्चात्पानीय मादिशेत्॥ २३५॥

दक्षिण के मेघ यदि उत्तर को जावें तो तत्काल चारोंओर का वायु चले और पीछे वर्षा होवे।

दक्षिण सूं उत्तर चलै उत्तर दक्षिण धाय।
खंडे (तो) कोरो करवरो मंडे (तो) झड़ी लगाय॥ २३६॥

यदि मेघ उत्तर से दक्षिण में वा दक्षिण से उत्तर में आमने सामने आवें जावें तो यातो वर्षा वन्द हो जावे वा झड़ी लगे।

पश्चिमे न यदा कोणे मेघा दृश्यन्ति चञ्चलाः ।
वृष्टिर्विरजका ज्ञेया अल्पोदकाः समादिशेत् ॥ २३७ ॥

नैऋत्य कोणके मेघ (उतारू बादल) यदि बहुत शीघ्रता से आवें तो वर्षा नहीं होवे वा अल्प होवे।

पश्चिमेन यदा मेघा आगच्छन्ति समाकुलाः ।
वातवृष्टिर्भवेन्निसं पश्चात्पानीय मादिशेत् ॥ २३८ ॥

पश्चिम से बहुत से मेघ यदि एक के पीछे एक लगातार आवें तो एक दिन वायु चलके फिर वर्षा होवे।

आमा सामा बादला पूरव पश्चिम जाय ।
पंच मिलावा माघ जी दश दिन झड़ी लगाय ॥ २३९ ॥

यदि मेघ पूर्व और पश्चिम में आमने सामने आवें जावें तो १० दिन तक वर्षा की झड़ी लगे।

भूरे बादल पहाड़ से मन्द गति से धाय ।
शान्त ओर से आय कें तूफ़ान ओर को जाय ॥ २४० ॥

भूरे रंगके तथा पहाड़ जैसे बड़े २ और मन्द गति वाले बादल (जैसे ज्येष्ठ में होते हैं) जिस ओर से आवें उस ओर मौसिमी हवा शान्त है ओर जिस और जावें उस और मौसिम तूफ़ानी है ऐसा जाने।

रूई सदृश बादले तूफ़ान में से आय ।
हवा शान्त जिस देश में ताहि ओर को जाय ॥ २४१ ॥

पींजी हुई रुई जैसे हलके तथा श्वेत बादल (जैसे चैत्र वैशाख में होते हैं) जिस ओरसे आवें उस और मौसिम तूफ़ानी है और जिस ओर जावें उस ओर मौसिमी हवा शान्त है।

रूई से बहु बादले शीघ्र गती से आय ।
उत्तर वायव्य कोण के निश्चय जल बरसाय ॥ २४२ ॥

ऐसे वादल जो कभी दक्षिण नैऋत्य तें आय।
शीत काल ओले गिरें वर्षा जल वरसाय ॥ २४३ ॥

पींजी हुई रुई जैसे हलके तथा श्वेत बादल बहुत शीघ्र गति से एक के पीछे एक ऐसे लगातार यदि उत्तर वा वायव्य कोण से आने लगें तो ८ प्रहर के भीतर २ अवश्य वर्षा होवे। और जो दक्षिण वा नैऋत्य कोण से आनें लगें तो शीत काल हो तव तो ओले गिरें और वर्षा काल हो तो जल वर्षे।

बिजली प्रकरण।

यत्र देशे सुभिक्षं स्याद्विद्युत्तत्रैव गच्छति।
दिक्षु भूता स्थिता गुप्ता मेघानां मार्ग दर्शनी ॥ २४४ ॥

जिस देशमें सुभिक्ष होने वाला हो उसी देशकी ओर बिजली जाती है। तथा सम्पूर्ण दिशाओं में गुप्त रूपसे स्थित होके भी मेघों का मार्ग दिखाती है।

पृथक् २ दिशाओं की बिजली से वर्षा का ज्ञान।

ऐन्द्री तु जलदा विद्युदाग्नेयां जलनाशनी।
याम्या स्वल्पजला प्रोक्ता नैऋत्यता डमर प्रदा ॥ २४५ ॥
प्रभूत जलदा ज्ञेया वारुणी सर्व शस्यदा।
वातं करोति वायव्या कौवेरी जलदा स्मृता ॥ २४६ ॥
ईशानी शीघ्रवृष्टिः स्यादेतद्विद्युल्लक्षणम् ॥ २४७ ॥

बिजली पूर्व दिशा की हो तो श्रेष्ठ वर्षा, अग्नि कोण की हो तो वर्षा का नाश, दक्षिण की हो तो स्वल्प वर्षा नैऋत्य की हो तो अनावृष्टि का भय, पश्चिम की हो तो सम्पूर्ण खेतियों की वृद्धि करने योग्य अधिक वर्षा. वायव्य की हो तो वायु की वर्षा

उत्तर की हो तो उत्तम वर्षा और ईशान की हो तो तत्काल वर्षा होवे ॥

उत्तरस्यां यदा विद्युत्स्वर्ण वर्णा प्रदीप्यते ।
सा विद्युज्जलदा ज्ञेया शीघ्रं मेघमहोदये ॥ २४८ ॥

उत्तर दिशाकी विजली यदि स्वर्ण के समान वर्ण वाली और दीप्तिमान् हो तो शीघ्र वर्षा होवे।

स्निग्धा स्निग्धेषु चाभ्रेषु विद्युत्प्राच्या जलावहा ।
कृष्णा तु कृष्ण मार्गस्था वात वर्षा वहा भवेत् ॥ २४९ ॥

यदि स्निग्ध वर्ण के वादल में स्निग्ध वर्ण की विजली हो तो वर्षा होवे और जो कृष्ण वर्णकी तथा कृष्ण मार्ग (दक्षिण) की हो तो वायु का भय होवे।

अथ रश्मिमती स्निग्धा हरिता हरित प्रभा ।
दक्षिणा दक्षिण वर्त्या कुर्या दुदक सम्प्लवम् ॥ २५० ॥

अति प्रकाश वाली स्निग्ध वर्ण की तथा हरे प्रकाश वाली हरे रंग की वा प्रदक्षिण फिरने वाली विजली हो तो अवश्य वर्षा होवे।

रश्मीति मेदिनी भाति विद्यदपर दक्षिणा ।
हरितालातिरोमा च सोदकं पाययेद्बहुः ॥ २५१ ॥

पृथ्वी पर भी प्रकाश करने वाली हरतालके सदृश पीत वर्ण की बहुत किरणों वाली विजली यदि दक्षिण के विना किसी दिशा की हो तो बहुत वर्षा होवे।

अपारेण तु याविद्युच्चरते चोत्तरा मुखी ।
कृष्णाभ्र संश्रिता स्निग्धा सापि कुर्याज्जलागमम् ॥ २५२ ॥

कृष्ण वर्ण के बादलों में स्निग्ध वर्ण की वहुत विस्तार वाली विजली यदि उत्तर की ओर जावे तो अवश्य वर्षा होवे।

या तु पूर्वोत्तरा विद्युद्दक्षिणा च पलायते ।
चरेत्यूर्द्धंच तिर्यक् सापि श्वेता जलावहा ॥ २८३ ॥

ईशान में की श्वेत बिजली यदि शीघ्र गति से दक्षिण की ओर वा नीचे वा तिरछी जावे तो वर्षा होवे ।

तथैवोर्द्धमधो वापि स्निग्धा रश्मिमती भृशम् ।
सद् घोषा वाप्यघोषा वा विद्युत्सर्वेषु वर्षति ॥ २८४ ॥

ऐसे ही ऊंचे वा नीचे जाने वाली श्रेष्ठ गाजने वाली वा नहीं गाजने वाली किन्तु स्निग्ध बिजली हो तो वर्षा होवे ।

पृथक् २ रंग की बिजली से वर्षा का ज्ञान ।

नीला ताम्रा च गौराश्च श्वेता वा भ्रान्तरं चरेत् ।
सङ्घोषा मन्दघोषा वा विद्यादुदक सम्प्लवम् ॥ २८५ ॥

नीली, श्वेत, ताम्र वा गौर वर्ण की और एक बादल से दूसरे बादल में जाने वाली मधुर गर्जना से युक्त बिजली हो तो बहुत वर्षा होवे ।

वाताय कपिला विद्युदातपा याति लोहिनी ।
कृष्णा सर्वविनाशय दुर्भिक्षाय सिता भवेत् ॥ २८६ ॥

यदि बिजली का रंग कपिल हो तो वायु अधिक चले, लाल हो तो धूप अधिक तपे, काला हो तो सर्व नाश करे और श्वेत हो तो दुर्भिक्ष पड़े ।

पृथक् २ ऋतुओं में वर्षा नहीं करने वाली बिजली ।

शिशिरे नैव वर्षन्ति रक्ता पीताश्च विद्युतः ।
नीलाः श्वेता वसन्ते च न वर्षन्ति कदाचन ॥ २८७ ॥

हरिता मधु वर्णाश्च ग्रीष्मे रूक्षाश्च निश्चलाः ।
भवन्ति ताम्र गौराश्च वर्षा स्त्वपि निरोधकाः ॥ २८८ ॥

शारदी नाभि वर्षन्ति नील वर्णाश्च विद्युतः ।

हेमन्ते श्याम ताम्रास्तु तद्विद्युन्निर्जला स्मृता ॥ २५९ ॥

शिशर ऋतु में लाल वा पीली, वसन्त ऋतु में नीली वा श्वेत, ग्रीष्म ऋतु में हरी वा शहद के रंगकी रूक्षी तथा निश्चल, वर्षा ऋतु में ताम्र वा गौर रंग की शरद् ऋतु में नीली और हेमन्त ऋतु में श्याम वा ताम्र रंग की-ऐसी निर्जल बिजलियों से वर्षा न होवे।

रक्ता रक्तेषु चाभ्रेषु हरिता हरितेषुं च ।
नीला नीलेषु चाभ्रेषु वर्षन्ति निष्टयोनिषु ॥ १६० ॥

किन्तु उक्त ऋतुओं में भी जो लाल बादल में लाल, हरे बादल में हरी वा नीले बादल में नीली बिजली हो तो वर्षा होवे। क्यों कि बादल और बिजली का एक ही रंग हो । तो वह निर्जल नहीं होती ।

बिजली से मेघों का सम्बन्ध ।

विद्युद्विना न गर्जन्ति वर्षन्ति न जल वहुः ॥ २६१ ॥

बिजली के विना मेघ कभी नहीं गर्जते तथा वर्षा भी विशेष नहीं करते।

मूशलो गजनीलश्च दुन्दुभिः क्रम पार्थिवौ ।
पर्जन्यो माधवो धाता महा मेघाः प्रकीर्तिताः ॥ २६२ ॥

वर्षन्ते न च गर्जन्ति न च विद्युद्वशं गताः ।
प्लावयन्ति जगत्सर्व जलेनैकेन वर्षणात् ॥ २६३ ॥

परन्तु मूशल, गज, नील, दुन्दुभि, विक्रम, पार्थिव, पर्जन्य, माधव और धाता ये १० प्रकार के महा मेघ गाज तथा बिजली के विना ही बहुत वर्षा करते हैं जैसे बम्बई आदि में ।

शास्त्रकारों ने बादलो के अनेक भेद बतलाये हैं किन्तु इस विद्या का प्रचार उठ जाने से इन के फल बतलाना तो दूर रहा लोग इनका पहचानना भी भूल गये ॥

गाज प्रकरण।

आदित्योदयवेलायां गर्जते च दिनं यदि।
प्रहर द्वयेनवर्षन्ति अथवा वातमेव च॥ २६४॥

सूर्योदय के समय मेघ गाजे तो दो प्रहर में अवश्य वर्षा होवे परन्तु कदाचित वर्षा न हो तो वायु जोर से चले।

परभात को गाजियो महा पुरुष को भाषियो॥ २६५॥

जैसे महात्माओं का वचन ख़ाली नहीं जाता वैसे ही प्रभात का गाजा हुआ भी ख़ाली नहीं जाता अर्थात् वर्षा करता ही है।

विन वादल अम्बर गजे गाजत जा दिशि जाय।
करे भंग उस देश में लोकन हाय तिराय॥ २६६॥

यदि वादलों के विना केवल आकाश ही गाजे तो उस गाज का शब्द जिस देश की ओर जावे उस देश का नाश तथा वहां की प्रजा को कष्ट होवे।

जलादि वर्षा प्रकरण।

रवि उगणते भड्डुली जो जल विन्दु पड़न्त।
पहर चौथै कै पांचवें घन सगलै वर्षन्त॥ २६७॥

यदि सूर्योदय के समय जल की बूंदें वर्षे तो ४ थे ५ वें प्रहर में सर्वत्र वर्षा होवे।

रवि आथमते भड्डुली जो जल विन्दु पड़न्त।
दिन चौथे के पांचवें निश्चय घन वर्षन्त॥ २६८॥

यदि सूर्यास्त के समय जल की बूंदें वर्षे तो ४ थे ५ वें दिन में अवश्य वर्षा होवे।

क्षारं वा कटुकं वाथ दुर्गन्ध शस्य नाशनम्।
यस्मिन्देशे ऽभिवर्षन्ति स वै देशो विनश्यति॥ २६९॥

यदि क्षार शुक्त वा कड़ुवा वा दुर्गन्ध वाला पानी वर्षे तो खेतियों को हानि तथा देश का नाश होवे।

मैंडक मच्छ ममोल्या वर्षे। होय सुभिक्ष जगत् सब हर्षे।
शंख सिंगोल्या वर्षे गार। कहे फोगसी काल विचार ॥२७०॥

जल की वर्षा के साथ यदि मैंडक मच्छी वा ममोल्या (वीर बहूटी) वर्षे तो सुभिक्ष होवे और जो शंख सिंगोल्या वा ओला वर्षे तो दुर्भिक्ष पड़े।

सन्ध्या प्रकरण।

अहोरात्रस्य या सन्धिः सा च सन्ध्या प्रकीर्त्तिता।
द्विनाडिका भवेत्साधुर्यावदा ज्योति दर्शनम् ॥ २७१ ॥

दिन और रात्रि का मेल होता है उस दो घड़ी के समय को सन्ध्या कहते हैं। अर्थात् तारों का तेज़ मन्द पड़ने से आधे सूर्यके उदय तक प्रातः सन्ध्या और आधे सूर्य के अस्त होने से तारों का प्रकाश होने तक सायं सन्ध्या का समय है।

सर्व काल में सन्ध्या के शुभाशुभ लक्षण।

नभोऽमलं शुभ दिशः पद्मारुण समप्रभाः।
मारुतो वाति सुरभिः सुखदो मृदु शीतलः ॥ २७२ ॥
एषा सन्ध्या शुभा ज्ञेया विपरीता ऽशुभा स्मृता।
रूक्षा च सविकारार्का क्रव्याद खर नादिता ॥२७३॥

सन्ध्या के समय आकाश निर्मल हो, दिशा कमल के सदृश लाल हो, वायु सुगन्धित सुख स्पर्श मन्द तथा शतिल हो तो शुभ और इन से विपरीत हो अथवा रूक्ष हो तथा विकारवान सूर्य हो और मांसहारि पशु पक्षियों के भयानक शब्द से युक्त हो तो अशुभ जाने।

पृथक २ ऋतुओं में सन्ध्या के शुभाशुभ लक्षण ।

शिशिरादिषु वर्णः शोण पीत सित चित्र पद्मरुधिरनिभाः ।
प्रकृतिभाव सन्ध्या स्वर्तौ शस्ता विकृति रन्या॥ २७४ ॥

सन्ध्या शिशिर ऋतु में लाल, वसन्त में पीत ग्रीष्म में श्वेत, वर्षा में चित्र विचित्र, शरद् में पीत लाल और हेमन्त में रुधिर के वर्ण की तथा ऊपर कहे लक्षणों से युक्त हो तो शुभ और ऋतु के तथा प्रकृति के लक्षणों से विपरीत हो तो अशुभ जाने।

सन्ध्या समय के चिन्हों से वर्षा का ज्ञान ।

द्योतयन्ति दिशाः सर्वा यदा सन्ध्या प्रदृश्यते ।
महामेघस्तदा विद्याद्भद्र वाहुवचो यथा ॥ २७५ ॥

सन्ध्या के समय यदि सम्पूर्ण दिशायें प्रकाशमान् हो जावें तो शीघ्र वर्षा होवे।

सन्ध्याकाले स्निग्धा दण्डतडिन्मत्स्यपरिधिपरिवेषाः ।
सुरपतिचापैरावतरविकिरणाश्चाशुवृष्टिकराः ॥ २७६ ॥
अनावृष्टिर्भयं रोगं दुर्भिक्षं राजविद्रवम् ।
रूक्षायां विकृतायां च सन्ध्यायामपि निर्दिशेत् ॥ २७७ ॥

सन्ध्या के समय छोटा इन्द्र धनुष्, ऐरावत (वड़ा इन्द्र धनुष्), दण्ड (इन्द्र धनुष् के सदृश छोटा सा सीधा टुकड़ा), मत्स्य (मच्छी के आकार का इन्द्र धनुष् का छोटा टुकड़ा), परिधि (इसं के लक्षण 'प्रति सूर्य प्रकरण' में देखो), सूर्य वा चन्द्रमा के कुण्डल, विजली, वा सूर्य की किरणें (मोघें)—इत्यादि चिन्ह यदि स्निग्ध हो तो तत्काल वर्षा होवे; और जो रूक्ष हों तो अनावृष्टि भय रोग दुर्भिक्ष आदि उपद्रव होवे।

ऊगमतेरो माछलो आथमतेरी मोघ ।
भीम कहै सुण भड्डली वर्षा तणो संजोग ॥ २७८ ॥

प्रातः सन्ध्या के समय मच्छ और सायं सन्ध्या के समय मेघ हो तो वर्षा होवे।

सन्ध्या के समय पृथक् २ दिशाओं के मेघों से वर्षा ज्ञान।

पूर्वेण यदि सन्ध्यायां मेघैः सञ्छादितं नभः।
केचिदुष्ट्रसदृशमेघाः केचित्कुञ्जरसन्निभाः २७९ ॥

केचिद्वैशूकरमुखाः केचिद् वृषभसन्निभाः।
केचिद्वै पर्वताकाराः केचिन्महिषसादृशाः ॥ २८० ॥

ईदृग्वर्णाश्च ये मेघा वर्षन्ते नात्र संशयः।
पञ्चरात्रं भवेद् वृष्टिः सप्तरात्रं तथैव च ॥ २८१ ॥

सन्ध्या के समय पूर्व दिशा में यदि पर्वत हाथी, ऊंट, महिष बैल वा शूकर, आदि के आकार के स्निग्ध तथा बहुत बड़े बादल हों तो ५ वा ७ रात्रि तक अवश्य वर्षा होवे।

ईशान्यान्तु यदा मेघा जायन्ते यदि पार्वति।
वर्षते चार्द्धरात्रेण सन्ध्याकाले च वर्षति ॥ २८२ ॥

पूर्वोक्त मेघ यदि ईशान कोण में हों तो प्रातः वा सायं सन्ध्या वा आधी रात्रि के समय वर्षा होवे।

उत्तरे यदि सन्ध्यायां दृश्यते गिरिमालिका।
तृतीये दिवसे वृष्टिः पर्वमेकं तु वर्षति ॥ २८३ ॥

उत्तर दिशा में यदि शिखर दार पर्वतों की माला के आकार के मेघ हों तो तीसरे दिन वर्षा होवे।

वायव्यां तु यदा मेघा जायन्ते यदि पार्वति।
वातवृष्टिं विजानीयाद्दिवारात्रौ न संशयः ॥ २८४ ॥

पूर्वोक्त मेघ यदि वायव्य कोण में हो तो एक दिन रात्रि तक वायु ज़ोर से चले।

पश्चिमे यदि सन्ध्यायां दृश्यन्ते पर्वता यदि।

गिरनारस्य सदृशा दृश्यन्ते यदि पार्वति ॥ २८५ ॥
वर्षते सप्तरात्रं वा त्रिरात्रं पंचरात्रकम् ।
द्रोणमेकं तु जायंते वर्षते नात्र संशयः ॥ २८६ ॥

पश्चिम दिशा में यदि गिरनार पर्वत के सदृश ऊंचे २ शिखर दार बहुत से मेघ हों तो ३ वा ५ वा ७ रात्रि तक एक द्रोण जल वर्षे। (द्रोणादि तौल वर्षा का जल मापने का प्राचीन आर्य माप है, इस का ख़ुलासा आगे प्रवर्षण प्रकरण में लिखेंगे।)

नैर्ऋत्यां तु यदा मेघा उत्पद्यन्ते घनाकुलाः ।
मेघास्तु कथिता देवि ईदृशास्तु प्रकीर्त्तिताः ॥ २८७ ॥

पूर्वोक्त मेघ यदि नैर्ऋत्य कोण में हो तो दूसरे दिन प्रातः काल से शीघ्र जाने वाले रूक्ष बादल बहुत आने लगें।

दक्षिणे यदि मेघाः स्युः कोटिन्यारसमप्रभाः ।
वर्षते सप्तरात्रं वा त्रिरात्रं पञ्चरात्रकम् ॥ २८८ ॥

दक्षिण दिशा मे यदि कोटिनार सदृश प्रकाशवान् मेघ हों तो ३ वा ५। ७ रात्रि तक वर्षा होवे।

आग्नेय्यां दिशि मेघाः स्युर्जायते वर वर्णिनि ।
रात्रौ च वर्षते मेघ इति च भैरवोऽब्रवीत् ॥ २८९ ॥

पूर्वोक्त मेघ यदि अग्नि कोण में हों तो उसी रात्रि में वर्षा होवे।

मोघ (सूर्य किरण) प्रकरण ।

यद्यमोघकिरणाः सहस्रगोरस्तभूधरकरा इवोच्छ्रिताः ।
भूसमं च रसते यदाम्बुदस्तन्महद्भवति वृष्टिलक्षणम् ॥ २९० ॥

सूर्य की अमोघ संज्ञक किरणें जो मोघों के नाम से प्रसिद्ध हैं वे सायं सन्ध्या के समय बहुत हों लम्बी हों और बादल भी बहुत नीचे २ चलते हों तो वर्षा बहुत होवे।

सूरज केरे ऊगते अस्त समय नित देख ।
तीन रेख मेह दूर है तुरत एक ही रेख ॥ २९१ ॥

प्रातः तथा सायं सन्ध्या के समय यदि मोघ की तीन रेखाएं हों तो वर्षा विलम्ब से और जो एक ही रेखा हो तो तत्काल होवे ।

सांझ समय उत्तर दिशा लम्बी खंचे मोघ ।
दिवस तीसरे माघजी जल का जानो योग ॥ २९२ ॥

सायं सन्ध्या के समय यदि मोघ की रेखा पश्चिम से निकल कर उत्तर की ओर वहुत दूर तक जावे तो तीसरे दिन वर्षा होवे ।

उत्तर मोघ मयंक जल आभे आरख एह ।
सीयाले तो सी पड़े वरषाले तो मेह ॥ २९३ ॥

परन्तु उत्तर की ओर जाने वाली मोघ वर्षा काल में हो तब तो वर्षा होवे किन्तु शीत काल में हो तो ठंढी पड़े ।

पश्चिम सूं रेखा चलै खण्ड रहै अध वीच ।
ग्वाल कहै सन्ध्या समय मेघ मचासी कीच ॥ २९४ ॥

सायं सन्ध्या के समय यदि मोघ की रेखा पश्चिम से निकल कर आकाश के वीच में आधी दूर तक ही जाने वाली (बांडी मोघ) हो तो अवश्य वर्षा होवे ॥

प्रातहि पूरब रेख चलि उत्तर पश्चिम जाय ।
दश दिन लों वायू चले मँडे तो झड़ी लगाय ॥ २९५ ॥

प्रातः सन्ध्या के समय यदि मोघ की रेखा पूर्व से निकल के उत्तर वा पश्चिम की ओर जावे तो १० दिन तक वायु चले, और जो कभी वर्षा का प्रारम्भ हो जावे तो झड़ी लगे ॥

दिग्दाह प्रकरण ।

चहुं दिशि हो दिग्दाह जब विना अग्नि अति झाल ।
प्रातहुं सन्ध्या के समय देखि दाह विकराल ॥ २९६ ॥

प्रातः तथा सायं सन्ध्या के समय चारों दिशाओं में विकराल अग्नि की ज्वाला के सदृश बहुत तेज दार सन्ध्या फूले उसे दिग्दाह कहते हैं ।

लाख गयन्दन धड़ पड़े तुरकन मांहि विशाल ।
दिल्ली मण्डल के विषय वहे तेग विकराल ॥ २९७ ॥

धरा धरा की धमक अति करा करी की मार ।
अथवा वृष्टि नहीं हुवे पड़े अचिन्ता काल ॥ २९८ ॥

ऐसी दिग्दाह हो तो याती राजाओं में संग्राम होवे अथवा अनावृष्टि से भयानक दुर्भिक्ष पड़े ।

नभः प्रसन्नं विमलानि भानि प्रदक्षिणं वाति सदागतिश्च ।
दिशां च दाहः कनकावदातो हिताय लोकस्य सपार्थिवस्य ॥ २९९ ॥

दिग्दाह के समय यदि आकाश निर्मल, तारे स्निग्ध, वायु की गति सदा प्रदक्षिण, और दिग्दाह का वर्ण सुवर्ण जैसा तेजस्वी हो तो प्रजा तथा राजाओं का कल्याण होवे ॥

——×——

तारा प्रकरण ।

तारका यत्र दृश्यन्ते निर्मलस्फटिकोपमाः ।
तन्मासं वर्षते मेघस्ततः सुभिक्षमादिशेत् ॥ ३०० ॥

तारे यदि निर्मल स्फटिक मणि के सदृश चमकें तो उस मास में सुभिक्ष करने योग्य उत्तम वर्षा होवे ॥

तारकानां यथा वर्णं दृश्यते जलसन्निभम् ।
सप्तरात्रं यदा कुर्यात् तदा वृष्टिं समादिशेत् ॥ ३०१ ॥

तारे ७ दिन तक यदि जल के सदृश झिगमिलाते हुये चमकते रहें तो अवश्य वर्षा होवे॥

तारा अति झलमल करै अम्बर हरियो रंग।
जल नहिं मावै मेदनी अनभै मेघ उपंग ॥ ३०२ ॥

तारे बहुत झगमगाहट करें और आकाश का रंग भी हरा हो जावे तो बहुत वर्षा होवे॥

तारका यत्र दृश्यन्ते सूक्ष्मावालिसमप्रभाः।
सुभिक्षं तत्र दृश्यन्ते अर्घन्तत्रैव वर्द्धते ॥ ३०३ ॥

तारे यदि बहुत छोटे २ तथा तेज युक्त दीखें तो सुभिक्ष होवे जिस से धान्यादि के भाव मन्दे हो जावें॥

स्थूलाकारास्तु दृश्यन्ते तारका अञ्जनप्रभाः।
अर्घ्यास्तत्रैव नश्यन्ति दुर्भिक्षं तत्र दृश्यते ॥ ३०४ ॥

तारे यदि बहुत बड़े २ तथा विना तेज के और सुरमे जैसे काले रंग के दीखें तो दुर्भिक्ष पड़े जिस से धान्यादि के भाव तेज हो जावें॥

परिवेष (कु

पृथक [illegible] २ [illegible] से [illegible]।

चा[illegible]

अवि[illegible]

सूर्य [illegible]
पक्षी के, [illegible]
ऋतु में [illegible]
जल के [illegible]
और स्निग्ध [illegible]

वर्णैनैकेन [illegible]

स्वर्तौ सद्यो वर्षं करोति पीतश्च दीप्तार्कः ॥ ३०६ ॥

ऋतु के अनुकूल एक ही वर्ण का वड़ा, स्निग्ध, और छुरी की धार के सदृश तीक्ष्ण वादलों से युक्त, वा तेज युक्त सूर्य के पीले रंग का कुण्डल हो तो उसी दिन वर्षा होवे।

सूर्य वा चन्द्र के १ । २ वा ३ कुण्डल से वर्षा का ज्ञान ।

चन्द्र सूर्य के कुण्डल होय । पांच प्रहर में इर्षे तोय ।
निपट नज़ीक़ लाल रंग साजे । घड़ी पलक महा मेवा गाजे ॥ ३०७ ॥

सूर्य वा चन्द्रमा के कुण्डल हो तो पांच प्रहर में वर्षा होवे और वहुत नज़दीक़ तथा लाल रंग का हो तो वहुत ही शीघ्र वर्षा होवे।

दो दो कुण्डल सूर्य शशि एक नजीक एक दूर ।
माघा झड़ी लगावसी नादियां वहसी पूर ॥ ३०८ ॥

सूर्य वा चन्द्रमा के एक नज़दीक और एक दूर ऐसे २।२ दो दो कुण्डल हों तो वर्षा की झड़ी लगे जिस से नदियें वहुत ज़ोर से वहें।

पंच रंगे कुण्डल हुवें निशा नाथ के दोय ।
यों रवि के दिन तीन लों पृथ्वी परलय होय ॥ ३०९ ॥

चन्द्रमा वा सूर्य के पंच रंगे २ । २ कुण्डल ३ दिन तक होते रहें तो वहुत अधिक वर्षा होवे।

कुण्डल तीन सूर्य शशि होय । भर भाद्रवड़ै वरसै तोय ।
गलै साख नादियां गरणावै । पृथ्वी पर पाणी नहिं मावै ॥ ३१० ॥

भादों में यदि सूर्य वा चन्द्रमा के २ । २ कुण्डल हों तो वहुत ही अधिक जल वर्षे जिस से खेतियें गलने लगें।

शशि सूरज के कुण्डिया नित नित नवला होय ।
कै टीडी कै कातरो भेद बताऊं तोय ॥ ३११ ॥

यदि चन्द्रमा वा सूर्य के नित्य प्रति नवीन २ कुण्डल हो तेरहें तो खेतियों की हानि करने वाले टीड़ी कातरा आदि जीवों की उत्पत्ति होवे।

चन्द्र के कुण्डल से वर्षा का ज्ञान।

चन्द्र कुण्ड जब देखिये चले पवन परभात।
चन्द्र कुण्ड युत जलहरी कहूंक वर्षा वात ॥ ३१२ ॥

चन्द्रमा के केवल कुण्डल ही हो तब तो दूसरे दिन वायु चले और जो चन्द्रमा के नज़दीक जलहरी भी हो तो वर्षा होवे।

धूम्र कुण्ड रजनीश के एक नज़ीक़ एक दूर।
माघा मेह बरसे नहीं धरा उड़ावे धूर ॥ ३१३ ॥

चन्द्रमा के धूएं के रंग के (एक नज़दीक़ और एक दूर ऐसे) २ कुण्डल हों तो वर्षा नहीं होवे किन्तु वायु ज़ोर का चले।

चौड़ा कुण्डल तारा मांहीं। वाय बजावे वर्षा नाहीं।
जो वर्षे तो झड़ी लगावे। सोता नाग पाताल जगावे ॥३१४॥

यदि चन्द्रमा के बहुत बड़ा कुण्डल हो और उस के भीतर कोई तारा भी दीखे तो वायु चले किन्तु वर्षा नहीं होवे और जो कभी वर्षा होवे तो फिर बहुत ज़ोर की झड़ी लगे।

यदा तु सोममुदितं परिवेषो रूणद्धिहि।
जीमूतवर्णः स्निग्धश्च महामेघस्तदा भवेत् ॥ ३१५ ॥

यदि नवीन उदय हुये चन्द्रमा के बादल जैसे रंग का स्निग्ध कुण्डल हो तो बहुत वर्षा होवे।

सूर्य के कुण्डल से वर्षा का ज्ञान।

कुण्डल श्वेत सूर्य के होय। निश्चय एक तथा हों दोय।
तौ परचण्ड पवन चढ़ आवे। टूटे वृक्ष दसों दिश धावे ॥३१६॥

यदि सूर्य के १ वा २ श्वेत कुण्डल हो तो वृक्षों को गिराने वाला बहुत ज़ोर का वायु चले।

सूरज के कुण्डल हुवै घण दूरो घण रंग ।
मेघ घुमंडै माघ जी घर घर चालै गंग ॥ ३१७ ॥

यदि सूर्य के अनेक रंग का वहुत वड़ा कुण्डल हो तो वर्षा वहुत होवे।

चन्द्र और सूर्य के कुण्डल से वर्षा का ज्ञान ।

शशि के कुण्डल एक हो रवि के कुण्डल दोय ।
दिवस तीसरे माघ जी निश्चय वर्षा होय ॥ ३१८ ॥

चन्द्रमा के १ और सूर्य के २ कुण्डल हों तो तीसरे दिन अवश्य वर्षा होवे।

शशि के कुण्डल श्वेत हो सूरज के हो लाल ।
ग्वाल भने सुन माघजी वर्षे द्वादस माल ॥ ३१९ ॥

चन्द्रमा के श्वेत और सूर्य के लाल कुण्डल हों तो वर्षा वहुत होवे।

शशि के कुण्डल लाल हो सूरज के हो श्वेत ।
उमड़े पर वर्षे नहीं धरा उड़ावे रेत ॥ ३२० ॥

चन्द्रमा के लाल और सूर्य के श्वेत कुण्डल हो तो वर्षा कुछ भी नहीं होवे किन्तु वायु जोर का चले ।

अन्धकार प्रकरण ।

वर्षे रेणु धुन्ध हो जाय । पवन विना अंधियारा थाय ।
पक्ष सात में वर्षे मेह । पैंज बांध जोषी कह देय ॥ ३२१ ॥

वायु के विना ही रेत की आंधी से अन्धकार हो जावे तो तो सातवें पक्ष में अवश्य वर्षा होवे।

उदर मेघ का पड़े तुसार । सुनो माघ जी इस का सार ।
पक्ष ग्यारवें वर्षा होय । निश्चय पैंज बांध कर सोय ॥ ३२२ ॥

यदि चन्द्रमा वा सूर्य के नित्य प्रति नवीन २ कुण्डल हो तेरहें तो खेतियों की हानि करने वाले टीड़ी कातरा आदि जीवों की उत्पत्ति होवे।

चन्द्र के कुण्डल से वर्षा का ज्ञान।

चन्द्र कुण्ड जब देखिये चले पवन परभात।
चन्द्र कुण्ड युत जलहरी कहूंक वर्षा वात ॥ ३१२ ॥

चन्द्रमा के केवल कुण्डल ही हो तब तो दूसरे दिन वायु चले और जो चन्द्रमा के नज़दीक जलहरी भी हो तो वर्षा होवे।

धूम्र कुण्ड रजनीश के एक नज़ीक एक दूर।
माघा मेह वरसे नहीं धरा उड़ावे धूर ॥ ३१३ ॥

चन्द्रमा के धूएं के रंग के (एक नज़दीक और एक दूर ऐसे) २ कुण्डल हों तो वर्षा नहीं होवे किन्तु वायु ज़ोर का चले।

चौड़ा कुण्डल तारा मांहीं। वाय वजावे वर्षा नाहीं।
जो वर्षे तो झड़ी लगावे। सोता नाग पाताल जगावे ॥३१४॥

यदि चन्द्रमा के वहुत वड़ा कुण्डल हो और उस के भीतर कोई तारा भी दीखे तो वायु चले किन्तु वर्षा नहीं होवे और जो कभी वर्षा होवे तो फिर वहुत ज़ोर की झड़ी लगे।

यदा तु सोममुदितं परिवेषो रूणद्धिहि।
जीमूतवर्णः स्निग्धश्च महामेघस्तदा भवेत् ॥ ३१५ ॥

यदि नवीन उदय हुये चन्द्रमा के बादल जैसे रंग का स्निग्ध कुण्डल हो तो वहुत वर्षा होवे।

सूर्य के कुण्डल से वर्षा का ज्ञान।

कुण्डल श्वेत सूर्य के होय। निश्चय एक तथा हों दोय।
तौ परचण्ड पवन चढ़ आवे। टूटे वृक्ष दसों दिश धावे ॥३१६॥

यदि सूर्य के १ वा २ श्वेत कुण्डल हो तो वृक्षों को गिराने वाला वहुत ज़ोर का वायु चले।

सूरज के कुण्डल हुवै घण दूरो घण रंग ।
मेघ घुमंडै माघ जी घर घर चालै गंग ॥ ३१७ ॥

यदि सूर्य के अनेक रंग का वहुत वड़ा कुण्डल हो तो वर्षा वहुत होवे।

चन्द्र और सूर्य के कुण्डल से वर्षा का ज्ञान ।

शशि के कुण्डल एक हो रवि के कुण्डल दोय ।
दिवस तीसरे माघ जी निश्चय वर्षा होय ॥ ३१८ ॥

चन्द्रमा के १ और सूर्य के २ कुण्डल हों तो तीसरे दिन अवश्य वर्षा होवे।

शशि के कुण्डल श्वेत हो सूरज के हो लाल ।
ग्वाल भने सुन माघजी वर्षे द्वादस माल ॥ ३१९ ॥

चन्द्रमा के श्वेत और सूर्य के लाल कुण्डल हों तो वर्षा वहुत होवे।

शशि के कुण्डल लाल हो सूरज के हो श्वेत।
उमड़े पर वर्षे नहीं धरा उड़ावे रेत ॥ ३२० ॥

चन्द्रमा के लाल और सूर्य के श्वेत कुण्डल हो तो वर्षा कुछ भी नहीं होवे किन्तु वायु जोर का चले ।

अन्धकार प्रकरण ।

वर्षे रेणु धुन्ध हो जाय । पवन विना अंधियारा थाय ।
पक्ष सात में वर्षे मेह । पैंज वांध जोषी कह देय ॥ ३२१ ॥

वायु के विना ही रेत की आंधी से अन्धकार हो जावे तो तो सातवें पक्ष में अवश्य वर्षा होवे।

पुहर मेघ का पड़े तुसार । सुनो माघ जी इस का सार ।
पक्ष ग्यारवें वर्षा होय । निश्चय पैंज वांध कर सोय ॥ ३२२ ॥

धुहर वा ओस पड़े (जिस से अन्धकार हो जावे) तो ग्यारहवें पक्ष में अवश्य वर्षा होवे।

गन्धर्व नगर प्रकरण।

आकाश में नगरादि के आकार के चिह्न दीख पड़ें उसे गन्धर्व नगर कहते हैं।

यदा शुभ्रैर्घनैर्मिश्रं सविद्युत्सवलाहकम्।
गन्धर्वनगरं स्निग्धं विद्यादुदकसम्प्लवम् ॥ ३२३ ॥

विजली सहित श्वेत वादलों से वना हुआ यदि स्निग्ध वर्ण का गन्धर्व नगर दीखे तो वर्षा वहुत होवे॥

कपिलं शस्यघाताय माञ्जिष्ठा हरणं गवाम्।
अव्यक्तवर्णं कुरुते वलक्षोभं न संशयः ॥ ३२४ ॥

गन्धर्व नगर का वर्ण यदि कपिल हो तो खेतियों का नाश, लाल हो तो गवादि पशुओं का नाश, और मिश्र हो तो राजाओं की सेना का भय होवे॥

इन्द्र धनुष् प्रकरण।

वृष्टिं करोत्यवृष्ट्यां वृष्टिं वृष्ट्यां निवारत्यैन्द्र्याम्।
पश्चात्सदैव वृष्टिं कुलिशभृतचापमाचष्टे ॥ ३२५ ॥

इन्द्र धनुष् यदि पश्चिम में हो तो वर्षा होवे। और जो पूर्व में हो तो पहिले वर्षा नहीं होती हो तव तो वर्षा होवे और जो वर्षती हो तो वन्द हो जावे।

प्रभाते पश्चिमेन्द्रस्य धनुश्च यदि दृश्यते।
वारुणे चैव नक्षत्रे शीघ्रं वर्षति माधवः ॥ ३२६ ॥

शतभिषा नक्षत्र के दिन प्रभात के समय यदि पश्चिम में धनुष् हो तो तत्काल वर्षा होवे।

जो इन्द्रायुध पूर्व दिशि रवि आथमणे थाय ।
वारह पहरे भड्डली पोवी नीर न माय ॥ ३२७ ॥

सूर्य अस्त के समय यदि पूर्व दिशा में धनुष् हो तो १२ प्रहर में वहुत वर्षा होवे ॥

जो उत्तरादा धनुष् मंडावे । वर्षा ऊठ अचानक आवे ।
दक्षिण धनुष् मेह नहिं आवे । जो वर्षे तो झड़ी लगावे ॥३२८॥

यदि धनुष् उत्तर में हो तो अचानक ही वर्षा आवे, और जो दक्षिण में हो तो वर्षा नहीं आवे, किन्तु जो कभी आ जावे तो झड़ी लगे ।

अर्ध विम्ब आकाश में इन्द्र धनुष् जो होय ।
ग्वाल कहे सुन माघ जी अन्न न मोले कोय ॥ ३२९ ॥

यदि आकाश के मध्य भाग में धनुष होवे तो धान्य कोई नहीं खरीदे अर्थात् अधिक धान्य उत्पन्न करने योग्य उत्तम वर्षा होवे।

दोय चार छः मच्छ हों धनुष् मंडे सुन एक ।
पवन चले परला पड़े माघ भविष्यत् लेख ॥ ३३० ॥

यदि धनुष् तो एक और साथ ही २ । ४ वा ६ मच्छ हों तो वायु के सहित वहुत ज़ोर की वर्षा होवे।

चन्द्र शुक्र गुरु भौम शनि तने धनुष् इन वार।
दिन चौथे के पांचवें वरसे मूसलधार ॥ ३३१ ॥

यदि रवि, चन्द्र, मंगल, वृहस्पति वा शुक्र वार के दिन धनुष हों तो ४ थे वा ५ वें दिन वहुत वर्षा होवे।

प्रति सूर्य प्रकरण।

एक प्रहर दिन चढ़े तक वा पिछले एक प्रहर दिन से सन्ध्या तक सूर्य से उत्तर दक्षिण ऊपर वा नीचे थोड़े अन्तर पर

सूर्य के सदृश गोलाकार प्रकाश पड़ता है उसे प्रति सूर्य (दूसरा सूर्य) वा परिधि कहते हैं।

प्रतिसूर्यकः प्रशस्तो दिवसकृदृतु वर्णसमभः स्निग्धः।
वैडूर्यनिभः स्वच्छः शुक्लश्च क्षेमसौभिक्षः॥ ३३२॥

प्रति सूर्य जिस ऋतु में हो उसी ऋतु की सन्ध्या जैसे वर्ण का वा श्वेत, हरा और स्निग्ध तथा निर्मल हो तो क्षेम कल्याण तथा सुभिक्ष होवे।

दिवसकृतः प्रतिसूर्यो जलकृदुदग्दक्षिणतोऽनिलकृत्।
उभयस्थः सलिलभयं नृपमुपरि निहन्त्यधो जनहा॥ ३३३॥

प्रति सूर्य यदि सूर्य से उत्तर में हो तो वर्षा, दक्षिण में हो तो प्रबल वायु, दोनों दिशाओं में हो तो अति वृष्टि का भय, ऊपर हो तो राजा को और नीचे हो तो प्रजा को क्लेश होवे॥

मेघ गर्भ प्रकरण।

पुमान्स्त्रिगर्भसंयोगाद्विद्युन्मेघस्तथैव च।
गूढः स गर्भशब्देन वाचोऽस्योत्पत्तिरुच्यते॥ ३३४॥

जैसे स्त्री पुरुष के संयोग से गर्भ धारण होते हैं वैसे ही विद्युत् शक्ति और बादल के योग से जल के गर्भ धारण होते हैं; उनकी उत्पत्ति कहता हूं। क्योंकि—

दैवविद्विहितचित्तो द्युनिशं यो गर्भलक्षणे भवति।
तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्याम्बुनिर्देश॥ ३३५॥

जिस दैवज्ञ का चित्त एकाग्र हो के रात दिन गर्भ देखने में लगा रहता है उस की वाणी वर्षा बतलाने में मुनियों की वाणी के तुल्य सदा सर्वदा सत्य होती है, कभी मिथ्या नहीं होती॥

केचिद्वदन्ति कार्त्तिकशुक्लान्तमतीत्यगर्भदिवसाः स्युः।
न तु मन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये॥ ३३६॥

कोई २ दैवज्ञ कार्त्तिक सुदि १५ के पीछे से ही गर्भ धारण होनेका आरम्भ मानते हैं परन्तु यह मत बहुत से आचार्यों का नहीं है; इस लिये गर्गादि महर्षियों के मतानुसार कहता हूं।

मार्गशिरः सितपक्षप्रतिपत्प्रभृतिक्षपाकरेऽषाढाम् ।
पूर्वां वा समुपगते गर्भाणां लक्षणं ज्ञेयम् ॥ ३३७ ॥

मृगशिर सुदि में पूर्वाषाढा नक्षत्र आवे उस दिन से गर्भ धारण होने का समय प्रारम्भ होता है; अतः यहां से गर्भों के लक्षण देखने चाहियें ॥

गर्भों के लक्षण ।

वाताभ्रविद्युत्स्तनितोदकानि सरागसन्ध्या परिवेषचापौ ।
हिमप्रपातः प्रतिसूर्यकश्च दशप्रकारैर्भवतीह गर्भः ॥ ३३८ ॥

१ वायु, २ बादल, ३ बिजली, ४ गाज, ५ थोड़ी सी वर्षा, ६ सन्ध्या फूलना, ७ सूर्य चन्द्र के कुण्डल, ८ इन्द्र धनुष ९ बर्फ़ गिरना, और १० प्रति सूर्य-ये १० लक्षण गर्भों के कहे हैं । इन में पहिले के ५ लक्षणों में से कोई लक्षण होनसे तो गर्भ धारण और पिछले ५ लक्षणों में से कोई लक्षण हो तो गर्भ की पुष्टि होती है। इन में जितने लक्षण अधिक होंगे उतना ही गर्भ बलवान् होगा।

स्वर्तुस्वभावजनितैः सामान्यैर्यैश्च लक्षणैर्वृद्धिः ।
गर्भाणां विपरीतैस्तैरेव विपर्ययो भवति ॥ ३३९ ॥

गर्भों की पुष्टि करने वाले सामान्य तथा काल विशेष के लक्षणों से गर्भों की पुष्टि होती है और इनके विपरीत होने से गर्भों की हानि होती है। अतः उन लक्षणों को आगे कहता हूं।

पुष्टि करने वाले सामान्य लक्षण ।

ह्लादिमृदूदक्शिवशक्रदिग्भवो मारुतो वियद्विमलम् ।
स्निग्धसितबहुलपरिवेषपरिवृतो हिममयूखार्कौ ॥ ३४० ॥

गर्भ धारण के समय उत्तर ईशान या पूर्व का आनन्द दा-

यक तथा मृदु वायु, निर्मल आकाश, और चन्द्र वा सूर्य के स्निग्ध श्वेत तथा बहुत बड़ा कुण्डल हो तो श्रेष्ठ जाने।

पृथुबहुलस्निग्धघनं घनसूची क्षुरकलोहिताभ्रयुतम्।
काकाण्डमेचकाभं वियद्विशुद्धेन्दुनक्षत्रम्॥ ३४१॥

बड़े विस्तार वाले, स्निग्ध, सूई के अग्र भाग जैसे पैनी नोक के, वा उस्तरे की धार जैसे तीक्ष्ण कोरों वाले, लाल, नीले, वा धूम्र वर्ण के बादल; और चन्द्रमा तथा तारे स्वच्छ हों तो श्रेष्ठ जाने॥

सुरचापमिन्द्रगर्जितविद्युत्प्रातिसूर्यकाः शुभाः सन्ध्याः।
शशिशिवशाक्राशास्थाः शान्तरवाः पक्षिमृगसङ्घाः॥ ३४२॥

सन्ध्या के समय इन्द्र धनुष्, मन्द २ गाज, बिजली, वा प्रति सूर्य हो; और उत्तर ईशान वा पूर्व में पक्षी, तथा वन पशु, शान्त शब्द (सूर्य की ओर मुख किये विना मधुर स्वर करें) तो श्रेष्ठ जाने॥

विपुलाः प्रदक्षिणचराः स्निग्धमयूखा ग्रहा निरुपसर्गाः।
तरवश्च निरुपसृष्टाङ्कुरा नरचतुष्पदा हृष्टाः॥ ३४३॥

सूर्यादि ग्रहों के बिम्ब बड़े तथा उत्पात से रहित स्निग्ध किरणो वाले दीखे, तथा जिन नक्षत्रों के उत्तर मे जाना सम्भव हो उन से उत्तर में हो के निकलें, वृक्षों के किसी बाधा के विना नये अंकुर निकलें, तथा मनुष्य और पशु प्रसन्न चित्त हों तो श्रेष्ठ जाने॥

शीतवातश्च विद्युच्च गर्जनं परिवेषणम्।
सर्वगर्भेषु वर्षन्ति निग्रन्थाः साधुदर्शिनः॥ ३४४॥

शीत वायु, बिजली, गाज, और कुण्डल—ये ४ लक्षण विशेष श्रेष्ठ जाने॥

गर्भाणां पुष्टिकराः सर्वेषामेव यो ऽत्र तु विशेषः।
स्वर्त्तुस्वभावजनितो गर्भविवृद्ध्यै तमभिधास्ये॥ ३४५॥

इन उक्त लक्षणों से गर्भों की सदा पुष्टि होती है-अर्थात गर्भ धारण हो उस समय ऐसे लक्षण हों तो श्रेष्ठ हैं ॥ और इन के अतिरिक्त जो अपनी २ ऋतुओं (महीनों) में गर्भों की पुष्टि करने वाले विशेष लक्षण हैं उनको आगे कहता हूं ॥

पुष्टि करने वाले काल विशेष के लक्षण.

पौषे समार्गशीर्षे सन्ध्यारागो ऽम्बुदाः परिवेषाः ।
नात्यर्थं मृगशीर्षे शीतं पौषे ऽतिहिमपातः ॥ ३४६ ॥

मृगशिर तथा पौष में सन्ध्या फूलना, कुण्डल से युक्त बादल होना, तथा मृगशिर में तो अत्यन्त शीत और पौष में अत्यन्त हिम (वर्फ) नहीं पड़ना श्रेष्ठ है ॥

माघे प्रबलो वायुस्तुषारकलुषद्युती रविशशाङ्कौ ।
अतिशीतं सघनस्य च भानोरस्तोदयौ धन्यौ ॥ ३४७ ॥

माघ में प्रचण्ड वायु, सूर्य की कान्ति शीतल, चन्द्रमा की कान्ति मलिन, शीत अधिक. और सूर्य का उदय तथा अस्त बादलों में होना श्रेष्ठ है ॥

फाल्गुनमासे रूक्षश्चण्डः पवनो ऽभ्रसम्प्लवाः स्निग्धाः ।
परिवेषाश्चासकलाः कपिलस्ताम्रो रविश्च शुभः ॥ ३४८ ॥

फाल्गुन में रूक्ष तथा प्रचण्ड वायु, सजल बादल, स्निग्ध तथा टूटे हुये कुण्डल और सूर्य का कपिल वा ताम्र वर्ण होना श्रेष्ठ है ॥

पवनघनवृष्टियुक्ताश्चैत्रे गर्भाः शुभाः सपरिवेषाः ।
घनपवनसलिलविद्युत्स्तनितैश्च हिताय वैशाखे ॥ ३४९ ॥

चैत्र में वायु बादल वर्षा तथा कुण्डल होना और वैशाख में वायु बादल बिजली गाज तथा वर्षा होना श्रेष्ठ है ॥

ज्येष्ठमासे रविकरास्तपन्ति प्रचुरो ऽनिलः ।
लूकासमन्वितो वाति घनगर्भस्तदा शुभः ॥ ३५० ॥

ज्येष्ठ में बहुत धूप पड़ना और लू सहित बहुत वायु चलना गर्भों के लिये श्रेष्ठ है ॥

गर्भ धारण में श्रेष्ट बादल ।

पूर्वामुदीचीमीशानीं ये गर्भा दिशिमाश्रिताः ।
ते शस्यवन्तस्तोयाढ्या ये गर्भास्तु सुपूजिताः ॥ ३५१ ॥

गर्भ धारण के समय पूर्व उत्तर वा ईशान में बादल उत्पन्न हों तो वे गर्भ खेतियों की वृद्धि होने योग्य उत्तम वर्षा करते हैं ॥

मुक्तारजतनिकाशास्तमालनीलोत्पलाञ्जनाभासः ।
जलचरसत्वाकारा गर्भेषु घनाः प्रभूतजलाः ॥ ३५२ ॥

बादल यदि मोती वा चांदी जैसे चमक दार श्वेत वा तमाल वृक्ष जैसे नीले पीले वा कमल जैसे नीले वा अञ्जन जैसे काले हों और उनका आकार मगर कछुआ केंकड़ा मच्छी आदि जल में के जीवों के सदृश हो तो वे बादल वहुत जल धारण कर के वर्षने के समय बहुत वर्षते है ॥

कृष्णा नीलाश्च रक्ताश्च पीताः शुक्लाश्च सर्वशः ।
व्यामिश्राश्चापि ये गर्भाः स्निग्धाः सर्वत्र पूजिताः ॥३५३॥

बादल श्वेत, लाल, नीले, पीले, काले, वा मिश्र चाहे जिस वर्ण के हों किन्तु जो स्निग्ध हो वे ही श्रेष्ठ हैं ॥

अप्सराणान्तु सदृशाः पक्षिणां जलचारिणाम् ।
वृक्षपर्वतसंस्थानां गर्भाः सर्वत्र पूजिताः ॥ ३५४ ॥

वापीकूपतडागानि नद्यश्चापि मुहुर्मुहुः ।
पूज्यते तादृशैर्गर्भैस्तोयक्लिप्तधुरावहैः ॥ ३५५ ॥

बादलों का आकार यदि अप्सरा, जल चर पक्षी, वृक्ष, पर्वत, बावड़ी, कूए, तालाब वा नदी आदि के सदृश हो और वे मन्द गति वाले हों उन को श्रेष्ठ जाने ॥

सुसंस्थानाः सुवर्णाश्च सुवेषाः स्वाभ्रजा घनाः ।
सुविन्दवाः स्थिता गर्भाः सर्वे सर्वत्र पूजिताः ॥ ३५६ ॥

गर्भ धारण के समय बादलों की दिशा वर्ण आकार और वर्षात की बूंद श्रेष्ठ हों उनको श्रेष्ठ जाने।

तीव्रदिवाकरकिरणाभितापिता मन्दमारुता जलदाः।
रुषिता इव धाराभिर्विसृजन्त्यम्भः प्रसवकाले॥ ३५७॥

बादल प्रचण्ड धूप से तपें तथा उस समय वायु भी मन्द २ चले तो वे गर्भ पीछे वर्षने के समय बहुत ज़ोर से वर्षें।

गर्भ धारण में नेष्ट बादल।

कृष्णा रूक्षाः सुखण्डाश्च विद्रवन्ति पुनः पुनः।
विस्वरा रूक्षशब्दाश्च गर्भाः सर्वत्र निन्दिताः॥ ३५८॥

काले वर्ण के, रूखे, छोटे २ टुकड़े, वार २ वर्षने वाले, विना शब्द के, वा रूखे शब्द के बादल श्रेष्ठ नहीं होते।

अत्युष्णाश्चातिशीताश्च वहूदका विकृताश्च ये।
वित्रासवन्तः सर्वाभिर्गर्भाः सर्वत्र निन्दिताः॥ ३५९॥

अति गर्मी वाले, अति सर्दी वाले, वहुत जल वरसने वाले, विकृत रूप वाले, वा भय दायक बादल श्रेष्ठ नहीं होते।

बहुवाताश्च छिन्नाश्च विगन्धा दुःप्रदर्शिनः।
अन्धकारसमुत्पन्ना गर्भास्ते ऽपि न पूजिताः ३६०॥

बहुत वायु से युक्त, छिन्न भिन्न हुये, विना सुगन्धि के, देखने में अप्रिय लगने वाले, वा अन्धकार करने वाले बादल श्रेष्ठ नहीं होते।

मन्दवृष्टिरनावृष्टिर्भयं राजपराजयम्।
दुर्भिक्षं मरणं रोगं गर्भाः कुर्वन्ति तादृशाः॥ ३६१॥

ऐसे निन्दित बादल गर्भ धारण के समय जिस देश में हों, उस देश में मन्द वृष्टि वा अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, भय, राज्य का पराजय, मृत्यु, रोग, तथा चोंगटि का उपद्रव होवे।

गर्भ नाश करने वाले उत्पात।

गर्भोपघातलिङ्गान्युल्काशनिपांशुपातदिग्दाहाः।
क्षितिकम्पखपुरकीलककेतुग्रहयुद्धनिर्घाताः॥ ३६२॥

रुधिरादिवृष्टिवैकृतपरिघेन्द्रधनूंषि दर्शनं राहोः।
इत्युपातैरेभिस्त्रिविधैश्चान्यैर्हतो गर्भः॥ ३६३॥

गर्भ धारण के समय यदि उलका गिरे (अनेक प्रकार के तारे टूटें), विजली गिरे, आंधी आवे, दिग्दाह हो, भूमि कम्प हो, गान्धर्व नगर, कीलक (सूर्य में काला दाग़-इस का निर्णय 'दिव्य निमित्त' में करेंगे) वा पुच्छल तारा दीखे, ग्रह युद्ध हो (मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनि इन में से कोई दो ग्रह आकाश में एक दूसरे के विलकुल नज़दीक आ जावें), विना बादल के आकाश गाजे, रुधिर मांस केश हड्डी आदि की वर्षा हो, परिघ (सूर्य के उदय वा अस्त के समय बादल की तिरछी रेखा) हो, सन्ध्या काल के विना इन्द्र धनुष् हो, अथवा सूर्य वा चन्द्रमा का ग्रहण हो-इत्यादि में से कोई हो तो—अथवा भौम, अन्तरिक्ष, और दिव्य-इन तीन निमित्तों में के किसी पदार्थ में उत्पात हो जावे तो गर्भ का नाश हो जाता है। अतः जिस गर्भ का धारण काल में ही नाश हो जाता है वह फिर नहीं वर्षेगा।

गर्भों के स्राव होने (गल जाने) का ज्ञान।

गर्भसमये ऽतिवृष्टिर्गर्भाभावाय निर्निमित्तकृता।
द्रोणाष्टांशे ऽभ्यधिके वृष्टेर्गर्भः स्रुतो भवति॥ ३६४॥

अथवा गर्भ का नाश तो न हो किन्तु गर्भ धारण के समय ही नीचे लिखे कारणों के विना यदि एक द्रोण के आठवें भाग (३० सेंट) से अधिक जल वर्ष जावे तो उस गर्भ का स्राव हो जावे, इस लिये वह भी नहीं वर्षे।

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसङ्क्रमे च।
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गते ऽर्के नियमेन चार्द्राम्॥३६५॥

किन्तु ग्रहों के उदय वा अस्त होने वा एक मण्डल से दूसरे मण्डल में जाने के समय ('शुक्र प्रकरण' में देखो), दो शुभ ग्रहों के मिलने के समय, पूर्णमासी वा अमावस्या के अन्त में, और सूर्य के उत्तरायण तथा दक्षिणायन और आर्द्रा नक्षत्र पर जाने आदि के समय प्रायः वर्षा होती ही है। अतः गर्भ धारण के समय इत्यादि कारणों में से कोई भी कारण हो तो अधिक वर्षा होने से भी गर्भ का स्राव नहीं होता; क्यों कि वह जल इन कारणों से आकाशमें से वर्षा है किन्तु गर्भ में से नहीं वर्षा।

गर्भ प्रसव होने (वर्षने) का काल आदि।

जैसे मनुष्य पशु पक्षी आदि के गर्भ अपने २ समय तक उदर में पक के फिर प्रसव होते हैं, वैसे ही जल रूपी गर्भ अन्तरिक्ष रूपी उदर में ६॥ महीनों में पक के फिर प्रसव होते हैं। अतः—

यन्नक्षत्रमुपते गर्भश्चन्द्रे भवेत् स चन्द्रवशात्।
पञ्चनवते दिनशते तत्रैव प्रसवमायाति॥ ३६६॥

जिस दिन गर्भ धारण हो उस दिन जो नक्षत्र हो वही नक्षत्र ६॥ महीनों से पीछा आवे उसी दिन उस गर्भ में का जल वर्षे।

पञ्चाङ्कचन्द्रा दिवसा निरुक्ता वारश्चतुर्थः करणं तृतीयम्।
योगस्तथा षोडशकस्तदृक्षम् गर्भादिकालः कथितो मुनीन्द्रैः॥ ३६७॥

गर्भ धारण के समय जो तिथि हो वही तिथि. जो नक्षत्र हो वही नक्षत्र. जो वार हो उस से ४ था वार. जो योग हो उस से १६ वां योग और जो करण हो उस से ३ रा करण—प्रायः ये सब ६॥ महीनों से (प्रसव के समय) आ जाते हैं।

सितपक्षभवाः कृष्णे शुक्ले कृष्णा द्युसम्भवा रात्रौ।
नक्तंप्रभवाश्चाहनि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम्॥ ३६८॥

गर्भ धारण शुक्ल पक्ष में हो तो पीछा कृष्ण पक्ष में कृष्ण पक्ष में हो तो शुक्ल पक्ष में, दिन में हो तो रात्रि में, रात्रि में

गर्भ नाश करने वाले उत्पात ।

गर्भोपघातलिङ्गान्युल्काशनिपांशुपातदिग्दाहाः ।
क्षितिकम्पखपुरकीलककेतुग्रहयुद्धनिर्घाताः ॥ ३६२ ॥

रुधिरादिवृष्टिवैकृतपरिघेन्द्रधनूंषि दर्शनं राहोः ।
इत्युपातैरेभिस्त्रिविधैश्चाम्यैर्हतो गर्भः ॥ ३६३ ॥

गर्भ धारण के समय यदि उलका गिरे (अनेक प्रकार के तारे टूटें), विजली गिरे, आंधी आवे, दिग्दाह हो, भूमि कम्प हो, गान्धर्व नगर, कीलक (सूर्य में काला दाग़-इस का निर्णय 'दिव्य निमित्त' में करेंगे) वा पुच्छल तारा दीखे, ग्रह युद्ध हो (मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनि इन में से कोई दो ग्रह आकाश में एक दूसरे के बिलकुल नज़दीक आ जावें), विना बादल के आकाश गाजे, रुधिर मांस केश हड्डी आदि की वर्षा हो, परिघ (सूर्य के उदय वा अस्त के समय बादल की तिरछी रेखा) हो, सन्ध्या काल के विना इन्द्र धनुष् हो, अथवा सूर्य वा चन्द्रमा का ग्रहण हो-इत्यादि में से कोई हो तो—अथवा भौम, अन्तरिक्ष, और दिव्य-इन तीन निमित्तों में के किसी पदार्थ में उत्पात हो जावे तो गर्भ का नाश हो जाता है। अतः जिस गर्भ का धारण काल में ही नाश हो जाता है वह फिर नहीं वर्षेगा।

गर्भों के स्राव होने (गल जाने) का ज्ञान ।

गर्भसमये ऽतिवृष्टिर्गर्भाभावायनिर्निमित्तकृता ।
द्रोणाष्टांशे ऽभ्यधिके वृष्टेर्गर्भः स्रुतो भवति ॥ ३६४ ॥

अथवा गर्भ का नाश तो न हो किन्तु गर्भ धारण के समय ही नीचे लिखे कारणों के विना यदि एक द्रोण के आठवें भाग (३० सेंट) से अधिक जल वर्ष जावे तो उस गर्भ का स्राव हो जावे, इस लिये वह भी नहीं वर्षे।

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसङ्क्रमे च ।
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गते ऽर्के नियमेन चार्द्राम् ॥ ३६५ ॥

किन्तु ग्रहों के उदय वा अस्त होने वा एक मण्डल से दूसरे मण्डल में जाने के समय ('शुक्र प्रकरण' में देखो), दो शुभ ग्रहों के मिलने के समय, पूर्णमासी वा अमावस्या के अन्त में, और सूर्य के उत्तरायण तथा दक्षिणायन और आर्द्रा नक्षत्र पर जाने आदि के समय प्रायः वर्षा होती ही है। अतः गर्भ धारण के समय इत्यादि कारणों में से कोई भी कारण हो तो अधिक वर्षा होने से भी गर्भ का स्राव नहीं होता; क्यों कि वह जल इन कारणों से आकाशमें से वर्षा है किन्तु गर्भ में से नहीं वर्षा।

गर्भ प्रसव होने (वर्षने) का काल आदि।

जैसे मनुष्य पशु पक्षी आदि के गर्भ अपने २ समय तक उदर मे पक के फिर प्रसव होते है, वैसे ही जल रूपी गर्भ अन्तरिक्ष रूपी उदर में ६॥ महीनों में पक के फिर प्रसव होते है। अतः—

यन्नक्षत्रमुपते गर्भश्चन्द्रे भवेत् स चन्द्रवशात्।
पञ्चनवते दिनशते तत्रैव प्रसवमायाति॥ ३६६॥

जिस दिन गर्भ धारण हो उस दिन जो नक्षत्र हो वही नक्षत्र ६॥ महीनों से पीछा आवे उसी दिन उस गर्भ मे का जल वर्षे।

पञ्चाङ्कचन्द्रा दिवसा निरुक्ता वारश्चतुर्थः करणं तृतीयम्।
योगस्तथा षोडशकस्तदृक्षम् गर्भादिकालः कथितो मुनीन्द्रैः॥३६७॥

गर्भ धारण के समय जो तिथि हो वही तिथि, जो नक्षत्र हो वही नक्षत्र, जो वार हो उस से ४ था वार, जो योग हो उस से १६ वां योग और जो कारण हो उस से ३ रा करण—प्रायः ये सब ६॥ महीनों से (प्रसव के समय) आ जाते है।

सितपक्षभवाः कृष्णे शुक्ले कृष्णा द्युसम्भवा रात्रौ।
नक्तंभवाश्चाहनि सन्ध्याजाताश्च सन्ध्यायाम्॥ ३६८॥

गर्भ धारण शुक्ल पक्ष में हो तो पीछा कृष्ण पक्ष में कृष्ण पक्ष में हो तो शुक्ल पक्ष में, दिन में हो तो रात्रि में, रात्रि मे

हो तो दिन में, प्रातः सन्ध्या में हो तो सायं सन्ध्या में, और सायं सन्ध्या में हो तो प्रातः सन्ध्या में (अर्थात् ६॥ महीने और ४ प्रहर के पश्चात्) पीछा वर्षेगा।

पूर्वोद्भूताः पश्चादपरोत्थाः प्रागभवन्ति जीमूताः।
शेषास्वपि दिक्ष्वेवं विपर्ययो भवति वायोश्च॥ ३६९॥

गर्भ धारण के समय बादल यदि पूर्व में उत्पन्न हुये हों तो बर्षने के समय पश्चिम से और पश्चिम में हों तो पूर्व से आ के बर्षेंगे, ऐसे ही दूसरी दिशाओं के बादल जाने। तथा वायु भी गर्भ धारण के समय जिस दिशा का होगा वर्षने के समय उस के सामने की दिशा का होगा।

पवनाभ्रवृष्टिविद्युद्गर्जितशीतोष्णरश्मिपरिवेषाः।
जलस्यैनसहोक्ता दशधा गर्भप्रसवहेतुः॥ ३७०॥

गर्भ प्रसव होने के समय वायु, बादल, बिजली, गाज, वर्षा, अति शीत, अति उष्णता, मोघें, कुण्डल और जल में उष्णता—ये १० लक्षण होते हैं अर्थात् ये लक्षण हों तो जाने कि गर्भ अवश्य वर्षने वाले [illegible] इन में से जितने लक्षण अधिक होंगे उतना ही जल अधिक [illegible]।

नक्षत्र विशेष [illegible] धारण हुये २ गर्भों से वर्षा का ज्ञान।

भाद्रपदाद्वयविश्वाम्बुदेवपैतामहेष्वथर्क्षेषु।
सर्वेष्वृतुषु विवृद्धो गर्भो बहुतोयदो भवति॥ ३७१॥

गर्भ धारण के समय यदि रोहिणी, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, पूर्वा भाद्र पदा और उत्त[illegible] इन ५ नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हो और काल विशेष के लक्षणों से उस की पुष्टि हुई हो तो वह गर्भ बहुत जल वर्षे[illegible]।

शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वातिमघासंयुतः शुभो गर्भः।
पुष्णाति बहून् दिवसान् हन्त्युत्पातैर्हतस्त्रिविधैः॥३७२॥

मृगमासादिष्वष्टौ षट षोडश विंशतिश्चतुर्युक्ता ।
विंशतिरथ दिवसत्रयमेकतमर्क्षेण पञ्चभ्यः ॥ ३७३ ॥

किसी भी मास में आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, स्वाति और शत-भिषा–इन ५ नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में गर्भ धारण हो तो उस की पुष्टि करने वाले सामान्य लक्षण बहुत दिनों तक होते रहते हैं; इस लिये उस गर्भ का जल बहुत दिनों तक वर्षता है। जैसे–मृगशिर के गर्भ ८ दिन, पौष के ६ दिन, माघ के १६ दिन फाल्गुन के २४ दिन, चैत्र के २० दिन और वैशाख के गर्भ ३ दिन तक वर्षते हैं–अर्थात् गर्भ पकने के दिन से ले के इतने दिनों तक वर्षा की झड़ी लगती है। परन्तु जो कभी पुष्टि होने के दिनों मे ही तीन प्रकार के (भौम, अन्तरिक्ष और दिव्य) मे से किसी उत्पात से नष्ट हो जावे तो फिर उतने दिन नहीं वर्षेगा ।

नक्षत्रे च तिथौ चापि मुहूर्त्ते करणे दिशि ।
यत्र यत्र समुत्पन्नाः स्निग्धाः सर्वत्र पूजिताः ॥ ३७४ ॥

चाहे जिस नक्षत्र, तिथि, मुहूर्त्त, करण, और दिशा में धारण हों परन्तु स्निग्ध बादलों के गर्भ सब ही श्रेष्ठ होते है।

क्रूरग्रहसंयुक्ते करकाशनिमत्स्यवर्षदा गर्भाः ।
शशिनि रवौ वा शुभसंयुते क्षिते भूरिवृष्टिकराः ॥ ३७५ ॥

जिस नक्षत्र में गर्भ धारण हो वह नक्षत्र यदि किसी पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु वा केतु) से युक्त हो तो पीछा वरसने के समय ओले पड़ें, विजली गिरे, वा जल के साथ मच्छियें वर्षे। और जो उस समय कोई शुभ ग्रह सूर्य वा चन्द्रमा के साथ हो वा उन्हे देखे तो वरसने के समय वहुत जल वर्षे।

प्रकारान्तर से (सूर्य नक्षत्रानुसार) गर्भ धारण होने तथा वर्षने का ज्ञान ।

मूलादेषु दशोन्मितेषु रविभेष्वाभ्राम्बुपातोदय-
श्चेत्स्यात्तर्हि शिवर्क्षतो रवियुजां गर्भो दशानां भवेत् ।

गर्भाहाच्छरनन्दभूमितदिने वृष्टिस्तु मेषे रवौ
चन्द्राढ्ये दशके श्वितोम्बुपतने स्याद्गर्भपातो बुधैः ॥३७६॥

सूर्य मूल नक्षत्र पर आवे वहां से ले के अश्विनी पर रहे तब तक गर्भ धारण का समय है, और आर्द्रा पर आवे वहां से स्वाति पर रहे तब तक पीछा वर्षने का समय है।-अर्थात् मूल के गर्भ आर्द्रा में, पूर्वाषाढा के पुनर्वसु में, उत्तरापाढा के पुष्य में, श्रवण के अश्लेषा में, धनिष्ठा के मघा में, शतभिषा के पूर्वा-फाल्गुनि में, पूर्वा भाद्रपदा के उत्तरा फाल्गुनि में, उत्तरा भाद्र पदा के हस्त में, रेवती के चित्रा में, और अश्विनी के स्वाति में १९५ दिन से वर्षते है। परन्तु मेष संक्रान्ति में यदि वर्षा हो जावे और उस दिन (चन्द्रमा का) नक्षत्र अश्विनी हो तो मूल के, भरणी हो तो पूर्वाषाढा के, कृत्तिका हो तो उत्तरापाढा के, रोहिणी हो तो श्रवण के, मृगशिर हो तो धनिष्ठा के, आर्द्रा हो तो शतभिषा के, पुनर्वसु हो तो पूर्वा भाद्र पदा के, पुष्य हो तो उत्तरा भाद्र पदा के, अश्लेषा हो तो रेवती के, और मघा हो तो अश्विनी के गर्भ गल जाते हैं, अर्थात् फिर नहीं वर्षते हैं; और जो नहीं गलें वे वर्षते है।

आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यमश्लेषाश्च मघास्तथा।
पञ्चभिर्गलितैर्ऋक्षैश्छिद्रं वर्षति माधवः ॥ ३७७ ॥

यदि सूर्य के आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, और मघा-इन पांचो ही नक्षत्रों मे वर्षने वाले गर्भ गल जावे तो फिर वर्षा काल में बहुत ही कम वर्षा होवे; क्योंकि वर्षा काल के मुख्य ये ही नक्षत्र है।

गर्भो के ५ निमित्तों से वर्षा का स्थल परिमाणादि निर्णय।

पञ्चनिमित्तैः शतयोजने तदर्द्धार्द्धमेकहान्याऽतः।
वर्षति पञ्चनिमित्ताद्रूपेणैकेन यो गर्भः ॥ ३७८ ॥

गर्भ धारण के समय पांचों निमित्त एकट्ठे हों तो पीछा वर्षने के समय ४०० कोस मे, चार हों तो २०० कोस में, तीन हों तो १०० कोस में, दो हों तो ५० कोस में और जो एक ही

निमित्त हो तो २५ कोस में वर्षा होती है। अर्थात् गर्भ धारण के स्थान से चारों ओर इतने कोसों में जल बरसता है।

द्रोणः पञ्चनिमित्ते गर्भे त्रीण्याढकानि पवनेन।
षड् विद्युता नवाभ्रैः स्तनितेन द्वादश प्रसव॥ ३७९॥

गर्भ धारण के समय ५ निमित्तो में से मुख्य करके वायु प्रधान हो तो पीछा वर्षने के समय ३ आढ़क, बादल हो तो ९ आढ़क, बिजली हो तो ६ आढ़क, गाज हो तो १२ आढ़क और वर्षा (थोड़ी सी) हो तो ४ आढक (एक द्रोण) जल बरसता है। (आढक आदि तौल वर्षा का जल मापने का प्राचीन आर्य माप है-इस का खुलासा आगे 'प्रवर्षण प्रकरण' में देखो।)

पवनसलिलविद्युद्गर्जिताऽभ्रान्वितोयः
स भवति बहुतोयं पञ्चरूपाभ्युपेतः।
विसृजति यदि तोयं गर्भकाले ऽतिभूरि
प्रसवसमयमित्वा शीकराम्भः करोति॥ ३८०॥

जिस गर्भ धारण के समय यदि वायु, बादल, बिजली, गाज, और जल (थोड़ी सी वर्षा)-ये पांचों निमित्त एकट्ठे हों तो वह गर्भ पीछा वर्षने के समय बहुत अधिक जल वर्षे। किन्तु जो कभी गर्भ धारण के समय ही अधिक ही जल वर्ष जाय तो फिर प्रसव के समय केवल जल की बूंदें वर्षे।

मारुतप्रभवा गर्भा ध्रियते मारुतेन च।
वातवर्षश्च गर्भाश्च करोत्यपकरोति च॥ ३८१॥

वायु से धारण हुये गर्भों से पीछा वर्षने के समय केवल वात वृष्टि अर्थात् ज़ोर की वायु चलती है।

समय पर गर्भ के प्रसव न होने का कारण और आगे वर्षने का काल।

गर्भः पुष्टः प्रसवे ग्रहोपघातादिभिर्यदि न वृष्टः।
आत्मीयगर्भसमये करकामिश्रं ददात्यम्भः॥ ३८२॥

गर्भ (धारण के समय) सामान्य तथा काल विशेष के ल-

क्षणों सें पुष्ट तो हुआ हो परन्तु पीछा वरसने के समय यदि अनावृष्टि करने वाले ग्रहो के योग से अथवा भौम अन्तरिक्ष वा दिव्य के निमित्तों में किसी प्रकार के उत्पात हो जानेसे कोई गर्भ वर्षने से रुक जावे तो वह गर्भ जिस मिति में धारण हुआ हो उस से १२ महीने के पश्चात् उसी मिति को ओलों सहित वर्षता है। क्यों कि—

काठिन्यं याति चिरकालधृतं पयः पयस्विन्याः ।
कालातीतं तद्वत्पलिलं काठिन्यमुपयाति ॥ ३८३ ॥

जैसे गाय का दुध वहुत समय तक स्तनों में रहने से कठिन हो जाता है वैसें ही समय पर नहीं वर्षा हुआ गर्भ में का पानी भी कठिन (ओले) वन जाता है। अर्थात् गर्भ में का जल अन्तरिक्ष में वहुत ऊंचा चला जाने से ऊपर की अधिक शीतल हुवा लगने के कारण जम जाता है।

गर्भों की महिमा।

अनुत्पातस्वभावेन देशे स्युर्जलयोनिकाः ।
वहवः पुद्गला जीवा महावृष्टिस्तदा भवेत् ॥ ३८४ ॥

उत्पातों से रहित चाहे जिस देश में यदि गर्भ अधिक धारण हों तो वहां वर्षा भी अधिक होगी जैसे,—

एवञ्च जाङ्गले ऽपि स्युर्भूयांसा जलयोनिकाः ।
शुभग्रहप्रसङ्गेन महावृष्टिविधायिनः ॥ ३८५ ॥

स्वभाव ही से कम वर्षा होने वाले मारवाड़ आदि जांगल देशों में भी यदि गर्भ अधिक धारण हो और वहां अधिक वर्षा करने वाले शुभ ग्रहों का योग आ जावे तो वहां भी वर्षा अधिक होवे।

अनूपे ऽपि यदा क्रूरग्रहवेधो ऽपि सम्भवेत् ।
तदा जीवाः पुद्गलाश्च स्वल्पाः स्युर्जलयोनिकाः ॥ ३८६ ॥
अनावृष्टिस्तदा देस्यात्स्वभावस्य विपर्ययात् ।

ततो यथोदितं वीक्ष्यं सर्वदेशेषु वार्दलम् ॥ ३८७ ॥

और जो स्वभाव ही से अधिक वर्षा होने वाले मालवा आदि अनूप देशों में भी यदि गर्भ कम धारण हों और उन देशो के नक्षत्रों को 'कूर्म चक्र' वा 'सर्वतो भद्र चक्र' मे क्रूर ग्रहों का वेध आ जावे तो वहां भी वर्षा कम होवे। इस लिये सम्पूर्ण देशों मे गर्भ देखने चाहियें। क्यो कि—

गर्भा यत्र न विद्यन्ते तत्र विद्यान्महद्भयम्।
तद्देशं प्रथम त्यक्त्वा सुगर्भास्त्वरितं श्रयेत् ॥ ३८८ ॥

जिस देश में गर्भ नहीं हुये हों उस देश में बड़ा भयानक दुर्भिक्ष पड़ता है। इस लिये उस देश को शीघ्र छोड़ के जिस देश में गर्भ धारण हुये हो उस देश में चले जाना चाहिये।

गर्भज्ञानमिदं गुह्यं न वाच्य यस्य कस्य चित्।
सम्यक् परीक्ष्य दातव्यं नोपहासो यथा भवेत् ॥ ३८९ ॥

यह मेघ गर्भ का ज्ञान बहुत गुप्त था उस को मैंने भले प्रकार से प्रकट कर दिया है। तथापि कुपात्र शिष्य को देना योग्य नहीं किन्तु सुयोग्य शिष्य को तो देनाही चाहिये॥

वायु धारणा प्रकरण।

ज्येष्ठसिते ऽष्टम्याद्याश्चत्वारो वायुधारणा दिवसाः।
मृदुशुभपवनाः शस्ताः स्निग्धघनस्थगितगगनाश्च ॥ ३९० ॥

ज्येष्ठ सुदि ८। ९। १०। ११-ये चार दिन वायु धारणा के है। इन दिनों में पूर्व उत्तर वा ईशान का मृदु वायु चले और आकाश स्निग्ध बादलों से ढका रहे तो धारणा शुभ है।

सविद्युतः सपृष्टतः सपांशुत्करमारुताः।
सार्कचन्द्रपरिच्छिन्ना धारणाः शुभधारणाः ॥ ३९१ ॥

इन ४ दिनों में बिजली चमके, जल की बूंदें वर्षे, रेती स-

हित वायु चले, और सूर्य तथा चन्द्रमा बादलों से ढका रहे तो धारणा शुभ है।

यदा तु विद्युतः श्रेष्ठः शुभाशाः प्रत्युपास्थिताः ।
तदापि सर्वशस्यानां वृद्धिं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ ३९२ ॥

अथवा श्रेष्ठ लक्षणों वाली बिजली प्रथम उत्तर, ईशान, वा पूर्व में उत्पन्न हो के चमके तो भी सम्पूर्ण खेतियों की वृद्धि करने योग्य उत्तम वर्षा होवे ।

सपांशु वर्षा सापश्च शुभावालक्रिया अपि ।
पक्षिणां सुस्वरा वाचः क्रीडा पांशुजलादिषु ॥ ३९३ ॥

रविचन्द्रपरिवेषाः स्निग्धा नात्यन्त दूषिताः ।
वृष्टिस्तदापि विज्ञेया सर्वशस्यार्थसाधिका ॥ ३९४ ॥

अथवा जल की वर्षा के सहित धूल की वर्षा (आंधी) हो, बालक अच्छे २ खेल करें, पक्षी सुहावने शब्द बोलें तथा जल रेती गोबर आदि में क्रीड़ा करें, सूर्य तथा चन्द्रमा के स्निग्ध कुण्डल हों–किन्तु वे अत्यन्त दूषित न हों–तो सर्व प्रकार की खेतियों को उत्पन्न करने वाली बहुत उत्तम वर्षा होवे।

मेघाः स्निग्धा संहताश्च प्रदक्षिणगतिक्रियाः ।
तदा स्यान्महती वृष्टिः सर्वशस्याभिवृद्धये ॥ ३९५ ॥

अथवा स्निग्ध, बहुत बड़े २, और प्रदक्षिण गति से (पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम–इस क्रम से) जाने वाले बादल हों तो भी सम्पूर्ण खेतियों के उपयोगी बहुत अधिक वर्षा होवे।

एकरूपाः शुभा ज्ञेया अशुभाः सान्तराः स्मृताः ।
अनार्यैस्तस्करैर्घोरैः पीडाचैव सरीसृपैः ॥ ३९६ ॥

ऊपर कहे लक्षणों से युक्त यदि चारों ही दिन एक सरीखे निकलें तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण, आदि–शुभ फल होवे। और जो कभी एक सरीखे नहीं निकलें, किन्तु कोई कैसा और

कोई कैसा निकले, तो दुष्ट, चोर, सर्पादि की पीड़ा आदि-अशुभ फल होवे।

तत्रैव स्वात्पाद्ये बृष्टे भचतुष्टये क्रमान्मासाः।
श्रावणपूर्वा ज्ञेयाः परिस्रुता धारणास्ता स्युः॥ ३९७॥

ज्येष्ट सुदि में यदि स्वाति आदि ४ रों नक्षत्रों में वर्षा हो जावे तो श्रवण आदि ४ महीनों में वर्षा नहीं होवे। जैसे-स्वाति से श्रावण में, विखाखा से भाद्रवे में, अनुराधा से आश्विन में, और ज्येष्ठा से कार्त्तिक में वर्षा नहीं होवे। क्योंकि धारणा गल जाने से गर्भ गल जाते है।

प्रवर्षण प्रकरण।

वर्षा का जल मापने की प्राचीन रीति।

वर्षा का जल इस समय जैसे इंच, सैंट आदि से मापा जाता है वैसे ही हमारे यहां प्राचिन कालमे द्रोण, आढक आदि से तौला जाता था। उस की विधि यो हैं:—

हस्तविशालं कुण्डमधिकृत्यम्बुप्रमाणनिर्देशः।
पञ्चाशत्पलमाढकमनेन मिनुयाज्जलं पतितम्॥ ३९८॥

एक हाथ (२४ अंगुल वा १८ इंच) के व्यास का गोलाकार कुण्ड बना के मैदान में रख दे; फिर उस में वर्षा का जल एकत्र हो उसे तौले कि कितने द्रौण, आढक आदि वर्षा हुई है।

आढकाश्चतुरो द्रोणमपां विन्द्यात्प्रमाणतः।
धनुः प्रमाणं मेदिन्या विन्द्याद् द्रोणातिवर्षणम्॥ ३९९॥

अनुमान ५ तोलों (२ औंस) की १ पल, ५० पल की १ आढक और ४ आढक का १ द्रोण होता है जो इस समय के २॥ इंच के अनुमान होगा। यदि १ द्रोण जल बरसे तो उस वर्षा के पानी की तरी साधारण भूमि में अनुमान ४ हाथ (९६ आंगुल वा ६ फीट) तक नीचे पहुंचती है।

प्रवर्षण की वर्षा का काल, परिमाण और स्थल।

ज्यैष्ठ्यां समतीतायां पूर्वाषाढादिसम्प्रवृष्टेन।
शुभमशुभं वा वाच्यं परिमाणं चाम्भसस्तज्ज्ञैः॥ ४००॥

ज्येष्ठ सुदि १५ के बाद आषाढ़ वदि में पूर्वाषाढा नक्षत्र आवे वहां से मूल पर्यन्त २७ नक्षत्रों तक प्रवर्षण काल है। मेघ गर्भ तथा वायु धारणा का श्रेष्ठ होना इसी प्रवर्षण के आधीन है। अतः वर्षा काल का शुभाशुभ तथा सम्पूर्ण वर्षा काल की वर्षाओं के जल का परिमाण इस समय की वर्षा के आधार पर जाने।

येन धरित्री मुद्रा जनिता वा बिन्दवस्तृणाग्रेषु।
वृष्टेन तेन वाच्यं परिमाणं वारिणः प्रथमम्॥ ४०१॥

जिस वर्षा से भूमि पर बूंदों के चिह्न बन जावें, वा घास के अग्र भाग पर मोती सी बूंदें ठहर जावें:उसे प्रवर्षण की वर्षा जाने।

केचिद्यथाभिवृष्टं दशयोजनमण्डलं वदन्त्यन्ये।
गर्गवसिष्ठपराशरमतमेतद् द्वादशान्नपरम्॥ ४०२॥

ऐसी वर्षा कितने प्रदेश मे होनी चाहिये? इस में कई आचार्य तो कहते है कि प्रदेश का नियम नहीं, किन्तु वर्षा हो जानी ही श्रेष्ठ है। कई कहते हैं कि १० योजन (४० कोस) में होनी श्रेष्ठ है; और गर्ग, वासिष्ठ, पराशरादि कहते हैं कि १२ योजन (४८ कोस) में होने से श्रेष्ठ है; किन्तु इस से कम प्रदेश में हो तो श्रेष्ठ नहीं।

प्रवर्षण के नक्षत्रानुसार वर्षा का ज्ञान।

येषु च भेष्वभिवृष्टं भूयस्तेष्वेव वर्षति प्रायः।
यदि नाप्यादिषु वृष्टं सर्वेषु तदा त्वनावृष्टिः॥ ४०३॥

प्रवर्षण काल में जिन २ नक्षत्रों मे वर्षा हो तो आगे वर्षा काल में भी उन्हीं २ नक्षत्रों में प्रायः वर्षा होती है; और जो इन

पूर्वाषाढादि २७ नक्षत्रों में से किसी में भी वर्षा न हो तो आगे वर्षा काल में भी अनावृष्टि ही होती है।

हस्ताप्यसौम्यचित्रापौष्णधनिष्ठासु षोडश द्रोणाः।
शतभिषगैन्द्रस्वातिषु चत्वारः कृत्तिकायां दश ॥ ४०४॥

श्रवणे मघानुराधाभरणीमूलेषु दश चतुर्युक्ताः।
फाल्गुन्यां पञ्चकृतिः पुनर्वसौ विंशतिर्द्रोणाः ॥ ४०५ ॥

ऐन्द्राग्न्याख्ये वैश्ये च विंशतिः सार्पभे दश ऽयधिकाः।
अहिर्बुध्न्यार्यम्णप्राजापत्येषु पञ्चकृतिः ॥ ४०६ ॥

पञ्चदशाजे पुष्ये च कीर्त्तिता वाजिभे दश द्वौ च।
रौद्रे ऽष्टादश कथिता द्रोणा निरुपद्रवेष्वेते ॥ ४०७ ॥

उपरोक्त वर्षा प्रवर्षण कालमें प्रथम ही प्रथम यदि रोहिणी, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी वा उत्तरा भाद्र पदा में हो तो आगे वर्षा काल में २५ द्रोण; पुनर्वसु, विशाखा वा उत्तराषाढा में हो तो २०; आर्द्रा में हो तो १८; मृगशिर, हस्त, चित्रा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा वा रेवती में हो तो १६; पुष्य वा पूर्वा भाद्र पदा में हो तो १५; भरणी, मघा, अनुराधा, मूल वा श्रवण में हो तो १४; अश्लेषा में हो तो १३; अश्विनी में हो तो १२; कृत्तिका में हो तो १०; और स्वाति, ज्येष्ठा वा शतभिषा में हो तो ४ द्रोण जल वर्षे। परन्तु उस प्रवर्षण के नक्षत्र को किसी प्रकार का उत्पात न हो तब ही यह फल ठीक मिलेगा।

प्रवर्षण की वर्षा से खेतियों के उपयोगी वर्षा का ज्ञान।

कृष्णपक्षाद्यकाले चेद्वर्षत्युभययोगिषु।
तदा त्रिकालधान्यानामुत्पत्तिस्तु घना भवेत् ॥ ४०८ ॥

मासचतुष्टयं वृष्टिर्ज्ञातव्या वृष्टिवेदिभिः।
अग्नियोगिषु धिष्ण्येषु पुरो धान्यं घनं मतम् ॥ ४०९ ॥

पृष्ठयोगिषु वृष्टौ तु स्वल्प धान्यं न वा पुनः ।
युज्यमाने समैश्चन्द्रः सुभिक्षं कुरुते घनम् ॥ ४१० ॥

प्रवर्षण काल में प्रथम वर्षा यदि उभय योग वाले नक्षत्रों (रोहिणी, पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढा वा उत्तरा भाद्र पदा) में हो तो सम्पूर्ण खेतियों के उपयोगी वर्षा चारों ही महीनों में होवे । अग्रिम योग वाले नक्षत्रों (कृत्तिका मघा, पूर्वा फाल्गुनी मूल, पूर्वाषाढा वा पूर्वा भाद्र पदा) में हो तो वर्षा काल की खेतियों के उपयोगी वर्षा होवे । पृष्ठ योग वाले नक्षत्रों (अश्विनी, भरणी, मृगशिर, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा श्रवण, धनिष्ठा वा रेवती) में हो तो स्वल्प खेतियें उत्पन्न होने योग्य वर्षा होवे । और जो सम योग वाले नक्षत्रो (आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा वा शतभिषा) में हो तो सुभिक्ष करने योग्य वर्षा होवे ।

रविरविसुतकेतुपीडिते भे क्षितितनयत्रिविधाद्भुताहते च ।
भवति च न शिवं न चापि वृष्टिः शुभसहिते निरुपद्रवे शिवं च४११

प्रवर्षण के नक्षत्र पर सूर्य, शनि वा पुच्छल तारा हो वा मंगल उस नक्षत्र पर वक्री हो वा उस के बीच में से वा उस में के प्रकाशवान् तारे के ऊपर हो के निकले अथवा प्रवर्षण के दिन तीन ३ प्रकार के निमित्तों में किसी प्रकार का उत्पात हो जावे तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष, अक्षेम तथा अकल्याण होवे । और जो उस नक्षत्र पर शुभ ग्रह हो तथा उस दिन कोई उत्पात न हो तो सुवृष्टि सुभिक्ष, क्षेम तथा कल्याण होवे ।

दिव्य के निमित्त ।

स्वर्भानुकेतुनक्षत्रग्रहताराऽर्कजेन्द्रम् ।
दिवि चोत्पद्यते यच्च तद्दिव्यमिति कीर्तितम् ॥ ४१२ ॥

सूर्य वा चन्द्र का ग्रहण, पुच्छल तारा, नक्षत्र और ग्रह आदि-आकाश के निमित्त हैं।

ग्रहण प्रकरण ।*

षण्मासोत्तरवृद्ध्या पर्वेशाः सप्त देवताः क्रमशः ।
ब्रह्मशशीन्द्रकुबेरा वरुणाग्नियमाश्च विज्ञेयाः ॥ ४१३ ॥

विक्रम संवत् में से १३५ निकाल लेने से शालि वाहन का शक होता है। उसे १२ से गुणा के उस में चैत्र से ले के ग्रहण के मास तक की संख्या मिलाके ७ का भाग देवे । शेष १ हो तो ब्रह्मा, २ हो तो चन्द्रमा, ३ हों तो इन्द्र, ४ हों तो कुबेर, ५ हों तो वरुण, ६ हों तो अग्नि और ० हो तो यम ८ ग्रहण का स्वामी होता है।

ब्राह्मे द्विजपशुवृद्धिः क्षेमारोग्याणि शस्यसम्पच्च ।
तद्वत्सौम्ये तस्मिन् पीडा विदुषामवृष्टिश्च ॥ ४१४ ॥

ऐन्द्रे भूपविरोधः शारदशस्यक्षयो न च क्षेमम् ।
कौवेरे ऽर्थपतीनामर्थविनाशः सुभिक्षं च ॥ ४१५ ॥

वारुणमवनीशा शुभमन्येषां क्षेमशस्यवृद्धिकरम् ।
आग्नेयं मित्राख्यं शस्यारोग्याभयाम्बुकरम् ॥ ४१६ ॥

याम्यं करोत्यवृष्टिं दुर्भिक्षं सङ्क्षयं च शस्यानाम् ।
यदतः परं तदशुभं क्षुन्मारावृष्टिदं पर्वम् ॥ ४१७ ॥

---

* सूर्य चन्द्र के ग्रहण का विस्तार पूर्वक फल मेरे बनाये हुये 'ग्रहण फल दर्पण' नामक ग्रन्थ में देखो ।

ल्याण, आरोग्य, आदि से प्रजा में आनन्द होवे किन्तु चन्द्र ग्रहण के १५ दिन पीछे सूर्य ग्रहण हो तो अशुभ फल होवे।

केतु चार (पुच्छल तारा) प्रकरण ।

चोटीला तारा उदय सींगर पूंछर होय ।
छत्र भंग दुर्भिक्ष करे परजा सुखी न कोय ॥ ४२१ ॥
वर्ष एक दो तीन में पड़े काल भय भीत ।
तारे चरित अशुभ यह आगम लखियो मीत ॥ ४२२ ॥

चोटी, सींग वा पूछ आदि के आकार का पुच्छल तारा उदय हो उस देश में राजा को क्लेश, प्रजा को अनेक प्रकार से कष्ट और १ । २ वा ३ वर्षों में बहुत भयानक दुर्भिक्ष पड़ जावे।

श्रावणे भाद्रपदे च वरुणस्य सुतोदयः ।
आवाहन्येन्महामेघांस्तोयपूर्णा वसुन्धरा ॥ ४२३ ॥

उन्मार्गे सरितो यान्ति जलवेगसमाहताः ॥
समर्घाण्यपि धान्यानि वरुणस्य सुतोदये ॥ ४२४ ॥

श्रावण वा भाद्रवे में उदय हो तो इतनी वर्षा होवे कि जिस से नदियों में पानी नहीं समा सके जिससे बहुत बाढ आवें तथा धान्य का भाव सस्ता हो जावे।

आश्विने कार्त्तिके चैव सूर्यपुत्रं विनिर्दिशेत् ।
नदीकूपतडागानि सर्वाणि परिशोषयेत् ॥ ४२५ ॥

म्रियन्ते च तदा गावस्तथाऽन्ये च चतुष्पदाः ॥
देवो न वर्षते तत्र दुर्भिक्षं च महाभयम् ॥ ४२६ ॥

आश्विन वा कार्त्तिक में उदय हो तो वर्षा नहीं होवे जिस से नदियें, कुएं, तालाव, आदि सूख जावें; तथा बड़ा दुर्भिक्ष पड़े; और गवादि पशुओं का नाश होवे।

मार्गशीर्षे च पौषे च अग्निपुत्रान् विनिर्दिशेत् ।
अग्निदग्धानि राष्ट्राणि हारितानि धनानि च ॥ ४२७ ॥

विद्रवन्ति तथा देशाः समस्ता भयपीडिताः ।
अग्निचौरभयं तत्र प्रजानां व्याधयस्तथा ॥ ४२८ ॥

मृगशिर वा पौष में उदय हो तो अग्नि का भय, चौरों का उपद्रव, रोग पीड़ा और देश को पीड़ा होवे ।

माघफाल्गुनयोर्मध्ये यमपुत्रं विनिर्दिशेत् ।
दुर्भिक्षं जायते घोरं सर्वधान्यानि सङ्क्षयेत् ॥ ४२९ ॥

माघ वा फाल्गुन में उदय हो तो सर्व धान्य का नाश हो जावे जिस से बड़ा भयानक दुर्भिक्ष होवे ।

चैत्रवैशाखयोर्मध्ये कुवेरसुतमादिशेत् ।
यादृशा उदिता मेघा जलं पतति तादृशम् ॥ ४३० ॥

हविर्धूमाकुलं सर्वं नन्दते च मुहुर्मुहुः ।
वसुन्धरा शुभाभ्राढ्या धनधान्यसमाकुला ॥ ४३१ ॥

चैत्र वा वैशाख में उदय हो तो जहां जैसे मेघ उत्पन्न हों वहां वैसा ही जल वर्षे, अग्नि होत्रादि यज्ञ अधिक होवें और प्रजा में धन धान्य की वृद्धि से सर्व प्रकार का आनन्द होवे ।

ज्येष्ठआषाढयोर्मध्ये वायुपुत्रोदयो भवेत् ।
उच्चा मेघाः प्रदृश्यन्ते वायुना सह प्रेरिताः ॥ ४३२ ॥

तरुप्रासादशिखराः पतन्ति पवनाहताः ।
विरोधे च महीपाला भवन्ति च समन्ततः ॥ ४३३ ॥

ज्येष्ठ वा आषाढ़ में उदय हो तो वायु बहुत ज़ोर से चले जिस से बादल ऊंचे २ ही उड़ें तथा वृक्ष, पर्वत आदि के शिखर टूट पड़ें और राजाओं में विरोध होवे ॥

तामस कीलक (सूर्य में के काले दाग़) प्रकरण ।

तामसकीलकसंज्ञा राहुसुताः केतवस्त्रयस्त्रिंशत् ।
वर्णस्थानाकारैस्तान् दृष्ट्वाऽर्के फलं ब्रूयात् ॥ ४३४ ॥

तामस कीलक नाम के ३३ केतु राहु के पुत्र हैं, वे सूर्य विम्ब में काले दाग़ आदि से दीखते हैं। उन का फल वर्ण स्थान आकार आदि के अनुसार जाने। ऐसे काले दाग प्रायः कभीर ग्यारे वर्ष से दीख जाते हैं।

क्षुत्प्रम्लालशरीरा मुनयोऽप्युत्सृष्टधर्मसच्चरिताः ।
निर्मांसबालहस्ताः कृच्छ्रेण यान्ति परदेशम् ॥ ४३५ ॥

काले दाग़ जिस देश में दीखें उस देश में बड़ा भयानक दुर्भिक्ष पड़े जिस से भूख के कारण ऋषि मुनि भी धर्म और श्रेष्ठ आचरण छोड़ें तथा लोग भूखे दुर्बल बालकों को स्वयं छोड़ के बड़े दुःख से विदेश चले जावें।

गर्भेष्वपि निष्पन्ना वारिमुचो न प्रभूतवारिमुचः ।
सरितो यान्ति तनुत्वं क्वचित्क्वचिज्जायते शस्यम् ॥ ४३६ ॥

मेघ गर्भ धारण हुये हो तथापि काले दाग़ के कारण वर्षा बहुत न होवे तथा नदी का भी जल सूख जावे जिस से धान्य भी कहीं २ ही उत्पन्न होवे।

ते चार्कमण्डलगताः पापफलाश्चन्द्रमण्डले सौम्याः ।
ध्वाङ्क्षकबन्धप्रहरणरूपाः पापाः शशाङ्केऽपि ॥ ४३७ ॥

काले दाग़ यदि सूर्य विम्ब में दीखें तो अशुभ और चन्द्र विम्ब मे दीखें तो शुभ फल होवे। परन्तु उन का आकार कौवे, विना शिर के मनुष्य वा खड्ग आदि शस्त्र के सदृश हो तो चन्द्र विम्ब मे के भी अशुभ फल दायक जाने।

नक्षत्र प्रकरण ।

नागा तु पवनयाम्यानलानि पैतामहात्त्रिभास्तिस्रः ।
गोवीथ्यामश्विन्यः पौष्णं द्वे चापि भाद्रपदे ॥ ४३८ ॥

जारद्गव्यां श्रवणात्त्रिभं मृगाख्या त्रिभं तु मैत्र्याद्यम् ।
हस्तविशाखात्वाष्ट्राण्यजेत्याषाढाद्वयं दहना ॥ ४३९ ॥

ग्रहों के घूमने के लिये आकाश में अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों के ९ मार्ग है उन्हे वीथियें कहतें हैं । जैसे-भरणी, कत्तिका, स्वाति की नाग; रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा की गज; पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा की ऐरावती; मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी की वृष; पूर्वा भाद्र पदा, उत्तरा भाद्र पदा, रेवती, अश्विनी की गो; श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा की जारद्गव; अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल की मृग; हस्त, चित्रा, विशाखा की अज; और पूर्वापाढा, उत्तराषाढा की दहन वीथी है।

तिस्रस्तिस्रस्तासां क्रमादुदङ्मध्ययाम्यमार्गस्थाः ।
तासामप्युत्तरमध्यदक्षिणे न स्थितैकैका ॥ ४४० ॥

इन में नागादि ३ वीथियों का उत्तर मार्ग, वृषादि ३ वीथियों का मध्य मार्ग, और मृगादि ३ वीथियों का दाक्षिण मार्ग है। इन प्रत्येक मार्ग की ३ । ३ वीथियों में भी पहिली वीथी उस मार्ग के उत्तर में, दूसरी उस मार्ग के मध्य में और तीसरी उस मार्ग के दक्षिण में जाने।

उत्तरवीथिगता द्युतिमन्तः क्षेमसुभिक्षशिवाय समस्ताः ।
दक्षिणमार्गगता द्युतिहीनाः क्षुद्भयतस्करमृत्युकरास्ते ॥४४१॥

कोई भी ग्रह तेज युक्त और उत्तर मार्ग के नक्षत्रों पर हो तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण, आदि शुभ; जो तेज हीन और दक्षिण मार्ग के नक्षत्रों पर हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, चौर, महामारी, अशुभ; तथा मध्य मार्ग के नक्षत्रों पर हो तो साधारण फल होवे। इन में भी उत्तर मार्ग की प्रथम वीथी में अति उ-

त्तम, दूसरी मे उत्तम, तीसरी में कुछ कम उत्तम फल; मध्य मार्ग की प्रथम वीथी मे सम, दूसरी में मध्यम, तीसरी में कुछ अधम फल; और दक्षिण मार्ग की प्रथम वीथी में अधम, दूसरी में अति अधम, और तीसरी में महान् अधम फल जाने ।

उदयास्तमयं कुर्यान्मार्गमुत्तरमाश्रितः ।
सुभिक्षं च सुवृष्टिं च योगक्षेमं विनिर्दिशेत् ॥ ४४२ ॥
उदयास्तमयं कुर्यान् मध्यमं मार्गमाश्रितः ।
मध्यमं चार्घशस्यं च योगक्षेमं विनिर्दिशेत् ॥ ४४३ ॥
उदयास्तमयं कुर्याद्दक्षिणं मार्गमाश्रितः ।
धान्यस्य सङ्ग्रहं कृत्वा केदारेषु तिलान् वपेत् ॥ ४४४ ॥

कोई भी ग्रह उदय वा अस्त उत्तर मार्ग के नक्षत्रो पर हो तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण; मध्य मार्ग के नक्षत्रों पर हो तो वृष्टि आदि मध्यम; और दक्षिण मार्ग के नक्षत्रो पर हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अक्षेम, अकल्याण होवे इस से धान्य का संग्रह करे तथा तालावों में तिल बो दे ।

मण्डलेषु च सर्वेषु सङ्क्रमन्तं यदा ग्रहम् ।
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा गुरुर्मन्ये जलावहम् ॥ ४४५ ॥

'शुक्र प्रकरण' में कहे हुये भरणी आदि २७ नक्षत्रों के ६ मण्डलों में यदि कोई ग्रह एक मण्डल से निकल के दूसरे मण्डल में जावे और उस समय उसे बृहस्पति पौन वा पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो अवश्य वर्षा होवे।

वासवर्क्षे यदा सौरिर्भूमिपुत्रेण संयुतः ।
न वर्षन्ति जलं मेघाः शस्यहानिश्च जायते ॥ ४५६ ॥

धनिष्ठा नक्षत्र पर मंगल और शनि हो तो वर्षा नहीं होवें जिस से खेतियों को हानि पहुचे।

मङ्गलसौरिशुक्राश्च धनिष्ठायां स्थिता यदि ।
गर्जिताश्च न वर्षन्ति तोयविन्दुपयोधराः ॥ ४४७ ॥

धनिष्ठा नक्षत्र पर मंगल, शुक्र और शनि हो तो गर्जते हुये मेघों से भी एक बूंद पानी नहीं वर्षे ।

विश्वभे च यदा मन्दः सप्तमर्क्षे यदा रविः ।
तदा जलं विनाशस्यात्प्रजानां क्रन्दनं महत् ॥ ४४८ ॥

पूर्वाषाढा नक्षत्र पर शनि और पुनर्वसु पर सूर्य हो तो वर्षा नहीं होवे जिस से प्रजा को कष्ट होवे ॥

सप्त नाड़ी चक्र प्रकरण ।

प्रावृट्काले समायाते रौद्रादिऋक्षगे रवौ ।
नाडीवेधसमायोगे जलयोगं वदाम्यहम् ॥ ४४९ ॥

वर्षा काल (सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आवे तब से विशाखा पर रहे तब तक) के समय में इस नाड़ी चक्र में ग्रहों के वेध (एक नाड़ी पर आने) से वर्षा को जाने ।

कृत्तिकादिलिखेद्धानि साभिजिती क्रमेण च ।
सप्तनाडी व्यधास्तत्र कर्तव्याः पन्नगाकृतिः ॥ ४५० ॥
सराचतुष्कवेधेन नाड्यकैका प्रजायते ।
तेषां नामान्यहं वक्ष्ये तथा चैव फलानि च ॥ ४५१ ॥

अभिजित् सहित कृत्तिका आदि २८ नक्षत्रों को ४ फेरों में सर्पाकार घुमाने से ७ नाड़ियें बनती है, उन के नाम, स्वामी, तथा प्रत्येक नाड़ी के ४।४ नक्षत्र नीचे लिखे चक्र द्वारा जाने ।

सप्त नाडी चक्र ।

दिशा	दक्षिण में निर्जल नाड़ियें			मध्य	उत्तर में सजल नाड़ियें		
नाम	प्रचण्ड	पवन	दहन	सौम्य	नीर	जल	अमृत
स्वामी	शनि	सूर्य	मंगल	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
	विशाखा	स्वाति	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू. फा.	मघा
	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण
	भरणी	अश्विनी	रेवती	उ.भा.	पू. भा.	शतभिषा	धनिष्ठा

मध्यमार्गस्थिता सौम्या नाडी तस्याग्रपृष्ठतः।
सौम्ययाम्यगता ज्ञेया नाडिकानां त्रिकं त्रिकम् ॥ ४५२ ॥

इन ७ नाड़ियों में से नीर, जल और अमृत-ये ३ सजल नाड़ियें तो उत्तर में; प्रचण्ड, पवन और दहन-ये ३ निर्जल नाड़ियें दक्षिण में और सौम्य नाड़ी इन दोनों के बीच में है।

एकनाडीगता द्वाद्या ग्रहाः क्रूराः शुभा यदि।
ततो नाडीफलं वाच्यं शुभं वा यदि वा ऽशुभम् ॥ ४५३ ॥

सौम्य और क्रूर ग्रह जिस नाड़ी में (किसी एक नाड़ी के ४ नक्षत्रों पर कहीं भी) एकट्टे हों उस का फल उसी नाड़ी के नामानुसार होवे। जैसे—

ग्रहाः कुर्युर्महावातं गताश्चण्डाख्यनाडिका।
वायुनाडीगता वायुर्दहन्यामतिदाहकाः ॥ ४५४ ॥
सौम्यनाडीगता मध्या नीरस्था मेघवाहकाः।
जलायां वृष्टिदश्चन्द्रो नाडिकाश्चातिवृष्टिदाः ॥ ४५५ ॥

मिश्र (सौम्य और क्रूर) ग्रह यदि प्रचण्ड नाड़ी में हों तो प्रवल वायु, पवन में हों तो वायु, दहन में हो तो बहुत गर्मी, सौम्य में हों तो साधारण, नीर में हों तो बादल, जल में हों तो वर्षा और अमृत नाड़ी में हो तो बहुत वर्षा होवे।

एको ऽप्येतत्फलं दत्ते स्वनाडीसंस्थितो ग्रहः।
भूसुतः सर्वनाडीस्थो दत्तेनाड्युद्भवं फलम् ॥ ४५६ ॥

परन्तु नाड़ी का स्वामी यदि अकेला ही अपनी नाड़ी में हो तो भी उस का फल उस नाड़ी के नामानुसार होवे और मंगल चाहे जिस नाड़ी में हो तो भी उस का फल नाड़ी के नामानुसार होवे।

क्रूराः क्रूरेण सम्भिन्नाः सौम्याः सौम्येन संयुताः।
दुर्दिनन्तत्र विज्ञेयं मिश्रैर्वृष्टिमिहादिशेत् ॥ ४५७ ॥

किसी भी नाड़ी में ग्रह सभी सौम्य वा सभी क्रूर हो तो वायु, वादल, अन्धकार, आदि से दुर्दिन होवे, किन्तु वर्षा नहीं होवे; और जो सौम्य तथा क्रूर दोनों प्रकार के ग्रह हो तो वर्षा होवे।

यत्र नाडीस्थितश्चन्द्रस्तत्रस्थाः खेचरा यदि ।
क्रूरसौम्यविमिश्राश्च तद्दिने वृष्टिरुत्तमा ॥ ४५८ ॥

एकऋक्षसमायोगो जायते यदि खेचरैः ।
तत्र काले महावृष्टिर्यावत्तस्यांशके शशिः ॥ ४५९ ॥

परन्तु जिस नाड़ी पर वा उस नाड़ी में के ४ नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र पर सौम्य तथा क्रूर ग्रह एकत्र हुए हों उसी नाड़ी वा नक्षत्र पर जव चन्द्रमा आवे तव वर्षा होवे। उस में भी चन्द्रमा के अंश उन ग्रहों के अंशों के तुल्य हों अर्थात् एक नवांश पर हों उस समय वहुत वर्षा होवे ।

केवलैः सौम्यपापैर्वा ग्रहविद्धो यदा शशिः ।
तदातितुच्छं पानीयं दुर्दिनन्तु भवेद् ध्रुवम् ॥ ४६० ॥

जिस नाड़ी में केवल सौम्य वा केवल क्रूर ग्रह हों और उन के साथ चन्द्रमा आवे तो वहुत थोड़ी वर्षा तथा दुर्दिन होवे।

यस्य ग्रहस्य नाडीस्थः चन्द्रमास्तद्ग्रहेण चेत् ।
दृष्टो युक्तो करोत्यम्भो यदि क्षीणो न जायते ॥ ४६१ ॥

पूर्ण कला (सुदि ६ से वदि १० तक) का चन्द्रमा जिस नाड़ी में हो और उसी नाड़ी का स्वामी चन्द्रमा के साथ वैठा हो वा उसे देखे तो वर्षा होवे।

पीयूषनाडीगश्चन्द्रस्तत्र खेटाः शुभाशुभाः ।
द्विचतुः पञ्च पानीयं दिनान्येकत्रिसप्तकम् ॥ ४६२ ॥

एवं जलाख्यनाडीस्थे चन्द्रे मिश्रग्रहान्विते ।
दिनार्द्धं दिवसं पञ्च दिनानि जायते जलम् ॥ ४६३ ॥

नीरनाडीगते चन्द्रे तत्रस्थाः खेचरा यदि ।
यामं दिनार्द्धकं त्रीणि दिनानि जायते जलम् ॥ ४६४ ॥

चन्द्रमा सौम्य तथा क्रूर ग्रहों के साथ यदि अमृत नाड़ी में हो तो १, ३ वा ७ दिन में २, ४ वा ५ वार; जल नाड़ी में हो तो ४ प्रहर वा १ वा ५ दिन तक; और नीर नाड़ी में हो तो १ वा ४ प्रहर वा ३ दिन तक वर्षा होवे।

अमृतादित्रये यत्र भवन्ति सर्वखेचराः ।
तत्र वृष्टिः क्रमाज्ज्ञेया धृसर्करषवासराः ॥ ४६५ ॥

सौम्यनाडीगताः सर्वे वृष्टिदास्ते दिनत्रयम् ।
शेषनाड्यां महावातदुष्टवृष्टिप्रदा ग्रहाः ॥ ४६६ ॥

सब ही ग्रह यदि अमृत नाड़ी में हों तो १८ दिन, जल नाड़ी में हों तो १२ दिन, नीर नाड़ी में हों तो ६ दिन और सौम्य नाड़ी में हों तो ३ दिन तक वर्षा होवे। और जो दहन, पवन वा प्रचण्ड नाड़ी में हों तो बहुत वेग से वायु चले तथा दुष्ट वर्षा होवे ।

निर्जला जलदा नाडी भवेद्योगे शुभाधिके ।
क्रुराधिके समायोगे जलदोऽप्यम्बुदाहकः ॥ ४६७ ॥

ग्रह-निर्जल नाड़ियों में भी-यदि क्रूर की अपेक्षा सौम्य अधिक हों तो वर्षा होवे, और-सजल नाड़ियों में भी-यदि सौम्य की अपेक्षा क्रूर अधिक हों तो वर्षा नहीं होवे।

याम्यनाडीस्थिताः क्रूराः अनावृष्टिप्रसूचकाः ।
शुभयुक्ता जलांशस्थास्ते ऽतिवृष्टिप्रदा ग्रहाः ॥ ४६८ ॥

ग्रह दक्षिण की ३ नाड़ियों में यदि केवल क्रूर हों तो अनावृष्टि और जो उतर की ३ नाड़ियों में सौम्य और क्रूर दोनों हों तो बहुत वर्षा होवे।

ऊर्ध्वनाडीगते शुक्रे चन्द्रेऽधोनाडिकास्थिते ।
महावायुरधोनाड्यां द्वयोर्योगे महज्जलम् ॥ ४६९ ॥

ऊपर की (प्रचण्ड, पवन, दहन) नाड़ियों में शुक्र और नीचे की (नीर, जल, अमृत) नाड़ियों में चन्द्रमा हो तो प्रचण्ड वायु चले; किन्तु दोनों ग्रह नीचे की नाड़ियों में हों तो बहुत वर्षा होवे।

जलयोगसमायाते तदा चन्द्रसितौ ग्रहौ ।
क्रूरैर्दृष्टौ युतौ वापि तदा मेघोऽजलपवृष्टिदः ॥ ४७० ॥

एक ही नाड़ी में चन्द्रमा और शुक्र हों तो वर्षा होवे किन्तु क्रूर ग्रह उन को देखे वा उनके साथ हो तो वर्षा थोड़ा होवे।

यदा शुक्रस्य सोमस्य भास्करो नाडिगोचरे ।
एकत्र विचरिष्यन्ति तदा चैकार्णवा मही ॥ ४७१ ॥

एक ही नाड़ी में सूर्य, चन्द्रमा और शुक्र हों उस समय बहुत वर्षा होवे।

एकनाडीसमारूढौ चन्द्रमाधरणीसुतौ ।
यदि तत्र भवेज्जीवस्तदैकार्णविता मही ॥ ४७२ ॥

एक ही नाड़ी में चन्द्रमा मंगल और बृहस्पति हों उस समय बहुत अधिक वर्षा होवे।

यदा शुक्रेन्दुजीवानामेकनाड्यां समागमः
तदा भवेन्महावृष्ट्या सर्वत्रैकार्णवा मही ॥ ४७३ ॥

एक ही नाड़ी में चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र हों उस समय बहुत अधिक वर्षा होवे।

बुधशुक्रौ यदैकत्र गुरुणा च समान्वितौ ।
चन्द्रयोगे तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा ॥ ४७४ ॥

एक ही नाड़ी में चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र हों उस समय बहुत उत्तम वर्षा होवे।

चन्द्रमा तथा शुक्र बैठे हों तब उन के साथ कोई क्रूर ग्रह भी हो उस समय उस ग्राम में बहुत वर्षा होवे, किन्तु जो उनको क्रूर ग्रह देखे तो वर्षा थोड़ी होवे।

सूर्य प्रकरण।

द्वौ द्वौ राशी मकराद्दतवः षट् सूर्यगतिविशाद् ग्राह्याः।
शिशिरवसन्तग्रीष्मवर्षाशरदः सहेमन्ताः॥ ४८१॥

सूर्य की मकर, कुम्भ संक्रान्ति (माघ, फाल्गुन) की शिशिर; मीन, मेष (चैत्र, वैशाख) की वसन्त; वृष, मिथुन (ज्येष्ठ, आषाढ़) की ग्रीष्म; कर्क, सिंह (श्रावण, भाद्रपद) की वर्षा; कन्या, तुला (आश्विन, कार्त्तिक) की शरद्; और वृश्चिक, धन (मृगशिर, पौष) की हेमन्त ऋतु होती है।

शिशिरे ताम्रसंकाशः कपिलो वापि भास्करः।
वसन्ते कुङ्कुमप्रख्यो हरितो वापि शस्यते॥॥ ४८२॥

ग्रीष्मे कनकवैदूर्यः सर्वरूपो जलागमे।
शस्तः शरदि पद्माभो हेमन्ते लोहितप्रभः॥ ४८३॥

सूर्य का वर्ण शिशिर में ताम्र वा कपिल, वसन्त में लाल पीला वा हरा, ग्रीष्म में सुनहरी वा फीका श्वेत, वर्षा में श्वेत वा सर्व वर्ण, शरद् में पीला, और हेमन्त ऋतु में लाल हो तो शुभ; और इन से विपरीत वा रूक्ष हो तो अशुभ होवे।

वर्षाकाले वृष्टिं करोति सद्यः शिरीषपुष्पाभः।
शिखिपत्रनिभः सलिलं न करोति द्वादशाब्दानि॥ ४८४॥

वर्षा काल में सूर्य का वर्ण शिरीष (सिरस) पुष्प जैसा वा निर्मल कान्ति का हो तो शीघ्र वर्षा होवे किन्तु जो मोर की पंख जैसा हो तो १२ वर्ष तक वर्षा नहीं होवे।

श्वेतः शिरीषपुष्पाभः पद्माभो रूप्यसन्निभः ।
वैदूर्यघृतमण्डाभो हेमाभश्च दिवाकरः ॥ ४८५ ॥
वर्णैरेभिः प्रशस्तः स्यान्महास्निग्धः प्रतापवान् ।
भावनः सर्वशस्यानां क्षेमारोग्यसुभिक्षदः ॥ ४८६ ॥

अथवा कोई भी समय सूर्य का वर्ण पन्ने, सोने, चांदी, शिरीष के पुष्प, कमल, घृत वा मांड़ जैसा हो; तथा बड़े बिम्ब का, बहुत तेज युक्त, स्निग्ध कान्ति का हो तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम और आंरोग्य होवे।

रवि ऊगन्तो श्याम आथमतो कालो तवो ।
माघा मेह न थाय दिन दश पवन झकोलसी ॥ ४८७ ॥

सूर्य उदय वा अस्त होने के समय श्याम हो तो वर्षा नहीं होवे किन्तु १० दिन तक प्रचण्ड वायु चले ॥

सूर्य नक्षत्र प्रकरण।

यह प्रकरण प्राचीन वृष्टि विद्या के सिद्धान्तानुसार बड़े महत्वका है। हमारे देश में एक प्रकार नियमित रीतिसे ऋतु में बदलाव होता रहता है उसी का निरीक्षण इसमें बताया गया है, अनियमितपना होनेही से वर्षा काल में गड़बड़ होती है पर कब कैसा अनियमित हुआ है और उसका आगे वर्षा पर क्या असर होगा और नियमितपना किसे कहते है यह सब इस मे एक क्रमसे विस्तार से बताया गया है। इस प्रकरण से पता लगता है कि पूर्व काल में हमारे निमित्तज्ञ किस प्रकार उच्च ध्यान देश की झाड़में टके विषय में रखते थे।

दिन रात्रि से वर्षा का ज्ञान।

सूर्य का नक्षत्र रात्रि में लगे तो शुभ और दिन में लगे तो अशुभ फल जाने।

वार से वर्षा का ज्ञान ।

सौम्यवारेऽर्कनक्षत्रे चारः शुभकरः स्मृतः ।
अर्कारमन्दवारेषु नक्षत्रभ्रमणेऽशुभम् ॥ ४८८ ॥

सूर्य का नक्षत्र सौम्यवार (चन्द्र, बुध, बृहस्पति वा शुक्र) को लगे तो श्रेष्ठ तथा क्रूर वार (रवि, मंगल वा शनि) को लगे तो नेष्ठ फल होवे ।

चन्द्रमा के नक्षत्र तथा राशिसे वर्षा का ज्ञान ।

कृत्तिकासु विशाखासु भरण्यां मैत्र एव च ।
अवर्षणं तदा ज्ञेयं गर्भयोगशतैरपि ॥ ४८९ ॥

सूर्य का नक्षत्र यदि भरणी, कृत्तिका, विशाखा वा अनुराधा के दिन लगे तो वर्षा का अभाव होवे ।

मत्स्ये कुलीरे मकरे जलं वहु कुम्भे वृषे चापजलार्द्धमात्रम् ।
अलिं च तौली जलसञ्ज्ञमाहुःसिंहादिशेषा अजला भवन्ति॥४९०॥

कर्क, मकर, मीन पूर्ण जल राशि; वृष, धन, कुम्भ अर्द्ध जल राशि; तुल, वृश्चिक नाम मात्र जल राशि; और मेष, मिथुन, सिंह, कन्या निर्जल राशि हैं ।

ऋक्षप्रवेशे यदि भास्करे च चन्द्रे त्रिकोणे यदि केन्द्रगे वा ।
जलालयस्थे भृगुजे क्षितौ युतौ सम्पूर्णमेघा जलदा भवन्ति॥४९१॥

सूर्य के (आर्द्रा आदि) नक्षत्र लगे उस समय के लग्न से चन्द्रमा यदि त्रिकोण (५।९) वा केन्द्र (१।४।७।१०) घरों में से किसी घर में जल राशि का हो और शुक्र उस को देखे वा उस के साथ हो तो सम्पूर्ण मेघ जल वर्षे अर्थात् वह नक्षत्र बरसता निकले ।

सूर्य और चन्द्रमा के नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान ।

अश्विन्यादित्रयं चैत्र आर्द्रादिपञ्चकं तथा ।
पूर्वापाढादि चत्वारि चोत्तरा रेवतीद्वयम् ॥ ४९२ ॥

उक्तानि शशिभान्यत्र प्रोच्यन्ते सूर्यभान्यथ ॥ ४९३ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तरा भाद्र पदा और रेवती-ये १४ नक्षत्र चन्द्रमा के; और रोहिणी, मृगशिर, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा और पूर्वा भाद्र पदा-ये १३ नक्षत्र सूर्य के हैं।

सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न वर्षति ।
चन्द्रे सूर्ये भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघराट् ॥ ४९४ ॥
सूर्यचन्द्रसमायोगो यदि स्याद्रात्रिसम्भवः ।
तदा महावृष्टियोगः कीर्त्तितोऽयं पुरातनैः ॥ ४९५ ॥

सूर्य का नक्षत्र तथा उस दिन का नक्षत्र दोनों सूर्य के हों तो वायु चले, दोनों चन्द्रमा के हो तो वर्षा नहीं होवे और जो एक सूर्य का और एक चन्द्रमा का हो तो दिन हो तो सामान्य वर्षा और रात्रि हो तो विशेष वर्षा होवे।

नक्षत्रोंकी स्त्री, पुरुष वा नपुंसक संज्ञा से वर्षा का ज्ञान ।

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ।
मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद् बुधः ॥ ४९६ ॥

आर्द्रा से ले के १० नक्षत्र स्त्री संज्ञा के, विशाखा से ले के ३ नपुंसक संज्ञा के और मूल से ले के १४ पुरुष संज्ञा के हैं।

नरे नरे भवेत्तापो महातापो नपुंसके ।
स्त्रियां स्त्रियां महावातो वृष्टिः स्त्रिनरसङ्गमे ॥ ४९७ ॥
वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम् ।
स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ४९८ ॥

सूर्य का नक्षत्र तथा उस दिन का नक्षत्र दोनों पुरुष संज्ञक हों तो गर्मी. दोनों नपुंसक संज्ञक हों तो अत्यन्त गर्मी वा

वायु, दोनों स्त्री संज्ञक हों तो बहुत वायु वा बादल और जो एक स्त्री और एक पुरुष संज्ञक हो तो वर्षा होवे।

सूर्य नक्षत्र के वाहन से वर्षा का ज्ञान।

सूर्यभाद्दिनभं यावत् सङ्ख्यां तु गणयेत्सुधीः।
नवभिर्भागमाहृत्य शेषाङ्के वाहनं रवेः ॥ ४९९ ॥

अश्वशृगालमण्डूकाश्छागकलापिमूषकाः।
महिषो रासभो हस्ती वृष्ट्यर्थे वाहनक्रमः ॥ ५०० ॥

सूर्य के नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक संख्या गिन के ९ का भाग देवे। शेष १ हो तो अश्व, २ हों तो जम्बुक, ३ हों तो मेंडक, ४ हों तो बकरी, ५ हों तो मोर, ६ हों तो चूहा, ७ हों तो भैंसा, ८ हों तो गधा और ० हो तो हाथी—सूर्य नक्षत्र का वाहन जाने।

महिषशिखिमण्डूकगजेषु बहुलं जलम्।
शेषेषु मध्यमं ज्ञेयं नास्ति छागे च जम्बुके ॥ ५०१ ॥

उक्त वाहन यदि हाथी भैंसा, मोर वा मेंडक हो तो बहुत वर्षा; अश्व, गधा वा चूहा हो तो मध्यम वर्षा; और बकरा वा स्याल हो तो अनावृष्टि होवे।

सूर्य के रेवती नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

मीनसङ्क्रान्तिकाले च पौष्णभागे दिने भवेत्।
यदि विद्युत् शुभो वातस्ततो गर्भो ध्रुवो भवेत् ॥ ५०२ ॥

सूर्य के रेवती पर रहते केवल बिजली चमके तथा शुभ वायु चले तो मेघ के गर्भ निश्चल जाने।

यह नक्षत्र वसन्त ऋतु के प्रारम्भ में आता है उस समय वायु बादल आदि होने से शीत काल में धारण हुये गर्भों की पुष्टि की सूचना होती है। यदि इन दिनों में वर्षा हो जाय तो फिर गर्भ श्राव होने योग्य हो जाते हैं जिस से फिर वर्षा

काल के अन्नों की उत्पत्ति में कमी होती है।

सूर्य के अश्विनी नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

मेषसङ्क्रान्तिकालाद्दात् वासरेषु नवस्वपि।
आर्द्रादौ यत्र वाताभ्रौ विद्युद्वा तत्र वर्षति॥ ५०३॥
यद्वात्र नवयामेषु वाताभ्रादि शुभं भवेत्।
यस्यां दिशि च सम्पूर्णा तद्दिन ऽप्यखिलं जलम्॥ ५०४॥

सूर्य अश्विनी पर आवे तब से ९ दिन वा ९ प्रहर तक वायु, बादल वा बिजली आदि शुभ हो तो सूर्य के आर्द्रा से चित्रा तक ९ नक्षत्रों मे वर्षा होवे। अर्थात् प्रथम दिन वा प्रथम प्रहर से आर्द्रा में, दूसरे से पुनर्वसु मे-इस क्रम से वर्षा जाने। इन मे भी जिस ओर वायु आदि हों उसी ओर वर्षा विशेष होवे।

सूर्य के भरणी नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

जो वर्षे भरणी तो लोग छोडे परणी।
भरणी सर्वनाशाय यत्र वर्षति कृत्तिका॥ ५०५॥

सूर्य के भरणी पर रहते वर्षा हो जावे (किन्तु आगे कृत्तिका पर रहते नही हो) तो अनावृष्टि और धान्य का नाश होवे।

इस नक्षत्रपर सूर्य रहते प्रायः कहीं कुछ वर्षा हो जाया करती है पर लोगों का अनुमान है कि वर्षा होने से आगे वर्षा तथा खेतियों में हानि पहुचती है इसी लिये गुजराती कहवावत है कि-"भरणी कर्युछे भुंडुं देव न वरवु डुंडूं" अर्थात् वर्षा हो जाने से खेति में के धान्य पर डूडिया-शिट्टा नहीं आता और अनावृष्टि हो कर धान्य का नाश होता है। पर यह विश्वास तब ही तक कुछ मिल जा सकता है जब कि इस के पीछे आनेवाले नक्षत्र अपने२ प्रकृतिक चिन्हो द्वारा न सुधरे और उन में भी विशेष कर कृत्तिका अकेली सुधर जाने-वर्षे जाने से तो इस के वर्षने का अशुभ फल फिर कुछ भी नहीं मिलता ऐसा अनुभव कई वार हो चुका है।

सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

यह नक्षत्र ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में आता है इस के मौसिम की विशेष मानता है, प्रत्येक देश में सभी इस के सुधर जाने से आनन्द प्रगट करते हैं उसमें भी गुजरात में तो इसके सुधरने की सूचना प्रत्येक व्यापारी अपने आडतियों को पत्रों में लिख भेजते हैं। खरेखर उत्तर पश्चिम हिन्दुस्तान के लिये यह संवत् का पथ दर्शाति है इस की ऋतु का अच्छा प्रभाव पड़ता है।

कृत्तिकायां निपतिताः पञ्चपा अपि विन्दवः।
पूर्वपश्चाद्भवान्दोषान् हत्वा कल्याणकारिणिः॥ ५०६॥

सूर्य के कृत्तिका पर रहते यदि जल की पांच भी बूंदें बरस जावें तो अगले पिछले सब नक्षत्रों के दोष मिट के जगत् में कल्याण होने योग्य उत्तम वर्षा होवे।

कमि छांट होत कृत्तिका कल्यान। निपजन्त धरा यदि सप्त धान।
कृत्तिका नक्षत्र बहु वरषि मेह। करवरा संवत् नांहि सन्देह॥५०७॥

सूर्य के कृत्तिका पर रहते यदि थोड़ी भी बूंदें बरस जावें तो संवत् श्रेष्ठ, किन्तु अधिक जल वरस जावे तो मध्यम होवे।

चन्दा बीस सहेलियां सातै आगलियां।
जो न भिजोवे कृत्तिका (तो) सगली साटलियां॥ ५०८॥

सूर्य के कृत्तिका पर रहते यदि कुछ भी जल न वरसे तो आगे वर्षा न होवे। इस लिये कृत्तिका का वरसना ही श्रेष्ठ है।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

यह नक्षत्र कृत्तिका नक्षत्र के पीछे आता है अतः कृत्तिका में हुये तुफान के कारण इस में गरमी बढनी चाहिये। इसकी पूर्व काल में निमतज्ञों द्वारा खूब छानवीन हुई मालूम होती है, अनेकोने अपना अनुभव भिन्न२ बहुत विचार के साथ प्रकाशित किया है—

पाय से आषाढ़, दूसरे से श्रावण, तीसरे से भाद्रपद और चौथे से आश्विन में अच्छी वर्षा होवे।

ज्येष्ठ मास रोहिणि तपे काल कभी नहिं थाय।
रोहिणि में छींटे पड़े मेहा खंच कराय ॥ ५१४ ॥

ज्येष्ठ में रोहिणी में यदि बहुत तपे तो कदापि दुर्भिक्ष न होवे, किन्तु छींटे पड़ जावें तो वर्षा की खंच अवश्य होवे।

रोहिणि दाझी सुन हे सुन्दर। मेह सिधाया ऊंचे अम्बर।
जब हीं आवे रवि अश्लेषा। तब ही वर्षे मेह विशेषा ॥५१५॥

रोहिणी में यदि बिजली चमके तो पहिले २ महीनों तक वर्षा की खंच करके पीछे जब सूर्य अश्लेषा पर आवे तब फिर अवश्य ही विशेष वर्षा होवे।

गली रोहिणी खंच करे दिवस बहत्तर जाण।
रेली गलीजे एक फल कहे नन्द निर्माण ॥ ५१६ ॥

रोहिणी में चाहे छींटे पड़ें चाहे अधिक वर्षा हो परन्तु जल वर्षने ही से आगे वर्षा होने में प्रायः ७२ दिन की खंच हो जावे।

रोहिण्या भास्वतो योगे निषिद्धमपि वर्षणम्।
नद्याः प्रवाहे नो दुष्टं स्याद्वादी विजयी ततः ॥ ५१७ ॥

सूर्य के रोहिणी पर रहते यदि थोड़ी ही वर्षा हो तब तो अशुभ है, किन्तु जो कभी इतनी वर्षा हो जावे कि नदी आदिका पानी बह निकले तो फिर अशुभ नहीं है।

रोहिणि दाझी जल हरे काढे बहत्तर दिह।
जो खिंवति वर्षती रहे तो मत आने बीह ॥ ५१८ ॥

रोहिणी में यदि बिजली चमके वा वर्षा हो तो ७२ दिन वर्षा की खंच होवे; किन्तु जो लगातार ७ दिन तक बिजली चमकती रहे वा वर्षा होती रहे तो फिर यह दोष नहीं रहे किन्तु श्रेष्ठ फल होवे।

पहला पाया जल हरे दूजा बहत्तर खाय ।
तीजा पाया तृण हरे चौथा समुन्द्रों जाय ॥ ५१९ ॥

रोहिणी के प्रथम पाये में वर्षा हो तो वर्षा की कमी, दूसरे मे हो तो ७२ दिन तक वर्षा की खंच, तीसरे में हो तो घास की कमी और जो चौथे में हो तो बहुत वर्षा होवे।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र के नीचे लिखे दिनों में वृष्टि हो तो-

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७२	५०	४९	४२	३९	३४	३१	?	२८	२४	२१	१६	१२

इतने दिनों तक वर्षा की खंच होवे।

सूर्य के मृगाशिर नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

मृगशिरं नक्षत्र वर्षा काल के कुछ पहिले आता है उस समय हिन्दी महासागर में समयवाही (वर्षा ऋतु) पवनका फेर बदल होना सुरु होता है जिससे हमारे देश में वायु बहुत जोर से चलने लगता है। जिस वर्ष देश मे तथा समुद्र में तोफानी वायु अधिक चलता है उस वर्ष में वर्षा काल के प्रारम्भ की वर्षा बहुधा श्रेष्ठ होती है। और जो वायु कम चले तो प्रारम्भ की वर्षा में भी कमी रहती है। इन दिनों में वर्षा होनेसे किसी प्रकारका उपद्रव तो होता है परन्तु आगे वर्षा होने में प्रायः विलम्ब नहीं होता।

पूर्व चरण मृग नाहीं वाजे । श्रावण मांहि दिवस दश गाजे ।
पिछला चरण अमूझा जाय । सोलह दिन श्रावण के खाय ॥५२०॥

मृगशिर का पहिला पाया नहीं वाजे तो श्रावण में १० दिन तक वर्षा होवे किन्तु जो पिछला पाया नहीं वाजे (खोड़ा मृग अमूझे) तो श्रावण में १५ दिन वर्षा की खंच होवे।

अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभाः शुकाः ।
स्वचक्रं परचक्रं च सप्तेति मृगशीर्षके ॥ ५२१ ॥

सूर्य के मृगशिर नक्षत्र में पहिले २ दिन में वर्षा हो तो अति वृष्टि, दूसरे २ दिन में हो तो अनावृष्टि, तीसरे २ दिन में हो तो चूहे, चौथे २ दिन में हो तो टिड्डी, पांचवें २ दिन में हो तो तोते, छठे २ दिन में हो तो स्व राज्य में विग्रह और सातवें २ दिन में वर्षा हो तो पराये राज्य में विग्रह होवे ।

* सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान ।

आर्द्रा वर्षा काल के प्रारम्भ का नक्षत्र है इन दिनों में गाज बीज वर्षा आदि वर्षा काल के चिन्ह हो तो आगे वर्षा काल भी श्रेष्ठ होता है और जो इन दिनों में जोर का वायु वा धूप आदि उष्ण काल के चिन्ह हो तो आगे का वर्षा काल भी प्रायः उष्ण काल ही प्रतीत होता है। जिस वर्ष आर्द्रा में वर्षा हो जावे उस वर्षा में सम्पूर्ण खेतियें उत्पन्न होति है क्योंकि यह समय खेति बोने के लिये अति उत्तम माना गया है।

आर्द्रा रवेर्भानुवारे प्रवेशः पशुनाशनः ।
सौम्ये सुभिक्षदः प्रोक्तो भौमे निधनमाप्नुयात् ॥ ५२२ ॥
बुधे क्षेमं सुभिक्षं च गुरौ चार्थसमृद्धये ।
शुक्रे शान्तिकरः प्रोक्तो मन्दे मन्दफलम्भवेत् ॥ ५२३ ॥

सूर्य आर्द्रा पर आवे तव वार-रवि हो तो पशुओ का नाश, सोम हो तो सुभिक्ष, मंगल हो तो मनुष्यो की मृत्यु, बुध हो तो सुभिक्ष तथा क्षेम, गुरु हो तो धन की वृद्धि, शुक्र हो तो शान्ति और शनि हो तो नेष्ट फल हो[illegible]

सूर्योदये रोग [illegible] घटीद्व [illegible] योगः ।
मध्याह्नकाले क[illegible] [illegible]न्यं मह [illegible] [illegible]शः॥५२४॥

के [illegible] का [illegible] रे व[illegible]

[illegible]

सन्ध्यास्थितार्द्रा कुरुते सुभिक्षं रात्रो स्थिता सर्वसुखाय लोके ।
भोगं प्रदत्ते खलु मध्यरात्रौ पूर्वं सुखं दुःखमतो परात्रे ॥५२५॥

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र सूर्योदय के समय लगे तो रोग का भय, दो घड़ी दिन चढ़े लगे तो युद्ध विग्रह तथा रोग, मध्याह्न मे लगे तो घास तथा खेतियों का नाश, सन्ध्या मे लगे तो सुभिक्ष, रात्रि में लगे तो सर्व प्रकार का सुख, मध्य रात्रि में लगे तो अनेक प्रकार के भोगों की प्राप्ति, पिछली रात्रि में लगे तो सुख और पिछली रात्रि के पीछे सूर्योदय तक लगे तो जगत् में दुःख होवे।

रात्रौ सङ्क्रान्तिश्चार्द्रायामप्यगस्त्योदयो यदा ।
तदा वर्षे सुभिक्षं स्याद्विपरीते विपर्ययः ॥ ५२६ ॥

सूर्य आर्द्रा पर आवे वा अगस्त्य ऊगे तब रात्रि हो उस वर्ष में सुभिक्ष और दिन हो तो दुर्भिक्ष होवे ।

आर्द्रा भरे खादरा (तो) पुनर्वसु भरे तलाव ॥ ५२७ ॥

आर्द्रा में यदि खड्डे भरने योग्य वर्षा हो जावे तो पुनर्वसु में प्रायः तालाव भरने योग्य अच्छी वर्षा होवे ।

आर्द्रायां वर्षते देव गर्जते वा कथञ्चन ।
सर्वे गर्भाश्च तत्रैव प्रपुष्टा वर्षते प्रिये ॥ ५२८ ॥

आर्द्रा में यदि वर्षा हो वा मेघ गाजे तो सम्पूर्ण गर्भ पुष्ट हो के वर्षे । सूर्य जिस दिन आर्द्रा नक्षत्र पर आवें उसी दिन वादल वर्षा हो जावे तो आर्द्रा पर सूर्य रहे ऊतने दिनों में फिर वर्षा होवे, ऐसे ही यदि दूसरे दिन वर्षा हो तो सूर्य के पुनर्वसुमें, तीसरे दिन हो तो पुष्प में, चौथे दिन हो तो अश्लेषा में, पांचवे दिन हो तो मघा में, छठे दिन हो तो पूर्वा फाल्गुनि में, सातवें दिन हो तो उत्तरा फाल्गुनि में और नववें दिन वर्षा हो तो सूर्य के चित्रा नक्षत्र में वर्षा होवे । इस में भि आर्द्रा में वर्षा दिन में हो तो आगे के नक्षत्रों में भी दिन में और रात्रि में हो तो रात्रि में होवे। किन्तु जो आर्द्रा पर सूर्य आवे उसी दिन

अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभाः शुकाः ।
स्वचक्रं परचक्रं च सप्तेति मृगशीर्षके ॥ ८२१ ॥

सूर्य के मृगशिर नक्षत्र में पहिले २ दिन में वर्षा अति वृष्टि, दूसरे २ दिन में हो तो अनावृष्टि, तीसरे २ हो तो चूहे, चौथे २ दिन में हो तो टिड्डी, पांचवें २ दि तो तोते, छठे २ दिन में हो तो स्व राज्य में विग्रह अं तवें २ दिन में वर्षा हो तो पराये राज्य में विग्रह होवे

* सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान ।

आर्द्रा वर्षा काल के प्रारम्भ का नक्षत्र है इन दि बीज वर्षा आदि वर्षा काल के चिन्ह हो तो आगे वर्षा श्रेष्ठ होता है और जो इन दिनों में जोर का वायु वा उष्ण काल के चिन्ह हो तो आगे का वर्षा काल भी काल ही प्रतीत होता है। जिस वर्ष आर्द्रा में वर्षा हो वर्षा में सम्पूर्ण खेतियें उत्पन्न होति है क्योंकि यह बोने के लिये अति उत्तम माना गया है।

आर्द्रा रवेर्भानुवारे प्रवेशः पशुनाशनः ।
सौम्ये सुभिक्षदः प्रोक्ता भौमे निधनमाप्नुयात् ॥ ८
बुधे क्षेमं सुभिक्षं च गुरौ चार्थसमृद्धये ।
शुक्रे शान्तिकरः प्रोक्तो मन्दे मन्दफलम्भवेत् ॥ ८

सूर्य आर्द्रा पर आवे तब वार-रवि हो तो पशुओ सोम हो तो सुभिक्ष, मंगल हो तो मनुष्यो की मृत्यु, बुध सुभिक्ष तथा क्षेम, गुरु हो तो धन की वृद्धि, शुक्र हो न्ति और शनि हो तो नेष्ट फल होवे।

सूर्योदये रोगकरी स्मृतार्द्रा घटीद्वये विग्रहरोगयोगः ।
मध्याह्नकाले कृषिनाशनाय धान्यं महर्घं च तृणस्य नाशः॥८

---

* आर्द्रा के तिथि वार नक्षत्रादि का विशेष फल मेरे बना 'संवत्सर सुबोध' नामक ग्रन्थ में लिखा है।

सन्ध्यास्थितार्द्रा कुरुते सुभिक्षं रात्रौ स्थिता सर्वसुखाय लोके ।
भोगं प्रदत्ते खलु मध्यरात्रौ पूर्वं सुखं दुःखमतो परात्रे ॥५२५॥

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र सूर्योदय के समय लगे तो रोग का भय, दो घड़ी दिन चढ़े लगे तो युद्ध विग्रह तथा रोग, मध्याह्न में लगे तो घास तथा खेतियों का नाश, सन्ध्या में लगे तो सुभिक्ष, रात्रि में लगे तो सर्व प्रकार का सुख, मध्य रात्रि में लगे तो अनेक प्रकार के भोगों की प्राप्ति, पिछली रात्रि में लगे तो सुख और पिछली रात्रि के पीछे सूर्योदय तक लगे तो जगत् में दुःख होवे।

रात्रौ सङ्क्रान्तिश्चार्द्रायामध्यगस्त्योदयो यदा ।
तदा वर्षे सुभिक्षं स्याद्विपरीते विपर्ययः ॥ ५२६ ॥

सूर्य आर्द्रा पर आवे वा अगस्त्य ऊगे तब रात्रि हो उस वर्ष में सुभिक्ष और दिन हो तो दुर्भिक्ष होवे ।

आर्द्रा भरे खादरा (तो) पुनर्वसु भरे तलाव ॥ ५२७ ॥

आर्द्रा में यदि खड्डे भरने योग्य वर्षा हो जावे तो पुनर्वसु में प्रायः तालाब भरने योग्य अच्छी वर्षा होवे।

आर्द्रायां वर्षते देवि गर्जते वा कथञ्चन ।
सर्वे गर्भाश्च तत्रैव प्रपुष्टा वर्षते प्रिये ॥ ५२८ ॥

आर्द्रा में यदि वर्षा हो वा मेघ गाजे तो सम्पूर्ण गर्भ पुष्ट हो के वर्षे । सूर्य जिस दिन आर्द्रा नक्षत्र पर आवे उसी दिन वादल वर्षा हो जावे तो आर्द्रा पर सूर्य रहे ऊतने दिनों में फिर वर्षा होवे, ऐसे ही यदि दूसरे दिन वर्षा हो तो सूर्य के पुनर्वसु में, तीसरे दिन हो तो पुष्य में, चौथे दिन हो तो अश्लेषा में, पांचवे दिन हो तो मघा में, छठे दिन हो तो पूर्वा फाल्गुनि में, सातवें दिन हो तो उत्तरा फाल्गुनि में और नववें दिन वर्षा हो तो सूर्य के चित्रा नक्षत्र में वर्षा होवे । इस में भि आर्द्रा में वर्षा दिन में हो तो आगे के नक्षत्रों में भी दिन में और में हो तो रात्रि में होवे। किन्तु जो आर्द्रा पर सूर्य आवे उसी दिन

वर्षा हो जावे तो १॥ महीने तक और सम्पूर्ण आर्द्रा में मेघ नहीं गाजे तो १ महीने तक वर्षा की खंच होके पीछे वर्षा होवे।

सूर्य के पुनर्वसु नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

पुनर्वसु जो वाजे वाय। कन्थ छोड कामिनि भग जाय ॥५२९॥

पुनर्वसु में वायु चलने लगे तो स्त्रियें अपने पुरुषों को छोड़ के चली जावें-ऐसा दुर्भिक्ष का भय होवे।

सूर्य के पुष्प नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

पुष्य का पाणी अमृत वाणी ॥ ५३० ॥

पुष्प में की वर्षा का पानी खेतिके लिये अमृत समान होता है।

वख पख दो भायला वर्षे तो वर्षे वाजे तो वाजे।

पुनर्वसु में वर्षा हो तो प्रायः पुष्य में भी वर्षा और वायु हो तो वायु चलता है।

सूर्य के अश्लेषा नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

यह नक्षत्र वर्षा काल के मध्य में आता है इस लिये इसकी वर्षा की तरी जमीन में बहुत समय तक रहती है।

अश्लेषायां गतो भानुः प्लावयेत्पर्वतानपि ॥ ५३१ ॥
अश्लेषायां गतो भानुर्यदि वृष्टिं न मुञ्चति।
मघापञ्चकमासाद्य करोत्येकार्णवं जगत् ॥ ५३२ ॥

सूर्य अश्लेषा पर आवे तब बहुधा पर्वतों को भिगोने वाली अधिक वर्षा होती है। किन्तु जो उस समय वर्षा न हो तो फिर सूर्य के मघा से ले के चित्रा तक के ५ नक्षत्रों में प्रायः बहुत वर्षा हुआ करती है।

आखा तीजां पूरव वाजे। तो अश्लेषा गहरी गाजे।
भीजे राजा राणी भूले। रोग दोष में परजा झूले ॥५३३॥

जल वर्षे पुख सर्पणी अश्लेषा में जोय ।
ताव तिजारी नहरुवा जहानूं डहरू होय ॥ ५३४ ॥

वैशाख सुदि ३ को प्रभात में पूर्व का वायु चले तो अश्लेषा में अधिक वर्षा होवे, और अश्लेषा में वर्षा होने से रबी-शरद ऋतु की साख तो उत्तम होवे परन्तु प्रजा में इकांतरा तिजारी आदि ज्वर, नहरुआ, जानू, डहरू आदि रोग अधिक होवें।

सूर्य के मघा नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

मघार्कदिवसं त्यक्त्वा सर्वनक्षत्रवर्षणम् ।
हर्षणं सर्वलोकानां कर्षणं फलदायकम् ॥ ५३५ ॥

सूर्य मघा पर रहे उन में प्रथम दिन को छोड़ के अन्य कोई वा सब दिन वर्षते निकलें तो प्रजा में आनन्द तथा खेतियों की बहुत वृद्धि होवे। तथा अश्लेषाके विषे ले जलसे होने वाले रोगों की भी शान्ति होवे।

मघा माचन्त मेहा। केवाजन्ता वाय उड़न्ती खेहा ॥ ५३६ ॥

मघा में वर्षा प्रारम्भ हो जावे तो बहुत वर्षा होवे और वायु प्रारम्भ हो जावे तो बहुत ज़ोर का वायु चलता रहै।

वर्षे मघा तो करे धानरा ढगा ॥ ५३७ ॥

मघा में वर्षा होने से खेतियों में सर्व प्रकार का धान्य अधिक उत्पन्न होता है।

सूर्य के पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

इस नक्षत्र में वर्षा होने से तिल अधिक बोये जाते हैं।

सूर्य के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

इस नक्षत्र के समय फसल पर शिट्टे आ जाते हैं और नेदान भी हो जाता है इस लिये इस समय की वर्षा से धान्य की पैदावारी में बहुत वृद्धि होती है लिखा है कि—

वर्षे फाल्गुनि उत्तरा। धान नांहि खाय कुतरा ॥ ५१८ ॥

सूर्य के उत्तरा फाल्गुनी पर रहते वर्षा हो तो इतना अधिक धान्य पैदा हो कि कुत्ते भी धान्य की परवाह नहीं करें।

सूर्य के हस्त नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

हस्तार्कसङ्क्रमाद्वर्षा सर्वां भीतिं निवारयेत् ॥ ५३९ ॥

हस्तीड़ो सूड़ उलाड़े (तो) पोटे आई गाले ॥ ५४० ॥

सूर्य के हस्त पर रहते वर्षा हो तो सर्व भय मिट जावें अर्थात् बहुत उत्तम जलकी वर्षा होवे जिस से मछर डांस मक्खी आदि विषैले जन्तुओं का नाश होकर अच्छा संवत होवें।

सूर्य के चित्रा नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

उत्तरा उत्तर दे गई हस्त गया मुख मोड़।
प्रजा चली गई मालवे (जिसे) चित्रा लाई मोड़ ॥५४१॥

उत्तरा फाल्गुनी तथा हस्त में वर्षा न भी हो, किन्तु यदि आगे चित्रा में हो जावे तो भी प्रजा का पालन हो सके।

सूर्य के उत्तरा भाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर और आर्द्रा नक्षत्रों से वर्षा का ज्ञान।

उत्तरा पूर्वशस्या च परशस्या च रेवती।
अश्विनी सर्वशस्या च यत्र वर्षति कृतिका ॥ ५४२ ॥

वर्षा हो तब सूर्य का नक्षत्र उत्तरा भाद्रपदा हो तो ख़रीफ़ रेवती हो तो रबी और अश्विनी हो तो दोनों खेतियों का नाश हो जावे। किन्तु सूर्य कृत्तिका पर आवे तब वर्षा फिर हो जावे तो फिर यह अशुभ फल नहीं होवे।

रेवती तोयनाशाय धान्यनाशाय चाश्विनी।
भरणी सर्वनाशाय यत्र वर्षति कृत्तिका ॥ ५४३ ॥

वर्षा हो तब सूर्य का नक्षत्र रेवती हो तो आगे वर्षा काल में वर्षा, अश्विनी हो तो धान्य और भरणी हो तो वर्षा और धान्य

दोनों ही नहीं होवें। किन्तु सूर्य कृत्तिका पर आवे तब फिर वर्षा हो जावे तो फिर यह अशुभ फल नहीं होवे।

रोहिणि गाजे कृति न बरसे। टुक टुकड़े को दुनिया तरसे।
रोहिणि तपे कृत्तिका बरसे। धूधूकार ज़माना दरसे ॥५४४॥

रोहिणी में तो तपे तथा कृत्तिका में वर्षे तो बहुत श्रेष्ठ सुभिक्ष होवे। किन्तु जो रोहिणी मे तो गाजे और कृत्तिका में वर्षा न हो तो फिर एक २ टुकड़े के लिये मनुष्य तरसें ऐसा दुर्भिक्ष पड़े।

ज्येष्ठ मूल रोहिणि तपे कृत्तिका करे कल्यान।
प्रचण्ड पवन मृगशिर बजे सुभिक्ष होय निधान ॥५४५॥

ज्येष्ठ सुदि १५ के आसपास जिस दिन मूल नक्षत्र हो, वह दिन तथा सूर्य के रोहिणी नक्षत्र के १५ ही दिन तपते निकले कृत्तिका में छींटे हो और मृगशिर में वायु बहुत ज़ोर से चले तो निश्चय ही सुभिक्ष होवे।

कृत्तिका तपे रोहिणी गाजे। चौथा चरण मृग नहीं वाजे।
आर्द्रा वाय झकोले जोय। तो तृण काल माघ कहुं तोय ॥५४६॥

कृत्तिका तो तपे, रोहिणी गाजे और मृगशिर के चौथे पाये में वायु न वाजे तथा आर्द्रा में ज़ोर से वायु चले तो निश्चय ही तृण काल पड़े।

रोहिणी चवे मृग तपे कृत्तिका कोरी जाय।
दुर्भिक्ष निश्चय देखिये पड़े आर्द्रा वाय ॥ ५४७ ॥

कृत्तिका में जल नहीं वर्षे, रोहिणी में थोड़ी वर्षा हो. मृगशिर में तपे और आर्द्रा में वायु चले तो निश्चय दुर्भिक्ष पड़े।

कृत्तिका तो कोरी गई आर्द्रा मेह न बूट।
तो जाणजे भड्डली काल निरोंतो दीठ ॥ ५४८ ॥

कृत्तिका और आर्द्रा-इन दोनों नक्षत्रों में कुछ भी वर्षा न हो तो निश्चय ही दुर्भिक्ष पड़े। और जो इन दोमें से किसी एक

में भी कुछ भी वर्षा हो जाय तो भी आधा संवत् तो हो ही जाता है और जो दोनों ही में वर्षा हो जाय तो फिर पूरा संवत् निश्चय ही हो जावे।

मृगाशिर वाय न वाजिया रोहिणि तपी न ज्येष्ट।
नाहक बांधो झोंपड़े रहियो वड़ के हेठ॥ ५४९॥

रोहिणी में धूप न पड़े और मृगाशिर में वायु न चले तो फिर छपर छानकी आवश्कयता हो इतनी अधिक वर्षा नहीं होवे।

तपे रोहिणी मृगशिर वाजे। आर्द्रा मेह अचिन्ता गाजे।
रोहिणि वाजे मृगशिर तपे। राजा झूंझे प्रजा खपे॥ ५५०॥

रोहिणी में तपे तथा मृगशिर में वायु चलै तो आर्द्रा में अवश्य अचानक वर्षा होवे; किन्तु जो रोहिणी में वायु चले तथा मृगशिर में तपे तो राजा तथा प्रजा दोनों कष्ट भोगें।

गले रोहिणी मृग तपे आर्द्रा वाजे वाय।
डंक कहे हे भड्डली दुर्भिक्ष होण उपाय॥ ५५१॥

रोहिणी में थोड़ा जल बरसे, मृगाशिर में तपे और आर्द्रा में ज़ोर का वायु चले तो वर्षा न होने से दुर्भिक्ष पड़े।

मृगाशिर वाय न वाजिया आर्द्रा हुआ न मेह।
यों जाने तू भड्डली आया समय का छेह॥ ५५२॥

मृगाशिर में बहुत ज़ोर का वायु न चले और आर्द्रा में वर्षा न हो तो फिर संवत् श्रेष्ठ होनेकी आशा करनी वृथा है॥

---

*सूर्य संक्रान्ति प्रकरण।

वार से दुर्भिक्ष का ज्ञान।

मेषकर्कमकरेऽर्कसङ्क्रमे क्रूरवारसहिते जलं नहि।
धान्यमल्पतरमेव वत्सरे विग्रहो विपुलरोगतस्कराः॥५५३॥

---

* सूर्यकी १२ संक्रान्तियोंका बहुत विस्तार सहित फल मेरे बनाये हुये 'संक्रान्ति प्रकाश' नामक ग्रन्थमे लिखा है॥

कर्कटमृगसङ्क्रान्तौ वारे भौमार्किभानुजे ।
पञ्चदशमुहूर्त्तो वा तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ५५४ ॥

कर्क मकर दो वहन हैं बैठें एक हि वार ।
तो धरती का पति मरे (वा) पड़े अचिन्ता काल ॥५५५॥

संक्रान्ति मेष, कर्क वा मकर की रवि, मंगल वा शनि वार को वा कर्क वा मकर की १५ मुहूर्त्ती वा दोनों एक ही वार में लगें तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, रोग तथा चौरों का उपद्रव अधिक वा किसी राजा की मृत्यु होवे ।

कर्कसङ्क्रमणे मन्दो मकरार्के बृहस्पतिः ।
तुलाऽर्के मङ्गलो वर्षे तत्र दुर्भिक्षसम्भवः ॥ ५५६ ॥

जिस वर्ष में कर्क संक्रान्ति तो शनि को, तुला मंगल को तथा मकर गुरु को लगे तो उस वर्ष मे दुर्भिक्ष पड़े ।

वर्षा से धान्योत्पत्ति का ज्ञान ।

कर्कटो यदि भिद्येत सिंहो गच्छत्यभिन्दयकः ।
तदा धान्यस्य निष्पत्तिर्जायते पृथिवीतले ॥ ५५७ ॥

वर्षा कर्क संक्रान्ति के दिन तो (थोड़ी भी) हो जावे और आगे सिंह संक्रान्ति के दिन कुछ भी न हो तो धान्य बहुत उत्पन्न होवे; किन्तु जो इस से विपरीत हो तो नष्ट होवे ।

मेष सक्रान्ति ।

चैत्रमासे पुनः प्राप्ते लोकानां हितहेतवे ।
मेषसङ्क्रान्तिवेलायां लग्नं शोध्यं शुभाशुभम् ॥५५८॥

मेष संक्रान्ति लगे उस समय का लग्न बना के उस समय के ग्रहों के अनुसार वर्ष का शुभाशुभ फल जाने ।

यदा शुभग्रहैर्दृष्टं लग्नं स्यात्तु तदा शुभम् ।
धनधान्यादि सम्पूर्णं सर्वं वर्षं शुभावहम् ॥ ५५९ ॥

उस समय के लग्न को शुभ ग्रह देखें तो जगत् में धन धान्यादि सम्पूर्ण पदार्थों की वृद्धि तथा सम्पूर्ण वर्ष शुभ होवे।

भावा द्वादश ते मासाः सौम्याः क्रूरा ग्रहाः पुनः ।
तेषु मासेषु दृष्टा तु फलं ज्ञेय शुभाशुभम् ॥ ५६० ॥

उस लग्न के १२ घरों से १२ महीनों (मेषादि १२ संक्रान्तियों) का शुभाशुभ फल जाने। जैसे-पहिले घर से पहिले महीने (मेष) का दूसरे से दूसरे (वृष) का,-इस क्रम से जिस महीने के घर को शुभ ग्रह देखें उस महीने में शुभ और जिस को अशुभ ग्रह देखें उस महीने में अशुभ फल होवे।

भानोर्मेषप्रवेशोदयभवनपतिः सद्ग्रहः स्वोच्चसंस्थः
स्वर्क्षस्थो वापि केन्द्रे शुभगगनचरैर्दृष्टयुक्तो बलाढ्य ।
तस्मिन्वर्षे विदध्याज्जगति शुभसुखं भूरि शस्यं सुवृष्टिं
क्रूरः क्रूरार्दितो वा दिशति नृपभयं कष्टमन्नं महर्घम् ॥५६१॥

मेष संक्रान्ति प्रवेश समय के लग्न का स्वामी ग्रह शुभ हो और उच्च वा स्व राशि का केन्द्र (१।४।७।१०-इन घरों) मे कहीं बैठा हो और-कोई शुभ ग्रह उसे देखता हो वा उस के साथ बैठा हो-इत्यादि बलों से बलवान् हो तो उस वर्ष में सुवृष्टि, खेतियों की वृद्धि, सुख, सम्पत्ति आदि से जगत् में शुभ फल होवे। किन्तु जो लग्न का स्वामी क्रूर ग्रह हो वा कोई क्रूर ग्रह उसे देखता हो वा उस के साथ बैठा हो तो अनावृष्टि, धान्य तेज, प्रजा में कष्ट और राजाओं को भय होवे।

धने व्यये ऽपि सौम्यश्च केन्द्रे वा मेषसङ्क्रमे ।
स्वर्क्षे शुभसुहृद्दृष्टः सुभिक्षं व्यत्ययो ऽन्यथा ॥ ५६२ ॥

पूर्वोक्त लग्न से १।२।४।७।१०।१२-इन घरो के स्वामी शुभ ग्रह हों और इन्हीं घरों में वा स्व स्व राशि मे बैठे हों तथा उन को कोई शुभ वा मित्र ग्रह देखता हो तो सुभिक्ष, किन्तु जो इस से विपरीत हो तो दुर्भिक्ष होवे।

मेषप्रवेशलग्ने च यदि स्याद्वर्षजन्मनि ।
सप्तमस्थो यदा पापो धान्यं जातं विनाशयेत् ॥५६३॥

मेष संक्रान्ति वा चैत्र सुदि १ के प्रवेश समय के लग्न से यदि ७ वें घर में क्रूर ग्रह बैठा हो तो उत्पन्न हुआ हुआ धान्य भी नष्ट हो जावे ।

* स्वर विचार ।

मेषसङ्क्रान्तिवेलायां स्वरभेदं विचारयेत् ।
संवत्सरफलं ब्रूयाल्लोकानां तत्त्वचिन्तकः ॥ ५६४ ॥

मेष संक्रान्ति लगे उस समय तत्व वेत्ता विद्वान् अपने शरीरस्थ वायु के भेद (अर्थात् कौन सा स्वर तथा तत्व चलता है सो) विचार के जगत् मे संवत् का शुभाशुभ फल कहे ।

मेषसङ्क्रान्तिवेलायां व्योमतत्वं वहेद्यदि ।
तत्रापि शून्यता ज्ञेया शस्यादीनां सुखस्य च ॥५६५॥

आकाश तत्व चलता हो तो खेतियों तथा सुख की हानि होवे।

मेषसङ्क्रान्तिवेलायां वायुतत्वं वहेद्यदि ।
उत्पातोपद्रवौ भीतिरल्पा वृष्टिः स्युरीतयः ॥ ५६६ ॥

वायु तत्व चलता हो तो अति वृष्टि, अल्प वृष्टि, अनावृष्टि, चूहे, टिड्डी, तोते, अनेक प्रकार के उपद्रव, भय वा स्व राजा की वा पराये राजा की सेना से कष्ट होवे ।

दुर्भिक्षं राष्ट्रभङ्गः स्यादुत्पत्तिश्च विनश्यति ।
अल्पादल्पतरा वृष्टिरग्नितत्वं वहेद्यदि ॥ ५६७ ॥

अग्नि तत्व चलता हो तो वर्षा बहुत ही कम, उत्पन्न हुई २ खेतियों का नाश, दुर्भिक्ष और राजा प्रजा को कष्ट होवे ।

---

* स्वर तथा तत्वों का पूर्ण निर्णय मेरे बनाये "वृहदर्घ्य मार्त्तण्ड" ग्रन्थ के 'स्वर तत्व सुबोध' नामक अंक मे किया है ।

कर्क संक्रान्ति ।

वार से वर्षा का ज्ञान ।

अर्कादिवारे सङ्क्रान्तौ कर्कस्याब्दविंशोपकाः ।
दिशो नखा गजाः सूर्या धृत्यो ऽष्टादश शायकाः ॥५८३॥

कर्क संक्रान्ति लगे उस दिन वार रवि हो तो १०, चन्द्र हो तो २०, मंगल हो तो ८, बुध हो तो १२, गुरु हो तो १८, शुक्र हो तो १८ और शनि हो तो ५ विश्वे ज़माना होवे।

यदि कर्कार्कसङ्क्रान्तौ कुजार्कशनिसोमजाः ।
अल्पनीरं रणं घोरं स्यात्तदा नीचबुद्धिदः ॥ ५८४ ॥

कर्क संक्रान्ति रवि, मंगल, बुध वा शनि वार को लगे तो वर्षा कम, संग्राम तथा मनुष्यों की बुद्धि नीच हो जावे।

सोमे जीवे तथा शुक्रे जलस्नानं भुवस्तलम् ।
धान्यं समर्घमायाति परदेशाज्जने सुखम् ॥ ५८५ ॥

और जो सोम, गुरु वा शुक्र वार को लगे तो वर्षा बहुत, धान्य मन्दा तथा प्रजा में सुख की वृद्धि होवे और लोग पर देश से पीछे स्व देश में आवें।

चन्द्रमा की राशि से वर्षा का ज्ञान ।

जलचरराशिगते च शशाङ्के(रविः) सङ्क्रमणं कुरुते च कुलीरे।
कणकः कथयति तन्दुलयोगं तावद्वर्षति यावत्तुलान्तम् ॥५८६॥

कर्क संक्रान्ति लगे तब चन्द्रमा जल राशि पर हो तो चारों ही महीने वर्षते निकलें ।

युग्माजगोमत्स्यगते शशाङ्के रविर्यदा कर्कटके व्रजन्ति ।
नूनं शतार्द्धं हरिकार्मुकेर्द्धं व्रजन्ति कन्यां मकरे तदर्द्धम् ॥५८७॥
तुलालिकर्कटकुम्भयङ्मात्राद्विदशाढके ॥ ५८८ ॥

कर्क संक्रान्ति लगे तब चन्द्रमा मेष, मिथुन वा मीन का

हो तो १००; सिंह वा धन का हो तो ५०; कन्या वा मकर का हो तो २५; और कर्क, तुला, वृश्चिक वा कुम्भका हो तो १२॥ आढक वर्षा होवे ।

अर्द्धं वर्षति शैलाग्रे तदर्द्धं विपिने तथा ।
तदर्द्धं चोषरे प्रोक्तं शेषं क्षेत्रे विनिर्दिशेत् ॥ ५८९ ॥

परन्तु उक्त प्रमाण में से पर्वतों पर आधा, जंगल में चौथाई और ऊसर भूमि तथा अन्य क्षेत्रों में आठवां २ भाग जल वर्षे।

अन्य रीतियों से वर्षा का ज्ञान ।

श्रावणे कर्कसङ्क्रान्तौ जाते मेघमहोदये ।
सप्तमासान् सुभिक्षं स्यान्नान्यथा जिनभाषितम् ॥ ५९० ॥

कर्क संक्रान्ति श्रावण (वदि) में लगे और उस दिन वर्षा हो तो ७ महीनो तक सुभिक्ष रहे।

कर्कटे प्रविशन्तन्तु सूर्यं पश्येद्यदा गुरुः ।
पादोनं पूर्णदृष्ट्या वा तत्र काले महज्जलम् ॥ ५९१ ॥

कर्क संक्रान्ति लगे तब सूर्य को बृहस्पति पूर्ण वा पौन दृष्टि से देखे तो बहुत वर्षा होवे।

कर्कां हूती दस दिनां जो ऊगसी बुद्ध ।
तो जाणो रे जोषियां श्रावण वर्षै शुद्ध ॥ ५९२ ॥

कर्क संक्रान्ति लगे उस से १० वें दिन बुध उदय हो तो श्रावण में अच्छी वर्षा होवे।

सिंह संक्रान्ति ।

श्रावणे शुक्लपक्षे च सिंहसङ्क्रान्तिरेव च ।
मेघवृष्टिः समुद्रे तु अन्यथा त्वामुमे मुने ॥ ५९३ ॥

सिंह संक्रान्ति यदि श्रावण सुदि में लगे तो स्थल आदि अन्य देशों की अपेक्षा समुद्र आदि में अधिक वर्षा होवे।

सिंहा हूती दश दिनां जो ऊगे बुध राय ।
पोहंवि रंग वधावणा पर थल पाणी थाय ॥५९४॥

सिंह संक्रान्ति लगे उस से १० वें दिन बुध उदय हो तो वर्षा बहुत होवे ॥

—⁂—
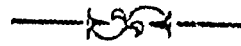
चन्द्र प्रकरण ।

नवीन चन्द्रमा से वर्षा का ज्ञान ।

सोमां, शुक्रां, सुर गुरां जे चन्दा ऊगन्त ।
डंक कहे हे भड्डली जल थल एक करन्त ॥५९५॥

वर्षा काल में नवीन चन्द्रमा सोम, गुरु वा शुक्र वार को उदय हो तो बहुत वर्षा होवे ।

शुक्लपक्षे द्वितीयायां भानोर्वामोदयः शशी ।
तस्मिन्मासे समर्घं स्यान्महर्घं दक्षिणोदये ॥५९६॥

सुदि २ को सूर्य अस्त हो उस स्थान से नवीन चन्द्रमा उदय हुआ २ उत्तर की ओर दीखे तो उस मास मे सुभिक्ष और दक्षिण की ओर हो तो दुर्भिक्ष होवे।

वर्ण तथा रूप द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

स्निग्धः स्थूलः समशृङ्गो विशालस्तुङ्गश्चोदग्विचरन्नागवीथ्याम् ।
दृष्टः सौम्यैरशुभैर्विप्रयुक्तो लोकानन्दं कुरुते ऽतीव चन्द्रः ॥५९७॥

चन्द्रमा स्निग्ध, स्थूल, शृंग दोनों समान वा उत्तर वाला ऊंचा तथा नाग वीथी के (भरणी, कृत्तिका, स्वाति) नक्षत्रो पर हो; और उसे कोई अशुभ ग्रह नहीं देखे किन्तु शुभ ग्रह देखे तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम कल्याण आदि से आनन्द होवे ।

भस्मनिभः परुषो ऽरुणमूर्त्तिः शीतकरः किरणैः परिहीणः ।
श्यावतनुः स्फुटितः स्फुरणो वा क्षुड्डमरामयचौरभयाय ॥५९८॥

चन्द्रमा भस्म सदृश मैला, काला, लाल, रूक्ष, किरण रहित, खण्डित वा कम्पाय मान बिम्ब का हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध, रोग तथा चौरों का उपद्रव होवे।

चन्द्रमा बहुत फीका वा पीला हो तो वर्षा, लाल हो तो स्वच्छ पवन और चांदी जैसा श्वेत हो तो अनावृष्टि होवे।

उत्तर दक्षिण मार्ग द्वारा वर्षा का ज्ञान।

चित्रा ऽनुराधा ज्येष्ठा च कृत्तिका रोहिणी तथा।
मघा मृगशिरो मूलं तथा ऽऽषाढविशाखयो ॥ ५९९ ॥
एतेषामुत्तरे मार्गे यदा चरति चन्द्रमाः।
सुभिक्षं क्षेमवृद्धिश्च सुवृष्टिर्जायते तदा ॥ ६०० ॥
एतेषां दक्षिणे मार्गे यदा चरति चन्द्रमाः।
क्षयं गच्छन्ति भूनाथा दुर्भिक्षं च भयं पथि ॥ ६०१ ॥

चन्द्रमा कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा वा उत्तराषाढा से उत्तर में निकले तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण आदि से राजा प्रजा की वृद्धि; और दक्षिण में निकले तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध, चौर आदि से राजा तथा प्रजा को कष्ट होवे।

सूरीन्दुजाङ्गारकसौरिभार्गवाः अदक्षिणं यान्ति यदा हिमद्युते।
तदा सुभिक्षं धनवृद्धिरुत्तमा विपर्यये धान्यधनक्षयादि ॥ ६०२ ॥

चन्द्रमा यदि मंगल, बुध, वृहस्पति शुक्र वा शनि से उत्तर में हो के निकले तो सुवृष्टि, सुभिक्ष तथा धनादि पदार्थों की वृद्धि; और दक्षिण में हो के निकले तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा धनादि पदार्थों का नाश होवे।

राशि द्वारा वर्षा का ज्ञान।

मिथुने चैव कन्यायां मीने याति तथा धने।
वर्षासु तत्र जानीयाद्वर्षते नात्र संशयः ॥ ६०३ ॥

चन्द्रमा वर्षा काल में मिथुन, कन्या, धन वा मीन राशिका हो तब अवश्य वर्षा हुआ करती है।

भौम प्रकरण।

वर्ण रूप द्वारा वर्षा का ज्ञान।

विपुलविमलमूर्त्तिः किंशुकाशोकवर्णः
स्फुटरुचिरमयूखस्तप्ततामप्रभाभः।
विचरति यदि मार्गं चोत्तरं मेदिनीजः
शुभकृदवनिपानां हार्दिं दश्च प्रजानाम् ॥ ६०४ ॥

मंगल का विम्ब यदि बड़ा, निर्मल, बहुत लाल, स्पष्ट किरणों का तथा गलाये हुये ताम्र जैसी कान्ति वाला हो और उत्तर मार्ग के नक्षत्रों पर वा उन से उत्तर में निकले तो सुवृष्टि आदि से प्रजा की वृद्धि तथा राजाओं का कल्याण होवे।

अनृजूः परुषः श्यामो ज्वलितो धूमवान् शिखी।
विवर्णो वामगो ध्वानकृद्धो ज्ञेयस्तदा ऽशुभः ॥ ६०५ ॥

मंगल विना वर्ण का, श्याम, रूक्ष, ज्वाला सदृश, पुच्छल तारे की पूंछ के समीप वा वक्री हो वा दक्षिण मार्ग के नक्षत्रों पर वा उन से दक्षिण में निकले तो अनावृष्टि आदि से प्रजा की हानि और राजाओं का अकल्याण होवे।

नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान।

आर्द्रायां च भरण्यां च रोहिण्यामुत्तरात्रये।
मघायां मङ्गलो यावत्तावद्देवो न वर्षति ॥ ६०६ ॥

मंगल भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा तथा उत्तरा भाद्रपदा पर रहे तब तक वर्षा नहीं होवे।

पूर्वात्रये तथा ऽश्विन्यां हस्ते त्वाष्ट्रे ऽथ वायुभे।
वारुणे मैत्ररेवत्योर्भौमस्तिष्ठन् हि वर्षति ॥ ६०७ ॥

मंगल अश्विनी, पूर्वा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, पूर्वाषाढा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपदा तथा रेवती पर रहे तब तक अवश्य वर्षा होवे।

राशि द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

मंगल अधिक मास में राशि बदले तो वर्षा होवे।

कर्कराशिगते भौमे माधवो तत्र वर्षति ।

धान्यानां च भवेत्तत्र महर्घत्वं क्वचित्क्वचित् ॥ ६०८ ॥

मंगल कर्क पर हो तब वर्षा तो होवे किन्तु धान्य कहीं २ महंगे हो जावे।

सिंहराशिगते भौमे शुभसङ्गविवर्जिते ।

अनावृष्टिश्च भवति कन्यायां च विशेषतः ॥ ६०९ ॥

मंगल सिंह वा विशेष कर के कन्या पर हो तब कोई शुभ ग्रह साथ न हो तो अवश्य अनावृष्टि तथा दुर्भिक्ष होवे।

वक्री, अस्त तथा उदय होने द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

भौमवक्रे ह्यनावृष्टिर्दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥ ६१० ॥

मंगल वर्षा काल मे वक्री हो तो अनावृष्टि तथा दुर्भिक्ष होवे।

मंगल अस्त मिथुन मे हो तो वर्षा सामान्य और मकर में हो तो अधिक होवे।

मंगल उदय धन में हो तो वृष्टि, मकर में हो तो प्रथम वृष्टि पीछे खेंच, कुम्भ में हो तो अति वृष्टि और मीन में हो तो अनावृष्टि होवे॥
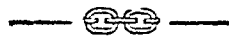
बुध प्रकरण ।

वर्ण रूप द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

हेमकान्तिरथवा शुकवर्णः सस्यकेन मणिना सदृशो वा ।

स्निग्धमूर्त्तिरलघुश्च हिताय व्यत्यये न शुभकृच्छशिपुत्रः ॥६११॥

बुध का बिम्ब बड़ा, स्निग्ध और तोते, सुवर्ण वा नील मणि जैसे वर्ण का हो तो हित कारक (सुवृष्टि, सुभिक्ष आदि) और जो उक्त लक्षणों से विपरीत हो तो अहित कारक (अनावृष्टि, दुर्भिक्ष आदि) होवे।

नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान।

रोहिणीं वैश्वदेवं च सौम्यवैष्णववासवान्।
शशिजश्च यदा हन्ति प्रजा रोगैश्च पीडयेत् ॥ ६१२ ॥
रौद्रादीनि यदा पञ्च नक्षत्राणीन्दुनन्दनः।
भिनत्ति शस्त्रदुर्भिक्षव्याधिभिः पीड्यते जगत् ॥ ६१३ ॥
पूर्वात्रये चरन्सौम्यो भेदं कृत्वा यदि व्रजेत्।
क्षुच्छस्त्रतस्करभयैः करोति प्राणिनां वधम् ॥ ६१४ ॥

बुध रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढा उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा वा पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढा उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा वा पूर्वा भाद्रपदा के वीच में से निकले तो दुर्भिक्ष, रोग, युद्ध, चौर आदि का उपद्रव होवे।

हस्तादीनि चरन् षड् वै नक्षत्राणीन्दुनन्दनः।
गवामशुभदः प्रोक्तः सुभिक्षक्षेमकारकः ॥ ६१५ ॥

बुध हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा वा ज्येष्ठा के बीच मे से निकले तो सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण आदि शुभ किन्तु गायों को अशुभ होवे।

बुध कृत्तिका पर हो तब अल्प वृष्टि, मृगशिर पर हो तब वात वृष्टि, अश्लेषा पर हो तब महा वृष्टि और स्वाति पर हो तब मध्यम वृष्टि होवे।

राशि द्वारा वर्षा का ज्ञान।

मेषवृश्चिकयोः सौम्ये पशूनां च महर्घता।
भवत्यत्र न सन्देहो वृष्टिः स्यान्मध्यमा तदा ॥ ६१६ ॥

बुध मेष वा वृश्चिक का हो तब वर्षा मध्यम और पशु महंगे होवें।

मिथुने च तथा कन्यां यदा ज्ञश्च भविष्यति।
तदा वायु विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत् ॥ ६१७ ॥

बुध मिथुन वा कन्या का हो तब वायु और अति वृष्टि होवे।

वणिजस्थे सोमपुत्रे जलं वर्षति वारिदः।
सर्वशस्यमहर्घत्वं राजानः कलहप्रियाः॥ ६१८ ॥

बुध तुला का हो तब वर्षा तो होवे किन्तु धान्य महंगे हो जावें तथा राजाओं में युद्धादि का उपद्रव होवे।

कन्या पर वक्री तथा शीघ्र गामी होने द्वार वर्षा का ज्ञान।

कन्यायां बुधवक्रत्वे सुभिक्षं निश्चितं मतम्।
वर्षाकाले ऽप्यतिचारे महर्घं भुवि जायते॥ ६१९ ॥

बुध कन्या पर वक्री हो तो निश्चय सुभिक्ष किन्तु वर्षा काल में शीघ्र गामी हो तो धान्य घृतादि पदार्थ महंगे होजा।

अस्त तथा उदय होने द्वारा वर्षा का ज्ञान।

बुध अस्त कर्क पर हो तो अनावृष्टि, सिंह पर हो तो अल्प वृष्टि और कन्या पर हो तो अति वृष्टि होवे।

नोत्पातपरित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।
जलदहनपवनभयकृद्धान्यार्घक्षयविवृद्धये वा॥ ६२० ॥

बुध उत्पात किये विना कदापि उदय नहीं होता; अतः उस समय वर्षा, अग्नि, वायु आदि का उपद्रव और धान्य तेज वा मन्दा होवे। अर्थात् अस्त समय के उत्पातों से उदय के समय उल्टे होवें। जैसेः—वर्षा से अनावृष्टि और अनावृष्टि से वर्षा, तथा धान्यादि मन्दे से तेज और तेज से मन्दे हो जावे।

बुध उदय वृष पर हो तो अति वृष्टि और मिथुन पर हो. तो अनावृष्टि होवे।

वैशाखपौषमाघेषु श्रावणाषाढयोरपि।
न दृश्यते बुधः प्रायो मासेष्वन्येषु दृश्यते॥ ६२१ ॥
यदा ऽदृश्येषु दृष्टः स्याद् दृश्येषु च न दृश्यते।
गवां रोगमनावृष्टिं दुर्भिक्षं चापि निर्दिशेत्॥ ६२२ ॥

बुध वैशाख. आषाढ. श्रावण. पौष और माघ में बहुधा उ-

दय नहीं होता, किन्तु अन्य महीनों में होता है । सो उदय होने वाले महीनों में तो नहीं हो किन्तु उपरोक्त नहीं होने वालों में उदय हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा गायों में रोग होवे।

मास आषाढ़ अरु पक्ष उजाले। बुध जो उगे किसी भी काले।
मेह न वर्षे मण्डल सारे। कण कौड़ी न मिले तिहिं वारे॥ ६२३॥

भाद्रवे बुध ऊघसी वहु भाद्रवड़ा होय।
बुध ऊगे आसोज में कमल कांकरां होय॥ ६२४॥

बुध उदय ज्येष्ठ में हो तो अति वृष्टि, आषाढ़ सुदि में हो तो पीछा अस्त होने तक अनावृष्टि तथा धान्य भी महंगा और भादवे वा आसोज में हो तो बहुत वर्षा होवे॥

वृहस्पति प्रकरण।

वर्ण रूप द्वारा वर्षा का ज्ञान।

अकलुषांशुजटिलः पृथुमूर्त्तिः कुमुदकुन्दकुसुमस्फटिकाभः।
ग्रहहतो न यदि सत्पथवर्त्ती हितकरोऽमरगुरुर्मनुजानाम्॥६२५॥

वृहस्पति का बिम्ब बड़ा, किरणें निर्मल, वर्ण कुमुद वा कुन्द के पुष्प जैसा श्वेत तथा कान्ति स्फटिक मणि जैसी स्निग्ध हो; युद्ध में भौमादि ग्रहों से हारा न हो और ग्रह वा नक्षत्रों से उत्तर में हो के निकले तो सुवृष्टि आदि; किन्तु जो उक्त लक्षणों से विपरीत हो तो अनावृष्टि आदि होवे।

नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान।

उदगारोग्यसुभिक्षक्षेमकरो वाक्पतिश्चरन् भानाम्।
याम्ये तद्विपरीतो मध्येन तु मध्यफलदायी॥ ६२६॥

वृहस्पति जिस नक्षत्र पर हो उस से उत्तर में निकले तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम; दक्षिण में निकले तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष; अक्षेम; और बीच में से निकले तो वृष्टि आदि साधारण होवे।

प्रच्छादने ऽवरोहिण्याः प्रजापीडां विनिर्दिशेत् ।
शकटारोहणे विद्याज्जगतः सम्भ्रमं बुधः ॥ ६२७ ॥

परन्तु रोहिणी के ५ तारों के बीच में से निकले तो ऐसा उपद्रव होवे कि प्रजा भटकती फिरे; और इन पांचों में से प्रकाशवान् 'योग तारे' के ऊपर निकले तो प्रजा को पीड़ा होवे।

वृहस्पति अश्विनी, आर्द्रा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, मूल, श्रवण, धनिष्ठा वा शतभिषा पर हो तब सुवृष्टि; कृत्तिका, रोहिणी मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा वा अनुराधा पर हो तब मध्यम वृष्टि; और भरणी, पुष्य, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, पूर्वा भाद्रपदा, उत्तरा भाद्रपदा वा रेवती पर हो तब अनावृष्टि होवे।

राशि द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

यदा सुरगुरुर्मेषे सुखं सर्वजनेषु च ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सुखिनी मेदिनी भवेत् ॥ ६२८ ॥

वृहस्पति मेष पर हो तब सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य आदि से सर्व लोक सुखी होवें।

जीवे वृषे सुभिक्षं स्याद्गोरसस्य महर्घता ।
स्वल्पवृष्टिः प्रजापीडा शस्यानां वहुधा भवेत् ॥ ६२९ ॥

वृहस्पति वृष पर हो तब वर्षा अल्प, घास आदि का सुभिक्ष, घृत आदि रस महंगे तथा प्रजा में पीड़ा होवे।

मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम् ।
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति ॥ ६३० ॥

वृहस्पति मिथुन का हो तब वर्षा अल्प और राजाओं में युद्ध विग्रह होवे।

वृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पो मेघः प्रवर्षति ।
राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥ ६३१ ॥

वृहस्पति कर्क पर हो तब अल्प वर्षा, दुर्भिक्ष और वि-ग्रह होवे।

यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र वहुशस्या च मेदिनी॥ ६३२॥

वृहस्पति सिंह पर हो तब वर्षा और खेतियों की उत्पत्ति अधिक तथा सुभिक्ष परन्तु गेहूं तथा घृत तेज होजा।

कन्याराशिगते जीवे मेघवृष्टिस्तथोत्तमा।
सुभिक्षं सर्वधान्यानामारोग्यं लभते जनः॥ ६३३॥

वृहस्पति कन्या पर हो तब उत्तम वर्षा, सुभिक्ष तथा जगत् में सुख होवे।

तुलाराशौ गते जीवे ज्वरव्याधिं विनिर्दिशेत्।
सुभिक्षं सर्वज्ञातव्यं क्वचित्क्वापि महर्घता॥ ६३४॥

वृहस्पति तुल पर हो तब कोई सा ही देश छोड़ के सर्वत्र सुभिक्ष, किन्तु ज्वरादि रोगों की पीड़ा होवे।

वृश्चिके च गुरुर्यातो दुर्भिक्षं तत्र जायते।
स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्र भूर्युता नरकिल्विषैः॥ ६३५॥

वृहस्पति वृश्चिक पर हो तब अल्प वर्षा, दुर्भिक्ष तथा अनेक प्रकार के उपद्रव होवे।

धनराशिस्थिते जीवे गोधूमादिमहर्घता।
वर्षाकाले भवेत्तत्र समर्घं च तिलं गुडम्॥ ६३६॥

वृहस्पति धन का हो तब वर्षा काल में गेहूं तो महंगे और तिल तथा गुड़ सस्ते होवें।

मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोरदारुणम्।
विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥ ६३७॥

वृहस्पति मकर का हो तब राजाओं में युद्ध और दुर्भिक्ष किन्तु ३ मास पीछे सुभिक्ष होवे।

कुम्भराशिगते जीवे मेघः स्वल्पाम्बु वर्षति ।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता ॥ ६३८ ॥

वृहस्पति कुम्भ पर हो तव वर्षा अल्प, खेतियों का नाश और दुर्भिक्ष होवे, किन्तु पूर्व के देशों में धान्यादि सस्ते होवें।

यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम् ।
सागराः सर्वनद्यो ऽपि विनश्यन्ति चतुष्पदाः ॥ ६३९ ॥

वृहस्पति मीन पर हो तव वड़ा भयानक दुर्भिक्ष पड़े जिस से गाय आदि पशुओं को क्लेश होवे।

अर्थात् वृहस्पति मेष, सिंह वा कन्या पर हो तव सुभिक्ष; वृष, मिथुन, तुल, धन वा मकर पर हो तव मध्यम वर्षा; और कर्क, वृश्चिक, कुम्भ वा मीन पर हो तव दुर्भिक्ष होवे।

वक्री, अस्त तथा उदय होने द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

वक्रभूतो यदा जीवः सुभिक्षं भूतले भवेत् ॥ ६४० ॥

वृहस्पति वक्री हो तव जगत् में सुभिक्ष होवे।

वृहस्पति अस्त मेष वा मिथुन का हो तो अल्प वृष्टि, वृष का हो तो दुर्भिक्ष और कन्या वा मीन का हो तो सुभिक्ष होवे।

वृहस्पति उदय मेष, मकर वा कुम्भ पर हो तो सुवृष्टि; कर्क धन या मीन पर हो तो अल्प वृष्टि; और तुला पर हो तो अनावृष्टि होवे ।

वृहस्पति उदय चैत्र मे हो तो विचित्र वृष्टि वैशाख में हो तो सुभिक्ष ज्येष्ठ में हो तो अनावृष्टि आषाढ़ में हो तो दुर्भिक्ष, श्रावण में हो तो वहु वृष्टि, भाद्रवे में हो तो खेतियों का नाश, आश्विन मे हो तो मध्यम वृष्टि कार्त्तिक में हो तो अनावृष्टि, मृगशिर में हो तो अल्प वृष्टि, पौष में हो तो सुवृष्टि और माघ वा फाल्गुन में हो तो खण्ड वृष्टि होवे ॥

शुक्र प्रकरण।

वर्ण रूप द्वारा वर्षा का ज्ञान।

दधिकुमुदशशाङ्ककान्तिभृत्स्फुटविकसत्किरणो बृहत्तनुः।
सुगतिरविकृतो जयान्वितः कृतयुगरूपकरः सिताह्वयः॥ ६४१॥

शुक्र का बिम्ब बड़ा, किरणें निर्मल तथा विस्तार वाली और वर्ण दही कुमुद पुष्प वा चन्द्रमा जैसा श्वेत तथा निर्मल हो, ग्रह युद्ध में भौमादि ग्रहों से जय पाया हुआ हो, उत्पात से रहित हो और नक्षत्रों से उत्तर में निकले वा उत्तर मार्ग के नक्षत्रों पर हो तो जगत् में सत् युग वर्त्ते अर्थात् दुःख, दारिद्र्य, रोग, शोक से रहित सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण आदि से प्रजा की वृद्धि होवे।

सुवर्णरजताभश्च घृतमण्डनिभो महान्।
शुक्रोमाञ्जिजष्ठवर्णश्च दधिवर्णश्च वर्षकः॥ ६४२॥
ताम्रवर्णे तथा रूक्षे मेघेष्वम्बु न विद्यते॥ ६४३॥

शुक्र का वर्ण सुवर्ण, चांदी, दही, घृत, मण्ड वा मजीठ के सदृज तथा तेज युक्त हो तो वर्षा होवे; किन्तु जो ताम्र वर्ण का तथा रूक्ष हो वा दिन में दीखे तो वर्षा नहीं होवे।

नक्षत्र मण्डल द्वारा वर्षा का ज्ञान।

चतुर्थं चतुर्थं ततः पञ्चकं च त्रिकं पञ्चकं षट्कमायाति भानाम्।
यदा भार्गवो मार्गवोढाय वक्रो निर्विद्धः प्रसिद्धः परैः क्रूरखेटैः॥ ६४४

(१) भरणी से ४, (२) आर्द्रा से ४, (३) मघा से ५, (४) स्वाति से ३, (५) ज्येष्ठासे ५ और (६) धनिष्ठा से ६ नक्षत्रों तक छः मण्डल है। इन मे शुक्र के रहते वक्र, मार्ग, अस्त, उदय आदि से फल होवे।

प्रथमचतुष्के गोधनपीडा मेघमहोदयदो ऽग्रचतुष्के।
पञ्चकयुग्मे धान्यविनाशी षट्त्रिकचारी सुखदः शुक्रः॥ ६४५॥

शुक्र प्रथम मण्डल में हो तब सुभिक्ष तथा गायों को पीड़ा. दूसरे में हो तब बहुत वर्षा, तीसरे तथा पांचवें में हो तब धान्य तेज (किन्तु तीसरे में पूर्व में हो और ५ वें में पश्चिम में हो तो धान्य मन्दा) और चौथे तथा छठे में हो तब सुभिक्ष होवे।

नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान।

भाद्रपदानिलचित्रा याम्यविशाखे सफाल्गुन्यौ।
समुपैत्य वर्षति सितो भिन्दँश्च गतो मघाग्नेये ॥ ६४६ ॥

शुक्र भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा. स्वाति, विशाखा, पूर्वा भाद्रपदा वा उत्तरा भाद्रपदा पर हो तब तथा कृत्तिका वा मघा के बीच में से निकले तो वर्षा होवे।

मूलज्येष्ठापाढापुनर्वसूनां यदैति मध्येन।
भौमश्चते चामार्गे यावत् तावत् कुतः सलिलम् ॥ ६४७ ॥

शुक्र पुनर्वसु, ज्येष्ठा. मूल वा पूर्वापाढा के बीच में से वा मंगल निकला हो उन्हीं नक्षत्रों पर से निकले तो वर्षा नहीं होवे।

अवर्षर्क्षे भे विचरन् यदि वर्षति भार्गवः।
वर्षर्क्षगतो वर्षं पोडशार्चिर्न वर्षति ॥ ६४८ ॥

उपरोक्त जिन नक्षत्रों पर शुक्र के रहने से वर्षा नहीं होती उन में यदि हो जावे तो फिर जिन नक्षत्रों पर रहने से वर्षा होनी मानी है उन में वर्षा नहीं होवे।

राशि द्वारा वर्षा का ज्ञान।

मिथुने कर्कटे संस्थे यस्मिन्काले भृगोः सुते।
वातो वाति तदा नित्यं जलवृष्टिश्च जायते ॥ ६४९ ॥

शुक्र मिथुन तथा कर्क पर हो तब पवन चले और वृष्टि होवे।

कर्के शुक्र सर भरिया तूसॅ। सिंह शुक्र जल किम न मूकॅ ॥६५०॥

शुक्र कर्क तथा सिंह पर हो तब वर्षा बहुधा प्रायः सेंच होवे।

कुम्भ राशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम् ।
भवत्यत्र न सन्देहो लोकाः सर्वे निरामयाः ॥ ६५१ ॥

शुक्र कुम्भ पर हो तब अति वृष्टि और सुभिक्ष होवे।

वक्री होने द्वारा वर्षा का ज्ञान।

वृषे तुलाधरे कर्के वक्रं गच्छति भार्गवः ।
पुनर्मार्गी च भवति तदा प्रमुदिताः प्रजाः ॥ ६५२ ॥

शुक्र वृष, कर्क वा तुला पर वक्री हो तो मार्गी होने पर सुवृष्टि, सुभिक्ष आदि से प्रजा आनन्दित होवे।

अस्त तथा उदय होने द्वारा वर्षा का ज्ञान।

शुक्र किसी भी मास में वदि ८। १४ वा ३० को अस्त वा उदय हो तो अति वृष्टि होवे।

उत्तरवीथिषु शुक्रः सुभिक्षशिवकृद्गतोऽस्तमुदयं वा ।
मध्यासु मध्यफलदः कष्टफलो दक्षिणस्थासु ॥ ६५३ ॥

शुक्र अस्त वा उदय उत्तर वीथी में हो तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण आदि उत्तम; मध्य वीथी में हो तो वृष्टि आदि मध्यम; और दक्षिण वीथी में हो तो अनावृष्टि, अक्षेम, दुर्भिक्ष, अकल्याण आदि नेष्ट फल होवे।

पृथक् २ राशि तथा महीनों में अस्त होने द्वारा वर्षा का ज्ञान।

शुक्र अस्त मिथुन में हो तो सुवृष्टि, वृश्चिक वा धन में हो तो अनावृष्टि और मीन में हो तो अति वृष्टि होवे।

शुक्रस्यास्तंगमाज्ज्येष्ठे महावृष्टिः प्रजाक्षयः ।
आषाढे जलशोषः स्याच्छ्रावणे रौरवं महत् ॥ ६५४ ॥
धनधान्यादि सम्पत्तिर्भवेद्भाद्रपदास्ततः ।
आश्विनेऽपि सुभिक्षाय कार्त्तिके वृष्टिहेतवे ॥ ६५५ ॥
कार्त्तिके तु यदा मासि कुरुते ऽस्तमयोदयौ ।
तदाऽह्नां नवतिं पूर्णां देवो भुवि न वर्षति ॥ ६५६ ॥

शुक्र अस्त ज्येष्ठ में हो तो अति वृष्टि किन्तु प्रजा क कष्ट, आषाढ़ में हो तो अनावृष्टि, श्रावण में हो तो दुर्भिक्ष, भाद्रवे में हो तो धन धान्य की वृद्धि, आश्विन में हो तो सुभिक्ष और कार्त्तिक में हो तो वृष्टि होवे। किन्तु यदि कार्त्तिक में अस्त हो के पीछा कार्त्तिक ही में उदय हो जावे तो उस दिन से ३ मास तक वहुधा वर्षा नहीं होती है।

पृथक् २ नक्षत्रों के द्वार में उदय होने द्वारा वर्षा का ज्ञान।

भरण्याद्यष्टके भानां मेघद्वारं कवेः स्मृतम् ।
मेघवृष्टिः प्रजानन्दः समर्घं धान्यमेव च ॥ ६५७ ॥
मघादिपञ्चके शुक्रो धूलिद्वारेऽभ्युदीर्यते ।
प्रजादुःखं जलनाशात्तदोपद्रवमादिशेत् ॥ ६५८ ॥
स्वात्यादिसप्तके राजद्वारं शुक्रोदये भवेत् ।
लोके भयं छत्रपतिक्षयं तत्र विनिर्दिशेत् ॥ ६५९ ॥
श्रुत्यादिसप्तके शुक्रोदये लोकसुखं वहु ।
कनकद्वारमादिष्टं सुभिक्षं तत्र निश्चितम् ॥ ६६० ॥

शुक्र उदय हो तव नक्षत्र मेघ द्वार के भरणी आदि ८ हों तो वृष्टि अधिक, धान्य मन्दा और प्रजा में आनन्द; धूलि द्वार के मघा आदि ५ हों तो अनावृष्टि से प्रजा को दुःख; राज द्वार के स्वाति आदि ७ हों तो प्रजा में भय और राजाओं को क्लेश और कनक द्वार के श्रवण आदि ७ हों तो सुवृष्टि, सुभिक्ष आदि से प्रजा सुखी होवे।

शुक्र उदय वृष, कर्क, वृश्चिक वा मीन में हो तो अति वृष्टि; तुला में हो तो अल्प वृष्टि; और धन वा कुम्भ में हो तो अनावृष्टि, होवे।

पूर्व वा पश्चिम में दीखने से वर्षा का ज्ञान।

प्रावृषि शुक्रः प्राच्यां दिशि स्थितोऽल्पं जलं सृजति नित्यम् ।
धान्यं च भूरि कुरुते तृणं च वहु जायते तत्र ॥ ६६१ ॥

अपरां निषेव्यमाणः काष्ठां शुक्रो जलं सृजति भूरि ।
धान्यं कुरुते चाल्पं तृणं न वहु जायते तत्र ॥ ६६२ ॥

वर्षा काल में शुक्र पूर्व में (पिछली रात्रि को) दीखे तो वर्षा तो कम किन्तु धान्य तथा घास अधिक और पश्चिम में (अगली रात्रि को) दीखे तो वर्षा तो अधिक किन्तु धान्य तथा घास कम पैदा होवे ।

पूर्वे स्वातित्रये भानां पश्चिमे पितृपञ्चके ।
अनावृष्टिं विजानीयाद्विपरीते प्रवर्षणम् ॥ ६६३ ॥

शुक्र स्वाति, विशाखा वा अनुराधा पर तो पूर्व में दीखे तो वर्षा नहीं होवे, किन्तु पश्चिम में दीखे तो अधिक होवे; और मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त वा चित्रा पर पश्चिम में दीखे तो वर्षा नहीं होवे, किन्तु पूर्व में दीखे तो अधिक होवे ॥

———o———

शनि प्रकरण ।

वर्ण रूप द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

वैदूर्यकान्तिविमलः शुभकृत्प्रजानाम्
वाणातसीकुसुमवर्णनिभश्च शस्तः ।
यं चापि वर्णमुपगच्छति तत्सवर्णान्
सूर्यात्मजः क्षपयतीति मुनिप्रवादः ॥ ६६४ ॥

शनि स्निग्ध, कान्ति नील मणि जैसी निर्मल, किरणें अधिक और वर्ण वाण के पुष्प जैसा अति काला वा अलसी के पुष्प जैसा अति नीला हो तो प्रजा आनन्दित; किन्तु रूक्ष, लाल, पीला, वा काला हो तो दुर्भिक्ष होवे । तथा वर्ण श्वेत हो तो ब्राह्मणों को, लाल हो तो क्षत्रियों को, पीला हो तो वैश्यों को तथा काला हो तो शूद्रों को पीड़ा होवे ।

नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

कुर्यात्प्रजानां सौभिक्षमुत्तरं मार्गमास्थितः ।

दुर्भिक्षं चाग्निमूर्च्छा च दक्षिणं मार्गमास्थितः ॥ ६६५ ॥

चरन् कृत्तिकारोहिण्योरुत्तरे चापि दारुणः ॥ ६६६ ॥

शनि दक्षिण मार्ग के नक्षत्रों वा कृत्तिका, रोहिणी पर हो तव दुर्भिक्ष; और कृत्तिका. रोहिणी को छोड़ के उत्तर मार्ग के अन्य नक्षत्रों पर हो तव सुभिक्ष होवे।

याम्यवायव्यसावित्ररौद्रश्रवणसंस्थितः ।

भवेत् स्निग्धवपुःसौरो भाग्ये चैवातिवर्षदः ॥ ६६७ ॥

सार्पवारुणमाहेन्द्रनक्षत्रेषु च संस्थितः ।

स्निग्धः सौरः क्षेमकरो नातिवृष्टिं प्रमुञ्चति ॥ ६६८ ॥

क्षुच्छस्त्रावृष्टिदो मूले सूर्यपुत्रः समास्थितः ॥ ६६९ ॥

शनि स्निग्ध वर्ण का भरणी, आर्द्रा, पूर्वा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति वा श्रवण पर हो तो वर्षा अति वृष्टि; अश्लेषा, ज्येष्ठा वा शतभिषा पर हो तो वर्षा तो अधिक नहीं, किन्तु जगत् में क्षेम कल्याण: और मूल पर हो तो अनावृष्टि. दुर्भिक्ष, युद्ध आदि से जगत् को कष्ट होवे।

प्रदक्षिणं तु ऋक्षस्य यस्य याति शनैश्चरः ।

स च राजा विवर्द्धेत सुभिक्षं क्षेममेव च ॥ ६७० ॥

अपसव्यं च नक्षत्रं यस्य याति शनैश्चरः ।

स च राजा विपद्येत दुर्भिक्षं क्षयमेव च ॥ ६७१ ॥

शनि नक्षत्रों से उत्तर में निकले तो सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम. कल्याण आदि से राजा प्रजा की वृद्धि और दक्षिण में निकले तो अनावृष्टि. दुर्भिक्ष. अक्षेम, अकल्याण आदि से हानि होवे।

राशि द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः ।

शनिः करोति दुर्भिक्षं राजयुद्धं परस्परम् ॥ ६७२ ॥

शनि वृष. मिथुन. कन्या. धन या मीन का हो तव अनावृष्टि, दुर्भिक्ष. युद्ध आदि अनेक प्रकार के उपद्रव होवे।

तुलावृश्चिकचापेषु यदा याति शनैश्चरः ।
त्रिगागशेषा पृथ्वी मांसशोणितकर्दमैः ॥ ६७३ ॥

शनि तुल, वृश्चिक और धन का रहे तब तक अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध, महामारी आदि से प्रजा का वहुत नाश होवे।

वक्री मार्गी होने द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

शनि मार्गी रहे तब तक सुभिक्ष रहे।

प्रागुद्वारेषु चरन् रविपुत्रो नक्षत्रेषु करोति च वक्रम् ।
दुर्भिक्षं कुरुते भयमुग्रं मित्राणां च विरोधमवृष्टिम् ॥ ६७४ ॥

शनि कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य वा अश्लेषा पर वक्री हो तो अनावृष्टि, वड़ा भयानक दुर्भिक्ष, भय तथा मित्रों में वैर होवे।

कन्यां मीने यदा सौरे राशिवक्रं प्रजायते ।
नृपयुद्धं भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥ ६७५ ॥

शनि कन्या वा मीन का वक्री होकर पिछली राशिपर जावे तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि होवें।

अस्त तथा उदय द्वारा वर्षा का ज्ञान।

शनि अस्त तुल वा मीन का हो तो सुवृष्टि; और मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक वा मकर का हो तो अनावृष्टि होवे।

शनि उदय मेष वा मिथुन का हो तो सुवृष्टि और कर्क वा तुल का हो तो अनावृष्टि होवे॥

राहु प्रकरण ।

मीने मेषे गते राहौ सुभिक्षं राजविद्रवम् ।
तुलां कुम्भे महावृष्टिः महर्घं मकरे वृषे ॥ ६७६ ॥
राहौ मिथुनकर्कस्थे त्वनावृष्टिर्महर्घता ।
कन्यां सिंहे यदा राहू रौरवं तत्र निर्दिशेत् ॥ ६७७ ॥

अलिराशिगते राहौ तथा धनुषि संस्थिते ।
इतयो विविधा रोगा जायन्ते नात्र संशयः ॥ ६७८ ॥

राहु मीन वा मेष पर हो तब सुभिक्ष तथा राज भय, तुला वा कुम्भ पर हो तब बहुत वर्षा, वृष वा मकर पर हो तब धान्यादि का भाव महगा. मिथुन वा कर्क पर हो तब अनावृष्टि तथा धान्यादि का भाव महंगा, सिंह वा कन्या पर हो तब रौरव दुर्भिक्ष और वृश्चिक वा धन पर हो तब अति वृष्टि अनावृष्टि टिड्डी आदि तथा अनेक प्रकार के रोगों का उपद्रव होवे ॥

———×———

अगस्त्य प्रकरण ।

शातकुम्भसदृशः स्फटिकाभस्तर्पयन्निव महीं किरणाग्रैः ।
दृश्यते यदि तदा प्रचुरान्ना भूर्भवत्यभयरोगजनाढ्या ॥ ६७९ ॥

अगस्त्य का तारा चांदी जैसा श्वेत. स्फटिक जैसा निर्मल और प्रकाशवान् किरणों वाला हो तो पृथ्वी पर अन्न बहुत उत्पन्न होवे और लोक में किसी प्रकार का भय वा रोग नहीं होवे।

आदित्ये शस्यनाशाय रसनाशाय मङ्गले ।
शनौ च सर्वनाशाय शेषे वारे शुभप्रदः ॥ ६८० ॥

अगस्त्य उदय हो तब वार रवि हो तो ख्येतियों का. मंगल हो तो रस का और शनि हो तो सब पदार्थों का नाश होवे: किन्तु जो शुभ वार हो तो सर्व प्रकार से शुभ फल होवे।

रात्रावुदयनं श्रेष्ठं नेष्टश्चास्तंगमो मुनेः ।
दिवसे ऽस्तंगमः श्रेष्ठो नेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ॥ ६८१ ॥

अगस्त्य का उदय होना तो रात्रि में शुभ तथा दिन में अशुभ. किन्तु अस्त होना दिन में शुभ तथा रात्रि में अशुभ है।

यद्यगस्त्यस्योदयने वर्षा हर्षाय जायते ।
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्न चेद्भिक्षाऽपि दुर्लभा ॥ ६८२ ॥

अगस्त्य के उदय होने पर वर्षा हो तो प्रजा में आनन्द तथा

तुलावृश्चिकचापेषु यदा याति शनैश्चरः ।
त्रिगागशेषा पृथ्वी मांसशोणितकर्दमैः ॥ ६७३ ॥

शनि तुल, वृश्चिक और धन का रहे तव तक अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध, महामारी आदि से प्रजा का वहुत नाश होवे।

वक्री मार्गी होने द्वारा वर्षा का ज्ञान ।

शनि मार्गी रहे तव तक सुभिक्ष रहे।

प्रागुद्वारेषु चरन् रविपुत्रो नक्षत्रेषु करोति च वक्रम्।
दुर्भिक्षं कुरुते भयमुग्रं मित्राणां च विरोधमवृष्टिम् ॥ ६७४ ॥

शनि कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य वा अश्लेषा पर वक्री हो तो अनावृष्टि, वड़ा भयानक दुर्भिक्ष, भय तथा मित्रों में वैर होवे।

कन्यां मीने यदा सौरे राशिवक्रं प्रजायते ।
नृपयुद्धं भयं लोके दुर्भिक्षं तत्र जायते ॥ ६७५ ॥

शनि कन्या वा मीन का वक्री होकर पिछली राशिपर जावे तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि होवें।

अस्त तथा उदय द्वारा वर्षा का ज्ञान।

शनि अस्त तुल वा मीन का हो तो सुवृष्टि; और मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक वा मकर का हो तो अनावृष्टि होवे।

शनि उदय मेष वा मिथुन का हो तो सुवृष्टि और कर्क वा तुल का हो तो अनावृष्टि होवे ॥

राहु प्रकरण ।

मीने मेषे गते राहौ सुभिक्षं राजविद्रवम् ।
तुलां कुम्भे महावृष्टिः महर्घं मकरे वृषे ॥ ६७६ ॥
राहौ मिथुनकर्कस्थे त्वनावृष्टिर्महर्घता ।
कन्यां सिंहे यदा राहू रौरवं तत्र निर्दिशेत् ॥ ६७७ ॥

अलिराशिगते राहौ तथा धनुषि संस्थिते ।
इतयो विविधा रोगा जायन्ते नात्र संशयः ॥ ६७८ ॥

राहु मीन वा मेष पर हो तब सुभिक्ष तथा राज भय, तुला वा कुम्भ पर हो तब बहुत वर्षा, वृष वा मकर पर हो तब धान्यादि का भाव महगा, मिथुन वा कर्क पर हो तब अनावृष्टि तथा धान्यादि का भाव महंगा, सिंह वा कन्या पर हो तब रौरव दुर्भिक्ष और वृश्चिक वा धन पर हो तब अति वृष्टि अनावृष्टि टिड्डी आदि तथा अनेक प्रकार के रोगों का उपद्रव होवे ॥

——×——

अगस्त्य प्रकरण ।

शातकुम्भसदृशः स्फटिकाभस्तर्पयन्निव महीं किरणाग्रैः ।
दृश्यते यदि तदा प्रचुरान्ना भूर्भवत्यभयरोगजनाढ्या ॥ ६७९ ॥

अगस्त्य का तारा चांदी जैसा श्वेत, स्फटिक जैसा निर्मल और प्रकाशवान् किरणों वाला हो तो पृथ्वी पर अन्न बहुत उत्पन्न होवे और लोक में किसी प्रकार का भय वा रोग नहीं होवे।

आदित्ये शस्यनाशाय रसनाशाय मङ्गले ।
शनौ च सर्वनाशाय शेषे वारे शुभप्रदः ॥ ६८० ॥

अगस्त्य उदय हो तब वार रवि हो तो खेतियों का, मंगल हो तो रस का और शनि हो तो सब पदार्थों का नाश होवे; किन्तु जो शुभ वार हो तो सर्व प्रकार से शुभ फल होवे।

रात्रावुदयनं श्रेष्ठं नेष्टश्चास्तंगमो मुनेः ।
दिवसे ऽस्तंगमः श्रेष्ठो नेष्टश्चाभ्युदयस्तदा ॥ ६८१ ॥

अगस्त्य का उदय होना तो रात्रि में शुभ तथा दिन में अशुभ; किन्तु अस्त होना दिन में शुभ तथा रात्रि में अशुभ है।

यद्यगस्त्यस्योदयने वर्षा हर्षाय जायते ।
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्न चेद्भिक्षाऽपि दुर्लभा ॥ ६८२ ॥

अगस्त्य के उदय होने पर वर्षा हो तो प्रजा में आनन्द तथा

सम्पूर्ण धान्य की उत्पत्ति हो; किंतु जो वर्षा न हो तो भिक्षा भी मिलनी दुर्लभ हो जावे ऐसा दुर्भिक्ष पड़े।

दसें दिहाड़े बुद्ध से ऋषि ऊगे जिस मास।
धार न खण्डे वर्षता महि अल पूरे आस ॥ ६८३ ॥

अगस्त्य बुध के उदय होने से १० वें दिन उदय हो तो वहुत दिनो तक लगा तार वर्षा होवे ॥

ग्रहयोग प्रकरण।

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डलसङ्क्रमे च।
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गते ऽर्के नियमेन चार्द्राम्॥६८४॥

किसी ग्रह के अस्त वा उदय होने वा एकमण्डल से दूसरे मण्डल में जाने, २ शुभ ग्रहों का समागम होने, पूर्णमासी वा अमावस्या का अन्त होने तथा सूर्य के उत्तरायण (मकर), द-क्षिणायन (कर्क) वा विशेष कर के आर्द्रा पर जाने के समय प्रायः वर्षा हुआ करती है।

सर्वे चारगता भव्यास्तथा स्वस्वगृहे स्थिताः ॥ ६८५ ॥

सब ग्रह अपनी२ राशि पर वा चारानुसार हों तो सुवृष्टि आदि शुभ फल होवे।

उदये च गुरौ वृष्टिरस्ते दृष्टिर्भृगोः सुते।
चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे ॥ ६८६ ॥

वृहस्पति के उदय होने, शुक्र के अस्त होने, मंगल के राशि बदलने वा शनि के उदय वा अस्त होने वा राशि वदलने पर वर्षा होवे।

अतिचारगताः क्रूराः स्वल्पवृष्टिविधायकाः।
सौम्या यदा वक्रगतास्तदा वृष्टिविधायिनः ॥ ६८७ ॥

क्रूर ग्रह अतिचारी हो तो थोड़ी और सौम्य ग्रह वक्री हो तो वहुत वर्षा होवे।

क्रूरा वक्रा यदा काले सौम्याः शीघ्रास्तु चागताः ।
अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृपराष्ट्रभयङ्कर ॥ ६८८ ॥

क्रूर ग्रह वक्री हो तब सौम्य ग्रह अति चारी हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और राजा तथा प्रजा को भय (हानि) होवे।

अतिचारगते जीवे शनौ वक्रत्वमागते ।
न तं पश्यामि तोयं वै यो धरां धारयिष्यति ॥ ६८९ ॥

बृहस्पति अति चारी और शनि वक्री हो तो पृथ्वी की रक्षा होने योग्य वर्षा नहीं होवे।

उन्मार्गगमनं कृत्वा यदा शुक्रं त्यज्येद्बुधः ।
तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पञ्च सप्त वा ॥ ६९० ॥

यदि बुध वक्री हो के शुक्र को छोड़ के उलटा चला जावे तो ५ वा ७ दिन तक वर्षा होवे।

अस्त तथा उदय होने से वर्षा का ज्ञान ।

उदयास्तङ्गमेचेत्स्याज्जीवदृष्टो यदा ग्रहः ।
पादोनं पूर्ण दृष्ट्या वा तदा वर्षति नान्यथा ॥ ६९१ ॥

अस्त वा उदय होते हुये किसी ग्रह को बृहस्पति पूर्ण वा पौन दृष्टि से देखे तो अवश्य वर्षा होवे।

उदयास्तमितः शुक्रे बुधश्च वृष्टिकारकः ॥ ६९२ ॥

बुध वा शुक्र अस्त वा उदय हो तब वर्षा होवे।

उदय सोमजो याति ह्यस्तं याति भृगोः सुतः ।
श्रावणे चैत्र मासे तु तत्र पातं च दुर्लभम् ॥ ६९३ ॥

चैत्र वा श्रावण में बुध तो उदय और शुक्र अस्त हो तो अनावृष्टि और तृण काल होवे।

आषाढमासे यदि शुक्लपक्षे चन्द्रस्य पुत्रो ऽभ्युदयं करोति ।
शुक्रस्य चेच्छ्रावणमासि चास्तं धान्यं सुवर्णेन समं तदाप्यम् ॥ ६९४

आषाढ़ सुदि में तो बुध उदय हो और श्रावण मास में शुक्र अस्त हो तो धान्य सुवर्ण के समान दुर्लभ हो जावे ऐसा दुर्भिक्ष पड़े।

शुक्रोदये ग्रहो याति प्रवासं यदि कश्चन।
क्षेम सुभिक्षमाख्याति महावर्षं च तं तथा ॥ ६९५ ॥

शुक्र उदय हो तब कोई ग्रह अस्त हो तो अति वृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम आदि होवे।

शुक्रसौरिद्वयोरस्त एकराशौ यदा भवेत्।
अन्नपीडा महाःदुखं देशे देशे च विग्रहः ॥ ६९६ ॥

शुक्र और शनि एक ही राशि पर अस्त हों तो सर्व देशों में अन्न कष्ट, विग्रह तथा महा दुःख होवे।

चन्द्रक्षेत्रे शुक्रचन्द्रबुधानामुदयो यदि।
षण्मास्यां च दुर्भिक्षमति वृष्टिः प्रजायते ६९७ ॥

चन्द्रमा, बुध और शुक्र कर्क राशि में उदय हों तो अति वृष्टि और ६ महीने तक दुर्भिक्ष होवे।

ग्रहों के आगे पीछे होने आदि से वर्षा का ज्ञान।

अग्रतो वा स्थिताः सौम्याः क्रूराणान्तु परस्पराः।
ददन्ति सलिलम्भूरि न तोयं स्याद्विपर्यये ॥ ६९८ ॥

ग्रह क्रूरों के आगे शुभ हों तो वर्षा और शुभों के आगे क्रूर हों तो अनावृष्टि होवे।

अग्रतः पृष्ठतो वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बिनः।
यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव ॥ ६९९ ॥

सूर्य के समीप (आगे से वा पीछे से अस्त होने वाले) कई ग्रह आ जावें तो बहुत वर्षा होवे।

पुरोऽङ्गारमनावृष्टिः पुरा शुक्रः प्रवर्षणम्।
पुरा देवगुरौ वह्निः पुरा सौम्यो ऽथवा ऽनिलः ॥ ७०० ॥

सूर्यस्य पुरतो गच्छेद्यदा शुक्रो बुधो ऽपि
वर्षाकाले न सन्देहस्तदा वृष्टिर्निरन्तरा ॥

वर्षा काल में सूर्य से आगे मंगल हो तो
तो ज़ोर का वायु वर्षा, बृहस्पति हो तो अग्नि
हो तो सुवृष्टि होवे।

कुजज्ञरविजश्चैव शुक्रस्याग्रे सदा यदि।
शुद्धो ऽतिवायुर्दुर्भिक्षं जलनाशकरस्तथा॥

शुक्र से आगे मंगल, बुध और शनि हों तो
वर्षा का नाश तथा दुर्भिक्ष का भय होवे।

बहुधान्या धरा स्याच्चेत्कुजो ऽर्कात्पृष्टगः शु

वर्षा काल में सूर्य से मंगल पीछे हो तो

बुधशुक्रयोर्मध्ये तु ग्रहश्चान्यः प्रदृश्यते।
तावत्तोयं वरा रोहे न पतन्ति महीतले ॥

बुध और शुक्र के बीच में कोई अन्य ग्रह
वर्षा नहीं होवे।

शुक्रवक्रान्तर्गतो ऽर्के समुद्रमपि शोषयेत्।
तद्युक्तः प्लावयेत्क्रूरस्तं जलेन जगतीमिमाम्।

मंगल और शुक्र के बीच मे सूर्य हो तो
किन्तु ये तीनों ही ग्रह एकत्र हों तो बहुत वर्षा

बुध आगे सूरज विचे पीछे भृगु सुत होय।
नीर कुवों वा बावड़ी वा समुद्रों जोय ॥

सूर्य से आगे बुध और पीछे शुक्र हो तो
नहीं होवे।

सूर्य से पीछे वृहस्पति और आगे शुक्र हो तो वहुत वर्षा होवे।

आदित्यो गच्छति ह्यग्रे पृष्ठे भवति भूसुतः ।
मध्ये सौम्यगते चैव सुभिक्षं तत्र दृश्यते ॥ ७०८ ॥

बुध से आगे सूर्य और पीछे मंगल हो तो सुभिक्ष कारक उत्तम वर्षा होवे।

सिंहादित्रितये भौमे रविशुक्रान्तर स्थिते ।
भुविसर्वत्र वृष्टिः स्यादिति निःसंशयं वदेत् ॥ ७०९ ॥

मंगल जब सिंह, कन्या वा तुला राशि पर हो और उस समय सूर्य और शुक्र के वीच मे भी (अर्थात् इन दो ग्रहों में से एक तो आगे और एक पीछे) हो तो सम्पूर्ण देशों में निश्चय वर्षा होवे।

गुरुज्ञयोर्मध्यगतेमहीजे सितज्ञयोः पश्चिम भागगेवा ।
भवेतदावृष्टिरतविलोके विपर्ययस्थे तु विपर्ययः स्यात्॥७१०

मंगल यदि बुध और वृहस्पति के वीच में होवे वा बुध और शुक्र के पीछे होवे तो उस समय वहुत वर्षा होवे और जो इस से उलटा योग हो तो अनावृष्टि होवे।

मन्दान्विते देवगुरौ धनुःस्थे कुजार्कयोः प्राक्सितचन्द्रजो वा ।
सर्पादिषट्केऽस्तगते भृगौवा भौमोरवेभाग्यदि वृष्टिनाशः ॥७११॥

(१) वृहस्पति और शनि धन राशि पर हो वा (२) सूर्य मंगल के आगे बुध और शुक्र होवे (३) वा सूर्य के आगे मंगल होवे वा (४) शुक्र अश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी हस्त तथा चित्र-इन ६ नक्षत्रों मे से किसी एक नक्षत्र पर अस्त होवे-इन चार योगों में से कोई भी योग हो उस समय वर्षा नहीं होवे।

ग्रहों के परस्पर ५ वीं ७ वीं वा ९ वीं राशि से वर्षा का ज्ञान।

क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात्सप्तमसप्तकम् ।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीडा महत्यपि ॥ ७१२ ॥

सौम्य और क्रूर ग्रह परस्पर ७ वीं राशि पर हों तो अनावृष्टि और लोगों को बहुत कष्ट होवे।

प्रावृषि शीतकरो भृगुपुत्रात्सप्तमराशिगतः शुभदृष्टः।
सूर्यसुतान्नवपञ्चमगो वा सप्तमगश्च जलाऽऽगमनाय॥७१३॥

वर्षा काल में चन्द्रमा शुक्र से ७ वीं वा शनि से ५ वीं वा ९ वीं राशि पर हो और उसे शुभ ग्रह देखे तो वर्षा होवे।

जलराशिस्थिते चन्द्र जामित्रे नवमे तथा।
अर्क सूनुश्च भौमश्च अतिवृष्टिं प्रमुञ्चति ॥ ७१४ ॥

चन्द्रमा जल राशि पर हो और उस से ७ वीं वा ९ वीं राशि पर मंगल वा शनि हो तो बहुत वर्षा होवे।

शुक्रस्य यदि भौमेन यदिस्यात्सप्तकम्।
वृष्टिर्मासे तदा काले तथैव शनिजीवयोः ॥ ७१५ ॥

मंगल और शुक्र, वा वृहस्पति और शनि परस्पर ७ वीं राशि पर हो तो वर्षा होवे।

गुरौ सिते च जामित्रे सितादर्काद् गुरोरपि।
जामित्रस्थे ग्रहाः सर्वे अनावृष्टिर्भवेत्तदा ॥ ७१६ ॥

वृहस्पति और शुक्र परस्पर ७ वीं राशि पर हों वा सूर्य; वृहस्पति वा शुक्र से ७ वीं राशि पर सब ग्रह हो तो अनावृष्टि होवे।

नक्षत्र से वर्षा का ज्ञान।

समागमे पतति जलं ज्ञशुक्रयोर्ज्ञजीवयोर्गुरुसितयोश्च सङ्गमे।
यमारयोः पवनहुतासजं भयं ह्यदृष्टयोरसहितयोश्च सद्ग्रहैः॥७१७॥

बुध, वृहस्पति और शुक्र में से किन्हीं २ ग्रहों का समागम हो (एक ही नक्षत्र पर दोनों के अंश बराबर हो जावें) तो वर्षा होवे, और जो तीनों ही एकत्र आ जावें तो बहुत अधिक वर्षा होवे।

मंगल तथा शनि एकत्र हो जावें और कोई शुभ ग्रह न उन के साथ हो और न उन को देखे तो वायु तथा अग्नि का भय होवे।

मघायां भूमिपुत्रश्च चित्रायां भृगुनन्दनः।
रोहिण्यान्तु गतः सौरिः सर्वशस्यविनाशकः॥ ७१८॥

मघा का मंगल, चित्रा का शुक्र वा रोहिणी का शनि हो तब सर्व धान्य का नाश होवे।

भरणी वा विशाखा पर वृहस्पति और शुक्र हों तो घास मन्दा होवे। आर्द्रा पर शनि वा राहु हो तब वर्षा का अवरोध होवे। मघा वा घनिष्ठा पर वृहस्पति और मृगशिर पर राहु हो तो धान्य मन्दा होवे। श्रवण वा धानिष्ठा पर वृहस्पति और शुक्र हो तो गेहूं मन्दा होवे।

राशि से वर्षा का ज्ञान।

राहोः शुक्रस्य संयोगो यदा मेषे भविष्यति।
दुर्भिक्षं भवते तत्र नात्र कार्यं विचारणम्॥ ७१९॥

मेष पर शुक्र और राहु हों तो निश्चय दुर्भिक्ष होवे।

मेषे शनैश्चरो भानुर्भार्गवो भूमिजस्तथा।
दुर्भिक्षं च प्रजापीडा तदा पृथ्वी भयाकुला॥ ७२०॥

मेष पर सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि हों तो दुर्भिक्ष, युद्ध आदि की पीड़ा तथा भय से प्रजा व्याकुल होवे।

वृषे भानुः कुजः सौरिस्तदा युद्धं समादिशेत्।
न वर्षन्ति जलं मेघा दुर्भिक्षं लोकपीडनम्॥ ७२१॥

वृष पर सूर्य, मंगल और शनि हों तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष, युद्ध आदि से लोकों को पीड़ा होवे।

शनि अंगारा देव गुरु जो शुक्र घर जाति।
तो जानो तुम भड्डली जल हर जल मिलहन्ति॥ ७२२॥

वृष वा तुला पर मंगल, बृहस्पति और शनि हों तो वर्षा होवे।

मिथुनर्क्षे सूर्यपुत्रो राहुर्वा यदि संस्थितः।
दुर्भिक्षं जायते तत्र पश्चिमायां नृपक्षयः॥ ७२३॥

मिथुन पर शनि वा राहु हो तब दुर्भिक्ष तथा पश्चिम में के राजा को क्लेश होवे।

गुरुक्षेत्रे शनौ राहौ स्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः।
भौमे राज्ञां विरोधः स्याद्बुधे वृष्टिश्च भूयसी॥ ७२४॥
तृणवृद्धिः पशूनां च सौख्यं धान्यं वहूनि च॥ ७२५॥

धन वा मीन पर शनि वा राहु हो तब अल्प वृष्टि तथा तृण का नाश, मंगल हो तब राजाओं में विरोध और वुध हो तब वर्षा, धान्य, तृण, पशु आदि की वृद्धि होवे।

शन्यारतमसो युक्ताः धनुर्मीनास्थिता यदि।
पृथ्वी त्रिभागशेषा च दुर्भिक्षं च तदा भवेत्॥ ७२६॥

धन वा मीन पर मंगल, शनि और राहु हों तो वड़ा दुर्भिक्ष पड़े जिस से मनुष्य, पशु, पक्षी आदि वहुत मरें।

चन्द्रभार्गवधरासुता यदा मीनराशिमुपयान्ति वै तदा।
दुर्लभं भवति सर्वधान्यकं वारिदश्च न जलं प्रमुञ्चति॥ ७२७॥

मीन पर चन्द्रमा, मंगल और शुक्र हों तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, सर्व धान्य महंगे और पशु आदि सस्ते हो जावें।

मिथुनेऽङ्गारको जीवस्तुलाराशौ शनैश्चरः।
धनराशौ यदा राहुर्मेघाश्च प्रवलाधिकाः॥ ७२८॥

मिथुन का मंगल तथा बृहस्पति, तुला का शनि और धन का राहु हो तो वर्षा वहुत ज़ोर से होवे।

मिथुन का मंगल, धन का शनि और आर्द्रा वा पूर्वाषाढा का राहु वा केतु ऐसा योग वर्षा ऋतु में हो तो अनावृष्टि होवे।

सिंहे शुक्रस्तुलां भौमः कर्के जीवो यदा भवेत् ।
धूलिवर्षा महान् वायुर्भवेद्धान्यमहर्घता ॥ ७२९ ॥

तुला का मंगल, कर्क का बृहस्पति और सिंह का शुक्र हो तो वायु बहुत ज़ोर का चले जिस से रेती की वर्षा होवे (आंधियें बहुत आवे) तथा धान्य महंगा हो जावे ।

मीनराशिगते मन्दे कर्कटस्थे बृहस्पतौ ।
तुलाराशिगते भौमे तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ७३० ॥

तुला का मंगल, कर्क का बृहस्पति और मीन का शनि हो तो दुर्भिक्ष पड़े ।

एकराशिगतो जीवः सूर्येण सह वर्षति ।
यावन्नास्तमनं याति योगो द्वन्द्वं ज्ञजीवयोः ॥ ७३१ ॥

बृहस्पति सूर्य वा बुध के साथ हो तो उदय रहे तब तक वर्षा होवे ।

२ ग्रह एकत्र होने से वर्षा का ज्ञान ।

यत्र राशौ रविः स्थितस्तत्र शुक्रो यदा स्थितः ।
वातश्च भवते दीर्घं सर्वं ह्यर्घं समं स्थितम् ॥ ७३२ ॥

सूर्य और शुक्र एकत्र हो तो वायु वेग से चले तथा धान्य सम भाव रहें ।

एकराशिगतावेतौ धरापुत्राङ्गिरासुतौ ।
तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः ॥ ७३३ ॥

मंगल और बृहस्पति वर्षा काल मे एकत्र रहें तब तक बहुधा वर्षा नहीं होवे ।

शनैश्चरधरापुत्रावे एकस्थौ वृष्टिकारकौ ।
यदा च तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी ॥ ७३४ ॥
एकराशिगतश्चैव भौमः सौरिर्यदा भवेत् ।
द्विमासं च भवेद् वृष्टिः पश्चाद्वृष्टिर्निवर्त्तते ॥ ७३५ ॥

मंगल और शनि एकत्र हो तो वर्षा काल में वर्षा २ महीनों तक तो मकान गिराने वाली होवे किन्तु पश्चात् नहीं होवे।

राहुरङ्गारकश्चैकराशिऋक्षगतौ तथा।
महाभयं च शस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते ॥ ७३६ ॥

मंगल और राहु एक ही राशि वा नक्षत्र पर हों तो अनावृष्टि और धान्य का नाश होवे।

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ ७३७ ॥

वृहस्पति और शुक्र एकत्र हो तो अकाल में वर्षा, दुर्भिक्ष वा युद्ध होवे।

३ ग्रह एकत्र होने से वर्षा का ज्ञान।

एकराशौ गता ह्येते सौम्यशुक्रदिनाधिपाः।
सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः ॥ ७३८ ॥

सूर्य, बुध और शुक्र एकत्र हों तो वर्षा अल्प और धान्य महंगा होवे।

आदित्यो भार्गवश्चैव तृतीयो गुरुरेव च।
एकराशौ च तिष्ठन्ति मेघाश्च प्रबलाधिकाः ॥ ७३९ ॥

सूर्य, वृहस्पति और शुक्र एकत्र हों तो वर्षा अधिक होवे।

यदा भौमश्च शुक्रश्च मन्दश्चैकत्र राशिगाः।
तदा वर्षति पर्जन्यो जीवदृष्टा न संशयः ॥ ७४० ॥

मंगल, शुक्र और शनि एकत्र हों और वृहस्पति उन को देखे तो निश्चय वर्षा होवे।

मङ्गल शनि और राहू हों तीनों ही एक राश।
युद्ध मचे लोहू वहे धान्य तेज जल नाश ॥ ७४१ ॥

मंगल, शनि और राहु एकत्र हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि होवे।

शनिराहुजीवा यदि चैकराशौ पाषाणसहिता सलिलस्य वृष्टिः७४२

बृहस्पति, शनि और राहु एकत्र हों तो ओलों सहित वर्षा होवे।

४ ग्रह एकत्र होने से वर्षा का ज्ञान।

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च खेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥ ७४३॥

४ वा ५ ग्रह एकत्र हों तो वर्षा, युद्ध वा महा मारी होवे। सूर्य, बुध, बृहस्पति और शुक्र एकत्र हों तो धान्य मन्दा होवे।

गुरुशुक्रारशशिजा यदैकत्र समाश्रिताः।
घातयोगं विजानीयात्पांशुवृष्टिस्तदा भवेत्॥ ७४४॥

मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र एकत्र हों तो धूलि की वर्षा होवे।

शुक्रमन्दारजीवाश्च यदैकत्र समाश्रिताः।
मेघा जलं न मुञ्चन्ति दुर्भिक्षं जायते तदा॥ ७४५॥

मंगल, बृहस्पति, शुक्र और शनि एकत्र हों तो अनावृष्टि और दुर्भिक्ष होवे।

मंगल, शुक्र, शनि और राहु एकत्र हों तो अनावृष्टि और दुर्भिक्ष होवे।

५ ग्रह एकत्र होने से वर्षा का ज्ञान।

रवीन्दुशुक्रेज्यशशाङ्कपुत्रा यदैकराशौ सहिता भवन्ति।
भूपालपीडा ऽन्नमहर्घता स्यात्प्रजाविनाशो दिशि नैर्ऋतायाम्॥७४६

सूर्य, चन्द्रमा, बुध, बृवस्पति और शुक्र एकत्र हों तो धान्य महंगा, राजाओं में पीड़ा और नैर्ऋत्य देश की प्रजा का नाश होवे।

रविज्ञगुरुमन्दाश्च राहुयुक्ता यदा ऽऽश्रिताः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तस्मिन्काले न संशयः॥ ७४७॥

सूर्य, बुध, बृहस्पति, शनि और राहु एकत्र हों तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य आदि होवे।

७ ग्रह एकत्र होने (गोलक योग) से वर्षा का ज्ञान।

रव्यादि शनिपर्यन्तं क्रूराक्रूरव्यवस्थिताः।
एकराशिगता यत्र गोलकं योगो जायते ॥ ७४८ ॥
अवर्षणं छत्रभङ्गो महामारी तदा भवेत्।
दुर्भिक्षं रौरवाकालं जायते सर्वमेदिनीम् ॥ ७४९ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि एकत्र हों उसे 'गोलक योग' जाने। इस से अनावृष्टि, बड़ा भयानक दुर्भिक्ष, युद्ध, महा मारी आदि का उपद्रव तथा छत्र भग होवे (ऐसा योग सं० १९५६ म हुआ था तब पूर्वोक्त अशुभ फल का अनुभव हो चुका था)।

वर्षा जन्म पत्रिका प्रकरण।

जैसे मनुष्यादि की जन्म पत्री से आयु भर का भविष्य विदित हो जाता है, वैसे ही वर्षा की जन्म पत्री से सम्पूर्ण वर्षा काल में होने वाली न्यूनाधिक वर्षा का भविष्य ज्ञात हो जाता है।

मिथुन संक्रान्ति प्रवेश समय ग्रहों की राशियों से वर्षा का ज्ञान।

सहस्ररश्मेर्मिथुनप्रवेशे शशाङ्कवाचस्पतिशुक्रसौम्याः।
मीने च कन्यां मिथुने स्थिताः स्यात्तदा सुवृष्टिः सकलान्नकर्त्री॥७५०
सहस्ररश्मेर्मिथुनप्रवेशे माहेयसूर्यात्मजसैंहिकेयैः।
मीने च कन्यां मिथुने स्थिते च तदाऽल्पवृष्टिः प्रियमन्नमुर्व्याम्७५१

सूर्य की मिथुन संक्रान्ति के समय मिथुन, कन्या वा मीन राशि पर ग्रह शुभ हों तो वर्षा तथा सम्पूर्ण धान्योत्पत्ति अधिक और क्रूर हों तो कम होवे।

सहस्ररश्मेर्मिथुनप्रवेशे शुक्रज्ञयोः कर्कवृषस्थयोश्च।
चन्द्रे झषे देवगुरौ कुमार्यां विपर्ययाद्वाऽपि तदा सुवृष्टिः॥७५२॥

बुध और शुक्र में से एक तो वृष और दूसरा कर्क पर,

वा चन्द्रमा और बृहस्पति में से एक कन्या और दूसरा मीन पर हो तो वर्षा श्रेष्ठ होवे।

सहस्ररश्मेर्मिथुनप्रवेशे ज्ञशुक्रयोर्मेषनृयुग्मसंस्थयोः ।
चन्द्रेज्ययोश्चापगयोश्च पापैस्तुलालिसिंहोपगतैः सुवृष्टिः॥७५३॥

बुध तथा शुक्र तो मेष वा मिथुन पर, चन्द्रमा तथा बृहस्पति धन पर और कोई क्रूर ग्रह सिंह, तुला वा वृश्चिक पर हों तो भी वर्षा अच्छी होवे।

सहस्ररश्मेर्मिथुनप्रवेशे मन्दारयोः कर्कवृषस्थयोश्चेत् ।
द्विदेहभस्थे ह्यनुजे विशेषात्तदा ऽल्पवृष्टिः प्रियमन्नमुर्व्याम्॥७५४॥

मंगल और शनि में से एक तो वृष और दूसरा कर्क पर तथा राहु मिथुन पर हो तो अल्प वृष्टि तथा धान्य तेज होवे।

शुभाशुभग्रहैर्मिश्रैः फलं मिश्रं प्रजायते ।
सूर्ये क्रूरान् गुरुः पश्येत्तदा वृष्टिश्च मध्यमा ॥ ७५५ ॥

अधिक तथा कम वर्षा करने वाले ग्रहों का योग मिला हुआ हो तो साधारण, वा सूर्य क्रूर ग्रहो से युक्त हो और उसे बृहस्पति देखे तो मध्यम वर्षा होवे ॥

प्रश्न प्रकरण।

शकुन द्वारा वर्षा का ज्ञान।

आर्द्रं द्रव्यं स्पृशति यदि वा वारि तत्सञ्ज्ञकं वा
तोयासन्नो भवति यदि वा तोयकार्योन्मुखो वा ।
प्रष्टा वाच्यः सलिलमचिरादस्ति निःसंशयेन
पृच्छाकाले सलिलमिति वा श्रूयते यत्र शब्दः ॥ ७५६ ॥

वृष्टिप्रश्नार्थशकुने श्यामगोघटदर्शनम् ।
स्त्रियां वा श्यामवस्त्रायां दृष्टायां वृष्टिमादिशेत् ॥ ७५७ ॥

वर्षा के लिये प्रश्न करते समय प्रश्न करने वाला यदि गीले
ल संज्ञक (दूध, मोती, नागर मोथा आदि) पदार्थ का स्पर्श
जल के पास हो वा जल से वा जल का कोई कार्य करता
ा करना चाहे; अथवा उस समय कहीं से भी जल वाचक
सुनने में आ जावे तो अवश्य बहुत शीघ्र वर्षा होवे। तथा
काली गाय वा काले वस्त्रों वाली स्त्री दीखे तो भी वर्षा होवे।

पञ्चाङ्गुलिस्पर्शने ऽपि यद्यङ्गुष्टं जनः स्पृशेत्।
तदा वृष्टिस्तु महती सावित्रीस्पर्शने ऽल्पिका ॥ ७५८ ॥

अपने हाथ की ५ अंगुलियों मे से किसी एक अंगुली का
किसी बालक आदि से स्पर्श करावे। वह स्पर्श अंगूठे का करे
तो बहुत और अंगुली का करे तो थोड़ी वर्षा होवे।

इष्ट द्वारा वर्षा का ज्ञान।

तत्कालघटिका द्विघ्ना त्रिहृतैकेन सत्वरा।
द्वाभ्यां किञ्चिद्विलम्बः स्याद् भाग्यहृते न वृष्टयः ॥७५९॥

सूर्योदय से प्रश्न समय तक बीती इष्ट घटी को दूनी कर
के ३ का भाग देवे। शेष १ बचे तो वर्षा शीघ्र, २ बचे तो वि-
लम्ब से और ० बचे तो नहीं होवे।

प्रश्न लग्न द्वारा वर्षा का ज्ञान।

वर्षाप्रश्ने सलिलनिलयं राशिमाश्रित्य चन्द्रो
लग्नं यातो भवति यदि वा केन्द्रगः शुक्लपक्षे।
सौम्यैर्दृष्टः प्रचुरमुदकं पापदृष्टो ऽल्पमम्भः
प्रावृट्काले सृजति न चिराच्चन्द्रवद्भार्गवो ऽपि ॥ ७६० ॥

वर्षा काल में वर्षा के लिये प्रश्न करे तब जल राशि का
चन्द्रमा वा शुक्र कृष्ण पक्ष हो तब तो लग्न में तथा शुक्ल पक्ष हो
तो केन्द्र (१। वा ४। ७ वा १०) मे हो तो वर्षा उसी दिन होवे
इस में भी उस को कोई ग्रह शुभ देखे तो बहुत, क्रूर देखे तो
थोड़ी और दोनों देखें तो मध्यम वर्षा होवे।

चेत्कर्कमृगमीनाः स्युः केन्द्रस्थाः क्रूरवर्जिताः ।
पूर्णेन्दुशुक्रदेवेज्यबुधैर्युक्ता बलान्विताः ॥ ७६१ ॥
वृष्टिरेव विधे योगे वीतरागेण भाषिता ॥ ७६२ ॥

केन्द्र में जल राशि पर शुभ ग्रह (पूर्ण चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र) बलवान् हो के बैठे हो तो वर्षा बहुत अधिक अर्थात् अनूपादि देशों के स्वभाव से भी अधिक होवे।

सजला राशयो लग्ने शुभाशुभग्रहैर्युताः ।
त्रिभागवृष्टिरादेश्या वृष्टिज्ञानविचक्षणैः ॥ ७६३ ॥

केन्द्र में जल राशियें हों और उन पर शुभ और क्रूर दोनों प्रकार के ग्रह बैठे हों तो तीन भाग वर्षा होवे।

अन्ये च राशयः केन्द्रे शुष्कसाम्बुग्रहैर्युताः ।
तदार्द्धवृष्टिरादेश्या सौम्यासौम्यप्रमाणतः ॥ ७६४ ॥

केन्द्र में सजल तथा निर्जल राशियें हों और उन में शुभ तथा क्रूर ग्रह बैठे हों तो आधी वर्षा होवे । किन्तु अधिक ग्रह शुभ हों तो आधी से कुछ अधिक और क्रूर हों तो कम होवे।

कण्टके ऽप्यथ लग्नेषु शुभयुक्तेषु सर्वतः ।
पादोना वृष्टिरादेश्या क्रूरयुक्तेष्ववर्षणम् ॥ ७६५ ॥

केन्द्र वा लग्न में कोई ग्रह शुभ हो तो वर्षा सदा होती है उस से पौन और क्रूर हो तो नहीं होवे।

शुष्कलग्नगतैः क्रूरैर्वृष्टिरोधः प्रकीर्त्तितः ॥ ७६६ ॥

लग्नादि केन्द्रों में निर्जल राशियें हो और उन पर केवल क्रूर ग्रह बैठे हों तो वर्षा बिलकुल नहीं होवे।

मूर्त्तौ च जलराशिस्थे चन्द्रे वा स्याद्बहूदकम् ॥ ७६७ ॥

लग्न में जल राशि का चन्द्रमा हो तो बहुत वर्षा होवे।

वृष्टिप्रश्ने कुजे मूर्त्तौ विद्युल्लपति चञ्चला ।
घनगर्जनसंयुक्ता भवेद् वृष्टिर्गरीयसी ॥ ७६८ ॥

लग्न मे मंगल हो तो बिजली, गाज और बहुत वर्षा होवे।

शनिज्ञेन्दुविनाशत्वाकरकैर्वर्षणं घनम् ॥ ७६९ ॥

लग्न में चन्द्रमा, बुध और शनि हों तो ओलो की वर्षा होवे जिस से खेतियों को हानि पहूंचे।

लग्ने चन्द्रः कुजः शुक्रः शनिश्च मिलिता यदि।
अतिवृष्टिस्तदा ऽऽदेश्या नानाचित्रकरी जने ॥ ७७० ॥

सवाते करकावृष्टिर्विद्युच्चलति सर्वतः ॥ ७७१ ॥

लग्न में चन्द्रमा, मंगल, शुक्र और शनि हों तो वायु, बिजली और ओलों सहित आश्चर्यदायक बहुत वर्षा होवे।

लग्ने खेटाश्चराः सर्वे द्वादशैः प्रहरैर्जलम्।
जललग्ने शुभैर्युक्ते सद्यो वृष्टिर्जलगृहे ॥ ७७२ ॥

लग्न मे सम्पूर्ण ग्रह चर (१ । ४ । ७ व १०) राशि के हों तो १२ प्रहर में तथा शुभ ग्रह जल राशि के हों तो तत्काल वर्षा होवे।

चरे लग्ने धने सौम्ये मासाल्लग्ने स्थिरे जलम्।
द्विद्वादशादिनैर्द्विस्वभावे षट्त्रिंशतादिनैः ॥ ७७३ ॥

दूसरे घर मे शुभ ग्रह हो तब लग्न में राशि चर (१ । ४। ७ वा १०) हो तो १ मास मे, स्थिर (२ । ५ । ८ वा ११) हो तो २४ दिन में और द्विस्वभाव (३ । ६ । ९ वा १२) हो तो ३६ दिन में वर्षा होवे।

अम्बरगतं शुभग्रहयुग्मं वृष्टिर्भवेद्विवाहादौ।
लग्ने शुभत्रयस्थे तु योगे महती भवेद् वृष्टिः ॥ ७७४ ॥

शुभ ग्रह विवाह समय के लग्न से १० वें घर में २ हों तो विवाह से पहिले और लग्न में ३ हो तो बहुत वर्षा होवे।

लग्नाद् द्विके त्रिके वा ऽपि जलराशिर्यदा भवेत्।
जलखेटस्तु तत्रैव जलपातस्तदा ध्रुवम् ॥ ७७५ ॥

लग्न से २ रे वा ३ रे घर में जल राशि पर शुभ ग्रह हो तो निश्चय वर्षा होवे।

द्वितीये वा तृतीये वा लग्ननाथः शुभान्वितः।
सप्तविंशदिने लग्नान्नदीपूरः प्रवर्षणम् ॥ ७७६ ॥

लग्न का स्वामी २ रे वा ३ रे घर में शुभ ग्रहों सहित हो तो २७ वें दिन नदियें बहने योग्य बहुत वर्षा होवे।

लग्नात्तूर्ये यदि स्थाने शुक्रेन्दुगुरुचन्द्रजाः।
एवं योगे महावृष्ट्या शुभकालः सतां मतः ॥ ७७७ ॥

पृच्छालग्ने चतुर्थस्थौ शनिराहुयुतौ पुनः।
दुर्भिक्षं च महाघोरं तत्र वर्षे ध्रुवं भवेत् ॥ ७७८ ॥

लग्न से चौथे घर में शुभ ग्रह हों तो वर्षा बहुत होवे, किन्तु शनि और राहु हों तो अनावृष्टि और दुर्भिक्ष होवे।

प्रत्येक दिशा में सुभिक्ष, दुर्भिक्ष आदि का ज्ञान।

चतुर्णामपि केन्द्राणां मध्ये यत्र शुभा ग्रहाः ॥
तस्यां दिशि च निष्पत्तिः सुभिक्षं च प्रजायते ॥ ७७९ ॥

तस्यां दिशि शनिर्दृष्टः क्रूरश्चात्र गृहे स्थितः।
दिशि तस्यां बुधैर्वाच्यं दुर्भिक्षं नात्र संशयः ॥ ७८० ॥

लग्न का घर पूर्व, ४ था उत्तर, ७ वां पश्चिम और १० वां दक्षिण का है। उन मे बैठे वा देखते हुये ग्रह जिस घर में शुभ हों उस दिशा मे सुवृष्टि, सुभिक्ष; किन्तु जिस में क्रूर हों उस दिशा मे अनावृष्टि, दुर्भिक्ष होवे। तथा चारों ही घरों मे शुभ हों तो चारों ही दिशाओं में शुभ, क्रर हो तो अशुभ और मिश्र योग हों तो मिश्र फल होवे।

प्रत्येक क्षेत्र में वर्षा तथा उत्पत्ति होने का ज्ञान।

अस्मदीये पुनः क्षेत्रे वृष्टिर्भव्या भविष्यति।
एवं प्रश्नं बुधैश्चिन्त्यं लग्ने व्योमचतुर्थकम् ॥ ७८१ ॥

कोई प्रश्न करे कि इस क्षेत्र में खेती के उपयोगी वर्षा होगी वा नहीं उस का उत्तर लग्न, चौथे और दशवें घर से कहे।

मूषकाः शलभा वृष्टौ तुलासिंहवृषोदये ।
मृगमेषालिकुम्भेषु वायुवह्नीलिकादयः ॥ ७८२ ॥
युग्ममीनधनुःस्त्रीषु शलशः कृमिकर्त्तराः ।
कर्काख्ये जलशीते च रसोद्यः स्वामिदर्शनात् ॥ ७८३ ॥

लग्न की राशि १। ८। १० वा ११ हो तो वायु, अग्नि आदि से; २। ५ वा ७ हो तो चूहे, टिड्डी आदि से; ३। ६। ९ वा १२ हो तो कीड़े, कातरे आदि से; और ४ हो तो जल, शीत आदि से खेती को हानि पहुंचे। किन्तु उस राशि का स्वामि उसे देखता हो तो हानि वहुत नहीं होवे।

लग्नस्य सवलत्वे च शस्याधिक्यं धनं स्मृतम् ।
चतुर्थस्य वलाधिक्ये क्षेत्रं सर्वं समृद्धिकम् ॥ ७८४ ॥
कर्मणः सवलत्वे च शुभग्रहवलात्मके ।
सफलानि सुकर्माणि शस्योत्पत्तौ भवन्ति हि ॥ ७८५ ॥

इन में बलवान् घर लग्न हो तो खेती अधिक होने योग्य वर्षा, ४ था हो तो सम्पूर्ण क्षेत्र में धान्य उत्पन्न और १० वां तथा शुभ ग्रह हो तो खेती सम्बन्धी सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होवें।

चतुर्थे चन्द्रशुक्राद्यैर्महावृष्टिः प्रकीर्त्तिता ।
क्रूरैस्तत्राप्यनावृष्टिर्वक्तव्या हितमिच्छता ॥ ७८६ ॥

लग्न से ४ थे घर में ग्रह शुभ हो तो अतिवृष्टि और क्रूर हो तो अनावृष्टि होवे।

शालिजोनलगोधूमास्तिलाढकीमकुष्टकाः ।
मुद्गाश्चणकमाषाश्च सकङ्गुः कोद्रवस्तथा ॥ ७८७ ॥
मसूरा द्वादशैते स्युर्भावा लग्नादयः क्रमात् ।
क्रूरैतेषु च भावेषु नाशः सौम्ये शुभं वदेत् ॥ ७८८ ॥

चार से ववडाई शकल बारहवीं से गेरायन है ।
जो इन कहे माल के घर में शकल जल की कूवत
तकरार घर नेक में कहे जल आवे आज है ॥ ७

१ । ४ और १२ वें घर में जल की शकलें व
आवे तथा वे फिर श्रेष्ठ घरों में बैठें तो उसी दिन

अथवा सारे जायचे (१६ ही घरों) में अधि
अधिक विन्दु अग्नि के हो तो धूप, वायु के हों त
के हों तो वर्षा और पृथ्वी के हो तो बादल होवे

☰ ⁝ शकले २ । ९ घर में हों तो मेह का
१ । ४ । ५ । ७ । १० मे हों तो उसी दिन वर्षा होवे

२ । ५ । १६ घरों की शकलें मिला के एक करे
⁝ वा ⁝ हो तो वर्षा बहुत होवे, ☰ हो तो नदं
÷ हो तो बादल बहुत होवे; ⩦ हो तो अंधेरी घ
कम होवे; ⁝ हो तो वायु चले और वर्षा नहीं हो
गर्भ पवन चले; ☰ हो तो मेह कम और वायु अधि
☰, ⁝, ⁝, ⁝ वा ⁝ हो तो मेह आकर टल २

मिश्र निमित्त ।

सुभिक्षं च सुखं शान्तिर्दुर्भिक्षं दुःखविग्रहौ ।
ज्ञायन्ते यैर्मुनिख्याता निमित्तं मिश्रसञ्ज्ञकम् ॥

प्राचीन ऋषि मुनियों ने जगत् का शुभाशुभ-अ
(सुवृष्टि आदि), सुख (आरोग्य आदि) और श
आदि); वा दुर्भिक्ष (अनावृष्टि आदि), दुःख (रोग
विग्रह (युद्ध आदि)-जानने के लिये पूर्वोक्त तीनों

कार्त्तिक मास प्रकरण।

कार्त्तिक डम्बर नाहिं जल गैली देख मत भूल।
रूप रूड़ा गुण वाहिरा (यह) रोहीड़े का फूल ॥ ७९१ ॥

कार्त्तिक में बड़े २ वादल आदि वर्षा के चिहन हों तो भी प्रायः वर्षा नहीं होवे।

यदा कार्त्तिकमासे तु वारिदस्य च गर्जनम्।
भवत्यन्नमहर्घत्वं शस्यसम्पत्तिरुत्तमा ॥ ७९२ ॥

कार्त्तिक में गाजे तो खेतियों की उत्पत्ति तो अच्छी किन्तु धान्य महँगा होवे।

कार्त्तिक वदि १ योग।

कार्त्तिके प्रथमे पक्षे प्रथमा बुधसंयुता।
जायते मध्यमा वृष्टिरनावृष्टिः क्वचिद्भवेत् ॥ ७९३ ॥

कार्त्तिक वदि १ को बुध वार हो तो आनेवाले वर्ष में प्रायः मध्यम वृष्टि और कहीं २ अनावृष्टि होवे।

कार्त्तिक वदि ५ योग।

कार्त्तिके पञ्चमीरौद्रयोगे स्यात्तृणसङ्ग्रहः।
चतुष्पदे ऽन्यथा दुःखं जायते ऽग्रे ऽल्पवृष्टिजम् ॥ ७९४ ॥

कार्त्तिक वदि ५ को आर्द्रा हो तो आगे वृष्टि अल्प होवे। अतः तृण का संग्रह करे नहीं तो पशुओं को दुःख होता है।

कार्त्तिक वदि १४ वा ३० (दीप मालिका) योग।

(वार द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

पञ्चाशद्दिवसं वृष्टिर्वर्षे दीपोत्सवे रवौ।
सोमे दिनशतं वृष्टिश्चत्वारिंशच्च मङ्गले ॥ ७९५ ॥
बुधे षष्टिदिनैर्वृष्टिरशीतिदिवसैर्गुरो।
शुक्रे दिनानां नवतिः शनौ विंशतिरेव च ॥ ७९६ ॥

ाली को वार रवि हो तोआगे वर्षा काल में ५०, सोम ०, मंगल हो तो ४०, बुध हो तो ६०, गुरु हो तो ८०, ो ९० और शनि हो तो २० दिन वर्षा होवे।

सोम शुक्र आवे दीवाली। जींवे रंक मरे भण्ड शाली।
शनि मङ्गल आवे दीवाली। मरे रंक जीवे भण्ड शाली॥७९७॥

बुध वा गुरु आवे दीवाली। जीते रंक हारे भण्ड शाली।
रवि वारी आवे दीवाली। हारे रंक जीते भण्ड शाली॥७९८॥

दीवाली को वार चन्द्र बुध गुरु वा शुक्र हो तो धान्य मन्दा और रवि मंगल वा शनि हो तो महंगा होवे।

(वायु तथा उस की दिशा द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

दीप मालिका पवन विचार। अमावस चौदश तत् सार।
सन्धि मिले तब दीपक जोय। दीप बुझें तहं दुर्भिक्ष होय॥७९९॥

दीवाली के समय वायु ज़ोर से चले जिस से दीपक बुझ जावे तो वहां दुर्भिक्ष पड़े।

पूर्व केग वायरा दीवाली आथणते होय।
समया कहिये करवरा ऊन्हाली सरसी जोय॥ ८०० ॥

अग्नि कोण का वायरा आथण वाजे वाय।
सावें पोची नीपजें भिड़ जावें गढ़ राय॥ ८०१ ॥

दक्षिण दिश वाजे बुरा समय विकारी जाण।
खड अन्न महंगा करे नरों में लावे माण॥ ८०२ ॥

नैर्ऋत पवन भल वाजिया समया भला सुकाल।
धीणा धान होवें वहुत लड़ मरिहें भूपाल॥ ८०३ ॥

पश्चिम वाजे वायरा आषाढ़े वर्षे मेह।
भाद्रवा कोरा कहा अन्न पहले संग्रेह॥ ८०४ ॥

वायु कोण का वायु जो वाजे सब ही देश।
साखें पोटे सूखवें नर नारी कुशळे वेश ॥ ८०५ ॥
उत्तर पवन भळ वाजिया इन्द्र पधारे आप।
घर घर मंगलाचार हो पर रोग घणेरो ताप ॥ ८०६ ॥
ईशान पवन घर ऊपरे मेह वरसे झड़ लाय।
मूंग ज्वार गेहूं बहुत कोठे धान भराय ॥ ८०७ ॥

दीवाली को सन्ध्या के समय वायु पूर्व का हो तो साख खरीफ़ की तो मध्यम (कहीं श्रेष्ठ-कहीं नेष्ट), किन्तु रवी की अच्छी; अग्नि कोण का हो तो खेती की उत्पत्ति कम और राजाओं में युद्ध; दक्षिण का हो तो दुर्भिक्ष, घास तथा अन्न महंगा और रोग पीड़ा; नैर्ऋत्य कोण का हो तो सुभिक्ष, घास धान्य तथा घृतादि पदार्थों की उत्पत्ति अधिक और राजाओं में विग्रह पश्चिम का हो तो आषाढ़ में तो वृष्टि किन्तु भाद्रवे में अनावृष्टि जिस से धान्य महंगा (इस लिये धान्य पहिले से खरीद); वायव्य कोण का हो तो धान्य के सट्टे निकलने पर साख सूख जावे किन्तु मनुष्यों में कुशलता; उत्तर का हो तो वर्षा तथा विवाह आदि मंगलीक उत्सव अधिक, किन्तु ज्वरादि रोगों का उपद्रव; और ईशान कोण का हो तो वर्षा की झड़ियें लगने से दोनों साखें अच्छी उत्पन्न होवें।

(*खंजन पक्षी के बैठने के स्थान से वर्षा का ज्ञान।)

कोडया कार्त्तिक मास में दरसे देख सुजान।
घर मगरी पर देखिये मंगल वर्ष बखान ॥ ८०८ ॥
अन्न धन सुख सम्पत्ति सब हि साख दोय निपजन्त।
नदियें नई नवेलियें जय जय कार करन्त ॥ ८०९ ॥
वा पंकज पर देखिये नाग फणी पर सोय।
वा हाथी घोड़े पर समय सरस यों होय ॥ ८१० ॥

---

* इस का विशेष निर्णय मेरे बनाये "बृहद्दर्घ मार्त्तण्ड" ग्रन्थ के शकुन सार' नामक अंक में किया है।

फल फूलों के वृक्ष पर अथवा हरी सुडाल।
अन्न धन सुख सम्पत्ति सब हि कोडया करत सुकाल ८११

खंजन पक्षी दीवाली के दिन घर की छत वा छप्पर पर बैठा दीखे तो अगले संवत् में वर्षा अधिक, साखें दोनों अच्छी और अन्न, धन, सुख सम्पत्ति आदि की वृद्धि; कमल, सर्प के फण, घोड़े वा हाथी पर बैठा दीखे तो संवत् अच्छा; और फल, फूल वाले वृक्ष वा वृक्ष की हरी डाली पर बैठा दीखे तो सर्व प्रकार से आनन्द होवे।

हाड राख पर देखिये सुखे लकड़ सुजान।
पत्थर सूखे घास पर केश चर्म कुवस्थान॥ ८१२॥

पड़े काल भय भीत तहं रोग शोक अति होय।
रुण्ड मुण्ड युत मेदिनी विरला बचे जो कोय॥ ८१३॥

किन्तु जो पत्थर, सूखी लकड़ी वा घास, राख, केश, हड्डी, वा चमड़े, खड्डे वा बुरे स्थान पर बैठा दीखे तो बड़ा भयानक दुर्भिक्ष पड़े तथा रोग शोक भी अधिक हों जिस से बहुत से मनुष्य मरें।

कार्तिक वदि १४। ३० वा सुदि १ योग।

स्वाति में दीवा जो वले विशाखा खेले गाय।
पृथ्वी में सुख ऊपजे अन्न तृण वहुला थाय॥ ८१४॥

स्वाति में दीवा ना वले विशाखा न खेले गाय।
तो धरती का पति मरे (वा) समया निष्फळ जाय॥८१५॥

नक्षत्र दीवाली के समय तो स्वाति और दूसरे दिन प्रातः काल-गो क्रीड़ा के समय विशाखा हो तो पृथ्वी पर अन्न घास की अधिक उत्पत्ति तथा सर्व प्रकार से सुख, किन्तु ऐसा योग नहीं हो तो दुर्भिक्ष वा किसी राजा की मृत्यु होवे।

कार्त्तिक सुदि ५ (सौभाग्य पञ्चमी) योग ।

(वार तथा नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान)

कार्त्तिकस्य सिते पक्षे पञ्चम्यां सोमवासरे ।
नरनारीनृपाणां च सर्वत्र सुखको भवेत् ॥ ८१६ ॥

कार्त्तिक सुदि ५ को सोमवार हो तो राजा तथा प्रजा में सुख होवे ।

दीवा वीती पञ्चमी गुणतां एह विचार ।
वर वर्षाले ज्योतिषी एता अक्षर सार ॥ ८१७ ॥

दश सूर्य बीस सोमय मंगल अष्टम जान ।
बुध बारह गुरु अठारह शुक्र सोलह प्रमान ॥ ८१८ ॥
दैव संयोगे शनि पडे (तो) निश्चय दुर्भिक्ष जान ॥८१९ ॥

कार्त्तिक सुदि ५ को वार रवि हो तो आगे वर्षाकाल में संवत् १०, सोम हो तो २०; मंगल हो तो ८, बुध हो तो १२, गुरु हो तो १८ और शुक्र हो तो १६ विश्वे होवे, किन्तु शनि हो तो दुर्भिक्ष पड़े ।

दीवा बीती पञ्चमी जो मूल नक्षत्र होय ।
खप्पर हाथां जग भ्रमे भीख न घाले कोय ॥ ८२० ॥

कार्त्तिक सुदि ५ को मूल नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष पड़े जिस से लोग भूखे मरें ।

कार्त्तिक सुदि ११ योग ।

एकादश्यां कार्त्तिके च यदि मेघः समीक्ष्यते ।
आषाढे च तदा वृष्टिर्जायते नात्र संशयः ॥ ८२१ ॥

कार्त्तिक सुदि ११ को बादल हो तो आगे आषाढ़ में अच्छा वर्षा होवे ।

कार्त्तिक सुदि १२ योग ।

द्वादश्यां कार्त्तिके मासे शुक्रायां रजनी यदा ।

सर्वाया निर्मला चैव पुष्पबन्धस्तथा भवेत् ॥ ८२२ ॥
पञ्चवर्णास्तथा मेघा विद्युद् वृष्टिः सगर्जिते ।
द्वादश्यां कार्त्तिके मासे पुष्यहानिस्तथोच्यते ॥ ८२३ ॥

मेघ गर्भ धारण करने वाली विद्युत् शक्ति का ऋतु धर्म कार्त्तिक सुदि १२ की सम्पूर्ण रात्रि निर्मल हो तो बन्द और पांच वर्ण के बादल, बिजली, गाज वा वर्षा हो तो खुला जाने।

कार्तिक सुदि १५ (कार्तिकी पूर्णिमा) योग।

(पूर्णिमा तथा अश्विनी, भरणी, कृत्तिका वा रोहिणी नक्षत्रों की घटी से वर्षा का ज्ञान।)

कार्त्तिकी पूर्णमासी च अश्विन्यृक्षेण संयुता ।
मध्यमं जायते धान्यं मेघा वर्षन्ति मध्यमाः ॥ ८२४ ॥
अथवा भरणी तद्वत् पूर्णा स्यात् पूर्णिमादिने ।
कुत्र चिच्च भवेद् वृष्टिः कुत्र चित्स्यादवर्षणम् ॥ ८२५ ॥
दण्डखण्डं न हृद्रोगो वियोगगदपीडनम् ।
भ्रामतीति तदा भ्रान्तो विग्रहेण हतं जगत् ॥ ८२६ ॥
कार्त्तिकी पूर्णमासी चेत् पूर्णा स्यात्कृत्तिका यदि ।
सर्वशस्यसमुत्पत्तिर्निर्वैरा धरणी भुजा ॥ ८२७ ॥
प्रजापत्यपतत्यस्यामसमं पूर्णिमादिने ।
तदा स्यात् क्षेमसन्तापो दुर्भिक्षादसमञ्जसम् ॥ ८२८ ॥

कार्त्तिक सुदि १५ को अश्विनी हो तो अगले वर्ष में वर्षा, धान्योत्पत्ति तथा सम्वत् मध्यम; भरणी हो तो कहीं २ तो वृष्टि किन्तु कहीं२ अनावृष्टि तथा दण्ड (वात) रोग आदि की पीड़ा से लोगों का भटकना: कृत्तिका हो तो सम्पूर्ण खेतियों की उत्पत्ति और राजाओं में शान्ति; किन्तु रोहिणी हो तो दुर्भिक्ष होवे। इस में भी—

चत्वारो ऋक्षपादेश्याश्चत्वारः पादसङ्ख्या ।
अर्द्धे ह्यर्द्धदिने देवि पादवेधं च दृश्यते ॥ ८२९ ॥

षष्टिघटिकास्तथा भुक्तिर्ऋक्षैकं च तिथिस्तदा ।
तेन-मानेन देवेशि पुष्पसञ्ज्ञा प्रकीर्त्तिता ॥ ८३० ॥

पूर्णिमा और नक्षत्र दोनों की घटी ६० । ६० हों तो पूर्ण. ३० । ३० हों तो आधा और १५ । १५। हों तो चौथाई फल होवे। इसी क्रम से तिथि और नक्षत्र की जितनी घटी हों उस के अनुसार न्यूनाधिक फल जाने।

(चन्द्रमा तथा कृत्तिका के तारों की स्थिति से वर्षा का ज्ञान ।)

कार्त्तिक पूर्णिमा अर्द्ध रात । बुध लखे कृत्तिका चन्द्र साथ ।
दक्षिणाद कृत्ति दुर्भिक्ष थाय । उत्तराद कृति सुभिक्ष कराय८३१
वेत हाथ कुल्हाड़ी डण्डा । (तो) खेती निपजे चारों खण्डा ।
कृत्तिका आगे गाड़ी की धुरी । महंगे नाज और सस्ते तुरी८३२

घिलि मिलि समाय शशि कृत्ति आय ।
करवरा संवत् कहिये सुभाय ॥ ८३३ ॥

कार्त्तिक सुदि १५ को आधी रात्रि के समय चन्द्रमा से कृत्तिका उत्तर वा १ वेत वा १ वा १॥ हाथ अनुमान पूर्व में हो तो सुभिक्ष; किन्तु दक्षिण वा ३॥ हाथ आगे पश्चिम में हो तो दुर्भिक्ष तथा धान्य महंगा, किन्तु घोड़े आदि पशु सस्ते; और दोनों बहुत ही समीप हों तो मध्यम सवत् होवे।

कार्तिक वदि १४ वा ३० आर सुदि १५ योग ।

दीपमालिका नीके जोय । निश्चय रात्रि निवाई होय ।
कार्त्तिक पूनम निर्मल चन्द्र । अन्न खरीदे सो मति मन्द ॥८३४॥

दीवाली की रात्रि में वायु बन्द सा हो जिस से रात्रि में कुछ गर्मी और कार्त्तिक सुदि १५ की रात्रि में चन्द्रमा निर्मल हो तो अगला संवत् सुभिक्ष होवे।

कार्तिक सुदि ५ । ७ । ९ । ११ । १२ । योग ।

कार्त्तिक सुदि ५ । ७ । ९ । ११ वा १२ को वर्षा हो तो ज्येष्ठ वदि में वर्षा होवे ॥

मृगशिर मास प्रकरण ।

मृगशिर के जिन नक्षत्रों में बादल, बिजली आदि हो तो आगे आषाढ में भी उन्हीं नक्षत्रों में फिर वर्षा होवे।

मृगशिर वदि ४ योग ।

चतुर्थ्यां जलयोगं तु सुभिक्षं च समादिशेत् ॥ ८३५ ॥

मृगशिर वदि ४ को बादल वा वर्षा हो तो आगे सुभिक्ष।

मृगशिर सुदि ८ योग ।

मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यन्ते विद्युतो यदा ।
तदा वृष्टिः श्रावणे च मासि सञ्जायते ध्रुवम् ॥ ८३६ ॥

मृगशिर सुदि ८ को बादल हो तो श्रावण में वर्षा होवे।

मृगशिर सुदि १० योग।

दशम्यामुत्तरो वातः सितायां यदि जायते ।
मार्गशीर्षे ह्यहोरात्रं तदा स्नानमुदीरितः ॥ ८३७ ॥

मृगशिर सुदि १० को दिन रात्रि में उत्तर का वायु चले तो वर्षा के लिये मेघ गर्भ धारण करने वाली स्त्री रूपी विद्युत् का गर्भ धारण होने योग्य ऋतु स्नान हुआ जाने।

मृगशिर वदि वा सुदि ११ योग ।

मार्गकृष्ण (शुक्ल एकादश्यां शनिवारो यदा भवेत् ।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥ ८३८ ॥

मृगशिर वदि वा सुदि ११ को शनि वार हो तो अनावृष्टि, छत्र भंग और प्रजा का नाश होवे।

——×——

पौष मास प्रकरण।

पौषमासे यदा विद्युद् गर्जितं चाभ्रवर्षणम्।
ज्ञातव्यं तैर्निमित्तैस्तु अतिवृष्टिर्भविष्यति ॥ ८३९ ॥

पौष में बादल, बिजली वा गाज आदि हो तो वर्षाकाल (आषाढ़) में वर्षा अधिक होवे।

मूलादि ११ नक्षत्र योग।

पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रमानेन चाभ्रकम्।
आर्द्रादौ तु विशाखान्तं रविमानेन वर्षति ॥ ८४० ॥

पौष मे मूल से ले के भरणी तक ११ दिनों में बादल हों तो आगे सूर्य के आर्द्रा से ले के विशाखा तक ११ नक्षत्रों में वर्षा होवे। अर्थात् मूल से आर्द्रा, पूर्वाषाढा से पुनर्वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से अश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा से उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा वर्षे। इस में भी दिन के सम्पूर्ण नक्षत्र में बादल हो तो सूर्य का भी सम्पूर्ण नक्षत्र वर्षे।

स्वाति नक्षत्र योग।

पौषस्य कृष्णसप्तम्यां स्वातियोगे जलं भवेत्।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं जायते नात्र संशयः ॥ ८४१ ॥
स्वाति ऋक्ष जो पौष में ज्यों वर्षे त्यों वर्षेगा।
पौष स्वाति घन जल नहीं जगत् विना जल तरसेगा॥८४२॥

पौष वदि में स्वाति के दिन वर्षा हो तो वर्षाकालमें निश्चय सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम और आरोग्य; किन्तु बादल वा वर्षा कुछ भी नहीं हो तो अनावृष्टि होवे। इन में भी स्वाति के प्रथम पाद में हो तो आषाढ़, २ रे में हो तो श्रावण, ३ रे में हो तो भाद्रवे, ४ थे में हो तो आश्विन और चारों ही पायों में हो तो चारों ही महीनों वर्षा होवे।

शतभिषा नक्षत्र योग ।

पौषे मासे श्वेतपक्षे ऋक्षं शतभिषग्यदा ।
वाताभ्रविद्युत्पञ्चम्यां गर्भश्चैव प्रजायते ॥ ८४३ ॥

स चाषाढे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां वर्षति ध्रुवम् ।
द्रोणसञ्ज्ञास्तत्र मेघः सप्तरात्रं प्रवर्षति ॥ ८४४ ॥

पौष सुदि ५ को शतभिषा हो और पवन, बादल, वा बिजली हो तो द्रोण संज्ञा वाला मेघ आषाढ़ वदि ४ से ११ तक वर्षे।

पौष वदि ६ योग ।

वृष्टे मेघे पौषषष्ठ्यां भाद्रे कृष्णे घनोदये ॥ ८४५ ॥

पौष वदि ६ को वर्षा हो तो भाद्रवे वदि में वर्षा होवे।

पौष वदि ८ योग ।

कृष्णाष्टम्यां पौषमासे यदा वृष्टिर्न जायते ।
तदार्द्राऽऽर्द्राऽर्कसमायोग एकी कुर्याज्जलैः स्थलम् ॥ ८४६ ॥

पौषस्य कृष्ण अष्टम्यां निशीथे गर्ज्जिते घने ।
वर्षाकाले चतुर्मासे सजलं वर्षते घनः ॥ ८४७ ॥

पौष वदि ८ को वर्षा नहीं हो तो आगे सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा अधिक, तथा रात्रि में गाजे तो चारों ही महीनों मे वर्षा होवे।

पौष वदि १० योग ।

पौषे कृष्णे दशम्यां स्याद्विशाखा निशि वा दिवा ।
भाविवर्षेऽम्बुदः प्रोढ्याऽपरः पार्श्वजिनेश्वरः ॥ ८४८ ॥

पौष वदि १० को दिन वा रात्रि मे विशाखा हो तो आगे अधिक वर्षा होवे।

कृष्णे पक्षे दशम्याञ्च वृष्टिः पौषे च जायते ।
तदा भाद्रपदे मासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ८४९ ॥

पौष वदि १० को चारों दिशाओं में बादल वा वर्षा हो तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा तथा श्रावण वदि १० को और भाद्रवे में बहुत वर्षा होवे।

यदि भवति शशाङ्के मण्डले शीतरश्मी ।
रवि कुज शनिवारे पौषमासे कुहु स्यात् ॥
द्विगुणत्रिगुणवेदैर्मन्यते रत्नतुल्यं
बुधगुरुभृगुचन्द्रे मृत्तिकातुल्यमन्नम् ॥ ८५० ॥

पूर्वाषाढा तथा ज्येष्ठा ऽमावस्यां पौषमासके ।
वाराः शनिकुजादित्या भाविवर्ष विनाशकाः ॥ ८५१ ॥

पौष वदि ३० को नक्षत्र तो ज्येष्ठा वा पूर्वाषाढ़ा और वार क्रूर हो तो अगले संवत् में दुर्भिक्ष और| धान्यं महंगा, किन्तु सौम्य हो तो सस्ता होवे।

पौषस्य यद्यमावस्या ज्येष्ठानक्षत्रसंयुता ।
तदा शस्यमहर्घत्वं मूलयुक्ता ऽल्पमूल्यदा ॥ ८५२ ॥
यदा तोयर्क्षसंयुक्ता तदा शस्यविवर्द्धिनी ।
उत्तराषाढसंयुक्ता भयदुर्भिक्षकारिणी ॥ ८५३ ॥

पौष वदि ३० को ज्येष्ठा वा उत्तराषाढा हो तो घास धान्य आदि महंगे और मूल वा पूर्वाषाढा हो तो सस्ते होवें।

पौषे मूलार्क्षके दर्शे विद्युदभ्राणि गर्जितम् ।
वर्षायां चतुरो मासान् दत्ते मेघमहोदयेः ॥ ८५४ ॥

पौष वदि ३० को मूल हो और बादल, बिजली वा गाज हो तो वर्षा काल के चारों महीनों में अच्छी वर्षा होवे।

पौष सुदि ४ योग ।

पौषे शुक्ल चतुर्थ्यां तु विद्युदर्शनमुत्तमम् ।
अभ्राच्छन्नं नभः श्रेष्ठं मत्स्यमिन्द्रधनुस्तथा ॥ ८५५ ॥

प्रयत्नेन ह्यहोरात्रं निरीक्षयेद्यथा विधिः ।
परिवेषं गर्जनञ्च पतन्ति जलविन्दवः ॥ ८५६ ॥

सर्वेषामेव चिह्नानां विद्युद्दर्शनमुत्तमम् ।
कृष्ण पक्षे तथाऽऽषाढ एभिर्वृष्टिः प्रजायते ॥ ८५७ ॥

विद्युन्मेघो धनुर्मत्स्यो यद्येको ऽपि च नो भवेत् ।
न चर्क्षं वर्षते तत्र न काले वर्षते तदा ॥ ८५८ ॥

अनेन ज्ञायते सर्वं वर्षणं चाप्यवर्षणम् ।
एतद्वै परमं गुह्यं गर्भाधानस्य लक्षणम् ॥ ८५९ ॥

विद्युत्संयोगजं चिह्नं न देयं यस्य कस्य चित् ॥ ८६० ॥

पौष सुदि ४ को दिन रात्रि वादल, विजली, गाज, छींटे, धनुष्, मत्स्य, कुण्डल आदि गर्भ धारण के लक्षण हो तो अगले संवत् के लिये श्रेष्ठ होने से आगे ६॥ महीनो से श्रावण वदि ४ को वर्षा होवे, जिस से सम्पूर्ण वर्षा काल में भी अच्छी वर्षा होवे। किन्तु पूर्वोक्त कोई भी लक्षण नहीं हो तो न तो श्रावण वदि ४ को और न वर्षा काल मे वर्षा होवे । इस एक ही दिन को देखने से सम्पूर्ण वर्षा काल का निर्णय हो सकता है, इस लिये पौष सुदि ४ को दिन रात पहरा लगा के देखे।

पौष सुदि ५ योग ।

पौषे मासे शुक्लपक्षे पञ्चम्यां हिमवर्षणम् ।
यदा स्यान्महती वृष्टिस्तदा प्रावृषि निर्दिशेत् ॥ ८६१ ॥

पौष सुदि ५ को हिम गिरे वा वादल आदि हो तो वर्षा काल में वहुत वर्षा होवे ।

पौष सुदि ६ योग ।

पौषे शुक्ले मेघषष्ट्यां श्रावणे स्याच्च वर्षणम् ॥ ८६२ ॥

पौष सुदि ६ को वर्षा हो तो श्रावण में वर्षा होवे।

पौष सुदि ७ । ८ वा ९ योग ।

सप्तम्यादित्रये पौषे शुक्ले विद्युच्च गर्जितम् ।
तदा मेघस्य गर्भः स्यादचलः सुखसम्पदौ ॥ ८६३ ॥

पौष सुदि ७ । ८ वा ९ को बिजली चमके वा गाजे तो मेघ के गर्भ सुख सम्पत्ति होने योग्य वर्षा होवे ।

पौष सुदि १४ योग ।

पौषे शुक्ले चतुर्दश्यां विद्युदर्शनमुत्तमम् ।
कृष्णे पक्षे तथा ऽऽषाढे भवेन्मेघमहोदयः ॥ ८६४ ॥

पौष सुदि १४ को बिजली चमके तो आषाढ़ वदि अर्थात लोकीक श्रावण वदि में वर्षा होवे ।

पौष सुदि १५ योग ।

पूर्णमास्यां यदा पौषे चन्द्रमा नैव दृश्यते ।
उत्तरस्यां दक्षिणस्यां यदा विद्युत्प्रदर्शनम् ॥ ८६५ ॥
अभ्राच्छन्नं नभो वा ऽपि महावृष्टिस्तदा भवेत् ।
अमावस्यां श्रावणस्य नूनं भाविनि वत्सरे ॥ ८६६ ॥

पौष सुदि १५ को रात्रि में चन्द्रमा वादलों से ढंका हुआ रहे, वा उत्तर वा दक्षिण में बिजली चमके वा बादल हो तो श्रावण वदि ३० को बहुत वर्षा होवे ।

माघ मास प्रकरण ।

माघ मांहि जो पड़े न शीत । मेघा नहीं जानियो मीत ।
माघ पांच जो हों रवि वार । तो भी जोषी काल विचार ॥८६७॥

माघ में ठण्ढ न पड़े वा ५ रवि वार हों तो दुर्भिक्ष होवे ।

भरणी और कृत्तिका नक्षत्र योग ।

माघसिते यमशिखिभे मेघयुते सर्वशस्यनिष्पत्तिः ।
अथवा मेघ विहीने धान्यानां सङ्ग्रहः कार्यः ॥ ८६८ ॥

माघ सुदि में भरणी और कृत्तिका के दिन बादल हों तो सम्पूर्ण खेतियें उत्पन्न होने योग्य अच्छी वर्षा किन्तु ये निर्मल हों तो अल्प वृष्टि और धान्य महंगा होवे।

माघ वदि ७ योग।

सप्तम्यां स्वातियोगे यदि पतति हिमं माघमासान्धकारे
वायुर्वा चण्डवेगः सजलजलधरो वा ऽपि गर्जत्यजस्रम्।
विद्युन्मालाकुलं वा यदि भवति नभो नष्टचन्द्रार्कतारम्
विज्ञेया प्रावृडेषा मुदितजनपदा सर्वशस्यैरुपेता॥ ८६९॥

माघ वदि ७ को स्वाति हो और हिम गिरे, ज़ोर का वायु चले, वर्षते हुये बादल गाजें, बिजली बहुत चमके वा दिन रात्रि आकाश बादलों से ढँका रहे, जिस से सूर्य तथा चन्द्रमा नहीं दीखे, तो वर्षा काल में सम्पूर्ण खेतियें उत्पन्न होने योग्य बहुत वर्षा होवे तथा लोक सुखी रहे।

माघ वदि ९ योग।

माघे कृष्णे नवम्यां च मूलऋक्षदिने ऽथवा।
विद्युन्मेघधनुर्योगे चाभ्रैर्नभसि संवृते॥ ८७०॥
एतस्माद्गर्भतो वृष्टिर्भाविवर्षे विजायते।
आषाढे वा भाद्रपदे दशमीदिवसे शुभा॥ ८७१॥

माघ वदि ९ वा मूल को बादल, बिजली वा धनुष् हो तो सुभिक्ष और आषाढ़ वा भाद्रवे की १० को वर्षा होवे।

माघ वदि ३० योग।

माघ अमावस रात्रि दिन मेघ पवन घन छाय।
धरती में आनन्द हुवे संवत सुभिक्ष थाय॥ ८७२॥

माघ वदि ३० को दिन रात्रि पवन, बादल, वृष्टि और हिम हो तो सुभिक्ष और भाद्रवा वदि ३० को वर्षा होवे।

माघ सुदि ५ योग ।

माघस्य शुक्लपञ्चम्यां वृष्टियुक्तोत्तरानिलः ।
अनावृष्टिं भाद्रपदे कुर्याद्धान्यमहर्घताम् ॥ ८७३ ॥

माघ सुदि ५ को वृष्टि के साथ उत्तर का पवन हो तो भाद्रवे में अनावृष्टि और धान्य महंगा होवे ।

माघ सुदि ७ योग ।

सप्तम्यां सोमवारः स्यान्माघे पक्षे सिते यदि ।
दुर्भिक्षं जायते रौद्रं विग्रहो ऽपि च भूभुजाम् ॥ ८७४ ॥

माघ सुदि ७ को सोम वार हो तो दुर्भिक्ष और राजाओं में युद्ध होवे ।

माघ मासे च सप्तम्यां भरणी यदि जायते ।
रोगनाशस्तदा लोके वसुधा बहुधान्यभूत् ॥ ८७५ ॥

माघ सुदि ७ को भरणी हो तो रोगो की शान्ति और धान्य की वृद्धि होवे ।

माघस्य शुक्लसप्तम्यां सावधानैरहर्निशम् ।
वीक्षणीयं प्रयत्नेन कालनिश्चयकारणम् ॥ ८७६ ॥

अहोरात्रम्भवेत्साभ्रं वारुण्यां विद्युद्दर्शनम् ।
ऐन्द्रो वातो ऽथ कौवेरशर्वरिषु दिवा ऽपि वा ॥ ८७७ ॥

महासुभिक्षमादेश्यं तद्वर्षं निरुपद्रवम् ।
तद्वर्षणं प्रमादेन कदा चिदपि नो भवेत् ॥ ८७८ ॥

मेघाश्चतुर्दशा ज्ञेया मासाश्चत्वार एव च ।
आषाढं प्रथमे पादे द्वितीये श्रावणं भवेत् ॥ ८७९ ॥

भाद्रपदं तृतीये च चतुर्थे ऽश्विनमेव च ।
अभ्राच्छन्नं नभो ऽप्येवं जलपातं ब्रवीमि ते ॥ ८८० ॥

पीड्यन्ते चतुरो मासान् जलपातक्रमेण च ॥ ८८१ ॥

माघ सुदि ७ को दिन रात्रि पूर्व वा उत्तर का वायु चले आकाश बादलों से ढंका रहे वा पश्चिम में बिजली चमके तो अच्छा सुभिक्ष तथा उस वर्ष में किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होवे। इस में भी बादल उस दिन के चारों भागों में रहें तो चारों ही महीनों में अर्थात् दिन के १ ले भाग से आषाढ़ और २ रे से श्रावण तथा रात्रि के १ ले भाग से भाद्रवा और २ रे से आश्विन में बहुत वर्षा होवे । परन्तु गर्भ गलने योग्य (३० सैंट) वर्षा हो जावे तो इसी क्रम से जिस जिस भाग में वर्षा हो उसी उसी भाग के महीने में अनावृष्टि होवे।

माघ मास की सातम बीधे। सोलह श्राद्ध वर्षता दीखे ॥ ८८२ ॥

माघ सुदि ७ को छींटे हो तो श्राद्ध पक्ष (आश्विन वदि) में वर्षा होवे।

शुक्लपक्षस्य सप्तम्यां माघे मासे तु वर्षति।
दुर्दिनं वा यदा पश्येद् वर्षाकाले तु नो भवेत् ॥ ८८३ ॥

माघ सुदि ७ को बहुत वर्षा, दुर्दिन वा बिलकुल ही निर्मलता हो तो अनावृष्टि होवे।

(माघ सुदि ७ को भले प्रकार से देखे यह योग अनुभव सिद्ध है।)

माघ सुदि ८ योग ।

अष्टम्यां यदि पश्येत चादित्समुदयं गतम्।
तदा ऽऽर्द्रायां न वर्षन्ति श्रावणे च तथैव च ॥ ८८४ ॥

माघ सुदि ८ को उदय होता हुआ सूर्य बादलों से ढंका हुआ हो तो वर्षा, किन्तु निर्मल हो तो आगे सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र तथा श्रावण मे अनावृष्टि होवे।

माघे शुक्ल यदा ऽष्टम्यां कृत्तिका यदि नो भवेत्।
फाल्गुने रोलिकापातः श्रावणे वा न वर्षणम् ॥ ८८५ ॥

माघ सुदि ८ को कृत्तिका नहीं हो तो श्रावण में अनावृष्टि वा रबी (उन्हाली) की साख में रोली से हानि होवे।

माघ सुदि ९ योग।

माघां नवमी ऊजली बादल करे विपाल।
भाद्रवे वर्षे बहुत सरवर फूटे पाल॥ ८८६॥

माघ सुदि ९ को बादल हो तो भाद्रवे में अति वृष्टि, किन्तु निर्मल हो तो अनावृष्टि होवे।

नवमी शशाङ्कयोगेन मण्डलं कुरुते यदि।
आषाढं सकलं वृष्टिर्लोके धान्यमहर्घता॥ ८८७॥

माघ सुदि ९ को रात्रि में चन्द्रमा के कुण्डल हो तो आषाढ़ में तो वर्षा होवे, किन्तु आगे धान्य महगा हो जावे।

माघ सुदि १५ योग।

माघे मासे पूर्णमास्यां प्रहरे यत्र वार्दलम्।
वर्षाकाले तत्र मासे न वर्षति पयोधरः॥ ८८८॥

माघ सुदि १५ को बादल दिन के १ ले प्रहर में हो तो आषाढ़, २ रे में हो तो श्रावण, ३ रे में हो तो भाद्रवा और ४ थे में हो तो आश्विन में वर्षा नहीं होवे; किन्तु जो जो भाग निर्मल हो तो उस उस भाग के मास में वर्षा होवे।

माघी पूर्णा, यदा चन्द्रपरिवेषस्तु जायते।
दक्षिणा चोत्तरा विद्युद् वातो वा यदि सम्भवेत्॥ ८८९॥
अभ्राच्छन्नं नभो वा ऽपि पार्थिवं कालमादिशेत्॥ ८९०॥

माघ सुदि १५ को वायु, बादल, दक्षिण वा उत्तर में बिजली वा चन्द्रमा के कुण्डल हो तो संवत् अच्छा होवे। किन्तु इस दिन ग्रहण आदि कोई उत्पात हो जावे तो माघ सुदि १५ से पहिले के मेघ गर्भों का नाश हो जाता है।

माघ सुदि ७। ८। ९ योग।

सप्तम्यादित्रये माघे शुक्ले वार्दलयोगतः।
धनधान्यसमृद्धिः स्याद्विवाहाद्युत्सवो जने॥ ८९१॥

माघ सुदि ७। ८। ९ को बादल हों तो धन धान्य की वृद्धि तथा विवाह आदि उत्सव अधिक होवे। इन में भी बादल एक ही दिन हो तो अधम, दो दिन हो तो मध्यम और तीनों दिन हो तो उत्तम जाने क्योंकिः—

माघे मासे च सप्तम्यामत्यभ्रं चेद्रवै तदा ।
आषाढादिमतिरोक्तं वृष्टिबाहुल्यमुत्तमम् ॥ ८९२ ॥
सप्तमी निर्मला चेद्वा चाष्टमी साभ्रका यदि ।
तदा ऽऽषाढमतिक्रम्य श्रावणे वृष्टिमादिशेत् ॥ ८९३ ॥
नवमी निर्मला वै स्यात्तूर्ये यामे च साभ्रकम् ।
तदा भाद्रपदे वृष्टिर्भिद्यन्ते ऽपि सरांसि च ॥ ८९४ ॥
नवमी निर्मला वै स्यात् साभ्रा किञ्चिन्न दृश्यते ।
तदा जलं न कुत्रापि प्राप्यते सागरं विना ॥ ८९५ ॥

सूर्यास्त के समय बादल में माघ सुदि ७ को हो तो आषाढ, ८ को हो तो श्रावण, और ९ को हो तो भाद्रवे में वर्षा होवे; किन्तु निर्मल हो तो नहीं होवे।

माघ सुदि ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ योग।

माघे मासे सिते पक्षे सप्तम्यादिदिनाष्टके ।
साभ्रेण चातिवृष्टिः स्यादनावृष्टिर्निरभ्रके ॥ ८९६ ॥

माघ सुदि ७ से १४ तक के ८ दिनों में बादल हों तो बहुत वर्षा किन्तु नहीं हों तो अनावृष्टि होवे ॥

फाल्गुन मास प्रकरण ।

यद्यभ्रं फाल्गुने नित्यं न तु पातयते जलम् ।
वृष्टिगर्भे भवत्येव प्रावृट्कालस्य दोहकः ॥ ८९७ ॥

सम्पूर्ण फाल्गुन में बादल तो हो किन्तु वर्षा बहुत न हो तो वर्षा काल में वर्षा होवे ।

फाल्गुने तिखरो वायुर्वाति पत्राणि पातयन् ।
दक्षिणोऽतिमृदुश्चैत्रे मेघगर्भहिताय सः ॥ ८९८ ॥

फाल्गुन में वायु तीक्ष्ण वा दक्षिण का हो तो मेघ गर्भों की पुष्टि होवे।

रोहिणी नक्षत्र योग।

कुम्भमीनान्तरेऽष्टम्यां नवम्यां दशमीदिने ।
रोहिणी चेत्तदा वृष्टिरल्पा मध्याऽधिका क्रमात् ॥ ८९९ ॥

कुम्भ और मीन संक्रान्ति के बीच (फाल्गुन सुदि) में रोहिणी ८ को हो तो अल्प, ९ को हो तो मध्यम और १० को हो तो अधिक वर्षा होवे।

फाल्गुन वदि २ योग।

फाल्गुन वदि द्वितिया दिने वादल होय स वीज ।
वर्षे श्रावण भाद्रवा साह धण खेले तीज ॥ ९०० ॥

फाल्गुन वदि २ को विजली सहित वादल हो तो श्रावण तथा भाद्रवे में वर्षा होवे।

फाल्गुन वदि ६ योग।

फाल्गुन वदि ६ को चित्रा हो तो सुभिक्ष तथा वादल हो तो आर्द्रा मे वर्षा होवे।

फाल्गुन वदि ३० योग।

फाल्गुन वदि ३० को मंगल वार हो तो दुर्भिक्ष होवे।

फाल्गुन सुदि १ योग।

फाल्गुने प्रथमे पक्षे वारुणं प्रतिपद्दिने ।
भोगानुसारं वर्षस्य स्वरूपञ्च निरूपयेत् ॥ ९०१ ॥

फाल्गुन सुदि १ को शतभिषा हो तो सुभिक्ष होवे। इस में भी घटी जितनी अधिक हो उतना ही श्रेष्ठ जाने। जैसे;-६० घटी हों तो पूरा, ३० हों तो आधा, १५ हो तो चौथाई किन्तु प्रायः कुछ भी न हो तो नेष्ट फल होवे।

फाल्गुन सुदि ७ योग ।

फाल्गुन सुदि की सप्तमी वर्षा महा घन छाय ।
पांचम नम आसोज सुदि जल स्थल एक कराय ॥ ९०२ ॥

फाल्गुन सुदि ७ को बादल वा वर्षा हो तो आश्विन सुदि (वा वदि) ५। ९ को वर्षा होवे।

फाल्गुन सुदि ८ योग ।

कुम्भ मीन के अन्तरे अष्टमी रोहिणी होय ।
द्विगुणा तिगुणा चौगुणा कणका कवड़ा जोय ॥ ९०३ ॥

फाल्गुन सुदि ८ को रोहिणी हो तो आगे धान्य महंगा, तथा उस दिन शनि वार भी हो तो विशेष महंगा होवे।

फाल्गुन सुदि १० । ११ योग ।

दशम्येकादशी शुक्ले फाल्गुने ऽभ्रादिगर्भयुक् ।
तदा चतुर्थ्यां पञ्चम्यामाश्विने वृष्टिदायिनी ॥ ९०४ ॥

फाल्गुनः सुदि १० । ११ को बादल आदि हों तो आश्विन सुदि (वा वदि) ४ वा ५ को वर्षा होवे।

फाल्गुन सुदि १४ वा १५ (होलिका) योग ।

(वार द्वारा वर्षाका ज्ञान)

रवि मंगल शनि होली आवे। डंक कहे मोहे फागुन भावे।
उल्का पात करे भुव सारी। घर घर वार रोय नर नारी ॥९०५॥

होली को क्रूर वार हो तो अनेक प्रकार के उत्पातों से लोग कष्ट भोगे किन्तु शुभवार हो तो श्रेष्ठ जाने।

(वायु की दिशा द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

होलिकासमये वायुः पूर्वे भूपनृणां सुखम् ।
याम्यनैर्ऋत्यदिग्भागे दुर्भिक्षं च पलायनम् ॥ ९०६ ॥

प्रतीच्यामुत्तरे शैवे सुभिक्षं स्यात्प्रजासुखम् ।
अग्नेर्भीतिरथाग्नेयां वायव्यां वहवो ऽनिलः ॥ ९०७ ॥

जो चौवाया वाजे वाय । पर दल आन विरोधे राय ।
वा टीडी दल उलट जोय । सूक्ष्म भेद कहता हूं तोय॥९०८॥
सीधी झाल चढ़े ब्रह्मण्ड । तो धरती कॉपे नव खण्ड॥९०९॥

होली जलने के समय वायु पूर्व का हो तो राजा प्रजा में सुख, अग्नि कोण का हो तो अग्नि का भय, दक्षिण का हो तो दुर्भिक्ष तथा पशुओं की मृत्यु, नैर्ऋत्य का हो तो टिड्डी आदि का उपद्रव, पश्चिम का हो तो मध्यम सुभिक्ष तथा भेड़ों की मृत्यु जिस से ऊन महंगी, वायव्य का हो तो वायु का ज़ोर, उत्तर वा ईशान का हो तो सम्पूर्ण खेतियें उत्पन्न होने योग्य श्रेष्ठ वर्षा, और जो चारों ही ओर का हो तो फ़ौज वा टिड्डी से राजा तथा प्रजा को कष्ट होवे। तथा वायु शान्त हो जिस से झाल सीधी ऊपर जावे तो जगत् कम्पायमान् होवे।

(बादल द्वारा वर्षा का ज्ञान ।)

समये चेद्धुताशन्या ज्वलनस्यास्ति वार्दलम् ।
गोधूमे कुङ्कुमापातान्महर्घं प्रोच्यते तदा ॥ ९१० ॥

होली जलने के समय बादल हो तो रोली से फ़सल नष्ट होने से गेहूं महंगे हो जावे॥

फाल्गुन चैत्र मास प्रकरण ।

होली की रात्रि वीतने पर प्रातः काल में चन्द्रमा अस्त हो उस से सूर्य उदय बहुत पहिले ही हो जावे तो सुभिक्ष, थोड़ा पहिले हो तो मध्यम और अस्त होने के बहुत देर पीछे तो दुर्भिक्ष होवे॥

—x—

चैत्र मास प्रकरण।

चैत्रो ऽयं वहुरूपस्तु दाक्षिणानिलसंयुतः।
सर्वो विद्युत्समायुक्तो वृष्टे गर्भहितावहः॥ ९११॥

ततश्चैत्रे यथा योगं साभ्रता वा निरभ्रता।
शुभाय चोभयं लोके विपरीतं न सौख्यदम्॥ ९१२॥

चैत्र में बादल तथा वर्षा वदि में तो हो किन्तु सुदि में न हो तो संवत् के लिये शुभ, परन्तु वदि मे तो न हो किन्तु सुदि में हो तो अशुभ होवे।

दशप्रकाराः प्रागुक्ता गर्भाः शीतर्तुसम्भवाः।
गलिता नो चैत्रशुक्ले तदा वर्षा यथा स्थिता॥ ९१३॥

शीत काल मे १० प्रकार से मेघ गर्भ धारण होने के लक्षण पहिले 'आन्तरिक्ष प्रकरण' में कहे हैं परन्तु चैत्र सुदि में वर्षा हो जावे तो वे गर्भ फिर नहीं वर्षें।

मधुमासे कृष्णपक्षे तिथिर्वृद्धिर्यदा भवेत्।
शुक्लपक्षस्य हानिः स्यादन्नहीना तदा मही॥ ९१४॥

चैत्र में तिथि वदि में तो बढ़े और सुदि में टूटे तो दुर्भिक्ष किन्तु सुदि में बधे और वदि में घटे तो सुभिक्ष होवे।

अश्विन्यादि १० नक्षत्र योग।

अश्विन्यादिषु धिष्ण्येषु चैत्रे दशसु चेद्भवेत्।
अभ्रादिकस्तदा गर्भ आर्द्रादौ वृष्टिदः क्रमात्॥ ९१५॥

चैत्र सुदि मे अश्विनी से मघा तक १० नक्षत्रों में बादल आदि से गर्भ हो तो सूर्य के आर्द्रा से स्वाति तक (अश्विनी से आर्द्रा, भरणी से पुनर्वसु,-इस क्रम से) वर्षा होवे।

रोहिणी नक्षत्र योग।

वामाङ्गा स्यात्सुभिक्षाय दुर्भिक्षाय च पृष्ठगा।
दक्षिणी रोगिणी प्रोक्ता रोहिणी भयदा ऽग्रजा॥ ९१६॥

चैत्र सुदि ४ वा ५ को रात्रि में चन्द्रमा से रोहिणी दक्षिण में हो तो सुभिक्ष, पूर्व में हो तो मध्यम, उत्तर में हो तो रोग वा दुर्भिक्ष और पश्चिम में हो तो भय होवे।

रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य और चित्रा नक्षत्र योग।

आषाढं रोहिणी हन्ति चार्द्रा वै श्रावणं तथा।
पुष्यो भाद्रपदं चैव चित्रा चाश्विनमेव च ॥ ९१७ ॥

चैत्र सुदि में वर्षा रोहिणी में हो तो आषाढ़, आर्द्रा में हो तो श्रावण, पुष्य में हो तो भाद्रवे और चित्रा में हो तो आश्विन में वर्षनेवाले गर्भ गल जाने से इन में वर्षा नहीं होवे।

मूलादि ११ नक्षत्र योग।

मूलमादौ भरण्यन्तं चैत्रे कृष्णे निरीक्षयेत्।
यावद्दक्षिणको वायुस्तावद् वृष्टिप्रदायकः ॥ ९१८ ॥
साभ्रे च हन्यते वृष्टिर्निरभ्रे वृष्टिरुत्तमा।
सजला निर्जला प्रोक्ता निर्जला सजला भवेत् ॥ ९१९ ॥

चैत्र वदि में मूल से भरणी तक बादल वा वर्षा हो तो अनावृष्टि और निर्मल आकाश वा दक्षिण का वायु हो तो वृष्टि सूर्य के आर्द्रा से विशाखा नक्षत्र तक (मूल से आर्द्रा, पूर्वाषाढा से पुनर्वसु,-इस क्रम से) होवे।

आर्द्रादि १० नक्षत्र योग।

चैत्रे शुक्ले यदाऽऽर्द्रादि स्वात्यन्तेषु च साभ्रता।
जलप्रवाहवृष्टिर्नो तदा संवत्सरः शुभः ॥ ९२० ॥

चैत्र सुदि में आर्द्रा से स्वाति तक १० दिनों में बादल वा छींटेता हो किन्तु पानी बह निकले उतनी वर्षा न हो तो संवत् अच्छा होवे।

चैत्र वदि २ योग।

चैत्रासिते द्वितीयायां सर्वदिग्भ्रामको ऽनिलः।
विना मेघं तदा भाद्रपदे वृष्टिस्तु भूयसी ॥ ९२१ ॥

चैत्र वदि २ को वायु चारो ही दिशाओं का हो किन्तु बादल न हो तो भाद्रवे में बहुत वर्षा होवे।

चैत्रे कृष्णे द्वितीयायां निरभ्रं चेन्नभो भवेत्।
तदा भाद्रपदे मासे ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥ ९२२ ॥

चैत्रे कृष्णे द्वितीयायां मेघो वै प्रवलो यदा।
जलं पतति चैत्रे च तदा वृष्टिस्तु कार्त्तिके ॥ ९२३ ॥

चैत्र में वर्षा वा वदि २ को बादल अधिक हों तो कार्त्तिक में और न हों तो भाद्रवे में अच्छी वर्षा होवे।

चैत्र वदि ३ योग।

पूर्वस्या उत्तरस्याश्च वायुश्चैत्रे सिते तरे।
तृतीयायां तदा लोके सुभिक्षं प्रचुरं जलम् ॥ ९२४ ॥

चैत्र वदि ३ को वायु पूर्व वा उत्तर का हो तो वर्षा काल में बहुत वर्षा और सुभिक्ष होवे।

चैत्र वदि ४ योग।

चतुर्थ्यां कृष्णपक्षस्य वर्षा दुर्भिक्षकारिणी ॥ ९२५ ॥

चैत्र वदि ४ को वर्षा हो तो दुर्भिक्ष होवे।

चैत्र वदि ५ योग।

चैत्रस्य कृष्णपञ्चम्यां हस्तनक्षत्रसङ्गमे।
न विद्युद्गर्जनाभ्राणि तदा स्याद्वत्सरः शुभः ॥ ९२६ ॥
पञ्चम्यामसिते चैत्रे नृणां न दुर्दिनं शुभम् ॥ ९२७ ॥

चैत्र वदि ५ को हस्त नक्षत्र तथा बादल, बिजली, गाज वा धुंन्ध आदि न हो तो संवत् अच्छा होवे।

चैत्र वदि १३ योग।

चैत्रे शनौ त्रयोदश्यां यदि मीनार्कसङ्क्रमः।
वत्सरः स्यात्तदा निन्द्यः सद्यो धान्यार्घनाशनः ॥ ९२८ ॥

चैत्र वदि १३ को शनिवार हो और मीन संक्रान्ति लगे तो संवत् अच्छा नहीं होवे और धान्य भी तत्काल महंगा हो जावे।

चैत्र वदि ३० योग।

चैत्र अमावश जे घड़ी वर्त्तो पन्ना मांय।
तेती पायली भड्डली कार्त्तिक माम विकाय ॥ १२९ ॥

चैत्र वदि ३० जितनी घड़ी हो उतनी पायली धान्य कार्त्तिक में विके।

चैत्र सुदि १ योग।

चैत्रे शुक्ले प्रतिपदि रवौ वायुर्विशेषतः।
अल्पवर्षा फलं तुच्छमल्पं धान्यं प्रजायते ॥ १३० ॥
चन्द्रे वहु जलं धान्यं तृणानञ्च वहूदयः।
ईतयो सप्तधा भौमे तीडोंदुरपराभवः ॥ १३१ ॥
बुधे च मध्यमं वर्षं सुभिक्षं तु गुरौ भृगौ।
शनौ धान्यरसतृणजलशोषः प्रजायते ॥ १३२ ॥

चैत्र सुदि १ को वार रवि हो तो वायु का ज़ोर, वर्षा तथा फल, फूल, धान्य आदि अल्प; सोम हो तो वर्षा, तृण, धान्य आदि अधिक; मंगल हो तो अति वृष्टि, अनावृष्टि, चूहे, टिड्डी आदि का उपद्रव; बुध हो तो संवत् मध्यम; गुरु वा शुक्र हो तो सुभिक्ष; और शनि हो तो वर्षा, घास, धान्य, रस आदि का नाश होवे।

चैत्र शुक्ले प्रतिपदि रेवत्यां बहुलं जलम् ॥ १३३ ॥

चैत्र सुदि १ को रेवती हो तो वर्षा बहुत होवे। किन्तु घटी अधिक हों तो अधिक और कम हो तो कम फल जाने।

चैत्राद्यप्रतिपन्मेघो गर्जितं वर्षणं तथा।
श्रावणे भाद्रमासे च तदा वृष्टिर्न जायते ॥ १३४ ॥

चैत्र सुदि १ को विजली, गाज वा वर्षा हो तो श्रावण और भाद्रवे में वर्षा नहीं होवे। सं० १९५६ मे इसका अनुभव हो चुका है।

चैत्र सुदि ५ योग।

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां रोहिणी यदि संयुता।
साभ्रं नभस्तदा वाच्या गर्भस्य परिपूर्णता ॥ ९३५ ॥

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यामार्द्रायोगे यथोचितः।
त्रिमास्यां धान्यसङ्क्षेय श्रावणे जलदोदयः ॥ ९३६ ॥

चैत्र सुदि ५ को रोहिणी हो और बादल भी हों तो मेघ गर्भ परिपूर्ण, और आर्द्रा हो तो ३ महीनों तक धान्य का नाश किन्तु श्रावण में वर्षा होवे।

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यामभ्राच्छन्नं यदा नभः।
उदयास्तमनं यावज्ज्ञात्वा चैव प्रयत्नतः ॥ ९३७ ॥

गोधूमान्सङ्ग्रहेत्प्राज्ञः प्रवरांश्च न संशयः।
श्रावणे तु महर्घाणि मूल्येन द्विगुणेन च ॥ ९३८ ॥

चैत्र सुदि ५ को सम्पूर्ण दिन आकाश बादलों से ढँका हो, बहुत वायु चले वा इन्द्र धनुष् हो तो गेहूं ख़रीद के श्रावण सुदि ५ से भाद्रवे सुदि ५ तक बेचने से बहुत लाभ होवे क्योंकि इन दिनो मे वर्षा की खेंच हो जाती है।

चैत्रस्य शुक्लपञ्चम्यां वायुर्दक्षिणपूर्वयोः।
वृष्ट्या सह तदा वर्षे धान्यं त्रिगुणमूल्यता ॥ ९३९ ॥

चैत्र सुदि ५ को वायु पूर्व वा दक्षिण का तथा वर्षा भी हो तो उस वर्ष में धान्य बहुत महंगा होवे।

चैत्र सुदि ७ योग।

मधुमासस्य सप्तम्यां शुक्लायां यदि वर्षति।
वर्षाकाले तदा मेघा न वर्षन्ति जलं बहु: ॥ ९४० ॥

चैत्र सुदि ७ को वर्षा हो तो आगे वर्षा कम होवे, इस से गेहूं ख़रीद के श्रावण मे बेचने से बहुत लाभ होवे।

चैत्र सुदि १० योग।

चैत्रे दशम्यां शनिना युक्ता वारेण चेन्मघा।
तदा धान्यं समर्घं स्याज्जाते मेघमहोदये ॥ ९४१ ॥

चैत्र सुदि १० को शनि वार और मघा नक्षत्र हो तो वर्षा अधिक तथा सम्पूर्ण वर्ष में धान्य मन्दा होवे।

चैत्र सुदि १३ योग।

चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु त्रयोदश्यां तथैव च।
धूमिका जायते तेषां देवस्तत्र न वर्षति ॥ ९४२ ॥

चैत्र सुदि १३ को धूहर पड़े तो आगे वर्षा नहीं होवे।

चैत्र सुदि १५ योग।

चैत्र पूर्णिमा होय जो सोम बुध गुरु वार।
घर घर होय वधावणा घर घर मंगलाचार ॥ ९४३ ॥

चैत्री पूनम चित्त कर जोषी रूड़ां जोय।
शनि आदित्यां मंगलां करसण करे न कोय ॥ ९४४ ॥

चैत्र सुदि १५ को वार सौम्य हो तो श्रेष्ठ और क्रूर हो तो नेष्ट संवत् होवे।

चैत्री पूनम चित्रा से चले दाहिना चन्द।
सर्व धान्य संचय करो होगा काल दुखण्ड ॥ ९४५ ॥

चैत्र सुदि १५ को मध्य रात्रि के समय चन्द्रमा चित्रा से उत्तर में निकले तो दुर्भिक्ष पड़े, अतः सर्व धान्य ख़रीदने से लाभ होवे।

चैत्र वदि २।३।४।५ योग।

चैत्रे कृष्णे द्वितीयादिपञ्चके जलवर्षणम्।
अग्रे जलदरोधाय कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ ९४६ ॥

चैत्र वदि २ से ५ तक वर्षा हो तो आगे वर्षा की खैंच होवे।

चैत्र वदि वा सुदि २ । ३ । ४ । ५ योग ।

चैत्रे द्वितीयादिचतुर्दिनेषु कृष्णेऽथे पक्षे यदि पूर्ववातः ।
वर्षायुतो नैव शुभः सिते तु पूर्वोत्तरा वायुरतीव शिष्टः ॥९४७॥

चैत्र में २ से ५ तक वदि में तो वर्षा और वायु पूर्व का हो तो अनावृष्टि कारक, किन्तु सुदि में पूर्व वा उत्तर का हो तो सुवृष्टि कारक जाने ।

चैत्र वदि ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२ । १३ योग ।

चैत्रस्य कृष्णापञ्चमीमारभ्य दिवसा नव ।
खनैर्मल्यं तदाऽऽर्द्रादिनवके विपुलं जलम् ॥ ९४८ ॥

चैत्र वदि ५ से १३ तक के ९ दिनों में आकाश निर्मल हो तो सूर्य के आर्द्रा से चित्रा तक के ९ नक्षत्रों में (अर्थात् ५ से आर्द्रा में, ६ से पुनर्वसु में–इस क्रम से) बहुत वर्षा होवे ।

चैत्र वदि ५ । ९ । १३ योग ।

त्रयोदशी च नवमी पञ्चमी कृष्णचैत्रगाः ।
एतास्तु वृष्टितो गर्भसम्भवो वृष्टिहानिकृत् ॥ ९४९ ॥

चैत्र वदि ५ । ९ वा १३ को वर्षा हो तो गर्भों से होने वाली वर्षा की हानि होवे ।

चैत्र वदि ८ । १४ योग ।

चैत्रे मासे कृष्णपक्षे चतुर्दशी तथाऽष्टमी
तत्राभ्रमुत्तरो वायुः शुभाय वत्सरे भवेत् ॥ ९५० ॥

जिस दिश बादल उस दिश मेह । जिस दिश आंधी उस दिश खेह ।
गाज बीज धरणी गरड़ावे । जोषी समय बुरा बतलावे ॥ ९५१ ॥

चैत्र वदि ८ और १४ को गाजे वा बिजली चमके तो संवत् बुरा, किन्तु बादल तथा उत्तर का वायु हो तो अच्छा होवे । उस में भी जिस दिशा में बादल हो उसी दिशा में वर्षा होवे और जिस दिशा में आंधी हो उस दिशा में अनावृष्टि होवे ।

चैत्र सुदि १ । २ । ३ । ४ योग ।

प्रतिपच्चैत्रशुक्लाया द्वितीया च तृतीयका ।
चतुर्थी वृष्टियुक्ता चेच्चातुर्मास्यं तदा घनः ॥ ९५२ ॥

चैत्र सुदि १ । २ । ३ और ४ इन चारों दिनों में वर्षा हो हो तो वर्षा काल के चारों ही महीनों में वर्षा होवे ।

चैत्र सुदि १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ (नव रात्रि) योग ।

चैत्र मास उजियाले पाख । आठों दिवस वर्षते राख ।
नवमें दिवस निरति करि जोय । जहं बीजल तहं दुर्भिक्ष होय ९५३

चैत्र सुदि १ से ८ तक वर्षा हो और ९ को बिजली चमके तो दुर्भिक्ष पड़े ।

नव दिन कहिये नव रता शुक्ल चैत्र के मास ।
जल वूठे बिजली हुये जानो गर्भ विनास ॥ ९५४ ॥

चैत्र सुदि १ से ९ तक नव रात्रि के ९ दिनों में बिजली चमके वा वर्षा हो तो गर्भों का नाश होने से आगे अल्प वृष्टि होवे ।

चैत्र सुदि १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० योग ।

चैत्रस्यादौ दिवसदशकं कल्पयित्वा क्रमेण
स्वात्यन्त्यार्द्रा प्रभृतिमुनिभिर्वृष्टिहेतौ विचिन्त्यम् ।
यावत्सङ्ख्ये भवति हि दिने दुर्दिनं वा ऽथ वृष्टि-
स्तावत्सङ्ख्यं भवति नियतं वार्षिकं दग्धमृक्षम् ॥ ९५५ ॥

चैत्र सुदि १ से १० तक के १० दिनों से सूर्य के आर्द्रा से स्वाति तक के १० नक्षत्रों की वर्षा जाने । इन में जिस दिन वर्षा वा धुन्ध आदि से दुर्दिन हो उस दिन के नक्षत्र में (१ से आर्द्रा में, २ से पुनर्वसु में,-इस क्रम से) वर्षा नहीं होवे ।

चैत्र सुदि २ । ३ । ४ । ५ योग ।

चत्वारो दिवसाश्चैत्रे शुक्ल पक्षे सुराधिप ।
द्वितीयायां तृतीयायां चतुर्थ्यां पञ्चमीषु च ॥ ९५६ ॥

चैत्र सुदि २ । ३ । ४ और ५-ये चार दिन वायु धारणा के हैं। इन्हें आगे लिखे अनुसार भले प्रकार से देखे।

प्रथमे दिवसे प्राप्ते मेघो भवति वर्षति ।
यदि स्यात् श्रावणे मासे तदा वर्षति माधवः ॥ ९५७ ॥

द्वितीये दिवसे प्राप्ते यदा वातश्च पूर्वतः ।
न च मेघाश्च दृश्यन्ते वृष्टिर्भाद्रपदे भवेत् ॥ ९५८ ॥

तृतीये दिवसे प्राप्ते वातश्चेद्दक्षिणो भवेत् ।
अभ्राणि पूर्वतो यान्ति वृष्टिश्चाश्वयुजे भवेत् ॥ ९५९ ॥

चतुर्थे दिवसे यत्र चोत्तरो वाति मारुतः ।
मेघो न दृश्यते तत्र कार्त्तिके वृष्टिमादिशेत् ॥ ९६० ॥

चतुर्थे दिवसे प्राप्ते मेघो जालं करोति चेत् ।
दुर्भिक्षं जायते घोरमनावृष्ट्या न संशयः ॥ ९६१ ॥

चैत्र सुदि २ को बादल वा वर्षा हो तो श्रावण में, ३ को पूर्व का वायु हो और बादल न हो तो भाद्रवे में, ४ को वायु दक्षिण का हो और बादल पूर्व से आवें तो आश्विन में, और ५ को वायु उत्तर का हो और बादल न हो तो कार्त्तिक में वर्षा होवे किन्तु इस दिन में बादल विजली आदि हो तो अनावृष्टि से बड़ा भयानक दुर्भिक्ष पडे।

चैत्र सुदि ३ । ५ योग ।

तृतीयायां च पञ्चम्यां वायुः पूर्वोत्तरो यदि ।
सर्वशस्यानि जायन्ते प्रजाः कृतयुगोपमाः ॥ ९६२ ॥

दिनद्वयं यदा वाति वायुर्दक्षिणपश्चिमे ।
तदा न दृश्यते धान्यो दुर्भिक्षं चात्र जायते ॥ ९६३ ॥

चैत्र सुदि ३ और ५ को वायु ईशान का हो तो सम्पूर्ण प्रकार के धान्य होवे जिस से प्रजा में सत युग समान आनन्द

वर्त्ते, किन्तु नैर्ऋत्य का हो तो धान्य उत्पन्न नहीं होवे जिस से बड़ा भारी दुर्भिक्ष होवे।

चैत्र सुदि ५ । ७ । १३ योग ।

पञ्चमी सप्तमी शुक्ला चैत्रे वा च त्रयोदशी ।
एतासु वार्दलं श्रेष्ठं तत्र वर्षा तु दुःखकृत् ॥ ९६४ ॥

चैत्र सुदि ५ । ७ वा १३ को बादल हो तो श्रेष्ठ किन्तु वर्षा भी हो जावे तो नेष्ट संवत् होवे।

चैत्र सुदि ५ । ७ । ९ । १५ योग ।

पञ्चमी रोहिणीयुक्ता सप्तमी रौद्रसंयुता ।
नवमी पुष्यसंयुक्ता स्वातियुक्ता च पूर्णिमा ॥ ९६५ ॥
भवत्यत्र महावृष्टिः सदा प्रावृष्यवर्षणम् ।
एभिश्च गलितैर्ऋक्षैर्गर्भस्राव समादिशेत् ॥ ९६६ ॥

चैत्र सुदि ५ को रोहिणी, ७ को आर्द्रा, ९ को पुष्य और १५ को स्वाति हो तो आगे वर्षा काल के चारो महिनों में बहुत वर्षा होवे; किन्तु इन दिनोंमें विजली चमके, गाजे वा वर्षा हो तो शीत काल में धारण हुये२ गर्भों का स्राव हो जाने से अनावृष्टि होवे।

चैत्र सुदि ५ । ८ । ९ । १५ योग ।

चैत्र मासे सिते पक्षे गर्भस्य क्षयकारकः ।
श्रावणे पञ्चमी हन्याद् भाद्रपद्रे सिता ऽष्टमी ॥ ९६७ ॥
आश्विने नवमी हन्यात् पूर्णमासी च कार्त्तिके ।
न भवेचेद् यदा वृष्टिस्तदा वृष्टिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ ९६८ ॥

चैत्र सुदि में वर्षा ५ को हो तो श्रावण में, ८ को हो तो भाद्रवे मे, ९ को हो तो आश्विन में और १५ को हो तो कार्त्तिक में अनावृष्टि होवे; किन्तु इन दिनों में वर्षा नहीं हो तो उक्त महीनों में वर्षा होवे।

चैत्र सुदि ५ । ७ । ९ । ११ । १३ । १५ योग ।

पञ्चमी सप्तमी चैत्रे नवम्येकादशी सिता ।
त्रयोदशी पूर्णिमा च दिनेष्वेतेषु वर्षणात् ॥ १६९ ॥
करकापातनाद्विद्युद्दर्शनाद्गजर्नादपि ।
वर्षाकाले जलधरो छिद्रादेव प्रवर्षति ॥ १७० ॥

चैत्र सुदि ५ । ७ । ९ । ११ । १३ वा १५ को वर्षा हो, ओले पड़े, बिजली चमके वा गाजे तो वर्षा काल में वर्षा कम होवे ॥

——×——

वैशाख मास प्रकरण ।

खं पञ्चवर्णं वैशाखे विद्युत्पाते खटत्कृतिः ।
तदातिवर्षा नभसि धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा ॥ १७१ ॥

वैशाख में पांच वर्ण के बादल, बिजली वा गाज बहुत हों तो भाद्रवे में वर्षा तथा धान्य की उत्पत्ति अधिक होवे।

पञ्चार्कयोगे वैशाखे वृष्टिगर्भविनाशिनी ।
पञ्चभौमे भयं वह्निर्वृष्टि रोधाय कुत्र चित् ॥ १७२ ॥

वैशाख में ५ वार रवि के हों तो वर्षा का अवरोध और मंगल के हों तो अल्प वृष्टि तथा अग्नि का उपद्रव होवे।

रोहिणी नक्षत्र योग ।

वैशाखे शुक्लपक्षे च रोहिणीचन्द्रमा भवेत् ।
तदा चन्द्रं विलोक्यं तु रोहिणीं च विलोकयेत् ॥ १७३ ॥
रोहिणीशकटे मध्ये तथा वामे च चन्द्रमाः ।
दुर्भिक्षं च दलं घोरं महाकान्तारं तथा भवेत् ॥ १७४ ॥
रोहिण्या उत्तरे पार्श्वे चन्द्रो ऽयं भवते यदा ।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं माङ्गल्यं धान्यविस्तरम् ॥ १७५ ॥

वैशाख सुदि में रोहिणी हो उस दिन (सूर्यास्त के पीछे पश्चिम में) चन्द्रमा रोहिणी के ५ तारों के (जो गाड़ी के आकार हैं) बीच वा दक्षिण में हो तो बड़ा भयानक दुर्भिक्ष, किन्तु उत्तर में हो तो सुभिक्ष, क्षेम तथा धान्य की उत्पत्ति बहुत होवे।

वैशाख वदि १ योग।

वैशाखे कृष्णप्रतिपत्तिथिर्हीने समे ऽधिके।
नक्षत्रे ऽल्पजलं भूमौ सुखं बहु जलं क्रमात् ॥ ९७६ ॥

वैशाख वादि १ की घड़ियें उस दिन के नक्षत्र की घड़ियों से कम हो तो वर्षा अल्प. अधिक हों तो बहुत और समान हों तो लोको मे सुख होवे।

वैशाखे कृष्णप्रातिपद्युद्रच्छेन्नभ पास्करः।
मेघैराच्छाद्यते व्योम्न संवत्सरहिताय सः ॥ ९७७ ॥

वैशाख वदि १ को प्रातः काल आकाश बादलों से ढंका रहे जिस से उदय होता हुआ सूर्य नहीं दीखे तो संवत् अच्छा होवे।

वैशाख वदि १ । ९ योग।

वैशाखां वदि प्रतिपदा नवमी निरती जोय।
जो घन दीखे उनमना वर्षं सगला लोय ॥ ९७८ ॥

वैशाख वदि १। ९ को शिखर दार बादल बहुत हों तो वर्षा काल में अच्छी वर्षा होवे।

वैशाख वदि ११ योग।

वैशाखे कृष्णैकादश्यां मेघो वैं प्रबलो भवेत्।
तदा धान्यानां विक्रयः कर्तव्यः कृषिकर्मणि ॥ ९७९ ॥

वैशाख वदि ११ को बादल अधिक हों तो संवत् अच्छी होवे, अतः धान्य बेच के खेती के लिये यत्न करे।

वैशाख वदि १४ योग।

वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारौ चेद्गुरुभार्गवौ।
तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथिवीतले ॥ ९८० ॥

वैशाख वदि १४ को वार गुरु वा शुक्र हो तो धान्य बहुत उत्पन्न होवे।

वैशाख वदि ३० योग।

अमावस्यां च वैशाखे रेवत्यां च सुभिक्षता।
रोहिणी लोकदुःखाय मध्यमा चाश्विनी स्मृता ॥ ९८१ ॥
भरण्यां व्याधितो लोकः कृत्तिकायां जले ऽल्पता।
चौरा लुठन्ति मार्गेषु राज्ञां युद्धं परस्परम् ॥ ९८२ ॥
वैशाख वदि अमावस्या रेवती होय सुकाल।
मध्यम होवे अश्विनी भरणी करे दुकाल ॥ ९८३ ॥

वैशाख वदि ३० को रेवती हो तो सुभिक्ष, अश्विनी हो तो मध्यम संवत्, भरणी हो तो दुर्भिक्ष तथा रोग का उपद्रव, कृत्तिका हो तो अल्प वर्षा और मार्ग में चौरों का भय तथा राजाओं में युद्ध और रोहणी हो तो लोगों को अनेक प्रकार का दुःख होवे।

वैशाख सुदि १ योग।

वैशाखे शुक्लप्रतिपद्भरण्यां तृणसम्भवः ॥ ९८४ ॥

वैशाख सुदि १ को भरणी हो तो घास अधिक होवे।

वैशाख सुदि २ योग।

आखा तीज दूज की रैन। जाय अचानक जाचे सैन॥ ९८५ ॥
कछुक चीज मांगी नट जाय। तो जानीजे काल सुभाय।
हँस कर देय नटे नाहिं कोय। माघा सही ज़माना होय॥ ९८६ ॥
शुभ वाणी से शुभ हुवे अशुभ दुःख की खानि।
मीठी वाणी शुभ करे कडुवी से कुछ हानि ॥ ९८७ ॥

वैशाख सुदि २ की रात्रि में किसी मित्र के घर जा के कोई वस्तु मांगे। यदि वह वस्तु प्रसन्न हो के दे दे तो सुभिक्ष, किन्तु इनकार कर दे तो दुर्भिक्ष होवे। तथा वह जो शब्द बोले वह शुभ हो तो शुभ और अशुभ हो तो अशुभ फल जाने।

आखा तीज दूज की रात । बैठ अपर्चन सुनिये वात ।
दम्पति गोष्ठि पुरुष कोई करे । ता की सुन सब हृदय धरे ॥९८८॥
राड़े राड़ दुःखी दुःख जानि । सम्पत्ति सम्पत्ति विपत्ति कुछ हानि।
इस विधि शकुन वर्ष प्रति लेइ । पैज बांध आगम कह देइ ॥९८९॥

वर्ष का भावी फल जानने के लिये वैशाख सुदि २ की रात्रि में कहीं एकान्त में बैठे हुये स्त्री पुरुषों (पति पत्नी) की सब बात उन के निकट कहीं छिप के सुने। वे जैसी शुभाशुभ हों वैसा शुभाशुभ फल जगत् में निश्चय होवे।

वैशाख सुदि १ । २ योग ।

वैशाखशुक्ले प्रतिपद् द्वितीया दिनद्वयं वार्दलकं शुभाय ॥ ९९० ॥

वैशाख सुदि १ । २ को वादल हो तो आगे वर्षा श्रेष्ठ होवे।

वैखाख सुदि ३ (अक्षय तृतीया) योग।

(गुरु वार तथा कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिर नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान ।)

अक्षयाख्यतृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी ।
कृत्तिका मध्यमं वर्षं दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥ ९९१ ॥

वैशाख सुदि ३ को कृत्तिका हो तो मध्यम संवत्, रोहिणी हो तो सुभिक्ष और मृगशिर हो तो दुर्भिक्ष होवे।

वैशाखे शुक्लतृतीया रोहिणी सकला यदि ।
सुभिक्षं सर्वधान्यानां रसानां च विशेषतः ॥ ९९२ ॥

वैशाख सुदि ३ को रोहिणी सम्पूर्ण घड़ि हो तो धान्य तथा रस वहुत सस्ते होवें।

तृतीयायामक्षयायां रोहिणी गुरुणा सह ।
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्भुवि मङ्गलकर्म च ॥ ९९३ ॥

वैखाख सुदि ३ को गुरु वार और रोहिणी हो तो धान्यों की उत्पत्ति तथा विवाह आदि मंगलीक उत्सव अधिक होवें।

(चन्द्रमा तथा मृगशिर के तारों के आगे पीछे अस्त होने से वर्षा का ज्ञान)

चन्द्र छोड़े हिरणी । (तो) लोक छोड़े परणी ॥ ९९४ ॥

वैशाख सुदि ३ को सन्ध्या के पीछे मृगशिर के तीनों तारे अस्त चन्द्रमा स पीछे हों तो दुर्भिक्ष, किन्तु पहले ही हो जावें तो सुभिक्ष, और साथ ही हों तो मध्यम संवत् होवे।

(सूर्य तथा चन्द्रमा के अस्त स्थान से वर्षा का ज्ञान।)

आखा तीजां सांझ को जो चन्दा अरु भानु ॥ ९९५ ॥
बायां चन्दा वित्त हरे दाहिना अति हि सुकाल।
सामा सामा संचरे (तो) पड़े अचिन्ता काल ॥ ९९६ ॥

वैशाख सुदि ३ को सन्ध्या को चन्द्रमा अस्त सूर्य से दक्षिण में हो तो पशुओं की हानि और दुर्भिक्ष, किन्तु उत्तर में हो तो सुभिक्ष, और सूर्य के ही स्थान पर हो तो धान्य बहुत महंगा होवे।

(वायु की दिशा द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आखां तीजां पूरब वाजे। तो अश्लेषा गहरी गाजे।
भीजे राजा राणी भूले। रोग दोष में प्रजा झूले ॥ ९९७ ॥

वैशाख सुदि ३ को पूर्व का वायु हो तो सूर्य के अश्लेषा नक्षत्र में बहुत वर्षा और ज्वरादि रोगों का उपद्रव होवे।

राधे शुक्ले तृतीयायां चिह्नैर्निश्चीयतेऽनिलः।
पूर्वस्या यदि वोदीच्या घनाद्घनस्तदा घनः ॥ ९९८ ॥
दक्षिणौ नैर्ऋतो वायुर्दृष्टिः स्यात्प्रतिघातिका।
वारुणाद् वृष्टिरधिका परधान्यस्य रोधनम् ॥ ९९९ ॥

वैशाख सुदि ३ को प्रातःकाल ४ घड़ी दिन चढे तक वायु पूर्व, ईशान वा उत्तर का हो तो सुवृष्टि तथा सुभिक्ष; वायव्य का हो तो धान्य की उत्पत्ति, किन्तु टिड्डी आदि का उपद्रव; पश्चिम का हो तो वर्षा अधिक तथा जगत् में सुख; नैर्ऋत्य, दक्षिण वा अग्नि का हो तो अल्प वर्षा तथा दुर्भिक्ष; और जो चारों ही ओर का हो तो विग्रह होवे।

आखा तीज तणे दिने जो महर चोथलो विचार।
घड़ी वे पूर्व वायसे जी आषाढ़े मेह नो निर्धार ॥ १००० ॥

घड़ी वे उत्तर वायसे जी श्रावणे मेह नो गाज।
घड़ी वे पश्चिम नो होवे जी (तो) भाद्रवे मेह नो वास॥१००१॥
घड़ी वे दक्षिण वायसे जी तो सही निर्धार।
आसोजे वर्षा होवे जी एतो पाछलो प्रहर विचार॥१००२॥

वैशाख सुदि ३ को दिन के पिछले प्रहर की ८ घड़ियों मे वायु प्रथम की २ घड़ी में पूर्व का हो तो आषाढ़, दूसरी २ में उत्तर का हो तो श्रावण, तीसरी २ में पश्चिम का हो तो भाद्रवे और चौथी २ में दक्षिण का हो तो आश्विन में वर्षा होवे।

(आँधी द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आखा तीजां पीठ दे वावळ आवे मोड़ी।
जो जलदी दिन पांच सात (तो) साख नीपजे थोड़ी॥१००३
आखा तीजां मास एक वावळ आवे काळी।
भर भाद्रवे गाजसी मेघ घटा मत वाली॥ १००४॥

वैशाख सुदि ३ के पीछे आँधी शीघ्र (५ वा ७ दिनों में) हीं आ जावे तो खेतियों की उत्पत्ति कम, किन्तु विलम्ब से आवे तो अधिक, और जो एक महीने पीछे आवे तो भाद्रवे में अधिक वर्षा होवे।

(कच्ची मिट्टी की ४ कुल्हड़ियों के शकुन से वर्षा का ज्ञान।)

प्रातः काल में कुम्भ कार से कच्ची मिट्टी की ताज़ा ४ कुल्हड़ियें बनवा के उन को आषाढ़ादि मास की वृष्टि के लिये पूर्वादि क्रम से रख के उन में पानी भर दे। इन में जिस२ महीने के नाम की कुलहड़ी शीघ्र फूट जावे उस २ महीने में वर्षा अच्छी, कुछ देर से फूटे उस २ में मध्यम और बहुत देर तक नहीं फुटे उस २ में अनावृष्टि होवे।

(कौवे के ५ पिण्डों के शकुन से वर्षा का ज्ञान।)

वैशाख सुदि ३ को प्रातः काल ग्राम से बाहर एकान्त में किसी वड़ आदि वृक्ष के नीचे भूमि शुद्ध कर के पकाये हुये चावलों में दही तथा घी मिला के ५ पिण्ड बना के १ ला पूर्व, २

रा दक्षिण, ३ रा पश्चिम, ४ था उत्तर और ५ वा मध्यमें रख के उन पर कुछ दही और भी रख के 'भौम निमित्त' के 'पक्षी प्रकरण' में कहे काक पिण्ड विधान के अनुसार पूजा मन्त्र जाप आदि कर के एकान्त में खड़ा हो के देखे। कौवा पहिले भक्षण जिस दिशा का पिण्ड करे उस दिशा में-वा मध्य का करे तो सम्पूर्ण दिशाओं में-सुभिक्ष होवे। कौवा जिस दिशा से आवे तथा भक्षण करके जावे उस २ दिशा में दुर्भिक्ष तथा धान्यादि महंगा होवे। भक्षण करते हुये कौवे के पास से दूसरा कौवा छीन ले तो राज्य का भय होवे और कोई भी पिण्ड भक्षण करे ही नहीं तो महा मारी आदि का भय होवे।

(सूर्य के रंग से वर्षा का ज्ञान)

अक्षयायां तृतीयायां पूरयेद्भाण्डमम्बुना।
रविं विलोकयेन्मध्ये तत्स्वरूपं विमृश्यते ॥ १००५ ॥
रक्ते सूर्ये विग्रहः स्यान्नीले पीले महारुजः।
श्वेते सुभिक्षं जायते धूसरे दुःखमूषकाः ॥ १००६ ॥

वैशाख सुदि ३ को मध्याह्न में पानी से पूर्ण भरे वर्त्तन में सूर्य को देखे। जिस ओर सूर्य लाल हो उस दिशा में युद्ध विग्रह, नीला वा पीला हो तो रोगों का भय, धुंधला हो तो चूहे टिड्डी आदि का उपद्रव, किन्तु श्वत हो तो सुभिक्ष होवे।

(धान्य की ७ढेरियों के शकुन द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

अक्षयायां तृतीयायां सन्ध्यायां सप्तधान्यकम्।
पुञ्जी कृत्यं स्थापनीयं पृथक् पृथक् तरोरधः ॥ १००७॥
यद्विस्तृतं स्यात्तद्धान्यं तद्वर्षे वहु जायते।
यत्पुञ्जरूपं वा तिष्ठेन्नैव निष्पद्यते पुनः ॥ १००८ ॥

वैशाख सुदि ३ को सन्ध्या को कहीं एकान्त में किसी वृक्ष के नीचे ७ धान्यों की ७ ढेरियें जुदी२ कर दे. फिर दूसरे दिन प्रभात में जा के देखे। जिस धान्य की ढेरी फैल जावे वह धान्य तो उस वर्ष में उत्पन्न होवे, परन्तु फैले नहीं किन्तु वैसी की वैसी ही वनी रहे वह उत्पन्न नहीं होवे।

(मिट्टी के ढेलों से वर्षा का ज्ञान।)

पूर्णे कुम्भे ऽथ वा स्थाप्ये मृत्पिण्डानां चतुष्टये।
आषाढादिचतुर्मास्या पृथङ् नाम्ना प्रतिष्टिते॥ १००९॥
कुम्भाद्रजजलनार्द्रा यावतः पिण्डका मृदः।
वृष्टिस्तावत्तु मासेषु शुष्के पिण्डे न वर्षणम्॥ १०१०॥

वैशाख सुदि ३ को सन्ध्या को कच्ची मिट्टी के ४ ढेले पूर्वादि ४ रों दिशाओं में आषाढ़ आदि ४ रों महीनों की वर्षा जानने के लिये रख के उन पर जल से भरा हुआ एक घड़ा रख दे, फिर दूसरे दिन प्रातः काल देखे। घड़े में से पानी झर के जिस २ मास का ढेला भीगे उस२ मास में वर्षा, किन्तु जिस २ का नहीं भीगे उस २ में अनावृष्टि होवे।

(स्याल शकुन द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

पहिले प्रहरे रैन के जम्बुक नाद करे।
पहिले मास जो वर्षना नाडों नीर भरे॥ १०११॥
दूजे प्रहरे लागते जम्बुक बोले ज़ोर।
श्रावण में वर्षा बहुत मंगल गावें मोर॥ १०१२॥
तीजे प्रहरे रैन के स्याला राग करन्त।
भाद्रवड़े सर वर भरे प्रजा भोग भरन्त॥ १०१३॥
चौथे प्रहरे रैन के स्याली बोले वन्न।
खड पानी जहं तहं हुवे रंग रूली बहु अन्न॥ १०१४॥
प्रहर प्रहर मास जु जानिये दिश दिश तना विचार।
जिस दिशि जम्बु बोले बहुत तिस दिशि मेह अपार॥१०१५॥
जिस दिशि स्याल न बोलता तिस दिशि पड़े दुकाल॥१०१६॥

वैशाख सुदि ३ को रात्रि के ४ प्रहर में स्याल शब्द १ ले में करे तो आषाढ़, २ रे में करे तो श्रावण, ३ रे में करे तो भाद्रवे और ४ थे में करे तो आश्विन में वर्षा होवे। परन्तु शब्द जिस २ प्रहर तथा दिशा में करे उस २ मास तथा दिशा में वर्षा और जिस २ में नहीं करे उस २ मास तथा दिशा में अनावृष्टि

होवे। इस में भी शब्द अधिक हों तो अधिक और कम हों तो कम वर्षा होवे।

प्रथम पूर्व उत्तर भले समय भला कहन्त।
पश्चिम कहिये करवरा दक्षिण काल लहन्त ॥१०१७॥

स्याल पहिले ही पहिले शब्द पूर्व वा उत्तर में करे तो सुभिक्ष, पश्चिम में करे तो संवत् मध्यम और दक्षिण में करे तो दुर्भिक्ष होवे।

चहुं दिशि एक टऊकड़ा वर्ष वड़ा विकराल।
कईक जावें मालवे कईक गङ्गा पार ॥ १०१८ ॥
आखा तीजे रातड़े जो नहि बोले स्याल।
खड़ अम्बु विन मानवी मोटा पड़े जु काल ॥ १०१९ ॥

स्याल शब्द रात्रि भर में एक ही वार करे वा विलकुल करे ही नहीं तो दुर्भिक्ष होवे।

वैशाख सुदि ४। ५ योग।

वैशाखे शुक्लतूर्ये ऽह्नि सन्ध्यायामुत्तरो ऽनिलः।
सुभिक्षायाथ पञ्चम्यामैन्द्रो धान्यमहर्घकृत् ॥ १०२० ॥

वायु वैशाख सुदि ४ को सन्ध्या को तो उत्तर का हो तो सुभिक्ष और ५ को पूर्व का हो तो भाद्रवे में धान्य महंगा होवे।

वैशाख सुदि ५ योग।

वैशाखमासे सितपञ्चमी स्यात् सूर्यादिवारैश्चिनुनते फलानि।
मन्दा च वृष्टिस्त्वतिवृष्टियुद्धं वातं सुभिक्षं कलहं च तापः॥१०२१

वैशाख सुदि ५ को वार रवि हो तो मन्द वर्षा, सोम हो तो अति वर्षा, मंगल हो तो युद्ध, वुध हो तो वायु का जोर, गुरु हो तो सुभिक्ष, शुक्र हो तो कलह और शनि हो तो किराना महंगा तथा रोगादि का सन्ताप होवे।

वैशाखे शुक्लपञ्चम्यामभ्राच्छन्नं यदा नभः।
गर्जते वर्षते वाऽपि पूर्ववातो यदा भवेत् ॥ १०२२ ॥

उदयास्तमनं यावद् ज्ञातव्यं च विचक्षणैः ।
सङ्ग्रहेत्सर्वधान्यानि प्रवराणि सुराधिपः ॥ १०२३ ॥
मासे भाद्रपदेऽत्यन्तं महर्घाणि भवन्ति हि ॥ १०२४ ॥

वैशाख सुदि ५ को दिन भर आकाश बादलों से ढँका रहे, मेघ गाजे, वर्षा हो वा पूर्व का वायु चले तो भाद्रवे में धान्य बहुत महंगा होवे ।

वैशाख सुदि ८ योग

वैशाखे धवलाऽष्टम्यां शनिवारो भवेद्यदि ।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभङ्गं तदाऽऽदिशेत् ॥ १०२५ ॥

वैशाख सुदि ८ को शनि वार हो तो अनावृष्टि से प्रजा को कष्ट तथा किसी राजा की मृत्यु होवे ।

वैशाख सुदि १० योग ।

वैशाखे शुक्लदशमीदिने च वार्दलं शुभम् ॥ १०२६ ॥

वैशाख सुदि १० को बादल हो तो शुभ, किन्तु दिन भर पूर्व का वायु चले तो भाद्रवे में धान्य महंगा होवे ।

वैशाख सुदि ११ । १२ । १३ योग ।

एकादशीत्रये शुक्ले दुर्भिक्षं वृष्टिवार्दलात् ॥ १०२७ ॥

वैशाख सुदि ११ । १२ । १३ को बादल वा वर्षा हो तो दुर्भिक्ष होवे ।

वैशाख सुदि १४ योग ।

वैशाख सुदि १४ को वर्षा हो तो सुभिक्ष होवे ।

वैशाख सुदि १५ योग ।

राधे च पूर्णिमा वृष्टिर्भाद्रे धान्यमहर्घकृत् ॥ १०२८ ॥

वैशाख सुदि १५ को वर्षा हो तो भाद्रवे में धान्य महंगा होवे, अतः संग्रह करे ।

वैशाख वदि ८ । १४ योग ।

वैशाखस्यासिते पक्षे भूताष्टम्योर्विशेषतः ।
याम्यवायुः प्रवर्त्तेत तदा वर्षति माधवः ॥ १०२९ ॥

वैशाख वदि ८। १४ को दक्षिण का वायु हो तो आगे अच्छी वर्षा होवे।

वैशाख सुदि १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ योग ।

वैशाखमासे प्रतिपद्दिनाच्चेन्मेघोदयः सप्तदिनानि यावत् ।
अभ्रेषु गर्जो घनविद्युदादि तदा सुभिक्षं मुनयो वदन्ति ॥१०३०॥

वैशाख सुदि १ से ७ तक बादल, बिजली, गाज, वर्षा आदि हो तो सुभिक्ष होवे।

वैशाख सुदि १ । ७ । ८ । ९ योग

राधे शुक्ले प्रतिपदे सप्तम्यादि दिनत्रयम् ।
वार्दलानां समुदये शीघ्रं वृष्टिं विनिर्दिशेत् ॥ १०३१ ॥

वैशाख सुदि १ । ७ । ८ । ९ को बादल हो तो वर्षा शीघ्र होवे।

वैशाख सुदि ५ । ७ । ९ । ११ । १३ योग ।

पञ्चम्यामथ सप्तम्यां नवम्येकादशीदिने ।
त्रयोदश्यां च वैशाखे वृष्टौ लोके सुखं भवेत् ॥ १०३२ ॥

वैशाख सुदि ५ । ७ । ९ । ११ । १३ को वर्षा हो तो सुवृष्टि आदि से जगत् में सुख होवे।

वैशाख वदि वा सुदि ८ । १४ योग।

शुक्ला कृष्णा ऽपि वैशाखे ह्यष्टमी वा चतुर्दशी ।
एषु चेद्दक्षिणो वातस्तदा मेघमहोदयः ॥ १०३३ ॥
कृष्णे शुक्ले च वैशाखे ऽष्टमीचतुर्दशीदिने ।
गर्जनं विद्युतो वर्षा वर्षानन्दविधायकाः ॥ १०३४ ॥

वैशाख वदि वा सुदि ८ । १४ को बिजली, गाज, वर्षा वा दक्षिण का वायु हो तो आगे वर्षा अच्छी होवे॥

वैशाख ज्येष्ठ मास प्रकरण ।

वैशाखे गर्जितं भूरि सलिलः पवनो घनः ।
उष्णो ज्येष्ठो विशिष्टः स्यात् किमन्यैर्गर्भचेष्टितैः ॥१०३५॥

वैशाख में तो वायु, वादल, विजली, गाज और वर्षा हो तथा ज्येष्ठ में धूप अधिक तपे तो वर्षा काल में बहुत वर्षा होवे।

वैशाख वा ज्येष्ठ सुदि १ वा २ योग ।

वैशाखे यदि वा ज्येष्ठे उतरस्यां विधूदये ।
बहुधा धान्यनिष्पत्तिर्भवेन्मेघमहोदयः ॥ १०३६ ॥

वैशाख वा ज्येष्ठ सुदि १ वा २ को नवीन चन्द्रमा उदय हो उस के उत्तर की ओर का शृंग ऊंचा हो तो वर्षा तथा धान्य की उत्पत्ति अधिक होवे।

वैशाख सुदि १५ ज्येष्ठ वदि १ । २ । ३ । ४ ।५ ।६ । ७ । ८ योग।

तथा वैशाखपूर्णायां वायुं सम्यग्विचारयेत् ॥ १०३७ ॥
प्रातश्चतुर्घटीमध्ये पूर्ववायुर्यदा भवेत् ।
सूर्यार्द्रासङ्गमे वा ऽऽद्यदिने मेघमहोदयः ॥ १०३८ ॥
वृष्टिर्द्वितीये ऽपि वायुर्घटिके पूर्ववायुतः ।
ज्ञेया द्वितीये दिवसे आर्द्रा तप न सङ्गमे ॥१०३९॥
आर्द्रायां वासरा एवं चातुर्घटिकसङ्ख्याः ।
ज्ञेयाः सर्वे ऽपि सजला निर्जलास्तु विपर्यये ॥ १०४० ॥
पूर्णिमातः समारभ्य यावज्ज्येष्ठे ऽसिताष्टमी ।
एवमार्द्रादिसूर्यर्क्षनवके वृष्टिरुच्यते ॥ १०४१ ॥

वैशाख सुदि १५ से ज्येष्ठ वदि ८ तक के ९ दिनों में वायु पूर्व का हो तो वर्षा किन्तु पश्चिम का हो तो अनावृष्टि सूर्य के आर्द्रा से चित्रा तक ९ नक्षत्रों में क्रम से (वै० सु० १५ से आर्द्रा, ज्ये० कृ० १ से पुनर्वसु, २ से पुष्य, ३ से अश्लेषा, ४ से मघा,

५ से पूर्वा फाल्गुनी, ६ से उत्तरा फाल्गुनी, ७ से हस्त और ८ से चित्रा में) होवे। १ दिन की ६० घड़ी के चौघड़िये १५ होते हैं और १ नक्षत्र के दिन भी प्रायः १५ ही होते है; अतः प्रत्येक दिन के १ । १ चौघड़िये (४ । ४ घड़ी) से प्रत्येक नक्षत्र के १ । १ दिन की वर्षा जाने ॥

ज्येष्ठ मास प्रकरण ।

ज्येष्ठे मासे रवियुता ग्रहाः पञ्चैकराशिगाः ।
श्रावणे मेघरोधाय छत्रभङ्गाय कुत्र चित् ॥ १०४२ ॥

ज्येष्ठ में सूर्य के साथ कोई भी ५ ग्रह एक राशि पर हों तो श्रावण में वर्षा की खंच और कहीं छत्र भंग होवे।

ज्येष्ठ मास में गाजिया जो उजियाले पाख ।
गर्भ गलें सब पाछले जोषी बोले साख ॥ १०४३ ॥
ज्येष्ठे घर हड़ जो करे श्रावण सलिल न होय ।
ज्यों श्रावण त्यों भाद्रवा नीर निवानो जोय ॥ १०४४ ॥

ज्येष्ठ में गाज बीज वदि मे हो तो श्रेष्ठ, किन्तु सुदि में हो तो नेष्ट और वर्षा काल में अनावृष्टि होवे।

श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र योग ।

ज्येष्ठे च मासे बहुले च पक्षे नक्षत्रयुग्मं श्रवणं धनिष्ठा ।
यावद् घटी गर्जति विद्युदभ्रं तावच्छुभं वर्षति गर्गभाष्यः॥१०४५॥

ज्येष्ठ वदि में श्रवण और धनिष्ठा के दिन बादल, बिजली वा गाज हो तो वर्षा काल मे अच्छी वर्षा होवे। दोनों नक्षत्रों की १२० घडी होती हैं और वर्षा काल के ४ महीनों के दिन भी १२० ही होते हैं: अतः १ । १ घड़ी से १ । १ दिन की वर्षा जाने। जैसे;--श्रवण की १ ली घडी से वर्षा काल का १ ला दिन. २ री से २ रा;-इस क्रम से बादल आदि जिस २ घड़ी में हो उस २ दिन वर्षा और जिस २ में नहीं हो उस २ दिन अनावृष्टि होवे।

आर्द्रादि १० नक्षत्र योग ।

आर्द्रादौ दश ऋक्षाणि ज्येष्ठे शुक्ले निरीक्षयेत् ।
साभ्रैश्च हन्यते वृष्टिर्निरभ्रैर्वृष्टिरुत्तमा ॥ १०४६ ॥
सजला निर्जला ज्ञेया निर्जला सजला भवेत् ॥ १०४७ ॥

दश ऋक्ष तपे दश दिवस माहिं ।
अति होत वृष्टि जल कमी नाहिं ॥ १०४८ ॥

ज्येष्ठ सुदि में आर्द्रा से स्वाति तक १० नक्षत्रों से सूर्य के आर्द्रादि १० नक्षत्रों की वर्षा जाने । जिस नक्षत्र में बादल वा वर्षा हो उस में अनावृष्टि, परन्तु बादल, बिजली, गाज आदि कुछ भी नहीं हो किन्तु सूर्य की धूप अधिक तपे उस में सुवृष्टि होवे।

चित्रा, स्वाति, विशाखा नक्षत्र योग ।

चित्रास्वातिविशाखासु ज्येष्ठे मासि निरभ्रता ।
आषाढे जलहीनं च श्रावणे वर्षति प्रिये ॥ १०४९ ॥
चित्रास्वातिविशाखासु ज्येष्ठे मासे च वर्षति ।
न भवेत् श्रावणे वृष्टिर्धान्यमहर्घता भवेत् ॥ १०५० ॥

चित्रा, स्वाति, विशाखा तीनों । बादल, बीज ज्येष्ठ में कीनों ।
(तौ) वर्षा वर्षे तीनों मास । निश्चय जानो सुभिक्ष आस॥१०५१॥

ज्येष्ठ सुदि से चित्रा, स्वाति और विशाखा मे बादल न हो तो वर्षा आषाढ़ में नहीं किन्तु श्रावण में होवे; परन्तु बादल वा बिजली हो तो आषाढ़ आदि ३ महीनों में सुवृष्टि तथा सुभिक्ष होवे; और वर्षा भी हो जावे तो श्रावण में अनावृष्टि और धान्य महंगा होवे।

ज्येष्ठ वदि १ योग ।

ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे या तिथिः प्रथमा भवेत् ।
आगता केन वारेण तमन्वेषय यत्नतः ॥ १०५२ ॥

भानुना पवनो वाति कुजो व्याधिकरो मतः ।
सोमपुत्रेण दुर्भिक्षं खण्डवृष्टिः प्रजायते ॥ १०५३ ॥
गुरुभार्गवसोमानामेको ऽपि यदि जायते ।
जलेन पूरिता पृथ्वी धनधान्यकुला धरा ॥ १०५४ ॥
अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद्यदि ।
जलशोषः प्रजानाशच्छत्रभङ्गस्तदा भवेत् ॥ १०५५ ॥

ज्येष्ठ वदि १ को वार रवि हो तो वायु का ज़ोर; सोम गुरु वा शुक्र हो तो वर्षा बहुत, तथा धन धान्य की वृद्धि; मंगल हो तो रोगों की उत्पत्ति; बुध हो तो खण्ड वृष्टि, तथा दुर्भिक्ष; और शनि हो तो अनावृष्टि, प्रजा का नाश तथा कहीं छत्र भंग होवे ।

ज्येष्ठ वदि १० योग ।

ज्येष्ठ कृष्ण दशमी दिने वार शनैश्चर होय ।
जल नहिं पावे धर्म का विरले जीवें कोय ॥ १०५६ ॥

ज्येष्ठ वदि १० को शनि वार हो तो अनावृष्टि होवे ।

ज्येष्ठ वदि १० । ११ । १२ योग ।

ज्येष्ठे कृष्णे दशम्यां च रेवती सुखकारिणी ।
एकादश्यां खण्डवृष्टिर्द्वादश्यां सा ऽनुकष्टदा ॥ १०५७ ॥

ज्येष्ठ वदि में रेवती १० को हो तो जगत् में सुख, ११ को हो तो खण्ड वृष्टि और १२ को हो तो कष्ट होवे ।

ज्येष्ठ वदि ११ । १२ योग ।

ज्येष्ठस्य कृष्णैकादश्यां द्वादश्यां वा ऽब्दगर्जितम् ।
विद्युत्पयोदवृष्टिश्चेद् वत्सरः स्यात्तदा शुभः ॥ १०५८ ॥

ज्येष्ठ वदि ११ वा १२ को बादल, बिजली, गाज वा वर्षा हो तो संवत् श्रेष्ठ होवे ।

ज्येष्ठ वदि ३० योग।

ज्येष्ठे मासे त्वमावस्या दिवा वा यदि वा निशि।
आकाशे दृश्यते मेघो ह्यनावृष्टिर्भयावहा ॥ १०५९ ॥

ज्येष्ठ वदि ३० को बादल हो तो अनावृष्टि होवे जिस से दुर्भिक्ष पड़ जावे।

ज्येष्ठोत्तर अमावस्यां भानोरस्तं विलोकयेत्।
द्वितीयां वीक्षयेच्चन्द्रं तद्ग्रामे च दक्षिणे ॥ १०६० ॥
उत्तरे तु सुभिक्षं स्याद् विपरीतं च दक्षिणे।
तत्समं च समे स्थाने ज्येष्ठे वारं तु लक्षयेत् ॥ १०६१ ॥
चन्द्र क्षीण तिथि ज्येष्ठकी अस्त सूर्यको जोय।
दूज चन्द्र रविपर गयो वर्ष करवरो होय ॥ १०६२ ॥
हाथ वेंत दश अंगुलां अस्त चन्द्रको जोय।
सूर्य थकि उत्तर दिशि काल कदे नहीं होय ॥ १०६३ ॥
हाथ च्यार उत्तर दिशि अस्त चन्द्र को भाव।
जल नहीं मावे मेदिनी फूटे घणा तलाव ॥ १०६४ ॥
हाथवेंत दश अंगुलां चन्द्र दक्षिण दिशि जाय ॥
अन्नरे भोले आंगुलि लोक घणेरा खाय ॥ १०६५ ॥
हाथ च्यार सूर्य थकि अस्त दक्षिण दिशि चन्द।
हाहाकार वा देशमें विरला कोय वचन्त ॥ १०६६ ॥

ज्येष्ठ वदि ३०को सूर्य अस्त हो उस स्थान से सुदि १ वा २ को नवीन चन्द्रमा उगे वह पीछा अस्त सूर्य से कुछ भी उत्तर में हो तो सुभिक्ष परन्तु यदि उत्तर में ४ हाथ तक दूर अस्त हो तो वर्षा बहुत होवे जिससे बहुत से तालाब फूट जावें, और जो कुछ भी दक्षिण में अस्त हो तो दुर्भिक्ष परन्तु यदि ४ हाथ तक दूर अस्त हो तो बड़ा भयानक अकाल पड़े, और जो सूर्य के स्थान पर ही अस्त हो तो मध्यम संवत् होवे।

कीलमार्गं समारोप्य आदित्यास्तमने प्रिये ।
पुनर्निरीक्षयेच्चन्द्रे तेनमानेन लक्षयेत् ॥ १०६७ ॥

सूर्य के अस्त स्थान से चन्द्रमा उत्तर वा दक्षिण में कितना दूर अस्त हुआ है इसको जानने के लिये सूर्य के अस्त स्थान पर तथा देखने के स्थान पर कोई कील आदि का नीशान एक सीधमें वना ले जिससे सूर्य और चन्द्रमा के अस्त का अन्तर स्पष्ट विदित हो जावेगा।

सूर्य चन्द्र के उत्तर दक्षिण के अस्त का फल प्रत्येक महीने में भी देखा जाता है परन्तु यह ज्येष्ट का महीना ग्रीष्म ऋतु के मध्य में आता है इसलिये इस से वर्षा होने न होने का अच्छा पता लगता है । हमारे यहां कई वर्षों से इसका अनुभव हो चुका हैं जिस वर्ष उत्तर मे ४ हाथ तक अस्त हुआ है उस वर्ष में वर्षा वहुत हुई है जैसे सं० १९६५ में और जो इस से भी अधिक दूर अस्त हुआ है उस वर्षमें सूर्य की गरमी बढ जाने से प्रायः वर्षा कम हुई है जैसे सं० १९६८ तथा ६९ में ॥

ज्येष्ठ सुदि १ योग।

प्रतिपदि ज्येष्ठमासे वुधो वर्षविनाशकः ॥ १०६८ ॥

ज्येष्ठ सुदि १ को बुध वार हो तो दुर्भिक्ष होवे।

ज्येष्ठ सुदि १ । २ योग।

ज्येष्ठे शुक्ले द्वितीयायां भानोर्वामोदयः शशी ।
तस्मिन् वर्षे शुभं सर्वं न शुभं दक्षिणोदये ॥ १०६९ ॥

ज्येष्ठ सुदि १ वा २ को सूर्य अस्त हो उस स्थान से नवीन उदय हुआ चन्द्रमा उत्तर में दीखे तो शुभ. किन्तु दक्षिण में दीखे तो अशुभ फल उस वर्ष में होवे।

ज्येष्ठ सुदि २ योग ।

ज्येष्ठे मासे द्वितीयेन्दौ ब्राह्मीयोगे महर्घकम् ।
श्रावणे तु शुभा वृष्टी रोहिणीसङ्गमे भवेत् ॥ १०७० ॥

ज्येष्ठ सुदि २ को रोहिणी हो तो धान्य महंगा और श्रावण में रोहिणी के दिन वर्षा होवे।

रोहिण्यामेकनक्षत्रे चेत्स्यातां चन्द्रभास्करौ।
द्वितीयायां प्रजाहानिर्दुर्भिक्षेण भयेन वा॥ १०७१॥

ज्येष्ठ सुदि २ को सूर्य और चन्द्रमा दोनों रोहिणी पर हों तो दुर्भिक्ष वा भय आदि से प्रजा को कष्ट होवे।

अभ्रैस्तु मध्यमा वृष्टिर्वृष्ट्या वृष्टिरुदाहृता।
निरभ्रे न तु वृष्टिः स्याद्रोहिणीन्दुसमागमे॥ १०७२॥

ज्येष्ठ सुदि २ अनुमान को रोहिणी हो और वर्षा हो तो बहुत वृष्टि, बादल हो तो मध्यम वृष्टि और बादल न हो (रात्रि में चन्द्रमा और रोहिणी निर्मल दीखें) तो अनावृष्टि होवे।

ज्येष्ठे शुक्ले द्वितीयायां गर्भपाताय गर्जितम्॥ १०७३॥

ज्येष्ठ सुदि २ को गाजे तो शीत काल में धारण हुये गर्भों का नाश हो जाने से वर्षा अल्प होवे।

ज्येष्ठ सुदि ५ योग।

ज्येष्ठ सुदि ५ को वायु पूर्व वा पश्चिम का हो तो सुभिक्ष, ईशान का हो तो दुर्भिक्ष, उत्तर का हो तो सुभिक्ष किन्तु टिड्डी आदि का उपद्रव, वायव्य का हो तो अनावृष्टि, नैर्ऋत्य वा दक्षिण का हो तो दुर्भिक्ष, अग्नि का हो तो क्लेश; और जो चारों ओर का हो तो सर्व वस्तु का नाश होवे।

दक्षिणे पवने वाते तिलतैलमहर्घता॥
मासे चाश्वयुजे शक्रं नान्यथा मुनिभाषितम्॥ १०७४॥

ज्येष्ठस्य शुक्लपञ्चम्यां गर्जितं श्रूयते यदि।
दक्षिणश्च भवेद्वायुरभ्राच्छन्नं तथाऽम्बरम्॥ १०७५॥

धान्यानां सङ्ग्रहः कार्यस्तत्क्षणाद्विक्रयो भवेत्।
मासे चाश्वयुजे शक्रलाभो भवति पुष्कलः॥ १०७६॥

ज्येष्ठ सुदि ५ को दक्षिण का वायु चले तब आकाश निर्मल हो तो तिल तैल आदि रस, और बादलों से ढँका रहे तथा गाजे तो सम्पूर्ण धान्य-ख़रीद के आश्विन में बेचने से बहुत लाभ होवे।

ज्येष्ठ सुदि ७ योग।

ज्येष्ठस्य शुक्लसप्तम्यां श्रूयते घनगर्जितम्।
मेघाच्छन्नं नभो वा ऽपि वायुर्वहति दक्षिणः॥ १०७७॥
तिलस्य सङ्ग्रहः कार्यो विक्रीते कार्त्तिके धनम्॥ १०७८॥

ज्येष्ठ सुदि ७ को बादल, गाज वा दक्षिण का वायु हो तो तिल तथा तैल ख़रीद के कार्त्तिक में बेचने से लाभ होवे।

ज्येष्ठ सुदि ८ योग।

ज्येष्ठ सुदि ८ को बादल वा वर्षा हो तो वर्षा का आरम्भ शीघ्र होवे।

ज्येष्ठ सुदि १० योग।

ज्येष्ठे शुक्ले दशम्यां च शनिवारः प्रजायते।
वृष्टिरोधो गवां नाशो महाशोकाकुला प्रजा॥ १०७९॥

ज्येष्ठ सुदि १० को शनि वार हो तो वर्षा की खंच और गवादि पशुओं को क्लेश होवे।

ज्येष्ठ सुदि ११ योग।

ज्येष्ठ शुक्ल में निर्जला जितनी घटिका होय।
भाग सात का दीजिये ऊबरता फल जोय॥ १०८०॥

बिहु अंके वर्षे अपार। चिहुं वर्षे तो अधि घन सार।
पंचे पंच शब्द परिवाय। छट्टे मेह जु थोड़ा थाय॥१०८१॥
एक तीन वा शून्य जु हले। भने भड्डली वर्षे सगले॥१०८२॥

ज्येष्ठ सुदि ११ जितनी घड़ी हो उस में ७ का भाग दे। शेष

१ । ३ वा ० हो तो सर्वत्र वर्षा, २ वा ४ हों तो बहुत वर्षा, ५ हो तो वायु का ज़ोर, और ६ हों तो अल्प वर्षा होवे।

ज्येष्ठ सुदि ११ । १२ । १३ । १४ योग ।

ज्येष्ठसुदि ११ को किसी ऊंचे स्थान पर बड़ी ध्वजा खड़ी कर के पुष्प, धूप आदि से उस का पूजन कर के उस से आठों दिशाओं का वायु देख के संवत् का शुभाशुभ जाने।

एको वातो यदा वाति चतुर्दिनानि चोत्तरः ।
चत्वारो वार्षिका मासा ध्रुवं वर्षति माधवः ॥ १०८३ ॥
विपरीतं यदा वाति यानि चाह्वानि वा पुनः ।
तन्मासेषु न वर्षन्ति प्रावृक्षेषु न संशयः ॥ १०८४ ॥

ज्येष्ठ सुदि ११ । १२ । १३ और १४,-इन चार दिनों में वायु लगातार एक उत्तर ही का चले तो अवश्य वर्षा किन्तु दक्षिण ही का चले तो बिलकुल अनावृष्टि-वर्षा काल के चारों ही महीनों में क्रम से-अर्थात् ११ से श्रावण, १२ से भाद्रवे, १३ से आश्विन और १४ से कार्त्तिक में-होवे।

प्रथमे पश्चिमो वातश्चतुरह्वानि जायते ।
दुर्भिक्षं च त्वनावृष्टिर्भयदा च महानृपे ॥ १०८५ ॥

इन चारों दिनो में नित्य पहिले ही पहिले वायु पश्चिम का चले तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा महा राजाओ को भय होवे।

उत्तरोत्तरमार्गेण चत्वारो घ्नन्ति वा दिशि ।
चत्वारो वार्षिका मासा ध्रुवं वर्षति माधवः ॥ १०८६ ॥
विपरीतं यदा वाति चत्वारो घ्नन्ति वा दिशि ।
शीतकाले भवेद् वृष्टिर्वर्षाकाले न वर्षति ॥ १०८७ ॥

इन चारो दिनों में वायु प्रदक्षिण (अर्थात् उत्तर से पूर्व और पूर्व से दक्षिण का,-इस क्रम से) हो तो वर्षा काल के चारों ही महीनों में वर्षा होवे; किन्तु अप्रदक्षिण (अर्थात् उत्तर से प-

श्चिम और पश्चिम से दक्षिण) का,-इस क्रम से) हो तो वर्षा काल में अनावृष्टि, किन्तु शीत काल में वर्षा होवे।

वायव्यां पश्चिमो वातो नैर्ऋत्यां जायते सदा।
श्रावणे कार्त्तिके छिद्रं द्वौ मासौ वृष्टिरुत्तमा ॥ १०८८ ॥
पूर्वे चैव तथैशान्यामाग्नेय्यां जायते सदा।
भाद्रपदाश्विने छिद्रमाद्यन्ते वृष्टिरुत्तमा ॥ १०८९ ॥

इन चारों दिनों में वायु वायव्य, पश्चिम वा नैर्ऋत्य का हो तो श्रावण तथा कार्त्तिक में तो अनावृष्टि, किन्तु भाद्रवे तथा आश्विन में वर्षा; परन्तु ईशान, पूर्व वा अग्नि का हो तो भाद्रवे तथा आश्विन में तो अनावृष्टि, किन्तु श्रावण तथा कार्त्तिक में वर्षा होवे।

ज्येष्ठ सुदि १४ । १५ योग।

ज्येष्ठ अन्ते बे दहाड़ा जो वरषसी भड्ड।
नीर निवाणां लाभसी के समुद्र केरी खड्ड ॥ १०९० ॥

ज्येष्ठ सुदि १४ और १५ को वर्षा हो तो अनावृष्टि होवे।

ज्येष्ठ सुदि १५ योग।

ज्येष्ठे मासि यदा याति मूलं मालेयदीधितिः।
तदा वृष्टिरनावृष्टिर्दृष्टा कैश्चिन्महर्षिभिः ॥ १०९१ ॥

ज्येष्ठ सुदि १५ को मूल हो उस दिन वृष्टि हो तो दुर्भिक्ष होवे।

ज्येष्ठस्य पूर्णिमायां तु मूलः प्रसन्नते यदा।
दिनषष्टिं व्यतिक्रम्य ज्ञेयो मेघमहोदयः ॥ १०९२ ॥

ज्येष्ठ सुदि १५ को मूल हो और वर्षा हो तो २ मास पीछे वर्षा होवे।

ज्येष्ठ वदि ८ । १४ योग।

ज्येष्ठे मासेऽष्टमी कृष्णा तथा कृष्णा चतुर्दशी।
दक्षिणानिलसंयुक्ता परतो वृष्टिहेतवे ॥ १०९३ ॥

ज्येष्ठ वदि ८ और १४ को दक्षिण का वायु हो तो वर्षा काल में सुवृष्टि, और वर्षा हो तो भाद्रवे में बहुत वर्षा होवे।

ज्येष्ठ वदि ३० और सुदि १ । २ योग।

आर्द्रा ज्येष्ठे नष्टचन्द्रे प्रथमायां पुनर्वसुः।
द्वितीयां पुष्यसंयुक्ता जलं धान्यं तृणं न च ॥ १०९४ ॥

ज्येष्ठ में वदि ३० को-आर्द्रा हो तो वर्षा का, सुदि १ को पुनर्वसु हो तो धान्य का, और २ को पुष्य हो तो घास का नाश होवे।

ज्येष्ठ वदि ३० और सुदि १३ । १५ योग।

ज्येष्ठे मासे ह्यमावस्यां त्रयोदश्यां तथैव च।
पूर्णमास्यां तु दृश्येत मेघो वातो भयावहः ॥ १०९५ ॥

ज्येष्ठ वदि ३० वा सुदि १३ वा १५ को बादल हो तो ज़ोर का वायु चले।

ज्येष्ठ वदि ३० और सुदि १५ योग।

अमावस्यां च पूर्णायां ज्येष्ठे मासे दिवानिशम्।
मेघैराच्छादिते व्योम्नि वातो वहति वारुणः ॥ १०९६ ॥
अनावृष्टिस्तदाऽऽदेश्या क्व चिद् वृष्टिस्तु भाग्यतः।
दर्शे द्वौ श्रावणाषाढौ पूर्णे भाद्रपदाश्विनौ ॥ १०९७ ॥

ज्येष्ठ वदि ३० और सुदि १५ को दिन रात्रि बादल छाये हुये रहें तथा पश्चिम का वायु चले तो वर्षा काल के चारों महीनों में-अर्थात् वदि ३० को तो दिन मे हो तो आषाढ़ में और रात्रि में हो तो श्रावण मे, तथा सुदि १५ को दिन में हो तो भाद्रवे मे और रात्रि मे हो तो आश्विन में-अनावृष्टि होवे।

ज्येष्ठ सुदि २ । ३ योग।

ज्येष्ठे शुक्ले द्वितीयायां तृतीयायां प्रजायते।
नक्षत्रार्द्रा तदा वृष्टिर्महादुर्भिक्षकारिणी ॥ १०९८ ॥

ज्येष्ठ सुदि २ वा ३ को आर्द्रा हो और वर्षा हो तो बड़ा दुर्भिक्ष होवे।

ज्येष्ठ सुदि ८ । ९ । १० । ११ योग ।

ज्येष्ठे मासे सिताष्टम्याश्चतस्रो वायुधारणाः ।
मृदुर्वायुः शुभो वातः स्निग्धाभ्रस्थगिताभ्रकः ॥ १०९९ ॥
यदि ता एकरूपाः स्युः सुभिक्षसुखकारिकाः ।
सान्तराला अशिवाय तस्कराग्निभयप्रदाः ॥ ११०० ॥

ज्येष्ठ सुदि ८ । ९ । १० । ११. ये चार दिन 'वायु धारणा' के है। इन दिनों में पूर्व, उत्तर वा ईशान का मृदु वायु चले, आकाश स्निग्ध बादलों से ढँका रहे, तथा बिजली. गाज, कुण्डल आदि हों तो सुभिक्ष और सुख; किन्तु चारों दिन एक से नहीं हों तो चौर, अग्नि आदि का भय होवे। (इस का विशेष निर्णय 'वायु धारणा प्रकरण' में लिखा है वहां देखो ।

ज्येष्ठ आषाढ़ मास प्रकरण ।

ज्येष्ठे मासे तथाऽऽषाढे यत्र यत्राब्दवर्षणम् ।
श्रावणे भाद्रमासे वा तत्र ने वृष्टिनिर्णयः ॥ ११०१ ॥

ज्येष्ठ तथा आषाढ़ में जिस २ दिन वर्षा हो प्रायः उसी२ दिन क्रम से श्रावण तथा भाद्रवे में भी वर्षा होवे।

प्रथम वृष्टि योग ।

आषाढे ज्येष्ठमासे च वृष्टिश्च प्रथमा भवेत् ।
रविवारेण दुर्भिक्षं सोमे च सर्वशोभनम् ॥ ११०२ ॥
भौमवारे महावायुर्बुधे रोगो गुरौ शुभः ।
शुक्रवारे महा मेघाः शनौ च जलनाशनम् ॥ ११०३ ॥

प्रथम ही प्रथम वर्षा ज्येष्ठ वा आषाढ़ में हो उस दिन वार रवि हो तो दुर्भिक्ष. सोम हो तो सुभिक्ष, मंगल हो तो वायु और अग्निदाह, बुध हो तो रोग. गुरु हो तो सुभिक्ष किन्तु बालकों को पीड़ा. शुक्र हो तो बहुत वर्षा. और शनि हो तो अनावृष्टि तथा दुर्भिक्ष होवे।

पूर्वाषाढा नक्षत्र योग ।

ज्येष्ठि गले पड़वा गले गले जु ज्येष्ठा मूल ।
पूर्वाषाढ़ धड़ूकिया (तो) निपजें सातों तूर ॥ ११०४ ॥

वर्षा ज्येष्ठ सुदि १५ वा आषाढ़ वदि १ को वा ज्येष्ठा वा मूल नक्षत्र में हो तो दुर्भिक्ष पड़े; किन्तु आगे आषाढ़ वदि में पूर्वाषाढा में बिजली, गाज वा वर्षा हो जावे तो उपरोक्त सब दोष मिट के सुभिक्ष होवे। ऐसा योग सं. १९६५ में हुआ था ।

श्रवण धनिष्ठा नक्षत्र योग ।

ज्येष्ठामूलदिने वृष्टिर्ज्येष्ठान्ते दिवसद्वये ।
दुर्भिक्षं कुरुते श्रेष्ठा विद्युत्पांशुयुतानिलः ॥ ११०५ ॥
ज्येष्ठा मूल विणठिया (तो) तू धण रोवे काय ।
श्रवण धनिष्ठा वर्षसी (तो) होसी अन्न सवाय ॥ ११०६ ॥

वर्षा ज्येष्ठ सुदि १५ के अनुमान ज्येष्ठा वा मूल में हो तो दुर्भिक्ष होवे; किन्तु केवल आँधी सहित वायु वा बिजली हो अथवा आषाढ़ वदि में श्रवण वा धनिष्ठा में फिर वर्षा हो जावे तो उक्त दोष मिट के सर्व धान्य अधिक उत्पन्न होवें।

ज्येष्ठ सुदि १५ आषाढ़ वदि १ । २ योग ।

ज्येष्ठे मूले पूर्णिमायां शुभं वर्षहिताय.तत् ।
मध्यमं प्रतिपद्योगे द्वितीयायां तु दुःखकृत् ॥ ११०७ ॥

मूल नक्षत्र ज्येष्ठ सुदि १५ को हो तो सुभिक्ष, आषाढ़ वदि १ को हो तो मध्यम संवत् और २ को हो तो दुर्भिक्ष होवे।

—x—

आषाढ़ मास प्रकरण ।

आषाढ़ में बादल, बिजली, गाज और वर्षा हो तो श्रेष्ठ होवे।

आषाढे शुक्लपक्षे तु चतुर्थी पञ्चमी तथा ॥ ११०८ ॥
षष्ठी च सप्तमी चैवामावास्या प्रतिपत्तथा ।
स्वयमेव भवेद्गर्भो वर्षते नात्र संशयः ॥ ११०९ ॥

आषाढ में प्रायः १। ४। ५। ६। ७। ३०। १५ को बादल हो तो वर्षा होवे।

आषाढ़ में मंगल तो आगे और रवि पीछे हो तो पशुओं का नाश और दुर्भिक्ष, किन्तु रवि आगे और मंगल पीछे हो तो सुभिक्ष होवे।

बुधशुक्रौ समीपस्थौ करोत्येकार्णवा मही।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ॥ ११११० ॥

आषाढ़ में बुध और शुक्र एकत्र हो तब वर्षा बहुत होवे, किन्तु इन के बीच में सूर्य रहे तब तक अनावृष्टि होवे।

मास आषाढ़ और पक्ष उजाले। बुध जो ऊगे किस ही काले।
मेह न वर्षे मण्डल सारे। कण कौडी न मिले तिस वारे ॥११११॥

आषाढ़ सुदि में बुध उदय हो तो अनावृष्टि होवे जिस से धान्य महँगा हो जावे।

मूल नक्षत्र योग।

ज्येष्ठस्य पूर्णमास्यन्ते मूलं प्रस्रवते यदि।
षष्टि दिनानि न वर्षन्ति पश्चाद्वर्षन्ति माधवाः ॥ ११११२ ॥
अथैकं स्रवते पादं द्वे त्रीणि स्रवते यदा।
विभागं तं विजानीयात् पश्चिमां वृष्टिमादिशेत् ॥ १११३ ॥

आषाढ़ वदि में मूल के चारों पायों की ६० घड़ी में वर्षा हो तो वर्षा आषाढ़ तथा श्रावण में क्रम से ६० दिन तक नहीं किन्तु पीछे होवे। इस में भी जिस पाये में हो उस पक्ष (अर्थात् १ ले पाये में हो तो आषाढ़ वदि, २ रे में हो तो आषाढ़ सुदि ३ रे में हो तो श्रावण वदि और ४ थे में हो तो श्रावण सुदि) में अनावृष्टि होवे।

चार जो पाये मूल के तपें ज्येष्ठ के मास।
चार पक्ष में जानिये अति घन पावस आस ॥ १११४ ॥

मूल के चारों पायों में धूप तपे तो उपरोक्त चारों पक्ष में बहुत वर्षा होवे।

पूर्वाषाढ़ादि २७ ही नक्षत्रों का "प्रवर्षण" योग।

ज्येष्ठे मूलमतिक्रम्य पूर्वाषाढादिभिस्तदा।
सप्तविंशतिऋक्षैस्तु यदि विन्दुः प्रवर्षति ॥ १११५ ॥
गर्भे द्रोणाक्षरं विद्यान्मात्रायाः प्रस्तसञ्ज्ञकम्।
गृहीतं तद्दिने गर्भं सङ्क्षेपात्तद्वदाम्यहम् ॥ १११६ ॥

आषाढ़ में वदि के पूर्वाषाढ़ा से सुदि के मूल तक प्रवर्षण काल है। अतः इस समय की वर्षा से सम्पूर्ण वर्षा काल का शुभाशुभ तथा वर्षाओं के जल का परिमाण विदित होता है। (इस का निर्णय 'प्रवर्षण प्रकरण' में देखो।)

श्रवण धनिष्ठा नक्षत्र योग।

आषाढे कृष्णपक्षे च धनिष्ठा श्रवणं तथा।
गर्जविद्युद्विहीनं स्याद्देशभङ्गं तदाऽऽदिशेत् ॥ १११७ ॥

आषाढ़ वदि मे श्रवण तथा धनिष्ठा में बादल, बिजली वा कुछ भी गाज हो तब तो सुभिक्ष, किन्तु नहीं हो तो दुर्भिक्ष होवे।

रोहिणी नक्षत्र योग।

पुरादुदग्यत् पुरतोऽपि वा स्थलं त्र्यहोषितस्तत्र हुताशतत्परः।
ग्रहान् सनक्षत्रगणान् समालिखेत् सधूपपुष्पैर्बलिभिश्च पूजयेत्॥१११८
सरत्नतोयौषधिभिश्चतुर्दिशं तरुप्रवालापिहितैः सुपूजितैः।
अकालमूलैःकलशैरलङ्कृतं कुशास्तृतं स्थण्डिलमावसेद् द्विजः१११९

आषाढ़ वदि मे रोहिणी हो उस के प्रथम दिन से ही राज्य का मुख्य ज्योतिषी नगर के बाहर उत्तर वा पूर्व में एकान्त पवित्र स्थान में ३ दिन तक उपवासित रह के हवन कर के नक्षत्रों सहित ग्रहों को लिख के धूप पुष्प नैवेद्य आदि से पूजा कर के उस स्थान को रत्न, जल, ओषधि तथा वृक्षों के कोमल पत्तों से सुशोभित कर के मिट्टी के घड़े (जिन के पैंदे काले न हों) उनको पास रख कर के निकट ही कुशा के आसन पर बैठे।

कुम्भ द्वारा वर्षा का ज्ञान।

आलभ्य मन्त्रेण महाव्रतेन वीजानि सर्वाणि निधाय कुम्भे।
धान्यानि चामीकरदर्भतोयैर्होमो मरुद्वारुणसोममन्त्रैः ॥ ११२० ॥
वृत्ते तु योगे ऽङ्कुरितानि यानि सन्तीह वीजानि धृतानि कुम्भे।
येषां तु योंशो ऽङ्कुरितस्तदंशस्तेषां विवृद्धिं समुपैति नान्यः ११२१

फिर रोहिणी नक्षत्र लगे उस समय 'महा व्रत' नामक मन्त्र से सर्व धान्य के वीजों को मन्त्रित कर के घड़े में डाले तथा सुवर्ण, कुशा और जल भी उस में डाल के वायु, वरुण तथा चन्द्रमा के मन्त्रों से हवन करे। रोहिणी नक्षत्र समाप्त होने पर कुम्भ में के जिन धान्यों के अंकुर निकले हों वे धान्य तो उस वर्ष में उत्पन्न होवे, किन्तु जिन के न निकले हों वे नहीं होवें।

नामाङ्कितैस्तैरुदगादि कुम्भैः प्रदक्षिणं श्रावणमासपूर्वैः।
पूर्णैः स मासः सलिलस्य दाता स्तुतैरवृष्टिः परिकल्प्यमूनैः ॥ ११२२ ॥

रोहिणी में पानी से पूर्ण भरे हुये मिट्टी के ४ घड़े उत्तरादि ४ दिशाओं में क्रम से श्रावण आदि ४ महीनों के लिये रखे। फिर रोहिणी वीतने पर जिस दिशा का घड़ा पूर्ण भरा रहे उस मास में वर्षा किन्तु खाली हो जावे उस में अनावृष्टि और थोड़ा खाली हो उस में मध्यम वर्षा होवे।

अन्यैश्च कुम्भैर्नृपनामचिह्नैर्देशाङ्कितैश्चाप्यपरैस्तथैव।
भग्नैः स्तुतैर्न्यूनजलैः सुपूर्णैर्भाग्यानि वाच्यानि यथानुरूपम् ॥ ११२३

ऐसे ही राजा, मन्त्री, सेनापति तथा देश, मण्डल, नगर आदि के लिये भी पानी से पूर्ण भरे हुये मिट्टी के घड़े पृथक् २ रखे उन में जिस के नाम का घड़ा फूटे उस का नाश, खाली हो उस को हानि, थोड़ा खाली हो उस को कष्ट और पूर्ण भरा रहे उस को सुख उस वर्ष में होवे।

(पशुओं के नगर प्रवेश से वर्षा का ज्ञान।)

सन्ध्यायां पुरतो विसेन्न नगरे कृष्णे पशुर्वा वृषो

पूर्णा वृष्टिकरोऽसिता च सुरभिः सौख्यप्रदा प्राणिनाम्।
श्वेता वृष्टिविघातिनी च कपिला वातप्रदा पाटला
शस्यध्वंसकरी तथैव सवला मध्या फला कीर्त्तिता ॥ ११२४ ॥

रोहिणी के दिन सन्ध्या को गायें आदि पशु जंगल से पीछे लौट के नगर में प्रवेश करें उन में सब से पहिले बैल तो किसी वर्ण का हो किन्तु गाय आदि कोई पशु काले वर्ण का हो तो बहुत वर्षा तथा सुभिक्ष, श्वेत हो तो अनावृष्टि तथा दुर्भिक्ष, कपिल हो तो वायु का ज़ोर तथा पीछे से वर्षा, लाल हो तो धान्य का नाश, और संवल (न अति श्वेत और न अति कृष्ण) हो तो संवत् मध्यम होवे। सारांश-वर्ण श्वेत से अनावृष्टि और कृष्ण से सुवृष्टि जाने।

(वायु द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आषाढ़ वदि में रोहिणी के दिन काले रंग के महीन वस्त्र की ४ हाथ लम्बी ध्वजा १२ हाथ के काष्ठ के दण्ड पर बांध के वायु की परीक्षा करे।

तत्रार्द्धमासाः प्रहरैर्विकल्प्या वर्षानिमित्तं दिवसास्तदंशैः।
सव्येन गच्छन् शुभदः सदैव यस्मिन् प्रतिष्ठा बलवान् स वायुः ११२५

रोहिणी में वायु सव्य (उत्तर से ईशान, ईशान से पूर्व, इस क्रम से) हो तो शुभ, किन्तु अपसव्य (उत्तर से वायव्य, वायव्य से पश्चिम,-इस क्रम से) हो तो अशुभ होवे। दिन रात्रि के ८ प्रहर से वर्षा काल के श्रावणादि ४ महीनों के ८ पक्ष की अर्थात १। १ प्रहर से १। १ पक्ष की (उस मे भी ॥-॥ घड़ी से १।१ दिन की) वर्षा क्रम से जाने। जिस प्रहर वा घड़ी में वायु शुभ हो उस पक्ष वा दिन में वृष्टि और जिस में अशुभ हो उस में अनावृष्टि होवे। जो वायु अधिक बलवान् हो उसी के अनुसार फल जाने।

(बादल द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

दधिरौप्यामलक्षौद्रताम्राभारुणसन्निभाः।
शुककौशेयमाञ्जिष्ठास्तपनीयसमप्रभाः ॥ ११२६ ॥

अच्छिन्नमूलाः सुस्निग्धाः पर्वताकारसन्निभाः ।
घना घनाः प्रशस्यन्ते विद्युत्स्तनितसङ्कुलाः ॥ ११२७ ॥

सशिखिचातकदर्दुरनिःस्वनैर्यदि विमिश्रितमन्द्रपटुस्वनाः ।
खमवतत्यदिगन्तविलम्बिनः सलिलदाः सलिलौघमुचः क्षितौ ११२८

निगदितरूपैर्जलधरजालैस्त्र्यहमवरुद्धं द्व्यहमथवाह्नः ।
यदि वियदेवं भवति सुभिक्षं मुदितजना च प्रचुरजला भूः ॥११२९॥

रोहिणी में बादल दही, चाँदी वा बगुले जैसे अति श्वेत; काजल वा भौंरे जैसे अति काले; तांवे, मजीठ वा सिन्दूर जैसे अति लाल; तोते वा पन्ने जैसे अति हरे; सुवर्ण जैसे अति पीले; रेशम जैसे चमकीले; मोर, पपीहा, मैंडक, वृक्ष वा पर्वत के आकार के, नीचे से विना कटे हुये; बहुत बड़े २; अत्यन्त स्निग्ध विजली, गाज, धनुष् सहित; तथा आकाश में चारों ओर फैलने वाले-३ । २ वा १ भी दिन तक आकाश में रहें तो वहुत वर्षा तथा सुभिक्ष और लोक में आनन्द होवे ।

रूक्षैरल्पैर्मारुताक्षिप्तदेहैरुष्ट्रध्वाङ्क्षप्रेतशाखामृगाभैः ।
अन्येषां वा निन्दितानां स्वरूपैर्मूकैश्चाब्दैर्नो शिवं नापि वृष्टिः॥११३०

रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघडम्बरम् ।
मध्याह्ने जलविन्दुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥ ११३१ ॥

किन्तु रूक्ष; अल्प, शीघ्र २ चलने वाले; ऊंट, वानर, विल्ली, कौवा, प्रेत, राक्षस आदि निन्दित आकार के; गाज रहित; तथा प्रभात को तो वहुत, किन्तु रात्रि में नहीं हों; और मध्याह्न को उन में से जल की बूंदें गिरें तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा अकल्याण होवे ।

पूर्वोद्भूतैः शस्यनिष्पत्तिरब्दैराग्नेयाशासम्भवैरग्निकोपः ।
याम्ये शस्यं क्षीयते नैर्ऋते ऽर्द्धं पश्चाज्जातैः शोभना वृष्टिरब्दैः॥११३२

वायव्योत्थैर्वातवृष्टिः क्वचिच्च पुष्टा वृष्टिः सौम्यकाष्ठासमुत्थैः ।
श्रेष्ठं शस्यं स्थाणुदिक्सम्प्रसूतैर्वायुश्चैवं दिक्षु धत्ते फलानि॥११३३

वायु वा बादल पूर्व के हो तो धान्य की उत्पत्ति, अग्नि के हों तो अग्नि का उपद्रव, दक्षिण के हों तो धान्य का नाश, नैर्ऋत्य के हों तो आधे धान्य का नाश, पश्चिम के हों तो उत्तम वर्षा, वायव्य के हों तो कहीं २ वायु सहित वर्षा, उत्तर के हों तो सुवृष्टि और ईशान के हों तो धान्य बहुत उत्पन्न होवे।

अवृष्टो रोहिणीयोगे न च पूर्वोत्तरानिलः।
वृषान्मुञ्च गृहं यामः पर्याप्तं कृपिलक्षणम् ॥ ११३४ ॥

रोहिणी में कुछ भी वर्षा न हो अथवा पूर्व, उत्तर वा ईशान का वायु भी न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

विगतघने वा वियति विवस्वानमृदुमयूखः सलिलकृदेवम्।
सर इव फुल्लं निशि कुमुदाढ्यं खमुडु विशुद्धं यदि च सुवृष्टयै॥११३५

रोहिणी में बादल के विना भी यदि स्वच्छ आकाश में सूर्य बहुत ज़ोर से तपे और रात्रि में निर्मल स्वच्छ तारे बहुत चमकें तो सुभिक्ष होवे।

उल्कानिपातास्तडितोऽशनिश्च दिग्दाहनिर्घातमहीप्रकम्पाः।
नादा मृगाणां सपतत्रिणां च ग्राह्या यथैवाम्बुधरास्तथैव॥११३६॥

रोहिणी मे उल्का पात, विजली, अशनि, दिग्दाह, निर्घात, भूमिकम्प तथा पशु वा पक्षी के शब्द का शुभाशुभ फल भी बादलों की दिशाओं के अनुसार जाने।

(रोहिणी से चन्द्रमा उत्तर आदि दिशाओं में हो ने से वर्षा का ज्ञान)

स्पृशन्नुदग्याति यदा शशाङ्कस्तदा सुवृष्टिर्बहुलोपसर्गा।
असंस्पृशन् योगमुदक्समेतः करोति वृष्टिं विपुलां शिवं च ११३७

उदितं यदि शीतदीधितं प्रथमं पृष्ठत एति रोहिणी।
शुभमेव तदा स्मरातुराः प्रमदा कामवशेन संस्थिताः ॥ ११३८ ॥

दूरगो निकटगोऽथवा शशी दक्षिणे पथि यथा तथा स्थितः।
रोहिणीं यदि भुनक्ति सर्वथा कष्टमेव जगतो विनिर्दिशेत्॥११३९

अनुगच्छति पृष्ठतः शशी यदि कामी वनितामिव प्रियाम् ।
मकरध्वजबाणखेदिताः प्रमदानां वशगास्तदा नराः ॥ ११४० ॥
याते स्थाणुदिशं गुणाः सुबहवः शस्यार्घवृष्ट्यादयः
आग्नेय्यां दिशि चन्द्रमा यदि भवेत्तत्रोपसर्गो महान् ।
नैर्ऋत्यां समुपद्रुतानि निधनं शस्यानि यान्तीतिभिः
प्राजेशानिलदिक्स्थिते हिमकरे शस्यस्य मध्यत्त्व योः ॥ ११४१ ॥

रोहिणी के दिन (पिछली रात्रि के समय पूर्व की ओर) चन्द्रमा रोहिणी के उत्तर में हो तो सुवृष्टि, किन्तु स्पर्श करता हुआ जावे तो अनेक उपद्रव, और विना स्पर्श किये ही जावे तो कल्याण; ईशान में हो तो सुवृष्टि, सुभिक्ष. आरोग्य आदि; पूर्व में हो तो शुभ तथा स्त्रियें पुरुषों के वश में; अग्नि में हो तो बहुत उपद्रव; दक्षिण में हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, महामारी आदि; नैर्ऋत्य म हो तो अति वृष्टि, टिड्डी आदि से धान्य का नाश; पश्चिम में हो तो पुरुष स्त्रियों के वश में; और वायव्य में हो तो धान्य की मध्यम वृद्धि होवे।

रोहिणीशकटमध्यसंस्थिते चन्द्रमस्यशरणीकृता जनाः ।
क्वापि यान्ति शिशुयाचिताशनाः सूर्यतप्तपिठरानुपायिनः ॥ ११४२
ताडयेद्यदि च योगतारकामावृणोति वपुषा यदा ऽपि वा ।
ताडने भयमुशन्ति दारुणं छादने नृपवधो ऽङ्गनाकृतः ॥ ११४३ ॥

चन्द्रमा रोहिणी (गाड़ी के आकार के ५ तारों) के बीच में हो तो भयानक दुर्भिक्ष, ५ में से अधिक प्रकाशवान् 'योग तारे' को स्पर्श करे तो महा भय और योग तारे के ऊपर हो (तारे को छिपा दे) तो किसी स्त्री से उस देश के राजा की मृत्यु होवे।

दृश्यते न यदि रोहिणीयुतश्चन्द्रमा नभसि तोयदावृते ।
रुग्भयं महदुपस्थितं तदा भूश्च भूरिजलशस्यसंयुता ॥ ११४४ ॥

रोहिणी के दिन बादलों से चन्द्रमा और रोहिणी नहीं दीखें तो वर्षा तथा धान्य बहुत. किन्तु रोगों का भय होवे।

चित्रा नक्षत्र योग।

चित्रायां दक्षिणे मार्गे यदि चरति चन्द्रमाः।
सर्वरत्नं परित्यज्य कर्तव्यो धान्यसङ्ग्रहः ॥ ११४५ ॥

आषाढ़ सुदि में चन्द्रमा चित्रा से दक्षिण में निकले तो दुर्भिक्ष, किन्तु उत्तर में निकले तो सुभिक्ष होवे।

स्वाति नक्षत्र योग।

दृष्टे ऽह्निभागे प्रथमे सुवृष्टिस्तद्वद् द्वितीये तु सकीटसर्पा।
वृष्टिस्तु मध्या परभागवृष्टे निश्छिद्रवृष्टिर्युनिशं प्रवृष्टे॥११४६॥

स्वातौ निशांशे प्रथमे ऽभिवृष्टे शस्यानि सर्वाण्युपयान्ति वृद्धिम्।
भागे द्वितीये तिलमुद्गमाषा ग्रैष्मं तृतीये ऽस्ति न शारदानि ११४७

आषाढ़ सुदि में स्वाति को वर्षा दिन के पहले भाग में हो तो उत्तम वर्षा, दूसरे में हो तो सुवृष्टि किन्तु सर्प आदि विषैले कीड़ों की वृद्धि और तीसरे में हो तो मध्यम वर्षा; तथा रात्रि के पहले भाग में हो तो सर्व धान्य की वृद्धि, दूसरे में हो तो तिल मूंग उड़द की उत्पत्ति, और तीसरे में हो तो धान्य ऋतु ग्रीष्म का तो उत्पन्न किन्तु शरद् का नाश; और दिन रात्रि में हो तो वर्षा काल में सुवृष्टि होवे।

सममुत्तरेण तारा चित्रायाः कीर्त्यते ह्यपावत्सः।
तस्यासन्ने चन्द्र स्वातेर्योगः शिवो भवति ॥ ११४८ ॥

स्वाति के दिन रात्रि में चन्द्रमा चित्रा से उत्तर में 'अपावत्स' तारे के निकट हो तो कल्याण होवे।

चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र योग।

चित्रां स्वातौ विशाखायामाषाढे चैव ऋक्षति।
न वर्षन्ति तदा मेघा दुर्भिक्षं चैव लक्षणम् ॥ ११४९ ॥

आषाढ़ सुदि में चित्रा, स्वाति और विशाखा में वर्षा न हो तो एक मास तक प्रायः दुर्भिक्ष होवे।

स्वाति और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र योग।

यद्रोहिणीयोगफलं तदेव स्वातावषाढासहिते च चन्द्रे।
आषाढशुक्ले निखिलं विचिन्त्यं यो ऽस्मिन्विशेषस्तमहं प्रवक्ष्ये ११५०

आषाढ़ वदि में 'रोहिणी योग' में जो जो बातें देखने को कही है वे सब आषाढ़ सुदि में 'स्वाति' तथा 'पूर्वाषाढ़ा' में भी देखे तथा अपने २ योग में लिखे अनुसार और भी विशेष बातें देखे।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र योग।

हेमी प्रधाना रजतेन मध्या तयोरलाभे खादिरेण कार्या।
विद्धः पुमान् येन शरेण सा वा तुला प्रमाणेन भवेद्वितस्तिः ११५१

धान्यादि तौलने के लिये तराजू की डण्डी सुवर्ण की हो तो उत्तम. चाँदी की हो तो मध्यम, किन्तु यह नहीं मिले तो खैर के काष्ट की वा (जिस तीर से मनुष्य विधा हो उस की १ बालिस्त (१२ अंगुल) लम्बी बनावे।

क्षौमं चतुः सूत्रकसन्निबद्धं षडङ्गुलं शिक्यकवस्त्रमस्याः।
सूत्रप्रमाणं च दशाङ्गुलानि षडेव कक्ष्यो भयशिक्यमध्ये ॥११५२॥

उसके दोनों पलड़े रेशम वा शण आदि के ६। ६ अंगुल चौड़े और उन के चारों कोनों में १०।१० अंगुल की ४ डोरियें लगावे और डण्डी को बीच में पकड़ने के लिये ६ अंगुल की डोरी डाले।फिर निचे लिखे मंत्र से तराजूको मंत्रे।

(तराजू का मन्त्र।)

"स्तोतव्या मन्त्रयोगेन सत्या देवी सरस्वती।
दर्शयिष्यसि यत्सत्यं सत्ये सत्यव्रता ह्यसि ॥ ११५३ ॥
येन सत्येन चन्द्रार्कौ ग्रहा ज्योतिर्गणास्तथा।
उत्तिष्ठन्तीह पूर्वेण पश्चादस्तं व्रजन्ति च ॥ ११५४ ॥
यत्सत्यं सर्ववेदेषु यत्सत्यं ब्रह्मवादिषु।
यत्सत्य त्रिषु लोकेषु तत्सत्यमिह दृश्यताम् ॥ ११५५ ॥

ब्रह्मणो दुहितासि त्वमादित्येति प्रकीर्त्तिता।
काश्यपी गोत्रतश्चैव नामतो विश्रुता तुला" ॥११५६॥

—×—

याम्ये शिक्ये काञ्चनं सन्निवेश्यं शेषद्रव्याण्युत्तरे ऽम्बूनि चैव ११५७

फिर संध्या के समय पूर्व भी मुख बैठके तराजू के दक्षिण बाजू के पलड़े में सुवर्ण मुद्रा (मोहर) रखे और उतर के पलड़े में दूसरी वस्तुओं को तौल २ के जुदी २ रखे।

दन्तैर्नागा गोहयाद्याश्च लोम्ना हेम्ना भूपाः शिक्थकेन द्विजाद्याः।
तद्वद् देशा वर्ष मासा दिशाश्च शेषं द्रव्याण्यात्मरूपास्थितानि११५८

हाथियों के लिये हाथी दांत; गाय, घोड़ा, बकरी आदि के लिये उन के केश, और राजाओं के लिये सोने की तथा ब्राह्मणादि वर्णों, देशों, दिशाओ, वर्षो और महीनों आदि के लिये मोम की जुदी २ मूर्त्तियें कल्पना करके तौले और दूसरे जितने द्रव्य हैं उन के लिये उन्हीं को रखके तौले।

हीनस्य नाशोऽभ्यधिकस्य वृद्धिस्तुल्येन तुल्यं तुलितं तुलायाम।
तोयैः कौप्यैः सैन्धवैः सारसैश्च वृष्टिर्हीना मध्यमा चोत्तमा च।११५९

दूसरे दिन प्रातःकाल पीछी तौलने से जो वस्तु घटे उस का नाश, बढ़े उस की वृद्धि और जो न घटे और न बढ़े वह समान रहे। उसी प्रकार पानी कुए का बढ़े तो अल्प, झरने का बढ़े तो मध्यम और तालाब का बढ़े तो अधिक वर्षा होवे किन्तु जो तीनों ही का पानी घटे तो अनावृष्टि होवे।

एतत्तुला कोश रहस्य मुक्तं प्राजेश योगेऽपि नरो विदध्यात् ११६०

यह वस्तु तौलने की विधि परम गुप्त थी वह यहां कही है इस को 'रोहिणी योग' में भी ऐसे ही तोल के देखे।

वायु की दिशा का फल।

निष्पत्ति रग्निकोपो वृष्टिर्मन्दाऽथ मध्यमा श्रेष्ठा।
बहु जल पवना पुष्टा शुभा च पूर्वादिभिः पवनैः ॥११६१॥

इस दिन वायु पूर्व का हो तो सर्व धान्य की उत्पत्ति, अग्नि कोण का हो तो अग्नि का उपद्रव, दक्षिण का हो तो मन्द वर्षा, नैऋत्य का हो तो मध्यम वर्षा, पश्चिम का हो तो श्रेष्ठ वर्षा, वायव्य का हो तो वायु तथा वर्षा अधिक, उत्तर का हो तो सुवृष्टि और ईशान का हो तो अति श्रेष्ठ वर्षा होवे।

रोहिणी स्वाति पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र योग।

स्वातावषाढास्वथ रोहिणीषु पापग्रहा योगगता न शस्ताः।
ग्राह्यं तु योगद्वयमप्युयोष्य यदाऽधि मासो द्विगुणी करोति॥११६२॥

रोहिणी, स्वाति और पूर्वाषाढा योग के दिन उन नक्षत्रों पर ग्रह क्रूर हो तो अशुभ किन्तु सौम्य हो तो शुभ होवे। और जिस वर्ष में आषाढ़ अधिक मास हो तो दोनों ही महीनों में 'रोहिणी' तथा पूर्वाषाढ़ा' योग देखे।

त्रये ऽपियोगाः सदृशाः फलेन यदा तदा वाच्य मसंशयेन।
विपर्यये यत्विह रोहिणीजं फलं तदेवाभ्यधिकं निगद्यम् ११६३

रोहिणी, स्वाति और पूर्वाषाढ़ा ये तीनों योग एक सरीखे निकले तो उनका फल निःसंशय कह देवे किन्तु इन में एक दूसरे से विपरीतता (कोई शुभ और कोई अशुभ) हो तो फिर 'रोहिणी योग' का जो फल हो वही कहे।

आषाढ़ वदि १ योग।

ज्येष्ठे व्यतीते प्रथमा प्रतिपद् घन गर्जितैः।
विद्युता वर्षणेनापि द्विमास्यां मेघ बाधिका॥ ११६४॥

गाजगुने तहां करवरो जान। देखे बीज तहां कुछ हान॥११६५

आषाढ़ वदि १ को बिजली चमके, गाजे वा वर्षे तो २ महीनों तक अनावृष्टि होवे।

आषाढ़ वदि २ योग।

ज्येष्ठे कृष्णेद्वितीयायां सर्वबीजविनाशकृत।
अनावृष्टया वा ऽनि वृष्ट्या वा स्थिरयेव पुनिर ग्रवीन्॥११६६॥

आषाढ वदि २ को मूल हो तो अतिवृष्टि वा अनावृष्टि से बोये हुये धान्य का नाश हो जावे।

परनु आषाढी दूजवदि निर्मल चन्द्र उगन्त।

वार सोम गुरु शुक्र हो (तो) जल थल एक करन्त ॥ ११६७॥

आषाढ़ वदि २ को वार सोम गुरु वा शुक्र हो और रात्रि में चन्द्रमा निर्मल उदय हो तो बहुत वर्षा होवे।

आषाढ़ वदि ४ योग।

आषाढकृष्णातुर्यायामास्तेभास्करमण्डले।

न वर्षति यदा मेघस्तदा कष्टतरं जलम् ॥ ११६८॥

आषाढ़ वदि ४ को सूर्य अस्त होने पर्यन्त कुछ भी वर्षा न हो तो वर्षा कम होवे।

शुचौ कृष्णे चतुर्थ्यां चेत्तुषारानपि पातयेत्।

जलपक्षैस्तदा सर्वं स्वस्थं भवति भूतले ॥ १·६९॥

आषाढ़ वदि ४ को धूहर वा छींटे पड़े तो वर्षा के लिये श्रेष्ठ होवे।

आषाढ़ वदि ५ योग।

आषाढां वदि पंचमी नहिं बादल नहिं बीज।

करसा करसण मत करो धरणी न नाखो बीज ॥ ११७०॥

आषाढ़ वदि ५ को बादल, बीजली आदि कुछ भी न हो तो खेती के उपयोगी वर्षा न होवे अतः धान्य का बोना वृथा है।

आषाढ़ वदि ६ योग।

आषाढ षष्टि दिवसे कृष्णे पक्षे शनिर्यदा।

तदा गोधूम का ग्राहया द्विगुणा यतु कार्त्तिके ॥ ११७१॥

आषाढ़ वदि ६ को शनिवार हो तो गेहूं ख़रीद के कार्त्तिक में बेचने से लाभ होवे।

आषाढ़ वदि ८ (बोहरा आठम) योग।

आषाढे शनिरेवसामष्टम्यां सङ्गतो यदा।

तदा वृष्टिनिरोधेन कष्टमुत्कृष्ट मादिशेत् ॥ ११७२॥

आषाढ़ वदि ८ को शनिवार और रेवती नक्षत्र हो तो वर्षा का अवरोध होवे जिस से वहुत कष्ट भोगे।

धुर आषाढों अष्टमी उत्तर वहे समीर।
इन्द्र महोत्सव माघ जी श्रावण वर्षे नीर॥ ११७३॥
जो पूरव तो कर्वरा जो दक्षिण तो काल।
समया सखरा नीपजे (जो) वाजे पश्चिम न्हाल॥ ११७४॥

आषाढ़ वदि ८ को वायु उत्तर का चले तो श्रवण में वहुत वर्षा, पूर्व का चले तो खण्ड वर्षा, दक्षिण का चले तो अनावृष्टि और पश्चिम का चले तो सुवृष्टि होवे जिस से उत्तम सुभिक्ष होवे।

आषाढे कृष्ण अष्टम्यां गर्जितं वर्षणन्तदा।
चातुर्मासे वहु जलं वर्षणस्य तदा मही॥ ११७५॥

आषाढ़ वदि ८ को गाजे वा वर्षे तो वर्षा काल के चारों महीनों में वहुत वर्षा होवे।

आषाढे कृष्ण पक्षे तु चाष्टम्या शशि चिन्तितम्।
उदयत्यभ्रमध्ये तुः ह्यखण्डो जल वर्षति॥ ११७६॥
कदाचिद्दैव योगेन निर्मलो भवते शशी।
वृष्टि काले न छिद्रान्ति कूपेषु दृश्यते जलम्॥ ११७७॥

आषाढ़ वदि ८ को मध्य रात्रि के समय चन्द्रमा उदय वादलों में हो तो वर्षा काल के चारो महीनों में लगातार वर्षा होवे किन्तु निर्मल ही हो तो वर्षा नहीं होवे जिस से कुओं के अतिरिक्त कहीं पानी नहीं मिले।

काला वादल कुरवरा धोलाकरे सुकाल।
चन्दा ऊगे निर्मला (तो) पड़े अचिन्ता काल॥ ११७८॥

आषाढ़ वदि ८ को रात्रि में उदय होते समय चन्द्रमा वा-

दल श्वेत में हो तो उत्तम सुभिक्ष, काले में हो तो मध्यम संवत् और निर्मल वा धुन्ध में हो तो दुर्भिक्ष तथा विग्रह होवे।

आषाढ़ वदि ९ योग।

नागिन तीन सौ साठ दिन मत कर लगन विचार।
गिन नवमी आषाढ़ वदि होय कौन से वार ॥ ११७९ ॥
रवि अकाल मंगल जग डिगे। बुधा समय सम भाव लगे।
सोम शुक्र सुर गुरु जो होय। पहुमी फूल फलन्ती जोय॥११८०॥
दैव संयोगे शनि मिले (तो) निश्चय रौरव होय ॥ ११८१ ॥

संवत् का फल जानने के लिये वर्ष की ३६० तिथियों को छोड़ के केवल एक आषाढ़ वदि ९ के वार ही को देखे। यदि रवि हो तो दुर्भिक्ष, मंगल हो तो युद्ध आदि उपद्रव, बुध हो तो मध्यम संवत् सोम गुरु वा शुक्र हो तो उत्तग सुभिक्ष, किन्तु शनि हो तो भयानक दुर्भिक्ष होवे।

आषाढे नवमी कृष्णा विद्युदम्भोदशेखरे।
विक्रयः सर्वधान्यानां कर्षणे वै हिताय च ॥ ११८२ ॥

आषाढ़ वदि ९ को बादल हो वा बिजली चमके तो सुवृष्टि होवे. अतः सम्पूर्ण धान्य वेच के खेतियों के लिये यत्न करे।

आषाढ़ वदि ३० योग।

आषाढस्याप्यमावस्या यदि सोमवती भवेत्।
सुभिक्षं कुरुते ऽवश्यं नक्षत्रमृगसप्तके ॥ ११८३ ॥

आषाढ़ वदि ३० को सोम वार और मृगशिर से ले के पूर्वा फाल्गुनी तक के ७ में से कोई नक्षत्र हो तो अवश्य सुभिक्ष होवे।

आषाढ़ सुदि १ योग।

यावती भुक्तिराषाढे शुक्ले प्रतिपदादिने।
पुनर्वसुचतुर्मास्य वृष्टिः स्यात्तावती स्फुटम् ॥ ११८४ ॥

आषाढ़ सुदि १ को पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घड़ी हो उतनी वर्षा

४ महीनों में अर्थात् ६० घड़ी हों तो ४, ४५ हो तो ३, ३० हों तो २ और १५ हों तो १ महीने,-इस अनुमानसे होवे।

आषाढ़ सुदि २ योग।

आषाढे सितपक्षस्य द्वितीया पुष्यसंयुता।
यावन्मात्रं भवेत्पुष्यं तावन्मात्रा विंशोपकाः॥ ११८५॥

आषाढ़ सुदि २ को जितनी घड़ी पुष्य हो उस के अनुमान से (यथा ६० घड़ी हों तो २० विश्वे) संवत् जाने।

वरसन्त शुक्ल द्वितीया आषाढ़ श्रावण फूटैं सर नाड खाड॥११८६॥

आषाढ़ सुदि २ को वर्षा हो तो श्रावणमें बहुत वर्षा होवे।

आषाढ़ सुदि ४ योग।

चतुर्थ्यान्तु सिताषाढे विद्युद्वर्षाश्च गर्जितम्।
तदा वर्षति पर्जन्यो वर्षाकाले न संशयः॥ ११८७॥
अथवा दैवयोगेन मेघभावो न विद्यते।
तदा जलं समुद्रे स्यात्पुस्तके वा प्रदृश्यते॥ ११८८॥

आषाढ़ सुदि ४ को बादल, बिजली, गाज वा वर्षा हो तो सुभिक्ष करने योग्य उत्तम वर्षा होवे; किन्तु बादल, बिजली गाज आदि कुछ न हो तो पानी केवल समुद्र में वा पुस्तक पत्रों में ही लिखा दीखे अर्थात् वर्षा नहीं होवे।

आषाढ़ सुदि ४। ५ योग।

आषाढशुक्लनियतं विद्युल्लक्षणमद्भुतम्।
चतुर्थी पञ्चमी चैव परीक्षेत प्रयत्नतः॥ ११८९॥
सर्वशस्येषु निष्पत्तिं विद्युतो दर्शयन्ति हि॥ ११९०॥

आषाढ़ सुदि ४। ५ को बिजली चमके तो सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न होवें। इस लिये बिजली को अवश्य देखें।

ऐन्द्र्यां चेत् स्फुरते विद्युदैन्द्राश्चापीह मारुतः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं निर्वृत्तिं च विनिर्दिशेत्॥ ११९१॥

आग्नेय्यां चेदुभौ स्यातां भयं तत्र महद्भवेत् ।
अनावृष्टिश्च लोकस्य शस्त्राग्निभयमेवच ॥ ११९२ ॥
याम्यायां स्फुरते विद्युद्याम्यश्चापि हि मारुतः ।
विषमा तु समां विद्याद् व्याधिमृत्युभया कुलम् ॥ ११९३ ॥
कनीयसी तु नैर्ऋत्यां तथा वह्नीतिका समा ।
मध्यमा शस्यसम्पत्स्याद्वारुण्यां व्याधिसङ्कुला ॥ ११९४ ॥
पतङ्गदंशमशका वायव्यां मध्यशस्यदाः ।
अतिचारी भयं विद्यात् सौम्यायां भूरिसम्पदम् ॥ ११९५ ॥
निवृत्तिः शस्यसम्पत्तिः प्रधानैशानगोचरे ॥ ११९६ ॥
यदा च सर्वाः स्पन्दन्ते विषमावृष्टिमादिशेत् ।
प्रतिलोमेषु वातेषु ईतिवाहुल्यमादिशेत ॥ ११९७ ॥

आषाढ़ सुदि ४।५ इन दोनों दिनों में बिजली तथा वायु पूर्व के हों तो सुभिक्ष, अग्नि के हों तो अनावृष्टि, दक्षिण के हों तो संवत मध्यम, नर्ऋत्य के हों तो संवत् नेष्ट, पश्चिम के हो तो संवत् मध्यम, वायव्य के हो तो टीडी आदि जन्तुओंका उपद्रव, उत्तर के हों तो बहुत सम्पत्ति, ईशान के हों तो सुभिक्ष. और सब ओर के हों तो विषम वर्षा; तथा जिस दिशा में बिजली हो उस से सामने का वायु हो तो बहुत प्रकार की ईति (टिड्डी आदि का उपद्रव) होवे।

शुभायां स्पन्दमानायामनिष्टा स्पन्दते यदि ।
सम्पद्यते महाशस्यं महाँश्च स्यादुपद्रवः ॥ ११९८ ॥
अशुभा स्पन्दते पूर्वा यदा पश्चाच्च शोभना ।
सुवृष्टिमेव तत्राहुर्न च शस्यं समृद्ध्यति ॥ ११९९ ॥

बिजली पहिले शुभ दिशा में और पीछे अशुभ दिशा में चमके तो धान्य बहुत उत्पन्न होवे, किन्तु साथ म उपद्रव भी अधिक होवे; और जो पहिले अशुभ दिशा में और पीछे शुभ दिशा में चमके तो वर्षा तो अच्छी होवे, किन्तु धान्य उत्पन्न नहीं होवे। इन दिनों की बिजली से गुजरात में आनन्द मनाते हैं।

आषाढ़ सुदि ५ योग।

आषाढमासे सितपञ्चमी स्याद्रव्यादि वारेषु यथा क्रमेण।
अत्यल्पवृष्टिर्विपुला च वृष्टिर्युद्धं शुभं क्षेमसुख विनाशम्॥१२००॥

आषाढ़ सुदि ५ को वार रवि हो तो अल्प वर्षा, सोम हो तो अति वर्षा, मंगल हो तो युद्ध, बुध हो तो शुभ, गुरु हो तो क्षेम, शुक्र हो तो सुख और शनि हो तो विनाश होवे।

आषाढे शुक्लपञ्चम्यां शुभे वारे शुभे क्षिते।
सम्पूर्णा निखिला धात्री धनधान्यकुला धरा॥ १२०१॥
क्रूरग्रहयुते वारे लग्ने क्रूरक्षिते यदा।
दुर्भिक्षं मरणं व्याधिश्चौरबाधा सतां तथा॥ १२०२॥

आषाढ़ सुदि ५ प्रवेश हो उस समय के लग्न को देखने वाला ग्रह तथा उस दिन का वार दोनों शुभ हों तो सम्पूर्ण पृथिवी में धन धान्य की बहुत वृद्धि: किन्तु क्रूर हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, व्याधि.,मृत्यु तथा चोरों का उपद्रव होवे।

आषाढे शुक्लपञ्चम्यां पश्चिमो यदि मारुतः।
वर्षागर्जितसंयुक्तः शक्रचापेन भूषितः॥ १२०३॥
तदा सङ्गृह्यते धान्यं कार्त्तिके तन्महर्घता।
लाभाय जायते नूनं नान्यथा ऋषिभाषितम्॥ १२०४॥

आषाढ़ सुदि ५ को पश्चिम का वायु, गाज, वर्षा और धनुष हो तो गेहूं आदि धान्य को संग्रह कर के कार्त्तिक में बेचने से बहुत लाभ होवे।

आषाढ़ां सुदि पञ्चमी जो खिवसी बीज।
कोठा उघाड़ो बेच कण वावण राखो बीज॥ १२०५॥

आषाढ़ सुदि ५ को बिजली चमके तो केवल खेतों में बोने योग्य धान्य रख के शेष बेच दें नहीं तो हानि होवे। अर्थात् वर्षा उत्तम होगी।

आषाढ़ सुदि पञ्चमी ने दिवसे जल विन्दु जो पड़से रे।
मास आषाढ ही मेह ज आवी सहु सुणजो उल्लासे रे॥१२०६॥
जो जल विन्दु न पड़ी ते दिन तो आषाढ़ मेह न थाय रे।
अन्धारे पखवाड़े थोड़ो मेह किहां कण जो वाय रे॥१२०७॥

आषाढ़ सुदि ५ को छींटें हों तो आषाढ़ (आषाढ़ सुदि ५ से श्रावण सुदि ५ तक-एक मास) में वर्षा होवे किन्तु छींटे न हों तो श्रावण वदि में कहीं २ थोड़ी वर्षा होवे।

आषाढ़ सुदि ६ योग।

आषाढ़ सुदि छट्टी ने दिवसे जल वरसी जो आय रे।
श्रावण महीने मेह ज आवी सहु सुणजो चित्त लाय रे॥ १२०८॥
छट्ठें जो जल न पड़ी कोई तो श्रावण कोरो उदार रे।
रस कस तीजे महीने मूंगा श्रावण थी निर्धार रे॥ १२०९॥

आषाढ सुदि ६ को वर्षा हो तो श्रावण में वर्षा होवे, किन्तु न हो तो श्रावण में अनावृष्टि तथा आश्विन में रस और कस महंगा होवे।

आषाढ़ सुदि ७ योग।

आषाढ़ नी सातम ने दाहाड़े जल पड़ी शुभ थाय रे।
भादरवो भलो वरसतो रहसी सहूं तणे सुख दाय रे॥ १२१०॥
सातम ने दिन जो मेह न आवी तो भाद्रवो कोरो जाय रे।
हीर ने सूत्र ए मूंगा थासी पौष फाल्गुन वखाण रे॥ १२११॥

आषाढ़ सुदि ७ को वर्षा हो तो भाद्रवे में बहुत वर्षा होवे; किन्तु वर्षा न हो तो भाद्रवे में अनावृष्टि होवे तथा कपास सूत और हीरा पौष वा फाल्गुन में बहुत महंगे हो जावें।

आषाढ़ सुदि ८ योग।

आषाढ़ी आठम ने दिवसे मेह वरसे बीज गाज रे।
आसो महीने मेह वहुला सहू ना सरसे काज रे॥ १२१२॥

आठमी ने दिन जो ना वर्षे तो आसो फरको जाण रे ॥१२१३॥

आषाढ सुदि ८ को बिजली, गाज तथा वर्षा हो तो आश्विन में बहुत वर्षा होवे; किन्तु जो न हो तो आश्विन में अनावृष्टि होवे।

आषाढ़ सुदि ९ (सू नम) योग।

आषाढे शुक्लनवमी सानुराधा शनौ यदा।
क्वचिद्धान्यार्द्धनिष्पत्तिः क्वचिद् दुर्भिक्षकारकः ॥ १२१४॥

आषाढ़ सुदि ९ को शनि वार और अनुराधा नक्षत्र हो तो धान्य की उत्पन्न कहीं तो कुछ होवे और कहीं बिलकुल ही न होवे जिस से दुर्भिक्ष पड़े।

आषाढस्य तु मासस्य नवम्यां शुक्लपक्षके।
उदयन्तः सहस्रांशुर्निर्मलो यदि दृश्यते ॥ १२१५ ॥
मध्याह्ने छादितो मेघैरस्तमनो न दृश्यते।
चत्वारो वार्षिका मासा ध्रुवं वर्षति माधवः ॥ १२१६ ॥
अथोदये घनैश्छन्न मध्याह्ने निर्मलो रविः।
तत्र तोयं न पश्यामि वर्जयित्वा महानदीम् ॥ १२१७ ॥

आषाढ़ सुदि ९ को सूर्य उदय होते समय तो निर्मल और मध्याह्नमें तथा अस्त होते समय बादलों से ढँका रहे तो वर्षा काल के चारों महीनों में निश्चय वर्षा होवे, किन्तु सूर्य उदय होते समय तो बादलों से ढँका रहे और मध्याह्नमें तथा अस्त होते समय निर्मल दीखे तो गंगा यमुना आदि नदियों के अतिरिक्त कहीं जल न मिले अर्थात् अनावृष्टि होवे।

आषाढां सुदि नवमी घण बादल घण बीज।
कोठा कोटी खंखेर दो राखो बावण बीज ॥ १२१८ ॥
आषाढ़ां सुदि नवमी ना बादल ना बीज।
हल फाड़ ईंधन करो बैठा खावो बीज ॥ १२१९ ॥

आषाढ़ सुदि ९ को बहुत बादल हो वा बिजली चमके तो खेती बोने योग्य धान्य रख के शेष सब बेच दे अर्थात् सुभिक्ष होवे किन्तु बादल तथा बिजली कुछ भी न हो तो खेती करने के हल को तो फाड़ के जलाने के काम में लावे और धान्य को न तो बेचे और न खेती में बोवे, क्योंकि दुर्भिक्ष पड़ेगा।

आषाढ़ शुक्ल नवमी निशा ढके जु बादल चन्द।
शीत काल वर्षा बहुत प्रजा होत आनन्द ॥ १२२० ॥

आषाढ़ सुदि ९ को रात्रि में चन्द्रमा बादलों से ढका रहे तो शीत काल में बहुत वर्षा होवे तथा प्रजा में आनन्द वर्त्ते।

आषाढ़ सुदि ९ । १० योग।

शुक्लाषाढनवम्यां च दशम्यां वर्षणं शुभम्।
दुर्भिक्षं जायते नूनं वाते वृष्टिविना कृते ॥ १२२१ ॥

आषाढ़ सुदि ९ । १० को वर्षा हो तो संवत् के लिये शुभ, किन्तु वर्षा के विना केवल वायु चले तो दुर्भिक्ष होवे।

आषाढे नवम्यां देवि दशम्यां च यदा भवेत्।
साभ्रं गर्जति चाम्भोदैर्नदीदूरे गृहं कुरु ॥ १२२२ ॥
चतुरोऽपि तदा मासान् जलं वर्षति माधवः।
तस्मिन्दिने तु सूर्ये वै निर्मलं दृश्यते नभः ॥ १२२३ ॥
तदा तोयन्न पश्यामि वर्जयित्वा महानदीम्।
वर्षाकाले समग्रोऽपि धनधान्यविवर्जिता ॥ १२२४ ॥

आषाढ़ सुदि ९ । १० को बादल वा गाज हो तो वर्षा काल के चारों महीनों में सुवृष्टि होवे तथा नदियें बहुत जोर से वहें अतः नदी से दूर घर बनावे, किन्तु बादल आदि न हो तो अनावृष्टि होवे, बड़ी बड़ी नदियें भी सूख जावें तथा धान्य महंगा हो जावे।

आषाढ सुदि ११ (देवशयनी एकादशी) योग।

आषाढे शुक्लैकादश्यां शन्यादिस कुजैः समम्।
सम्पूर्णतिथिभागश्चेत्तदा दुर्भिक्षमादिशेत् ॥ ११२५ ॥

आषाढ़ सुदि ११ पूर्ण घड़ी ही और उस दिन रवि, मंगल वा शनि वार हो तो दुर्भिक्ष पड़े।

रवि टिड्डी बुध कातरा मंगल मूसा जोय।
जो हरि पौढ़े शनिसरे जीवे विरला कोय॥ १२२६॥

वार रवि हो तो टिड्डी, मंगल हो तो चूहे, बुध हो तो कातरे और शनि हो तो मनुष्यादि की मृत्यु अधिक होवे।

सोमे शुक्रे सुर गुरे जो पौढ़े सुर राय।
अन्न जु बहुला नीपजे पृथिवी में सुख थाय॥ ११२७॥

किन्तु सोम, गुरु वा शुक्र हो तो अन्न बहुत उत्पन्न तथा जगत् में अधिक सुख होवे।

आषाढ़ सुदि ११ को वर्षा हो तो प्रायः श्राद्ध पक्ष (आश्विन वदि) में वर्षा होवे।

आषाढ़ सुदि १४ योग।

आषाढमासे यदि शुक्लपक्षे चतुर्दशी भास्करज्येष्ठऋक्षे।
एव योगे शशभिन्नहर्घं सञ्जायते गर्गमुनीश्वरोक्तम्॥ ११२८॥

आषाढ़ सुदि १४ को रवि वार और ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो धान्य बहुत महंगा होवे।

आषाढ़ सुदि १४ को वर्षा हो तो प्रायः जैनियों के पर्यूषणों (भाद्रवा वदि ११ से भाद्रवा सुदि ४) में वर्षा होवे।

आषाढ़ सुदि १४। १५ योग।

चतुर्दशी तथा ऽऽषाढी हीना वर्षे यदा भवेत्।
भावाश्रयेण तद्धान्यं महर्घ्यञ्च समे समम्॥ १२२९॥
आषाढी त्वाधिका तस्याः समर्घं तु तदा मतम्।
संवत्सरे वर्त्तमाने शून्यपाते तु निष्कणम्॥ १२३०॥

आषाढ़ सुदि १४ की घड़ियों से १५ की घड़ियें कम हो तो धान्यादि का भाव महँगा, समान हो तो सम और अधिक हो तो सस्ता होवे, किन्तु शून्य पात हो (पूर्णिमा टूट जावे) तो धान्य उत्पन्न ही नहीं होवे।

आषाढ़ सुदि १५ (आषाढ़ी पूर्णिमा) योग।

यदा श्रेष्ठतमा ऽऽषाढी ग्रहयोगातिदारुणा ।
तदा नाऽवृष्टिर्न दौष्यं व्याधिश्च विग्रहो ऽपि वा ॥ १२३१ ॥

वर्ष में ग्रहो का योग बहुत अशुभ भी हो तथापि आषाढ़ी पूर्णिमा (वायु, बादल आदि से) श्रेष्ठ हो जावे तो अनावृष्टि, दुःख, रोग, विग्रह आदि अशुभ कुछ भी नहीं किन्तु शुभ फल होवे। अतः संवत् का अच्छा बुरा जानने के लिये आषाढ़ी पूर्णिमा को भले प्रकार से देखे।

(पूर्णिमा की घड़ियों द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आषाढी पूर्णिमा षष्टिघटिमाना यदा भवेत् ।
मासद्वादश धान्यानां सुभिक्षं च सुखं जने ॥ १२३२ ॥
त्रिंशद्घटीभिः षण्मासात् सुखं दुःखं ततः परम् ।
चतुर्मास्य पञ्चदश घटीमाने सुभिक्षता ॥ १२३३ ॥
न्यूनत्वे पञ्चदशभिर्घटिभ्यो दुःख सम्भवः ।
वातवार्दलसंयोगात् फलं न्यूनाधिकाश्रयः ॥ १२३४ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा की घड़ी ६० हों तो १२ महीनों तक, ३० हों तो ६ महीनों तक, १५ हों तो ४ महीनों तक सुभिक्ष तथा सुख; किन्तु १५ से भी कम हों तो जितनी कम हों उतना ही दुर्भिक्ष तथा दुःख होवे। परन्तु वायु तथा बादल के योग से यह फल न्यूनाधिक भी हो जाता है।

(पूर्णिमा की वृद्धि वा क्षय द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आषाढ्याः पौर्णमास्याश्च यदा वृद्धिर्भविष्यति ।
मासत्रयं सुभिक्षं च पश्चाद्याति महर्घता ॥ १२३५ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा बढ़े तो ३ महीनों तक तो सुभिक्ष, किन्तु पीछे दुर्भिक्ष होवे।

आषाढ्यां तु विनष्टायां नूनं भवति निष्कणम् ॥ १२३६॥

आषाढ़ी पूर्णिमा टूटे तो धान्य उत्पन्न ही नहीं होवे,-ऐसा दुर्भिक्ष पड़े।

(वार तथा नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

उजियाली आषाढ़ की पूनम निरखी जोय।
वार शनैश्चर जो मिले विरले जीव कोय ॥ १२३७ ॥
आषाढ़ां की पूर्णिमा सोम शुक्र गुरु वार।
पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो (तो) घर घर मंगलाचार ॥ १२३८ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वार शनि हो तो दुर्भिक्ष, किन्तु सोम, गुरु वा शुक्र वा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो सुभिक्ष तथा सुख होवे।

(नक्षत्र द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आषाढ्यां पूर्वकाषाढा वर्षं यावच्छुभंकरा।
आवर्षं धान्यनिष्पत्तिः प्रजासौख्यमविग्रहात् ॥ १२३९ ॥
मलोत्तरे च द्वे धिष्ण्ये मध्यफलविधायिके।
आवर्षं मध्यमं धान्यं देशे सर्वत्र कथ्यते ॥ १२४० ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ा हो तो सर्वत्र धान्य की उत्पत्ति तथा प्रजा में सुख शान्ति और मूल वा उत्तराषाढ़ा हो तो मध्यम संवत् होवे।

(नक्षत्र क्षय और ग्रहण आदि उत्पात से वर्षा का ज्ञान।)

ग्रहाद्यै ऋक्षपाताद्यैः सत्यं नश्यति पूर्णिमा ॥ १२४१ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को नक्षत्र टूटे वा ग्रहण आदि कोई उत्पात हो तो दुर्भिक्ष होवे।

(वायु की दिशा तथा बादल से वर्षा का ज्ञान।)

एकमेव दिनं वक्ष्ये कालनिष्पत्तिहेतवे।
अष्टयामे ऽभ्रवातौ च वर्षं यावत्तदा शुभम् ॥ १२४२ ॥
न चेत् पूर्वोत्तरौ वातौ न चाभ्रं नापि वर्षणम्।
आषाढ्यां तर्हि विज्ञेयं दुर्भिक्षं लोकदुःखदम् ॥ १२४३ ॥

संवत का शुभाशुभ जानने के लिये एक आषाढ़ी पूर्णिमा ही मुख्य है, अतः इस दिन आठों पहर तक बादल तथा उत्तर वा पूर्व का वायु हो तो सुभिक्ष, किन्तु उपरोक्त दिशा का वायु तथा बादल वा वर्षा कुछ भी न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

आषाढ्यां घटिकाषष्ठ्यां मासद्वादशनिर्णये ।
द्वादशपञ्चकाषष्टिरित्येवं क्रममादिशेत् ॥ १२४४ ॥
यत्र घट्यां शुभो वातो विद्युदभ्राणि गर्जनम् ।
तत्र मासे भवेद् वृष्टि रिति कालस्य निर्णयः ॥ १२४५ ॥

आषाढी पूर्णिमा को दिन रात्रि की ६० घड़ियों से श्रावणादि १२ महीनों का (अर्थात् ५-५ घड़ी से १-१ महीने का क्रम से) विभाग करे फिर जिस महीने की ५ घड़ी में वादल, विजली, गाज तथा पूर्व वा उत्तर का वायु हो उस मास में वर्षा होवे।

सर्वरात्रौ यदा ऽभ्राणि वातो पूर्वोत्तरो यदि ।
तस्मिन् वर्षे कणाःपुष्टा जायन्ते जगतीप्सितम् ॥ १२४६ ॥
यदि नाभ्रस्य लेशो ऽपि वातो पूर्वोत्तरो नहि ।
न वर्षते तदा मेघो दुष्टकालो भवेदिह ॥ १२४७ ॥
यद्यभ्रं स्वल्पकं जातं मध्यवाते ऽल्पवर्षति ॥ १२४८ ॥

आषाढी पूर्णिमा को सम्पूर्ण रात्रि में वायु उत्तर ईशान वा पूर्व का तथा बादल बहुत से हों तो उस वर्ष में सुवृष्टि, सुभिक्ष, आरोग्य आदि; किन्तु वायु उपरोक्त दिशा का तथा बादल बिलकुल ही नहीं हो तो दुर्भिक्ष; और मध्यम दिशा (पश्चिम वा वायव्य) का वायु तथा थोड़े बादल हों तो वर्षा थोड़ी तथा संवत् मध्यम होवे।

आषाढीपूर्णिमारात्रौ यदि चन्द्रो न दृश्यते
चतुरो ऽपि तदा मासान् जलं मुञ्चति वासवः ॥ १२४९ ।
यदि तत्रामलश्चन्द्रः परिवेषयुतो ऽपि वा ।
तदा जगत् समुद्धर्त्तुं शक्रेणापि न शक्यते ॥ १२५० ॥

आषाढी पूर्णिमा की सम्पूर्ण रात्रि में चन्द्रमा वादलों से ढंका रहे तो श्रावणादि चारों महीनों में वर्षा, किन्तु निर्मल हो वा उस के कुण्डल हो तो वड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़े।

अभ्रं विनायदारम्यो वातौ नूर्वोत्तरौ यदि ।
यत्र यामार्द्धके तत्र मासे वृष्टि हठात् भवेत् ॥ १२५१ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा की रात्रि में वादल कुछ भी नहीं हों किन्तु पूर्व वा उत्तर का आनन्द दायक वायु हो तो रात्रि के ४ प्रहर से श्रावणादि ८ महीनो में क्रम से अवश्य वर्षा होवे।

(विजली गाज तथा वृष्टि द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आषाढी पूनम दिनां.गाजवीज वरषंत ।
नाश्यां लखण काल का आनन्द मानो सन्त ॥ १२५२ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को विजली चमके, गाजे वा वर्षे तो सुभिक्ष होवे।

आषाढ्यां पूर्णिमायां च यदा वृष्टिस्तु जायते ।
मासमेकं महर्घं स्यात् ततः पश्चात् सुभिक्ष कृत् ॥ १२५३ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वर्षा हो तो धान्यादि १ महीने तक तो महँगे रहें, किन्तु पीछे सस्ते हो जावें।

(शीतकाळ में धारण हुये गर्भो के पुष्टि, श्राव आदि निर्णय से वर्षा का ज्ञान।

पौषादिसम्भवगर्भे ध्रुवमुत्पातसम्भवः ।
तेनाषाढीदिनं सर्वं द्रष्टव्यं वृष्टि हेतवे ॥ १२५४ ॥

वर्षाकाल की वर्षा के लिये पोष सुदि १ से जो गर्भ धारण हुये हों उन की पुष्टि और श्राव आदि का निर्णय आषाढ़ी पूर्णिमा को करे।

यदा ऽऽषाढी भवेद्रात्रिस्तत्राषाढस्य निर्णयः ।
प्रथमा घटिकाः पञ्च पञ्चैव श्रावणः स्मृतः ॥ १२५५ ॥
पञ्च भाद्रपदो मासस्ततः पञ्चाश्विनः स्मृतः ।
यत्राभ्रं पञ्चनाडीषु वातौ पूर्वोत्तरौ स्मृतौ ॥ १२५६ ॥
तत्र मासे भवेद् वृष्टिः पवनाभ्रादिमानतः ।
तत्र रात्रावपि ह्येषा पवनाभ्रा सर्वदिग्गता ॥ १२५७ ॥

आषाढ्यां घटिकाषष्ट्यां मासद्वादशनिर्णये ।
द्वादशपञ्चकाषष्टिरित्येवं क्रममादिशेत् ॥ १२४४ ॥
यत्र घट्यां शुभो वातो विद्युदभ्राणि गर्जनम् ।
तत्र मासे भवेद् वृष्टि रिति कालस्य निर्णयः ॥ १२४५ ॥

आषाढी पूर्णिमा को दिन रात्रि की ६० घड़ियों से श्रावणादि १२ महीनों का (अर्थात् ५-५ घड़ी से १-१ महीने का क्रम से) विभाग करे फिर जिस महीने की ५ घड़ी में बादल, बिजली, गाज तथा पूर्व वा उत्तर का वायु हो उस मास में वर्षा होवे।

सर्वरात्रौ यदा ऽभ्राणि वातो पूर्वोत्तरो यदि ।
तस्मिन् वर्षे कणाःपुष्टा जायन्ते जगतीऽप्सितम् ॥ १२४६ ॥
यदि नाभ्रस्य लेशो ऽपि वातो पूर्वोत्तरो नहि ।
न वर्षते तदा मेघो दुष्टकालो भवेदिह ॥ १२४७ ॥
यद्यभ्रं स्वल्पकं जातं मध्यवाते ऽल्पवर्षति ॥ १२४८ ॥

आषाढी पूर्णिमा को सम्पूर्ण रात्रि में वायु उत्तर ईशान वा पूर्व का तथा बादल बहुत से हों तो उस वर्ष में सुवृष्टि, सुभिक्ष, आरोग्य आदि; किन्तु वायु उपरोक्त दिशा का तथा बादल बिलकुल ही नहीं हो तो दुर्भिक्ष; और मध्यम दिशा (पश्चिम वा वायव्य) का वायु तथा थोड़े बादल हों तो वर्षा थोड़ी तथा संवत् मध्यम होवे।

आषाढीपूर्णिमारात्रौ यदि चन्द्रो न दृश्यते
चतुरो ऽपि तदा मासान् जलं मुञ्चति वासवः ॥ १२४९ ।
यदि तत्रामलश्चन्द्रः परिवेषयुतो ऽपि वा ।
तदा जगत् समुद्धर्त्तुं शक्रेणापि न शक्यते ॥ १२५० ॥

आषाढी पूर्णिमा की सम्पूर्ण रात्रि में चन्द्रमा बादलों से ढंका रहे तो श्रावणादि चारों महीनों में वर्षा, किन्तु निर्मल हो वा उस के कुण्डल हो तो बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़े।

अभ्रं विनायदारम्यो वातौ नूर्वोत्तरौ यदि ।
यत्र यामार्द्धके तत्र मासे वृष्टि हठात् भवेत् ॥ १२५१ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा की रात्रि में बादल कुछ भी नहीं हों किन्तु पूर्व वा उत्तर का आनन्द दायक वायु हो तो रात्रि के ४ प्रहर से श्रावणादि ८ महीनो में क्रम से अवश्य वर्षा होवे।

(विजली गाज तथा वृष्टि द्वारा वर्षा का ज्ञान ।)

आषाढी पूनम दिनां.गाजवीज वरषंत ।
नाश्यां लखण काल का आनन्द मानो सन्त ॥ १२५१ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को बिजली चमके, गाजे वा वर्षे तो सुभिक्ष होवे।

आषाढ्यां पूर्णिमायां च यदा वृष्टिस्तु जायते ।
मासमेकं महर्घं स्याव् ततः पश्चात् सुभिक्ष कृत् ॥ १२५३ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वर्षा हो तो धान्यादि १ महीने तक तो महँगे रहें, किन्तु पीछे सस्ते हो जावें।

(शीतकाले में धारण हुये गर्भो के पुष्टि, श्राव आदि निर्णय से वर्षा का ज्ञान ।

पौषादिसम्भवगर्भे ध्रुवमुत्पातसम्भवः ।
तेनाषाढीदिनं सर्वं दृष्टव्यं वृष्टि हेतवे ॥ १२५४ ॥

वर्षाकाल की वर्षा के लिये पोष सुदि १ से जो गर्भ धारण हुये हों उन की पुष्टि और श्राव आदि का निर्णय आषाढी पूर्णिमा को करे।

यदा ऽऽषाढी भवेद्रात्रिस्तत्राषाढस्य निर्णयः ।
प्रथमा घटिकाः पञ्च पञ्चैव श्रावणः स्मृतः ॥ १२५५ ॥
पञ्च भाद्रपदो मासस्ततः पश्चाश्विनः स्मृतः ।
यत्राभ्रं पञ्चनाडीषु वातौ पूर्वोत्तरौ स्मृतौ ॥ १२५६ ॥
तत्र मासे भवेद् वृष्टिः पवनाभ्रादिमानतः ।
तत्र रात्रावपि ज्ञेया पवनाभ्रा सर्वदिग्गता ॥ १२५७ ॥

आषाढी पूर्णिमा को १५ घड़ी रात्रि व्यतीत होने तक प्रथम की ५ घड़ी से श्रावण, दूसरी ५ से भाद्रवा और तीसरी ५ से आश्विन की वर्षा का निर्णय करे।

जिस महीने की ५ घडियों में बादल तथा उत्तर वा पूर्व का वायु हो उस महीने में वर्षा होवे इस में भी बादल तथा वायु के न्यूनाधिक से वर्षा भी न्यूनाधिक जाने। किन्तु साधारण रीति से इस रात्रि में बादल तथा वायु का होना ही श्रेष्ठ है चाहे वह किसी दिशा के क्यों न होवे।

यत्र मास विभागं च निर्मलं दृश्यते नभः।
तत्र हानिश्च वृष्टेश्च विज्ञेयं गर्भपातनम् ॥ १२५८ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को जिस महीने की ५ घड़ी में आकाश निर्मल हो उस महीने में अनावृष्टि होवे। अतः उस में वर्षने वाले गर्भों को नष्ट हुवा जाने।

यत्राषाढीदिने रात्रिरभ्रैर्वातैश्च पूरिता।
तदा गर्भाः शुभा ज्ञेयाः शीतकाले ऽपि धीमता ॥१२५९॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को रात्रि में वायु तथा बहुत बादल हों तो शीतकाल में धारण हुये गर्भ शुभ होवें (अवश्य वर्षे)।

(वायु की दिशा, गति तथा वेग द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

भूसुते भूमिदेशे तु तन्नोन्नविवर्जिते।
दशहस्तप्रमाणैस्तु ध्वजादण्डः प्रकीर्त्तितः ॥ १२६० ॥
तदर्द्धा तु ध्वजा कार्या तस्मिन् दण्डे निरूपयेत्।
पुष्पैः पूजयनं देवमष्टोत्तरशतेन च ॥ १२६१ ॥
मन्त्रस्थितो ध्वजादण्डः क्षीरवृक्षसमुद्भवः।
स्थाप्येन्द्रवरुणौ वायुमष्टयामं निरीक्षयेत् ॥ १२६२ ॥

आषाढी पूर्णिमा को वायु देखने के लिये क्षीर (दूध वाले) वृक्ष के १० हाथ के दण्ड पर महीन वस्त्र की ५ हाथ लम्बी ध्वजा बांध के नगर के पुर्व वा उत्तर में कहीं चौड़े मैदान में

सम भूमि पर खड़ी कर के इन्द्र, वरुण तथा ध्वजा का मन्त्र सहित १०८ पुष्पों से पूजा कर के उस क द्वारा प्रातःकाल से ८ प्रहर तक परीक्षा करे।

(ध्वजा को अभिमन्त्रित करने का मन्त्र।)

"ॐ सत्यदेवते सत्यवादिनि ध्वजरूपधरे ह्येहि ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रः सत्यवादिनि स्वाहा ॥"

तदहश्चोदयादूर्ध्वं चतुर्धा ऽहो विभज्यते ।
हिताहितार्थं मासानां चतुर्णामुपलक्षयेत् ॥ १२६३ ॥

आषाढी पूर्णिमा को प्रभात से सन्ध्या तक के ४ प्रहर के वायु से श्रावणादि चारों महीनों की वर्षा का क्रम से शुभाशुभ जाने। अर्थात् वायु जिस मास के प्रहर में शुभ हो उस मास में वर्षा, किन्तु जिस में अशुभ हों उस में अनावृष्टि होवे परन्तु वायु का वेग अधिक हो तो अधिक, मध्यम हो तो मध्यम और अल्प हो तो अल्प फल जाने।

आषाढीपूर्णमास्यां तु पूर्ववातो यदा भवेत् ।
प्रवाति दिवसं सर्वं सुवृष्टिः सुसमा तदा ॥ १२६४ ॥
वाप्यानि सर्ववीजानि जायन्ते निरुपद्रवम् ।
धान्यानि च समर्घाणि चारोग्यं च भविष्यति ॥ १२६५ ॥

आषाढी पूर्णिमा को पूर्व का वायु हो तो सुवृष्टि तथा धान्य सस्ता ओर लोग आनन्दित होवें।

आषाढी पूर्णमास्यां तु ह्याग्नेयो यदि मारुतः ।
राजमृत्युं विजनीयाच्चित्रं शस्यं तथा जलम् ॥ १२६६ ॥
क्वचिन्निष्पद्यते शस्यं क्वचिच्चापि विपद्यते ।
धान्यार्घो मध्यमो ज्ञेयस्तदा ऽग्नेश्च भयं भवेत् ॥ १२६७ ॥

आषाढी पूर्णिमा को अग्नि का वायु हो तो वर्षा तथा धान्य कहीं तो होवे और कहीं न होवे और किसी राजा की मृत्यु तथा अग्नि का उपद्रव होवे।

आषाढीपूर्णमास्यां तु दक्षिणो यदि मारुतः ।
तदा न वापयेत् किञ्चिद् ब्रह्मक्षत्रञ्च पीडयेत् ॥१२६८॥
धनं धान्यं न विक्रयेद् बलवन्तं च संश्रयेत् ।
दुर्भिक्षं मरणं व्याधिस्त्रासं मासं प्रवर्त्तते ॥ १२६९ ॥

आषाढी पूर्णिमा को दक्षिण का वायु हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि होवे; अतः खेती न करे, किन्तु धान्य का संग्रह करे के बलवानों के शरण में रहे।

आषाढीपूर्णमास्यां तु नैर्ऋतो यदि मारुतः ।
कूपेषु च तडागेषु तथा च निर्झरेषु च ॥ १२७० ॥
न तत्र दृश्यते तोयं स्थाने देवो न वर्षति ।
शस्यानामुपघाताय चौराणां वृद्धये तथा ॥ १२७१ ॥
भस्मपांशुरजस्कीर्णा तदा भवति मेदिनी ।
विद्रवन्ति च राष्ट्राणि क्षीयन्ते नगराणि च ॥ १२७२ ॥
श्वेतास्थिमेदिनो ज्ञेया मांस शोणितकर्दमा ।
सर्वसारं तदा कृत्वा कर्तव्यो धान्य सङ्ग्रहः ॥ १२७३ ॥

आषाढी पूर्णिमा को नैर्ऋत्य का वायु हो तो अनावृष्टि तथा महा भयानक दुर्भिक्ष होवे; अतः सुवर्ण, रत्न आदि सर्व पदार्थ बेच के धान्य का संग्रह करे, जिस से कार्त्तिक तक बहुत लाभ होवे। (ऐसा वायु सं० १९२५, ३४, ४८ तथा ५६ में राजपुताने आदि देशों में था तब सहस्रों मनुष्य तथा पशु भूखे मरते मर गये-ऐसे दुर्भिक्ष पड़े थे।)

आषाढीपूर्णमास्यां तु पश्चिमो यदि मारुतः ।
निष्पत्तिः सर्वधान्यानां काले वर्षति माधवः ॥ १२७४ ॥
उद्गच्छन्ते ऽथ राजानो वैराण्यथ च सर्वशः ।
परस्परोपघाताय स्वराष्ट्रपरराष्ट्रयोः ॥ १२७५ ॥

आषाढी पूर्णिमा को पश्चिम का वायु हो तो धान्य उत्पन्न

होने योग्य समय २ पर अच्छी वर्षा होवे तथा राजाओं में परस्पर वैर रहे।

आषाढीपूर्णमास्यां तु वायव्यो यदि मारुतः।
पतन्ति चाखुशलभा नकुला मर्कटास्तथा ॥ १२७६ ॥
मध्यमं किञ्चिदुत्कृष्टं वर्षं च शस्यमेव च।
नूनं च मध्यमं किञ्चिद् धान्यार्घस्तत्र निर्दिशेत् ॥१२७७॥

आषाढी पूर्णिमा को वायव्य का वायु हो तो वर्षा तथा धान्य मध्यम, और नेवले, चूहे टिड्डी, मकड़ी आदि जीव अधिक होवें। (ऐसा वायु सं० १९५० में राजपुताने आदि देशों में था तब चूहे बहुत उत्पन्न हुये थे।)

आषाढीपूर्णमास्यां तु चोत्तरो यदि मारुतः।
वापयेत् सर्ववीजाति शस्यं ज्येष्ठं प्रवर्द्धते ॥ १२७८ ॥
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं प्रशान्ताः पार्थिवास्तदा।
बहूदकास्तथा मेघा मही धर्मोत्सवाकुला ॥ १२७९ ॥

आषाढी पूर्णिमा को उत्तर का वायु हो तो वर्षा तथा धान्य की उत्पत्ति अधिक, सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य आदि होवे। (ऐसा वायु सं० १९५७ में राजपुताना आदि देशों में था तब अच्छा सुभिक्ष हुआ था।)

आषाढीपूर्णमास्यां तु चैशानो यदि मारुतः।
वापयेत् सर्ववीजानि तदा चौराश्च घातयेत् ॥ १२८० ॥
स्थलेष्वपि च यद्वीजं वाप्यते तत् समृद्धयति।
गीतवाद्ययुता लोकाः सुभिक्षं प्रवलं भवेत् ॥ १२८१ ॥

आषाढी पूर्णिमा को ईशान का वायु हो तो वर्षा श्रेष्ठ, खतियों की वृद्धि, प्रवल सुभिक्ष और चौरों का नाश होवे। (ऐसा वायु सं० १९४९ में राजपुताने आदि देशों में था तब बड़ा भारी सुभिक्ष हुआ था।)

आषाढीपूर्णमास्यां तु चतुर्दिक्षु च मारुतः ।
धान्यानि च महर्घाणि वह्निदाहः प्रकीर्त्तितः ॥ १२८२ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को एक ही समय में चारों ही ओर का वायु हो तो वर्षा कहीं तो होवे और कहीं न होवे. जिस से धान्य महँगा हो जावे तथा अग्नि का उपद्रव होवे।

टूटे ध्वजा चढ़े आकास । वर्षे मेह न निपजे घास ॥१२८३॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु आठों ही दिशाओं का वहुत वेग से चले-कि जिस से ध्वजा ही टूट जावे-तो अनावृष्टि से तृण काल होवे।

यदा तु वाताश्चत्वारो भृशं वान्त्यपसव्यतः ।
अल्पोदकं शस्यघातं भयं व्याधिं च कुर्वत ॥ १२८४ ॥
प्रदक्षिणं यदा वान्ति त एव सुखशीतलाः ।
क्षेमं सुभिक्षमारोग्यं राज्यवृद्धिं जयं तथा ॥ १२८५ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु अपसव्य-अप्रदक्षिण-(पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम,-इस क्रम से) हो तो वर्षा अल्प, धान्य का नाश, भय तथा रोग; किन्तु सव्य-प्रदक्षिण-(पूर्व से उत्तर, उत्तर से पश्चिम,-इस क्रम से), शीतल तथा सुख दायक हो तो सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य और राज्य की वृद्धि तथा जय होवे।

समन्ततो यदा वान्ति परस्परविघातिनः ।
शस्त्रं जनक्षयं रोगं शस्यघातञ्च कुर्वतम् ॥ १२८६ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु आमने सामने की किन्हीं दोनों ओर (पूर्व और पश्चिम, वा उत्तर और दक्षिण आदि) का हो तो धान्य का नाश, दुर्भिक्ष, रोग, युद्ध आदि होवे।

पूर्ववातं यदा हन्यादुदीर्णो दक्षिणोऽनिलः ।
न तत्र वापयेद्धान्यं कुर्यात् सञ्चयमेव च ॥ १२८७ ॥
दुर्भिक्षं चाप्यवृष्टिञ्च शस्त्रं रोगं जनक्षयम् ।
कुरुते सोऽनिलो घोरमाढकाभ्यन्तरे पणम् ॥ ११८८ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु पहिले तो पूर्व का हो और पीछे से दक्षिण का हो जावे तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, रोग, युद्ध आदि तथा धान्य बहुत महँगा हो जावे अतः शीघ्र संग्रह करे।

पापवाते तु वातानां श्रेष्ठः सर्वत्र वा ऽऽदिशेत्।
श्रेष्ठान्यपि यदा हन्युः पापो पापं तदा ऽदिशेत् ॥१२८९॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को वायु पहिले तो अशुभ हो किन्तु पीछे से शुभ हो जावे तब तो श्रेष्ठ, किन्तु पहिले तो शुभ हो और पीछे से अशुभ हो जावे तो नेष्ट फल सर्वत्र होवे।

(सूर्यास्त के समय के वायु से वर्षा का ज्ञान।)

आषाढ़ां सुदि पूर्णिमा अर्ध अस्त यदि भान।
आठ दिशा के आठ फल देते वायु निधान ॥ १२९० ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को जैसे प्रभात से सन्ध्या तक के ४ प्रहर के वायु से श्रावणादि ४ महीनों की वर्षा का निर्णय किया गया है, वैसे ही सूर्य आधा अस्त हो उस समय के वायु से सम्पुर्ण वर्षा काल की वर्षा का निर्णय करे। जैसेः—

आषाढ्यां भास्करास्ते सुरपति ककुभौ वायुवाते सुवृष्टिः
शस्यध्वंसं प्रकुर्याद्यदि दहनदिशि मन्दवृष्टिर्यमेन।
नैर्ऋत्यां शस्यनाशो वरुणबहुजलो वायुना वायुकोपः
कौबेर्यां शस्यपूर्णा भवतिवसुमती तद्वदीशान कोणे ॥ १२९१ ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन सूर्यास्तके समय यदि वायु पूर्व का हो तो वर्षा श्रेष्ठ, अग्नि का हो तो खेतियों की हानी, दक्षिण का हो तो वर्षा की कमी, नैर्ऋत्य का हो तो खेतियों का नाश, पश्चिम का हो तो वर्षा अधिक, वायव्य का हो तो वायु का जोर, उत्तर का हो तो खेतियों की वृद्धि और ईशान का हो तो खेतियों की वृद्धि तथा जगत् में आनन्द होवे। इस में भी वायु जोर का हो तो पूर्ण, साधारण हो तो मध्यम और अल्प हो तो थोड़ा फल जाने।

जो पूनम वाजे नहीं फुरके नहीं लगार।
गर्भा श्रावण भाद्रवा वर्षे एकहि धार ॥ १२९२ ॥

परन्तु आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्य आधा अस्त हो उस समय वायु यदि विलकुल ही वन्द हो तो श्रावण तथा भाद्रवे में श्रेष्ठ वर्षा होवे।

(वस्तु तौलने की विधि।)

आषाढ्यां सर्वधान्यानि सन्ध्यायां च पृथक् पृथक्।
तोलयेद्वर्णमानेन जलादीनापि सर्वशः ॥ १२९३ ॥

आषाढी पूर्णिमा को सन्ध्या के समय धान्यादि वस्तुओं को तौल २ के अलग २ रखे। फिर दूसरे दिन प्रातः काल पीछी तौलने से जो वस्तु घटे उस की हानि और वढ़े उसकी वृद्धि आदि होवे। (इस का विशेष निर्णय 'आषाढ़ मास' के 'पूर्वाषाढा योग' में किया है सो वहां देखो।)

आषाढ़ सुदि १। २। ३ योग।

आषाढे शुक्लपतिपत्त्रये वर्षा यदा भवेत्।
एको द्वादश च द्रोणा षोडशापि क्रमाज्जलम् ॥ १२९४ ॥

आषाढ़ सुदि में वर्षा १ को हो तो १, २ को हो तो १२ और ३ को हो तो १६ द्रोण जलकी वर्षा वर्षाकाल में होवे।

आषाढ़ सुदि १। १२। १५ योग।

पड़िवा पूनम द्वादशी वाजत पवन प्रचण्ड।
थोड़ा वर्षे हे उमा मेह गया नव खण्ड ॥ १२९५ ॥

आषाढ़ सुदि १। १२। १५ को जोर का वायु हो तो वर्षा काल में अनावृष्टि होवे।

आषाढ़ सुदि २। ३। ४। ५ योग।

शुक्लाषाढे द्वितीयादिपञ्चके मेघदर्शने ॥ १२९६ ॥
वृष्टौ दिनचतुष्केऽस्मिन् वाते पूर्वोत्तरागते।
अतिवृष्टिः सुभिक्षं च दुर्भिक्षं च तदन्यथा ॥ १२९७ ॥

आषाढ़ सुदि २। ३। ४। ५ को बादल, वर्षा तथा ईशान का वायु हो तो सुवृष्टि तथा सुभिक्ष; किन्तु बादल तथा वर्षा तो न हो और वायु नैर्ऋत का हो तो दुर्भिक्ष होवे।

प्राग् द्वितीयादिने वृष्टिः श्रावणे बहु वर्षति॥ १२९८॥
तृतीयादिवसे प्राप्ते पूर्ववातो यदा भवेत्।
दृश्यन्ते चोन्नता मेघा वृष्टिर्भाद्रपदे भवेत्॥ १२९९॥
चतुर्थीदिवसे प्राप्ते वातश्च दक्षिणो भवेत्।
अभ्राणि पूर्वतो यान्ति वृष्टिरश्वयुजे भवेत्॥ १३००॥
पञ्चमीदिवसे प्राप्ते चोत्तरो यदि मारुतः।
दृश्यन्ते चोन्नता मेघा वृष्टिर्भवति कार्त्तिके॥ १३०१॥
पञ्चमीदिवसे प्राप्ते वातवृष्टिर्यदा भवेत्।
दुर्भिक्षं जायते तत्र चातिवृष्ट्या न संशयः॥ १३०२॥
तृतीयायाञ्च पञ्चम्यां पूर्वोत्तरश्च मारुतः।
तदा शस्यानि जायन्ते महान् कृतयुगो भवेत्॥ १३०३॥
दिनद्वयं यदा वाति वायुर्दक्षिणपश्चिमः।
तदा नश्यन्ति धान्यानि दुर्भिक्षं जायते ध्रुवम्॥ १३०४॥

आषाढ़ सुदि २ को वर्षा हो तो श्रावण में अति वर्षा, ३ को वायु पूर्व का और बादल ऊंचे २ हों तो भाद्रवे में वर्षा, ४ को वायु दक्षिण का और बादल पूर्व के हों तो आश्विन में वर्षा, ५ को वायु उत्तर का और बादल ऊंचे २ तथा बड़े हों तब तो कार्त्तिक में वर्षा किन्तु बहुत ज़ोर का वायु हो तो अति वृष्टि से दुर्भिक्ष होवे; और ३। ५ को वायु ईशान का हो तो बहुत धान्य उत्पन्न किन्तु नैर्ऋत्य का हो तो दुर्भिक्ष होवे।

आषाढ़ सुदि ५। ६। ७। ८ योग।

आषाढे शुक्लपञ्चम्यादिके तिथिचतुष्टये।
यावन्त्यभ्राणि वर्षासु तावन्मेघमहोदयः॥ १३०५॥

आषाढ़ सुदि ५। ६। ७। ८ को बादल वा वर्षा हो तो क्रम से वर्षाकाल के श्रावणादि चारों महीनों में वर्षा होवे।

आषाढ़ सुदि ७। ८। ९ योग।

आषाढेशुक्लसप्तम्यां त्रुतिके मलिनौ हिमौ।
चन्द्राकौं वृष्टिदौ स्यातां ताम्रौ मार्गादितस्त्रये ॥ १३०६ ॥

आषाढ़ सुदि ७। ८। ९ को सूर्य तथा चन्द्रमा मलिन (बादल, वर्षा, हिम आदि से ढंका) रहे तो वर्षा काल में बहुत वर्षा होवे।

आषाढ़ सुदि ९। १५ योग।

पूनमनोमी साढ़ सुदि निर्मल निशा मयंक।
दुर्भिक्ष निश्चय जानिये रुले प्रजा अरु रंक ॥ १३०७ ॥

आषाढ़ सुदि ९। १५ की रात्रि में चन्द्रमा निर्मल हो तो दुर्भिक्ष होवे।

श्रावण मास प्रकरण।

श्रावणे विपुला विद्युद् गर्जितं च पुनर्घने।
वृष्टिस्तदा मनोऽभीष्टा कुरुते वत्सरं शुभम् ॥ १३०८ ॥

श्रावण में बिजली तथा गाज बहुत हों तो सुवृष्टि तथा सुभिक्ष होवे।

शुक्रस्यास्तं गतिः सौम्यः प्रोदेति श्रावणे यदा।
तदा भाद्रपदे वाऽपि मेघो नैव प्रवर्षति ॥ १३०९ ॥

श्रावण में शुक्र तो अस्त और बुध उदय हो तो भाद्रवे में अनावृष्टि होवे।

श्रावण कृष्ण पक्ष में देखो। तुल का मंगल होय विशेखो।
कर्क राशि पर गुरु जो आवे। सिंह राशि पर शुक्र सुहावे॥१३१०॥
ताल जु शोषे बरसे धूल। कहीं न निपजें सातों तूर॥१३११॥

श्रावण उजले पक्षे में जो ये सब दरसाँय।
दण्ड होय क्षत्रिय लड़े भिड़े पृथ्वि पति राय॥ १३१२॥

श्रावण में मंगल तुला का, बृहस्पति कर्क का और शुक्र सिंह का वदि में तो हो तो अनावृष्टि, किन्तु सुदि में हों तो राजाओं में युद्ध होवे।

श्रावण सुदि में सिंह का शुक्र हो तो वर्षा नहीं होवे, किन्तु हो जावे तो बहुत ही होवे तथा कार्त्तिक में रोग होवे।

पञ्चक नक्षत्र योग।

मूल गले पुनि भड्डली बोले विश्वा बीस।
श्रावण की पञ्चक झड़ी आस समय की दीस॥ १३१३॥
भड्डली तू क्यों दूमणी दिन पिछलों को झूर।
श्रावण के पञ्चक सजे नदी वहेंगी पूर॥ १३१४॥

श्रावण वदि में धनिष्ठा आदि ५ नक्षत्रों में वर्षा हो तो ज्येष्ठ सुदि वा आषाढ़ वदि में मूल में वर्षा होने के दोष मिट के सुभिक्ष होवे।

अश्विनी नक्षत्र योग।

श्रावणस्यादिमे पक्षे आश्विन्यां मेघवृष्टितः।
सर्वान्दोषान्निहत्यैव सुभिक्षं भुवि जायते॥ १३१५॥
श्रावण पहिले पक्ष में अश्विनी प्यासी जाय।
दुनियां तो दुर्भिक्ष मरे वालक वेचे माय॥ १३१६॥

श्रावण वदि में अश्विनी के दिन वर्षा हो तो सम्पूर्ण दोष मिट के सुभिक्ष, किन्तु कुछ भी न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

कृत्तिका नक्षत्र योग।

श्रावणे कृत्तिका यत्र तत्र तोयं यदा भवेत्।
चत्वारो मासा वर्षन्ति सर्वशस्यविवर्द्धनम्॥ १३१७॥

श्रावण वदि में कृत्तिका के दिन वर्षा हो तो चारों महीनों में सुवृष्टि तथा धान्य की उत्पत्ति अधिक होवे।

रोहिणी नक्षत्र योग।

श्रावणे मासि रोहिण्यां यदा वर्षति वासवः।
तदा वृष्टिर्भवेत्तावद्यावन्नोत्तिष्ठते हरिः॥ १३१८॥
कर्कटे रोहिणीऋक्षे यदि वृष्टिर्न जायते।
तदा पराशरः प्राह हा हा लोकस्य का गतिः॥ १३१९॥

श्रावण वदि में रोहिणी के दिन वर्षा हो तो वर्षा ३॥ महीनों तक और सुभिक्ष होवे, किन्तु वर्षा न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

चित्रा, स्वाति, विशाखा नक्षत्र योग।

चित्रास्वातिविशाखासु यदि मेघः प्रवर्षति।
निष्पत्तिः सर्वशस्यानां भवन्ति सुखिनः प्रजाः॥ १३२०॥
अथ तस्मिन् न वर्षेते विद्युद्भावं न दृश्यते।
तदा वृष्टिं न पश्यन्ति अनावृष्टिं विनिर्दिशेत्॥ १३२१॥
चित्रास्वातिविशाखासु श्रावणे नो जलं यदि।
तदा कूपादिकं कृत्वा नदीतीरोपसेवनम्॥ १३२२॥
चित्रा स्वाति विशाखिया श्रावण कोरे जाहिं।
कनक बेच कण लीजिये इस में संशय नाहिं॥ १३२३॥

श्रावण सुदि में चित्रा, स्वाति और विशाखा के दिन वर्षा हो तो सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न तथा प्रजा में सुख, किन्तु वर्षा न हो तो अनावृष्टि होवे, अतः पानी के लिये कुएं बनावे वा नदी के किनारे रहे तथा सुवर्णादि सर्व रत्न बेच के भी धान्य ख़रीदे तो अवश्य लाभ होवे।

श्रावण वदि ४ और पूर्वा भाद्रपदा योग।

श्रावणे प्रथमे पक्षे पूर्वाभाद्रपदे तथा।
चतुर्थ्यां यदि वर्षन्ति वर्षाकालस्तदा भवेत्॥ १३२४॥
अथ तस्मिन्न वर्षेते मेघभावो न विद्यते।
तदा प्रावृड् न पश्यामि घनवर्षां च माधव॥ १३२५॥

श्रावण वदि ४ को पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र में वर्षा हो तब तो वर्षाकाल में वर्षा होवे अन्यथा नहीं।

श्रावणे कृष्णपक्षे चेच्चतुर्थ्यामरुणोदये।
वार्दलं वृष्ट्यहर्निशं सर्वत्र सुखदृष्टिकृत् ॥ १३२६ ॥

श्रावण वदि ४ को दिन रात बादल वा वर्षा हो तो सर्वत्र सुवृष्टि होवे।

श्रावणे कृष्णपक्षे तु चतुर्थी निशि वर्षति।
मासद्वयं प्रकुर्वन् च वर्षतो दिवि लीयते ॥ १३२७ ॥

श्रावण वदि ४ को रात्रि में वर्षा हो तो २ महीनों तक वर्षा होवे।

श्रावण वदि ४ । ५ योग।

श्रावण कृष्णा चतुर्थी और पञ्चमी जोय।
गाजे वर्षे दमदमे सही ज़माना होय ॥ १३२८ ॥
चौथ पाँचें श्रावण वदि वीज गाज नाहिं मेह।
निश्चय दुर्भिक्ष देखिये बरसाले उड़े खेह ॥ १३२९ ॥

श्रावण वदि ४ । ५ को बादल, बिजली, गाज, वर्षा आदि हो तो सुभिक्ष, किन्तु न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

श्रावण वदि ५ योग।

श्रावणे कृष्णपञ्चम्यां निर्मलं गगनं शुभम्।
तदा ऽष्टादशयामान्ते घनस्तोयं विपोहति ॥ १३३० ॥

श्रावण वदि ५ को आकाश निर्मल हो तो १८ प्रहर (२। दिन) में वर्षा होवे।

श्रावणे कृष्णपञ्चम्यां यदि वृष्टिः पयोधरः।
तदा भूश्चतुरो मासान् भवेद्वारिसमाकुला ॥ १३३१ ॥

श्रावण वदि ५ को बादल, वर्षा हो तो ४ महीनों तक सुवृष्टि होवे, जिस से धान्य अधिक उत्पन्न होवे।

श्रावण कृष्णा पञ्चमी वीज गाज नहिं वेह ।
तो हल जोते क्या फल आया समय का छेह ॥ १३३२ ॥
श्रावण पहिली पञ्चमी जो न धडूक्यो वयाल ।
तू जाईजे पिय मालवे मैं जासूं मोसाल ॥ १३३३ ॥
श्रावण पहिली पञ्चमी जो वाजे वहु वाय ।
काल पड़े सव देश में मनुष्य मनुष्य को खाय ॥ १३३४ ॥

श्रावण वदि ५ को विजली वा गाज कुछ भी नहीं हो, किन्तु ज़ोर का वायु हो तो दुर्भिक्ष होवे।

श्रावण वदि ७ योग।

शनौ श्रावणसप्तम्यां जलपूर्णा वसुन्धरा ॥ १३३५ ॥

श्रावण वदि ७ को शनि वार हो तो वर्षा अधिक होवे।

श्रावण वदि ११ योग।

कृत्तिका श्रावणे कृष्णैकादश्यां मध्यमा भवेत् ।
सुभिक्षं रोहिणी कुर्याद् दुर्भिक्षं मृगशीर्षतः ॥ १३३६ ॥

श्रावण वदि ११ को कृत्तिका हो तो संवत् मध्यम, रोहिणी हो तो सुभिक्ष और मृगशिर हो तो दुर्भिक्ष होवे।

कृष्णे पक्षे श्रावणस्यैकादश्यां रोहिणी च भम् ।
यावद् घटिप्रमाणं स्याद्धान्यं तावद्विंशोपकाः ॥ १३३७ ॥

श्रावण वदि ११ को जितनी घड़ी रोहिणी हो उतने ही विश्वे (६० घड़ी हो तो २० विश्वे,-इस क्रम से) धान्य उत्पन्न होवे।

श्रावण वदि एकादशी रोहिणि वर्षे मेह ।
नृप नन्दे प्रजा हँसे इम बोले सहदेव ॥ १३३८ ॥

श्रावण वदि ११ को रोहिणी में वर्षा हो तो राजा तथा प्रजा में आनन्द होवे।

श्रावण वदि एकादशी वाजे उत्तर वाय ।
घर घर रचे वधावना घर घर मंगल थाय ॥ १३३९ ॥

श्रावण वदि ११ को उत्तर का वायु हो तो घर २ में मांगलिक उत्सव होवें।

श्रावण वदि एकादशी गर्भा भानु उगन्त।
लोक सुखी सुभिक्ष वर्षा चार मास बरसन्त ॥ १३४० ॥

श्रावण वदि ११ को सूर्य बादलों से ढका हुआ उदय हो तो चारों महीनों में वर्षा तथा सुभिक्ष होवे, जिस से लोग सुखी रहें।

एकादश्यां नभःकृष्णे यदि वर्षा मनागपि।
तदा वर्षं शुभं भावि जायते नात्र संशयः ॥ १३४१ ॥

श्रावण वदि एकादशी गर्जे मेघ अध रात।
तुम जाओ पिय मालवे मैं जाऊं गुजरात ॥ १३४२ ॥

श्रावण वदि ११ को वर्षा हो तो सुवृष्टि तथा अगला संवत् सुभिक्ष, किन्तु मध्य रात्रि के समय गाजे तो दुर्भिक्ष होवे।

श्रावण वदि ३० योग।

श्रावणस्य त्वमावस्यां पुष्याश्लेषा मघा यदि।
मध्यमं वर्षमादेश्यं वृष्टिर्न महती तदा ॥ १३४३ ॥

श्रावण वदि ३० को पुष्य, अश्लेषा वा मघा हो तो वर्षा तथा संवत् मध्यम होवे।

श्रावणस्य ह्यमावस्या यदि वृष्टिर्घनाघना।
चराचरं तदा विश्वं सुखभाक् च चलाचलम् ॥ १३४४ ॥

श्रावण वदि ३० को वर्षा हो तो सब लोग सुखी होवें।

श्रावण सुदि ४ योग।

श्रावण शुक्ला चौथ दिन जो ऊगन्ता भान।
नहिं दीखे तो भड्डली पुष्य न वर्षता जान ॥ १३४५ ॥

श्रावण सुदि ४ को उगता हुआ सूर्य न दीखे (बादलों में हो) तो सूर्य के पुष्य नक्षत्र में वर्षा नहीं होवे।

श्रावण सुदि ५ । ६ योग ।

श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां वृष्टिर्वातो दिनद्वये ।
दक्षिणे पश्चिमे ज्ञेयं दुर्भिक्षं धान्यसङ्क्षयम् ॥ १३४६ ॥

श्रावण सुदि ५ । ६ को वर्षा सहित दक्षिण वा पश्चिम का वायु हो तो धान्य का नाश और दुर्भिक्ष होवे ।

श्रावण सुदि ७ योग ।

श्रावणे शुक्लसप्तम्यां सोमे हस्तसमागमे ।
गन्तव्यं मालवे स्थाने निर्जला जलदायिनी ॥ १३४७ ॥

श्रावण सुदि ७ को सोम वार और हस्त नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष होवे ।

श्रावणे शुक्लपक्षेस्यात्स्वातिऋक्षेण सप्तमी ।
तत्र वर्षति पर्जन्यः सत्यमेतद्वरानने ॥ १३४८ ॥
श्रावण सुदि की सप्तमी स्वाति में ऊगे सूर ।
ऋषीश्वर डूंगर चढ़ो नदी वहेगी पूर ॥ १३४९ ॥

श्रावण सुदि ७ को स्वाति नक्षत्र हो तो वर्षा काल में सुवृष्टि होवे ।

श्रावणे शुक्लसप्तम्यां स्वातियोगे जलं भवेत् ।
निष्पत्तिःसर्वशस्यानां प्रजा च निरुपद्रवा ॥ १३५० ॥

श्रावण सुदि ७ को स्वाति नक्षत्र में वर्षा हो तो सर्व धान्य की अधिक उत्पत्ति तथा प्रजा सुखी होवे ।

श्रावणे शुक्लसप्तम्यां यदा मेघः प्रवर्त्तते ।
भवन्ति सर्वशस्यानि धनधान्यसमाकुलम् ॥ १३५१ ॥
श्रावणे शुक्लसप्तम्यामस्तं गते च भास्करे ।
न वृष्टो यदि पर्जन्यो जलाशां मुञ्च सर्वथा ॥ १३५२ ॥

श्रावण सुदि ७ को वादल वा वर्षा हो तो सम्पूर्ण धान्य उत्पन्न तथा प्रजा में धन धान्य की वृद्धि होवे, किन्तु दिनभर में कुछ भी वादल आदि न हो तो वर्षा काल में अनावृष्टि होवे ।

श्रावण सुदि ८ योग।

अष्टम्यां श्रावणे शुक्ले प्रातर्वार्दलडम्बरम्।
रविराच्छादितस्तेन पृथिव्येकार्णवा भवेत् ॥ १३५३ ॥

श्रावण सुदि ८ को प्रातः काल में सूर्य बादलों से ढ
हुआ हो तो बहुत वर्षा होवे।

श्रावण सुदि १० योग।

दशम्यां श्रावणे सिंहे रविः सङ्क्रमते शनौ।
मही स्याज्जलदैः पूर्णा तदा स्याद्धान्यसम्पदाः॥ १३५४

श्रावण सुदि १० शनि वार को सिंह संक्रान्ति लगे तो
तथा धान्य अधिक होवे।

श्रावण सुदि १५ (रक्षा पूर्णिमा) योग।

श्रवणे पूर्णिमायां स्याद्धान्यैरानन्दता प्रजाः ॥ १३५५

श्रावण सुदि १५ को श्रवण नक्षत्र हो तो धान्य की उत्प
अधिक और प्रजा सुखी होवे।

श्रावण सुनो पूनम विधान। ऋक्ष श्रवण हो उस दिन निधा
कमि छांट होय कहिये सुकाल। बहु होय वर्षा मध्यम दुकाल॥१३

श्रावण सुदि १५ को श्रवण नक्षत्र हो तब थोड़ी ही छींटे
तब तो सुभिक्ष, किन्तु अधिक वर्षा हो तो मध्यम संवत् होवे

मेघैराच्छादितश्चन्द्रः पूर्णायां समुदीर्यते।
तदा स्वस्थं जगत्सर्वं राज्यसौख्यं घनो महान् ॥ १३५७

श्रावण सुदि १५ को सन्ध्या को उदय होते समय चन्द्र
बादलों से ढँका हो तो वर्षा अधिक तथा राजा प्रजा में सु
और शान्ति होवें।

(गायसे वर्षा का ज्ञान।)

श्रावणे मथराकाया रक्षोपर्वाणि वीक्ष्यते।
सा गच्छ गोधरं सायां तस्माद्या गौःपरस्परा ॥ १३५८

तस्याश्चिन्हैर्वर्षबोधः शुभाशुभविनिश्चयात् ।
सा गौः सुरूपा सुश्रृङ्गाश्रेष्ठा द्रोणदुधा मता ॥ १३५९ ॥
तस्याः पुच्छे च चमरे पट्टसूत्रस्य लाभकृत् ।
वाणिजां व्यवसायः स्यान्न पुच्छं कर्तित्तं शुभम् ॥१३६०॥
गोदम्भे च प्रजादुःखं तद्युद्धे राज्यविग्रहः ।
गोपेन ताडयमानायां तस्यां रोगाद्भयम्भुवि ॥ १३६१ ॥
निश्रृङ्गायां गवि छत्रभङ्गाय छेच वक्रिते ।
वक्रं वर्षसमादेश्यं खण्डवृष्टिः पयोमुचः ॥ १३६२ ॥

श्रावण सुदि १५ (रक्षा बन्धन) को सन्ध्या समय जब गायें जंगल से पीछी आवें तब नगर में सब से पहिले प्रवेश करे उस गाय का स्वरूप तथा सींग सुन्दर हों वा दूध बहुत देती हो तो संवत् श्रेष्ठ, पूँछ का छणगा सुन्दर हो तो व्यापारियों को रेशम वस्त्र तथा सूत में लाभ किन्तु कटा हो तो हानि, सींग नहीं हों तो छत्र भंग, टेढ़ी चाल से प्रवेश करे तो खण्ड वर्षा तथा संवत् वक्री, दम्भ करे तो प्रजा को दुःख, युद्ध करे तो राज्य विग्रह और ग्वाल लकड़ी आदि से उसे मारे तो रोगों का उपद्रव होवे।

भाद्रपद मास प्रकरण ।

अगस्त्य ऋषि योग।

अगस्त्य ऊगे मह न मण्डे । जो मण्डे तो धार न खण्डे ॥१३६३॥

भाद्रवे में अगस्त्य उदय हो तब से वर्षा बन्द हो जावे, किन्तु जो वर्षा प्रारम्भ हो जावे तो फिर बहुत होवे। (इस का विशेष निर्णय 'अगस्त्य प्रकरण' में देखो।)

चित्रा, स्वाति, विशाखा नक्षत्र योग।

यदि भाद्रपदे मासि चित्रां स्वाति विशाखयोः ।
नाति वर्षति पर्जन्यः शान्तमेघान्विनिर्दिशेत् ॥ १३६४ ॥

भाद्रवा सुदि में चित्रा, स्वाति और विशाखा में वर्षा न हो तो वर्षा काल समाप्त हुआ जाने ।

अनुराधा नक्षत्र योग।

भाद्रवा सुदि में अनुराधा में बादल, बिजली, गाज वा वर्षा हो तो पिछले सब दोष मिट के सुभिक्ष, किन्तु न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

भाद्रवा वदि १ योग।

प्रथमायां तिथौ भाद्रे गुरौ श्रवणसंयुते।
अभङ्गंजायते वर्षं धनधान्यादिसम्पदाः ॥ १३६५ ॥

भाद्रवा वदि १ को गुरु वार और श्रवण नक्षत्र हो तो सुभिक्ष तथा धन धान्य की वृद्धि होवे।

भाद्रवा वदि २ योग।

भाद्रे कृष्णे द्वितीयायां द्वितीयवारयोगतः।
धान्यनिष्पत्तिरत्तुला सम्पदाः स्युश्चतुष्पदे ॥ १३६६ ॥

भाद्रवा वदि २ को सोम वार हो तो जगत् में धन धान्य तथा गवादि पशुओं की वृद्धि होवे।

भाद्रे मासे द्वितीयायां यदि चन्द्रो न दृश्यते।
तदा सम्पूर्ण वर्षा स्यादन्ननिष्पत्तिरुत्तमा ॥ १३६७ ॥

भाद्रवा वदि २ की रात्रि में चन्द्रमा न दीखे (बादलों से ढँका रहे) तो वर्षा तथा धान्य की उत्पत्ति अधिक होवे।

भाद्रवा वदि ३ योग।

नभसश्च तृतीयायां प्रहरे च तृतीयके।
उत्तरस्यां घना दृष्टास्तदा स्युः सुखिनो प्रजाः ॥ १३६८ ॥

भाद्रवा वदि ३ को तीसरे प्रहर उत्तर में बादल हो तो प्रजा में सुख होवे।

भाद्रवा वदि ४ योग।

शनौ भाद्रपदे कृष्णे चतुर्थी यदि जायते।
देशभङ्श्च दुर्भिक्षं मुस्तयोदरपूरणम् ॥ १३६९ ॥

भाद्रवा वदि ४ को शनि वार हो तो देश का नाश तथा दुर्भिक्ष होवे।

भाद्रवा वदि ८ योग।

भाद्रपदे ऽसिताष्टम्यां रोहिणी शुभदायिनी ॥ १३७० ॥

भाद्रवा वदि ८ को रोहिणी हो तो शुभ होवे।

भाद्रवा वदि ३० योग।

मुद्गर योगे भाद्रवे अमावस रवि वार।
उज्जीणी थी पश्चिमे होसी हाहा कार ॥ १३७१ ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं वर्षायाः प्रबलोदयः।
शस्योत्पत्तिः प्रजासौख्यं सोमवारे प्रवर्त्तते ॥ १३७२ ॥

भाद्रवा वदि ३० को वार रवि हो तो उज्जैन से पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि का उपद्रव; किन्तु सोम हो तो बहुत वर्षा, धान्योत्पत्ति, सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य और सुख होवे।

भाद्रवा सुदि ३ योग।

भाद्रमासे तृतीयायां भौमे चोत्तरफाल्गुनी।
तदा वृष्टिकरो नैव प्रोन्नता ऽपि घनाघनः ॥ १३७३ ॥

भाद्रवा सुदि ३ को मंगल वार और उत्तरा फाल्गुनी हो तो बड़े२ बादलों से भी वर्षा न होवे, अर्थात् अनावृष्टि होवे।

भाद्रवा सुदि ४ योग।

भाद्रे शुक्ले चतुर्थ्याश्चेद्वारा जीवेन्दुभार्गवाः।
उत्तराहस्तचित्राभिः सुभिक्षं निश्चयात्तदा ॥ १३७४ ॥

भाद्रवा सुदि ४ को वार तो सोम, गुरु वा शुक्र और नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी, हस्त वा चित्रा हो तो सुभिक्ष होवे।

भाद्रवा सुदि ५ योग।

भाद्रवा सुदि पञ्चमी स्वाति संयोगी होय।
बहू योगां जो मिले (तो) मंगल वरते लोय ॥ १३७५ ॥

भाद्रवा सुदि ५ को स्वाति हो तो श्रेष्ठ होवे।

भाद्रे च शुक्लपञ्चम्यां जलं दत्ते न चेद् घनः।
दैवकोपात्तदा ज्ञेयो सज्जनोऽपि च दुर्जनः॥ १३७६॥

भाद्रवा सुदि ५ को कुछ भी वर्षा न हो तो दैवकोप से बड़ा दुर्भिक्ष होवे।

भाद्रवा सुदि ६ योग।

भाद्रे मासे शुक्लषष्ठ्यामनुराधा यदा भवेत्।
नक्षत्रान्तरदोषेऽपि सुभिक्षं निर्णयाद्वदेत्॥ १३७७॥

मासे भाद्रपदे चैव यदि षष्ठ्यां च मित्रयुत्।
तताभ्रं विद्युदम्भो वा धान्यनिष्पत्तिहतवे॥ १३७८॥

भाद्रवा सुदि ६ को अनुराधा हो तो अन्य नक्षत्रों के दोष को मिटा के सुभिक्ष होवे। तथा उस दिन, बादल, विजली वा वर्षा भी हो तव तो धान्य की उत्पत्ति अवश्य होवे।

ज्येष्ठ गयो आषाढ़ गयो श्रावणीयां तु जाय।
भादरवे जग रेलसी छट्ठे अनुराधाय॥ ११७९॥

ज्येष्ठ, आषाढ तथा श्रवण में भी वर्षा न हुई हो किन्तु भाद्रवा सुदि ६ को यदि अनुराधा हो तो अवश्य वर्षा होवे।

श्रावण स्वाति न वूठियो कांहीं चितन्वे नाह।
भाद्रवे जुग रेलसी जो छठ होसी अनुराधाह॥ १३८०॥

अथवा तिण दिन नहीं छुटियो विजली रो झण कार।
(तो) तूं जाईजे पिव मालवे मैं जासूं मोसाल॥ १३८१॥

भाद्रवा सुदि ६ को अनुराधा हो तो श्रावण सुदि ७ के स्वाति नक्षत्र में वर्षा न होने के दोष को मिटा के सुभिक्ष होवे, किन्तु इस दिन बादल विजली गाज आदि कुछ भी नहीं हो तो दुर्भिक्ष होवे।

भाद्रवा ७ सुदि योग।

सप्तम्यां नभमासस्य न वर्षा च गर्जितम्।
विद्युद्विद्योतने नैव दैवः कालस्य नाशकः॥ १३८२॥

भाद्रवा सुदि ७ को विजली, गाज वा वर्षा न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

भाद्रपदे शुक्लपक्षे सप्तमी मैत्रसंयुता।
न वृष्टो नभपर्जन्यो जलाशां मुञ्च सर्वथा॥ १३८३॥

भाद्रवा सुदि ७ को अनुराधा हो और उस दिन कुछ भी वर्षा न हो तो अनावृष्टि होवें।

भाद्रवा सुदि ९। ११ योग।

नवम्यां भाद्रमासस्य वृष्टिर्दुष्कालमादिशेत्।
एकादश्यां तु तस्यैव धनधान्यसमर्घता॥ १३८४॥

भाद्रवा सुदि में वर्षा ९ को हो तो दुर्भिक्ष किन्तु ११ को हो तो सुभिक्ष होवे।

भाद्रवा सुदि ११ योग।

भाद्रवा सुदि ११ को रात्रि के समय गाजे तो टिड्डियों का उपद्रव होवे।

भाद्रवा सुदि १५ योग।

पूर्णा भाद्रपदे साभ्रा शुभा धान्यस्य विक्रयात्।
निर्मल्याद्धान्यसङ्ग्राह्यो लाभो भवति नान्यथा॥ १३८५॥

भाद्रवा सुदि १५ को बादल, विजली, गाज आदि हो तो धान्य शीघ्र वेच दे, किन्तु निर्मल हो तो ख़रीद लेने से लाभ होवे।

भाद्रवा सुदि ४। ५। ७। ८। १५ योग।

भाद्रे शुक्ले चतुर्थेऽह्नि पञ्चमे सप्तमेऽष्टमे।
पूर्णिमायां च गर्भेण सद्यो मेघमहोदयः॥ १३८६॥

भाद्रवा सुदि ४। ५। ७। ८। १५ को बादल, विजली, गाज आदि गर्भ धारण के लक्षण हों तो शीघ्र बहुत वर्षा होवे।

———※———

आश्विन मास प्रकरण ।

आसोजों के मेह से दोनों बात निवास ।
बोराड़ियों के बोर नहिं बणियों नहीं कपास ॥ १३८७ ॥

आश्विन में वर्षा हो तो बोर और कपास (रुई) की फसल मे हानि होवे।

हो शुक्र अस्त आसोज मास । सब लोक सुखी आनन्द तास १३८८

आश्विन में शुक्र अस्त हो तो सब लोग सुखी होवें।

आश्विन सुदि ४ योग ।

आश्विनस्य चतुर्थ्यां चेद्वार्दलान्यरुणोदये ।
तदा क्षेमाय लोकानां वृष्टिः सञ्जायते शुभा ॥ १३८९ ॥

आश्विन वदि ४ को सूर्योदय के पहिले बादल हो तो श्रेष्ठ वर्षा तथा कल्याण होवे।

आश्विन वदि ३० योग।

आश्विन वदि अमावस्या जो आवे शनि वार ।
तो तिस वर्षे करवरा किस ही खण्डे काल ॥ १३९० ॥

आश्विन वदि ३० को शनि वार हो तो संवत् मध्यम किन्तु कहीं २ दुर्भिक्ष भी होवे।

आश्विन सुदि ७ योग।

सप्तम्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाऽऽश्विने ।
श्रवणं वा धनिष्ठा चेज्जगतो नाशकारकः ॥ १३९१ ॥

आश्विन सुदि ७ को शनि वार और श्रवण वा धनिष्ठा हो तो दुर्भिक्ष होवे ।

आश्विन सुदि ७ । ८ योग ।

सप्तम्याश्वयुजि मासि सितेऽष्टमी जलान्विता ।
सुभिक्षं तत्र चादेश्यं राजानः शान्तविग्रहाः ॥ १३९२ ॥

आश्विन सुदि ७।८ को वर्षा हो तो सुभिक्ष तथा राजाओं में युद्ध की शान्ति होवे ।

आश्विन सुदि १४ | १५ योग।

"ॐ नमो भगवउ गोयम सामि स्स सिद्ध स्स बुद्ध स्स अखीण महाण स्स भगवन् भास्करी श्रियं आनय आनय पूरय पूरय स्वाहा" ॥ मन्त्र ॥

आश्विनस्य चतुर्दश्यां मन्त्रोऽयं जप्यते निशि।
सहस्रमेकं तपसा धूपोत्क्षेपपुरस्सरम् ॥ १३९३ ॥
प्रातः पूर्णादिनमुखे लेख्ये गोत्तमपादुके।
जपद्भि सुरभिर्द्रव्यैरर्चनीये सुभाविना ॥ १३९४ ॥
पात्रे यत्पादुके लेख्ये वस्त्रेणाच्छाद्यते च तत्।
मार्जारदर्शनं वर्ज्यं यावच्च क्रियते विधिः ॥ १३९५ ॥
समये पात्रकं नीत्वा भिक्षायै गम्यते गृहे।
दातुर्महेभ्यः श्राद्धस्य यत्प्राप्तं तद्विचार्यते ॥ १३९६ ॥

अगले वर्ष का भावीफल जानने के लिये कोई साधु आदि आश्विन सुदि १४ की रात्रि में ऊपर लिखे मन्त्र को १००० जप के धूप खेवे। फिर सुदि १५ को प्रातः काल में एक भिक्षा लाने के पात्र में चन्दन आदि से 'गोतम स्वामी' की पादुका लिख के पूजा कर के वस्त्र से ढंक दे। यह कार्य करे तब तक बिल्ली को न देखे। फिर उचित समय में वह पात्र ले के प्रथम जिस गृहस्थी के घर में जावे वहां जो भिक्षा मिले उस के अनुसार शुभाशुभ जाने।

सधवा सतनूजा स्त्री भिक्षादात्री शुभाय सा।
यद्बहु प्राप्यते धान्यं तन्निष्पत्तिः पुरो भवेत् ॥ १३९७ ॥
नास्ति वेलेत्युत्तरेण दुर्भिक्षं भाविवत्सरे।
विलम्बदाने मेघोऽपि विलम्बेनैव वर्षति ॥ १३९८ ॥
तत्र क्लेशदर्शनेन राजविग्रहमादिशेत्।
भङ्गे पात्रस्य भाण्डस्य छत्रभङ्गो विचार्यते ॥ १३९९ ॥
व्यङ्गा वा रुदती दत्ते तदा रोगाद्युपद्रवः।
गौतमीयमिदं ज्ञानं न वाच्यं यत्र कुत्र चित् ॥ १४०० ॥

भिक्षा देने वाली स्त्री सुहागिन वा पुत्रवती हो तो शुभ, किन्तु अंग हीन, रोती वा वादविवाद करती हो तो रोगादि का उपद्रव, भिक्षा में जो धान्य अधिक मिले उस की अधिक उत्पत्ति, विलम्ब से दे तो वर्षा भी विलम्ब से, किन्तु बिलकुल नट जावे तो दुर्भिक्ष होवे; वहां कोई क्लेश दीखे तो राज्य विग्रह होवे; और वह पात्र वा अन्य कोई वर्त्तन फूटे तो छत्र भंग होवे।

(उपश्रुति द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

उपश्रुतिस्तद्दिने वा वर्षबोधे विचार्यते।
लोको वदति यद्वाक्यं ज्ञेयं तस्मात् शुभाशुभम् ॥ १४०१ ॥

आश्विन सुदि १४। १५ को 'उपश्रुति' देखे। लोग जो शब्द बोलें उन के अनुसार अगले वर्ष का शुभाशुभ फल जाने।

आश्विन सुदि १ । ८ । १० योग।

यदा चाश्वयुजे मासि दशम्यां प्रतिपत्तिथौ।
अष्टम्यामम्बरे मेघाः सत्वरं वृष्टिकारकाः ॥ १४०२ ॥

आश्विन सुदि १।८।१० को बादल हो तो शीघ्र वर्षा होवे।
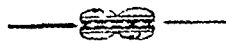
मिश्र मास प्रकरण।

कार्त्तिक वदि १४ वा ३० (दिवाली) फाल्गुन सुदि १४ वा १५ (होली) और आषाढ़ी पूर्णिमा से वर्षा का ज्ञान।

दीपमालिका दिवा बुझावे। होली झाल उत्तर दिशि जावे।
आषाढ़ी पूनम नैर्ऋत वाय। अन्न बिके सुन आने पाव॥१४०३॥

वायु दीवाली के समय जोर का-जिस से दीपक बुझ जावें होली के समय दक्षिण का-जिस से होली की झाल उत्तर की ओर जावे और आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्त के समय नैर्ऋत्य

* इस का विशेष निर्णय मेरे बनाये "वृहदर्घ [illegible] ग्रन्थ के 'संवत्सर सुबोध' नामक अंक के उपश्रुति प्रकरण में किया [illegible], पौरटेज॥. पौष वदि ३०, वैशाख सुदि ३ और श्रावण सुदि [illegible] वर्षा का ज्ञान।

का हो तो अन्न एक आनेका पाव अर्थात् रु० १) का ऽ४
विके-ऐसा दुर्भिक्ष पड़े।

आखा तीज न रोहिणी पौष न दर्शे मूल।
रक्षा श्रवण ना मिले (तो) चहुं दिश वाजे धूल॥१४०
ये तीनों आरख मिले जग में जय जय कार।
उत्तर तो आरख मिले यों सम कर वर धार॥१४०५॥
सव आरख में सरस यह शकुनी कहे सुजान।
पहिले आरख समझ के पीछे वृष्टि वखान॥ १४०६॥

पौष वदि ३० को मूल, वैशाख सुदि ३ को रोहिणी अ
श्रावण सुदि १५ को श्रवण हो तो संवत् वहुत उत्तम जिस
जगत् में आनन्द किन्तु ऐसा न हो तो भयानक दुर्भिक्ष और
नक्षत्र किसी तिथि में तो हो और किसी में नहीं हो तो संव
मध्यम होवे। तिथि, वार, नक्षत्र आदि के सम्पूर्ण योगों में य
योग अधिक बलवान है अतः इसे पहिले विचार के फिर व
तथा संवत् का शुभाशुभ कहना चाहिये।

माघ सुदि ७, फाल्गुन सुदि ५, चैत्र सुदि ३ और वैशाख सुदि १
के द्वारा वर्षा का ज्ञान।

माघ मासस्य सप्तम्यां पञ्चम्यां फाल्गुनस्य च।
चैत्रे स्यापि तृतीयायां वैशाखे प्रथमे ऽहनि॥ १४०७॥
मेघस्य गर्जितं श्रुत्वा जलदस्यतु दर्शने।
चतुरो वार्षिकान् मासान् जलवृष्टिं तदा वदेत॥ १४०८
वाति वाताश्च शुभदा तथा प्रावृषि वर्षणम्॥ १४०९॥

माघ सुदि ७, फाल्गुन सुदि ५, चैत्र सुदि ३ और वैशा
सुदि १-इन चारों दिनों में शुभ वायु बादल वा गाज हो तो व
काल के चारों ही महीनों में अच्छी वर्षा होवे।

माघ, चैत्र मास और वैशाख सुदि ३ द्वारा वर्षा का ज्ञान।

माघ वुलायो निर्मलो जो भूमलियो चैत्र।
आखा तीज न गाजियो तो खेह ऊडसी खेत॥ १४१०

माघ में वादल आदि कुछ भी नहीं हो, चैत्र में छींटे वर्षा आदि हो और वैशाख सुदि ३ को नहीं गाजे तो अनावृष्टि होवे।

माघ, ज्येष्ठ और श्रवण मास द्वारा वर्षा का ज्ञान।

माघ मसक्का ज्येष्ठ सी श्रावण ठण्ढी वाव।
भीम कहे सुन भड्डली नहीं वर्षन को भाव ॥ १४११ ॥

माघ में गर्मी, ज्येष्ठ में सर्दी और श्रावण में ठण्ढी हो तो अनावृष्टि होवे।

फाल्गुन, चैत्र वा वैशाख सुदि १३ द्वारा वर्षा का ज्ञान।

फाल्गुने चैत्र वैशाखे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी।
धूमिका जायते तेषां देवस्तत्र न वर्षति ॥ १४१२ ॥

फाल्गुन चैत्र वा वैशाख सुदि १३ को धूहर पड़े तो अनावृष्टि होवे।

चैत्र वैशाख ज्येष्ठ मास द्वारा वर्षा का ज्ञान।

चैत्र मास जो वीज लुकोवे। धुर वैशाखां केसू धोवे।
ज्येष्ठ मास जो जाय तपन्ता। कौन रखेगा जल (हर) वर्षन्ता१४१३

चैत्र में विजली नहीं चमके, वैशाख लगते ही वर्षा होवे और ज्येष्ठ में बहुत तपे तो वर्षा काल में बहुत वर्षा होवे।

वैशाख सुदि ३ (अक्षय तृतीया) ज्येष्ठ सुदि १५ और आश्विन सुदि १० (विजयादशमी) द्वारा वर्षा का ज्ञान।)

आखारोहिणि वाहिरी ज्येष्ठी मूल न होय।
विजयादशमी श्रवण नहिं तो निश्चय काल जोय॥१४१४॥

वैशाख सुदि ३ को रोहिणी, ज्येष्ठ सुदि १५ को मूल और आश्विन सुदि १० को श्रवण हो तो सुभिक्ष किन्तु ऐसा न हो तो दुर्भिक्ष होवे।

सद्योवृष्टि प्रकरण ।

अति वातञ्च निर्वातं अत्युष्णं चाति शीतलम् ।
अत्यभ्रञ्च निरभ्रञ्च षड्विधं मेघ लक्षणम् ॥ १४१५ ॥

वायु बहुत ज़ोर से चले वा बिलकुल ही बन्द हो, गर्मी अधिक हो वा बिलकुल ही नहीं हो जिस से ठण्ढ अधिक हो जावे, बादल बहुत अधिक हो वा बिलकुल नहीं हो तो वर्षा होवे।

गिरयोऽञ्जनचूर्णसन्निभा यदि वा बाष्प निरुद्धकन्दराः ।
कृक वा कुविलौचनोपमाः परिवेषाः शशिनश्चवृष्टि दोः ॥१४१६॥

यदि पर्वत सुरमें जैसे काले दीखे वा उनकी गुफाओं से वाफ़ निकले अथवा चन्द्रमा के कुर्कुट के नेत्र जैसा जल कुण्डल हो तो वर्षा होवे ।

वल्लीनां गगनतलोन्मुखाः प्रवालाः
स्नायन्ते यदि जलपांशुभिर्विहङ्गाः ।
सेवन्ते यदि च सरीसृपास्तृणा–
गाण्यामन्नो भवति तदा जलस्य पातः ॥ १४१७ ॥

यदि बेलों के नवीन पत्ते आकाश की ओर ऊंचे हो जावे, पक्षी जल वा रेत में स्नान करें वा सर्प आदि कीड़े घास के अग्र भाग पर जा बैठें तो वर्षा होवे।

विररससमुदकं गोनेत्राभं वियद्विमला दिशो
लवण विकृतिः काकाण्डभं यदा च भवेन्नभः ।
पवनविगमः पोप्लूयन्ते झषाः स्थलगामिनो
रसनमसकृन्मण्डूकानां जलागमहेतवः ॥ १४१८ ॥

यदि मेंडक बार २ शब्द करें, जलमें की मच्छियें भूमिपर आने लगें, लवण गल जाय, जलका स्वाद जाता रहे, वायु बन्द हो जावे, दिशायें निर्मल हो वा आकाश की कान्ति गाय के नेत्र जैसी हो तथा वर्ण कौवे के अण्डे जैसा हो तो वर्षा होवे।

मार्जारा भृशमवनिं नखैर्लिखन्तो
लोहानां मलनिचयः सविस्रगन्धः ।
रथ्यायां शिशुरचिताश्चसेतुबन्धाः
सम्प्राप्तं जलमचिरान्निवेदयन्ति ॥ १४१९ ॥

यदि बिल्ली नखों से भूमि खोदे, लोह कांसे आदि में दुर्गन्ध सहित काट आवे वा बालक वर्षा का जल रोकने के लिये मार्ग में पाल बांधें तो शीघ्र वर्षा होवे।

विनोपघातेन पिपीलिकानामण्डोपसङ्क्रान्तिरहिव्यवायः ।
द्रुमावरोहश्च भुजङ्गमानां वृष्टेर्निमितानि गवां प्लुतं च ॥१४२०॥

यदि चिउंटियें विना कारण अपने अण्डे एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जावें, सर्प वृक्ष पर चढ़ बैठें वा गाय वार २ शब्द करे तो वर्षा होवे।

तरुशिखरोपगताः कृकलासागगनतलस्थितदृष्टिनिपाताः ।
यदि च गवां रविवीक्षणमूर्ध्वंनिपतति वारि तदा न चिरेण॥१४२१

यदि गिरगिट वृक्ष पर बहुत ऊंचे चढ़ के आकाश की ओर देखे, वा गाय सूर्य की ओर देखे तो वर्षा होवे।

नच्छन्ति विनिर्गमं गृहाद् धुन्वन्ति श्रवणान् खुरानपि ।
पशवः पशुवच्च कुक्कुरा यदाऽम्भः पततीति निर्दिशेत् ॥१४२२॥

यदि गवादि पशु वा श्वान घर से बाहर जाना नहीं चाहें तथा कान वा पैरों को कंपावें तो वर्षा होवे।

यदा स्थिता गृहपटलेषु कुक्कुरा
रुदन्ति वा यदि विततं वियन्मुखाः ।
दिवा तडिद्यदि च पिनाकिदिग्भवा
तदा क्षमा भवति समैव वारिणा ॥ १४२३ ॥

यदि श्वान घर की छत पर जाके सोवे वा आकाश की

और देखता हुआ वार २ शब्द करे अथवा दिन को ईशान कोण में विजली चमके तो बहुत वर्षा होवे।

वर्षत्यपि रटति यदा गोमायुश्च प्रदोषवेलायाम्।
सप्ताहं दुर्दिनमपि तदा पयो नात्र सन्देहः॥ १४२४॥

यदि स्याल प्रदोष के समय ७ दिन तक लगातार शब्द करे तथा दुर्दिनभी हो तो अवश्य वर्षा होवे।

प्रविशति यदि खद्योतो जलदसमीपेषु रजनीषु।
केदारपूरमधिकं वर्षति देवस्तदा नचिरात्॥ १४२५॥

यदि रात्रि के समय खद्योत वादलों के निकट जाय तो बहुत वर्षा होवे जिस से तलाव आदि भर जावे।

दक्षिणे प्रबलो वातः सकृदेव प्रजायते।
वारुणेचैव नक्षत्रे शीघ्रं वर्षति माधवः॥ १४२६॥

यदि शतभिषा नक्षत्र के दिन वायु दक्षिण की ओर से बहुत जोर का चले तो शीघ्र वर्षा होवे।

धूमिताः स्युर्दिशाः सर्वा पूर्ववाते वहत्यपि।
चतुर्यामान्तरे मेघः सरांसिपरिपूरयेत्॥ १४२७॥

यदि सम्पूर्ण दिशाओं में धूआं सा दीखे और उस समय पूर्व का वायु चले तो ४ प्रहर में बहुत वर्षा होवे।

स्तनितं निशि विद्युतो दिवा रुधिरनिभा यदि दण्डवत्सिताः।
पवनः पुरतश्च शीतलो यदि सलिलस्य तदाऽऽगमो भवेत्॥१४२८॥

यदि वायु पूर्व का शीतल चले, दिन में लाल रंगकी दण्डाकार विजली चमके तथा रात्रि मे गाजे तो वर्षा होवे।

वार्दले रात्रिवासश्चेत् खद्योतेषु निशि द्युतिः।
जलेषु चोष्णता सद्यो मेघवर्षाऽभि लक्षणम्॥ १४२९॥

यदि रात्रिके वादल दिनमें वासी रहे तथा रात्रि में खद्योत (आगिया) चमकते दीखें और जल में उष्णता हो तो वर्षा होवे।

मध्यानकाले जनस्ताप ईदृशं मेघलक्षणम् ।
अर्धरात्रौ गते वृष्टिः प्रजातोपाय जायते ॥ १४३४ ॥

यदि पूर्व दिशा में के धूम्र वर्ण के बादल सूर्यास्त के समये कृष्ण वर्ण हो जावे तथा उत्तर में बादलों की माला दीखे अथवा प्रभात के समय दिशायें निर्मल हों और मध्याह्न के समय सूर्य बहुत तपे तो उसी दिन आधी रात्रि के समय बहुत वर्षा होवे ।

यद्यमोघकिरणाः सहस्रगोरस्तभूधरकरा इवोच्छ्रिताः ।
भूमगं च रसने यदाम्बुदस्तन्महद्भवति वृष्टि लक्षणम् ।१४३५।

यदि बादल बहुत नीचे २ चलते हों तथा सन्ध्या के समय सूर्य की अमोघ संज्ञक किरणें (मोघं) बहुत लम्बी हों तो अधिक वर्षा होवे ।

शक्रचापपरिघप्रतिसूर्या रोहितोऽथ तडितः परिवेषः ।
उद्गमास्तसमये यदि भानोरादिशेत्प्रचुरमम्बुतदाशु ॥ १४३६ ॥

यदि सूर्यके उदय वा अस्त समय में छोटा वा बड़ा इन्द्र धनुष, सूर्य के आडी मेघ की रेखा. बिजली. कुण्डल, वा प्रतिसूर्य होतो बहुत वर्षा होवे ।

उदयशिखरिसंस्थो दुर्निरीक्ष्योऽतिदीप्त्या
द्रुतकनकनिकाशः स्निग्धवैदूर्यकान्तिः ।
तदहनिं कुरुतेऽम्भस्तोयकाले विवस्वान्
प्रतपति यदि चोच्चैः खं गतोऽतीव तीक्ष्णम् ॥ १४३७ ॥

यदि सूर्य उदय होता हुआ कठिनता से देखा जावे, वा गलाये हुये सोने के समान चक्कर खाता हुआ वा पन्नेके सदृश हरे रंगकी स्निग्ध कान्ति वाला दीखे अथवा मध्याह्न के समय बहुत जोर से तपे तो उसी दिन वर्षा होवे ।

रात्रौ तारा झलत्कारः प्रातश्चात्यरुणो रविः ।
अवृष्टौ शक्रचापश्च सद्यो वृष्टिस्तदा भवेत् ॥ १४३८ ॥

यदि रात्रि में तारे झगमगाहट करें प्रभात के समय सूर्य बहुत लाल हो और इन्द्रधनुष् विना वर्षा के हो तो तत्काल वर्षा होवे ।

चढन्ति भुजगा वक्षे सूर्येन्द्वौ परिधिस्तथा ।
उर्ध्वा चेद्भल्लुली शेते लोहे किट्टः पुनः पुनः ॥ १४३९ ॥
आम्लं च तक्रं तत्कालं मत्स्येन्द्र धनुरुद्गतः ।
धूमितानिविडाः शैलाः चर्मादिषु तथाऽऽर्द्रता ॥ १४४० ॥
गोमये उत्कराः कीटा परितापोऽतिदारुणः ।
चातकानां रवेर्वृष्टिः सद्यः स सूचयेज्जनम् ॥ १४४१ ॥

यदि पर्वतमें धूआ दीखे, छाछ खट्टी हो जावे, लोह में वार २ काट आवे, चमड़े केश आदि में गीलापन आ जावे, गोवर में उंकीरे ऊठें तथा कीड़े पड़ जावें, श्वान मकान की छत पर सोवे, पपीहा शब्द करे, सर्प वृक्ष पर चढ़े, मत्स्य वा इन्द्र धनुष् हो, प्रतिसूर्य वा प्रतिचन्द्र दीखे वा बहुत जोर की गर्मी पड़े तो तत्काल वर्षा होवे ।

वादल से वादल लड़े बुग बैठे पंख विखेर ।
यांम दोय के तीन में चढ़े घटा चौफेर ॥ १४४२ ॥

यदि वगुले पंखे फैलाके बैठे तथा वादल से वादल टकरावें तो २ वा ३ प्रहरमें चारों ओर से वर्षा की घटा आवे ।

पलोंव्या रूखन चढ़े अम्बर गोरे हुन्त ।
परे परल पांनि अति जव सन्ध्या फूलन्त ॥ १४४३ ॥

यदि छोटे २ सर्प वृक्षों पर चढ़े, आकाशका वर्ण गौर दीखे वा सन्ध्या फूले तो बहुत वर्षा होवे ।

नाग चीस सुनि रूख पर अम्बर धनुष भरक ।
खुररि समय दिन तीन में माधव करे करक ॥ १४४४ ॥

यदि सर्प वृक्ष पर चढ के जोर से शब्द करे वा आकाश में धनुष् तने तो ३ दिन में गाज सहित वर्षा होवे ।

सूरज कुण्डल जलहरी दादूर गहरे साद ।
दिन दूजे तीजे तहां अम्बर करे अवाज ॥ १४४५ ॥

यदि मेडक गम्भीरता से शब्द करें, दिशायें धूंधली होवें वा सूर्य के जलहरी सहित कुण्डल हो तो दूसरे वा तीसरे दिन गाज सहित वर्षा होवे ।

उत्तरादि कांठल वंधै पूर्व वाजै वाय ।
न्यूटगाजीमै पावणा वर्ष्या विना न जाय ॥ १४४६ ॥

यदि उत्तर में बादलों की पंक्ति बने और पूर्व का वायु चले तो अवश्य वर्षा होवे ।

फिर्यो पवन छूटी परवाई । ऊठी घटा छटा कर आई ।
घर सारी दै छोल धपाई । सारेई नाज करी सरसाई ॥ १४४७ ॥

यदि किसी दिशा का वायु वदल के पूर्व का चलने लगे तथा बादलों की घटा चढ़ के आवे तो तत्काल वहुत वर्षा होवे ।

धुर पूरव दिशि बीजली चातक लवतोरंत ।
सूरयो परवाई पवन वर्षा करे अचिन्त ॥ १४४८ ॥

यदि उत्तर वा पूर्वका वायु चले वा उस और विजली चमके वा पपीहा शब्द करे तो अचानक वर्षा होवे ।

मोटे पुरतन वादले अम्बर लेसर हुन्त ।
पवन बन्द चौफेर जब जल थल ठेल भरन्त ॥ १४४९ ॥

यदि अनेक तहवाले बहुतसे वादलों से आकाश ढंक जावे और उस समय वायु विलकुल बन्द होतो बहुत वर्षा होवे ।

अति उमच काया जलै वादल उदय अनन्त ।
जब अवसारी मेघ की जोषी कहो निचिन्त ॥ १४५० ॥

यदि उमच (गर्मी) की अधिकता के कारण शरीर व्याकुल हो और वादल वहुत निकलें तो अवश्य वर्षा होवे ।

वासी वादल स्थिर रहे गरमी तन अकुलात ।
प्रात समय जब गर्जना जब झड़ लगे विख्यात ॥ १४५१ ॥

यदि रात्रि के वासी बादल बने रहें, प्रातःकाल में गाजे और गरमी से शरीर व्याकुल हो जावे तो वर्षा की झड़ी लगे।

तपे सूर्य अति तेज तव अम्बर ताने मच्छ।
उदय अस्त मोघन रवि वर्षा करे सुलच्छ॥ १४५२॥

यदि सूर्य बहुत जोर से तपे आकाश में मच्छ हो और दोनो सन्ध्याओं के समय मोंघें खिचे तो बहुत वर्षा होवे।

सूर्य ऊगियो सतेज आड बोलै अणियाली।
माखण गलियो माट पवन मुख बैठे छाली॥ १४५३॥
कांसै झलियो काट आभ नीलै रंग आवै।
टीटोड़ी जल मांह चिडी रेती में न्हावै॥ १४५४॥
डेडका डहक बाड़ां चढै विष धर चढ बैठै बड़ां।
माधिया पण्डित कूड़ा पतड़रे घन वर्षे एते गुणां॥ १४५५॥

मक्खन गल जावे, कांसे को काट आवे, बकरी वायु के सन्मुख बैठे, चिडियां रेती में तथा टिटहरी जलमें स्नान करें, मेडक जलसे बाहर जाके घास आदि पर चढ़े तथा शब्द करें, सर्प वृक्ष पर चढ़े आड पक्षी तेजी से शब्द करे, आकाश नीला हो जावे, वा सूर्य बहुत तेजदार उदय हो तो वर्षा होवे।

अधिक अमूज्यो अंग रंग रोली किर कांट्यो।
डाढी कंवला केश बली कूंपलरे बाठ्यो॥ १४५६॥
वड़ां सुरंगी साख आक कूंपल टहकाई।
चन्द्र कुण्डियो चक्र तेज तारां निसिताई॥ १४५७॥
उकिरो उठ गोबर गल्यो भ्रमर पांख भणण भणा।
माधिया पण्डित कूड़ा पतड़रे घन वर्षे एत गुणां॥ १४५८॥

शरीर गर्मि से बहुत व्याकुल हो, दाढ़ी के केश कोमल हो जावें, छोटे वृक्षों की कूंपले जल जावे आक के नवीन कूंपलें निकलें, बड़ की साखें लाल हो जावे, गोबरमें उकीरा निकलें,

भौंरे पांखे भनभनावे, गिरगटका रंग लाल हो जावे, तारों क तेज अधिक हो वा चन्द्रमा के कुण्डल हो तो वर्षा होवे।

सांडा रोक्या द्वार जम्बु बौलै झड़ वाया।
कीड़ी काढ़ै अण्ड पांख माखी भणकावे ॥ १४५९ ॥
आलस अंग अपार नेन निन्द्रा अलुवावै।
वकै पपइयो पीव मोर कुल्हार सुणावै ॥ १४६० ॥
कुकड़ो अर्ध निशि वांगदै आभै वादलछिण छिणा।
माधिया पण्डित कूड़ा पतडरै घन वर्षे एते गुणां ॥ १४६१ ॥

मनुष्यों को आलस्य, पसीना, तथा निद्रा अधिक आवें, चींटियें अण्डों को ले के निकलें, मक्खियें भिनभिनावें, मुर्गा आधी रात्रि में शब्द करे, पपीहा मोर तथा स्याल वार २ बहुत शब्द करे, सांडे अपने दर का मुख बन्द कर लें, वा आकाश में तीतर वर्ण बादल होवे तो वर्षा होवे।

वींभरियां भणकाय वकै पिक अमृत वाणी।
नाडी तत्ता नीर पिघल आफू गुड़ पाणी ॥ १४६२ ॥
श्वान उझंखि मुख श्वास भ्रमर गोवर गुड़ कावै।
जल जन्तु अकुलाय गीत गोहा जुड़ गावै ॥ १४६३ ॥
वादल रैन वासी रहै ऊगीवे अर्क झलहल जणा।
माधिया पण्डित कूड़ा पतड़रै घन वर्षे एते गुणां ॥ १४६४ ॥

अफीम वा गुड़ आदि गलने लगे, तालाब नाडी आदि का पानी उष्ण हो जावे, भौंरे गोबर की गोलियें बनाके गुड़ाते हुये ले जावें, वींभरियों अधिक भ्रमें, कोयल मधुर शब्द करे, जल में के जन्तु व्याकुल हो जावें, गोहें मिल के शब्द करें वा बादल वासी रहें तो वर्षा होवे।

पवन चलै परचण्ड थंभै इक थाह थंभावै।
चौवाया पुनि चाल उमंग वादल चढ आवे ॥ १४६५ ॥

गहर दिवस गर्भाय पसीनो अंग वहावै ।
उमंड घुमंड घन घोर मोर कहुं सोर सुनावै ॥ १४६६ ॥
धर धीर नीर वर्षे धरण गयण घोर घ्रणणणघणा ।
माघिया पण्डित कूड़ा पतड़ै घन वर्षे एते गुणा ॥१४६७॥

वायु विलकुल वन्द हो जावे वा वहुत जोर का चले वा चारों दिशा का चले जिस से वहुत वादल हो जावे तो वर्षा होवे ।

अनावृष्टि दक्षवाहे वृष्टिम्याद्वाम वाहके ॥ १४६८ ॥

वर्षा का प्रश्न करे उस समय अपना दाहिना स्वर चलता हो तो अनावृष्टिं और वायां स्वर चलता हो तो शीघ्र वर्षा होवे ।

वर्षाकाल के प्रारम्भ में यदि दाक्षिण दिशा में वादल हो वा विजली चमके वा उक्त दिशा का वायु चले तो शीघ्र वर्षा होवे ।

वर्षा शुक्लपक्ष के दूसरे सप्ताह में प्रारम्भ हो तो एक सप्ताह पर्यन्त वर्षे और कृष्ण पक्ष के दूसरे सप्ताह में हो तो शीघ्र खुल जावे ।

शुक्रवार के वादल वासी शनिवार तक रहे तो शीघ्र वर्षा होवे ।

अपने यहां से वर्षा कितनी दूरपर वर्ष रही है सो जानने की रितिः—विजली चमकने के वाद जितने सैकंड पीछे गाज सुनाइ दे उन को ११४२ से गुना करले । और जो संख्या (गुना) आवे वह फीट समझे अर्थात् उतने फीटपर वर्षा हो रही है ऐसा जाने ।

—×—
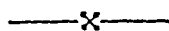
सद्यः अनावृष्टि प्रकरण ।

उल्कापातो दिशांदाहः निर्घातः पांशु वृष्टय ।
इन्द्रा युद्धं च युद्धं च षडै च वृष्टि घातका ॥ १४६९ ॥

जब अनेक प्रकार के तारे टूटें, दिग्दाह, निर्घात धूलि वृ

(अंधकार), वर्षा वर्षने के समय में इन्द्र धनुष् और ग्रह युद्ध हो तब अनावृष्टि होवे।

वाजे पश्चिम वाय नाडी निरजु निर्मला।
दिन दश मेह न थाय ग्वाल कहे सुन माघजी ॥ १४७० ॥

वायु पश्चिम वा नैर्ऋत्य का चले तथा तलई का पानी निर्मल वा ठण्ढा हो जावे तो १० दिन तक वर्षा नहीं होवे।

पूरव उत्तर ईश दिशि तथा न वाजे वाय।
तावन्न वर्षे भड्डली (जो) आने त्रिभुवनराव ॥ १४७१ ॥

जब तक पूर्व उत्तर वा ईशान का वायु नहीं चले तबतक वहुधा वर्षा नहीं होवे।

पर वाते गह डम्बर थाय। सांझे शीतल वाय चलाय।
रातूं तारा तट मट तट्ट। माघ मालवे चालो चट्ट ॥ १४७२ ॥

प्रभात के समय फीके वादलों से आकाश ढंक जावे, मध्यान के समय सूर्य वहुत तपे, सन्ध्या के समय ठण्ढा वायु चले और रात्रि में तारे साफ दीखें तब तक वर्षा नहीं होवे।

दिवस करे गहडम्वरी वादल रैन विलाय।
पुनि छत्तीसीयों कहे यह दुर्भिक्ष दरसाय ॥ १४७३ ॥

बादल दिन में तो बहुत हों और रात्रि में पीछे सब मिट जावे तो तब तक वर्षा नहीं होवे।

उत्तरादि कांठल वंधे दक्षिण वाजे वाय।
पय उफनता नीरज्यों आई घटा उड़ाय ॥ १४७४ ॥

यदि उत्तर में वादलों की पंक्ति वन भी जाय किन्तु उस समय दक्षिण का वायु चलने लगे तो वर्षने को आई हुई घटा भी बिखर जाय।

अम्बर ताने धनुष तब वाजे पश्चिम वाय।
अति झड़ लागी बादली तबही जाय विलाय ॥ १४७५ ॥

वर्षा की झड़ी लगी हो उस समय यदि धनुष् हो जावे वा

पश्चिम का वायु चलने लगे तो वह वर्षा बिलकुल बन्ध हो जावे।

यावत्काकोदरामेघा यावत्सूर्य शशी सम।
यावन्नैर्ऋत्तिको वायुस्तावद्देवो न वर्षति ॥ १४७६ ॥

जब तक नैर्ऋत्य का वायु चले, बादल कौवे के पेट जैसे खाकी रंग के रुखे हों वा सूर्य का तेज चन्द्रमा के जैसा शीतल हो तब तक वर्षा नहीं होवे।

रोहिणी सग्रहा यावद् यावद्वायुश्चनैर्ऋतै।
रुक्षो यावत्सहस्रांशुस्तावन्मेघो न वर्षति ॥ १४७७ ॥

जब तक नैर्ऋत्य का वायु चले, सूर्य का वर्ण रुक्ष हो वा रोहिणी नक्षत्र पर कोई क्रूर ग्रह हो तब तक वर्षा नहीं होवे।

ओस जमे सिर घास मोतीसाझलमल करे।
शीतल मन्द सुवास वृद्ध हुआ मेह माघजी ॥ १४७८ ॥

प्रातः काल में घास पर ओस की बूंदें मोतीसी चमके तथा शीतल मन्द सुगन्धित वायु चले तो वर्षा काल समाप्त हुआ जाने।

गार पड़े आकाशसे जमे नदी सर ताल।
ढोर मरे वन जन्तु सब पड़े अचिन्ता काल ॥ १४७९ ॥

जिस वर्ष में बहुत ओले वर्षे वा नदी तालाब आदि का पानी जम जावे ऐसी अत्यन्त ठण्ठ पड़े तो उस वर्ष में जंगल के पशु पक्षी बहुत मरें और अचानक ही दुर्भिक्ष पड़ जावे। सं० १९६१ के माघ में ऐसा हुआ था जिस से रबी की फसल तो नष्ट हुई और सं० ६२ के वर्ष में वर्षा की कमी भी रही।)

---

*पश्चिमीय यन्त्र प्रकरण।

पश्चिमी विद्वानों ने वायु का फेरफार जानने के लिये कई प्रकार के यन्त्र बनाये है। उन के द्वारा वायु का फेरफार वि-

* पश्चिमीय यन्त्र विद्या के पूर्ण ज्ञान के लिये एक स्वतन्त्र पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता है अतः समय मिलने पर अवश्य प्रकाशित की जावेगी पुस्तक अभी तयार हो रही है।

दित होता रहता है। जिस पर से थोड़े समय पहिले से वर्षा आदि का अनुमान किया जाता है अर्थात् तत्काल में होने वाली वर्षा-सद्यो वृष्टि-का बहुधा ज्ञान हो जाया करता है। ऐसे ही हमारी प्राचीन वृष्टि विद्या में इन बहुमूल्य यन्त्रों का काम वृक्ष, पशु, पक्षी आदि ईश्वरीय यन्त्रों की चेष्टा पर से ही निकाल लिया जाता था।

बेरोमीटर—वायुभारमापक—यन्त्र।

यह यन्त्र पारे की नली का वा घड़ी आदि के आकार का बनता है। इस में ३१ डिग्री रहती है उस में से समुद्र की सतह पर २९ डिग्री मानी हैं। इस से हवा का भार मापा जाता है। जब हवा हलकी होती है तब इस में का पारा वा सूई नीचे गिर जाती है और भारी होती है तब ऊपर उठती है।

(नीचे गिरने के कारण।)

(१) दक्षिण वा अग्नि कोण से हवा पश्चिम की ओर चले तो गिरता है।

(२) स्निग्ध वा बहुत जोर की हवा चले तब गिरता है पर किन्तु किसी समय हलकी हवा के साथ वर्षा वा वर्फ आने वाली हो तो नहीं भी गिरता है।

(३) किसी ओर की हवा चलती हो वह बन्द हो के दक्षिण से चलने वाली हो तो गिरता है।

(४) तूफान की हवा अर्थात् मौसिम वा हवा अनियमित आने वाली हो तो एकदम गिरता है।

(५) पश्चिम की हवा चलती हो उस समय एक दम गिर जावे तो उत्तर की ओर से तूफान की मौसिम आवेगी।

(६) ग्रीष्म ऋतु (१५ अप्रेल से १५ अक्टूबर तक) में हवा में स्निग्धता अधिक हो और गर्मी भी अधिक बढ़ती हो उस समय गिर जावे तो दक्षिण की ओर से हवा सहित वर्षा आवेगी और शरद ऋतु (१५ अक्टूबर से १५ अप्रेल तक) में ऐसे गिर जावे तो केवल वर्फ गिरेगा।

(७) पहिले बहुत शान्त तथा गर्म हवा हो उस समय

यह गिर जावे तो-हवा तो हर किसी ओर की चलेगी किन्तु वर्षा आवेगी।

(८) बेरोमीटर जब कभी गिरेगा तब थर्मोमीटर ऊपर चढ़ेगा।

(ऊपर उठने के कारण।)

(१) उत्तर वा वायव्य से हवा पूर्व की ओर चलने वाली हो तो ऊपर उठता है।

(२) सूखी वा कम स्निग्ध वा हल की हवा चलने वाली हो तो उठता है परन्तु किसी समय उत्तर की ओर से वहुत जोर की हवा के साथ वर्षा ओला वा वर्फ आने वाली हो तो नहीं भी उठता है।

(३) किसी ओर की हवा चलती हो वह बन्द हो के उत्तर से चलने वाली हो तो उठता है।

(४) बहुत ज़ोर की हवा चलने वाली हो तो एक दम उठता है।

(५) दक्षिण की हवा चलती हो उस समय उठे तो शान्त स्वच्छ मोसिम आवेगी।

(६) ग्रीष्म ऋतु में हवा शुष्क हो और ठण्डी भी अधिक बढ़ती हो उस समय उठे तो उत्तर से हवा चलेगी।

(७) पहिले बहुत तूफानी तथा सर्द हवा हो और पीछे यह उठ जावे तो मौसिम बदल जावे अर्थात् हवा शान्त हो जावेगी।

(८) बेरो मीटर जब कभी उठेगा तब थर्मो मीटर नीचे उतरेगा।

थर्मामीटर—वायु उष्णता मापक यन्त्र।

यह यन्त्र पारे की नली का होता है। इस में १२० डिग्री रहती है जिस से हवा की गर्मी सर्दी मापी जाती है जब हवा में गर्मी हो तब इस में का पारा ऊपर चढ़ता है और सर्दी हो तब नीचे उतरता है। यह तीन प्रकार का होता है। एक तो दिन में अधिक से अधिक कितनी गर्मी हुई सो बताता है। दूसरा

रात्रि में अधिक से अधिक कितनी सर्दी हुई सो बताता है। और तीसरा जिस समय देखो उस समय की गर्मी सर्दी को बताता है।

(ऊपर चढने का कारण।)

(१) बेरोमीटर गिरे तब थरमामीटर ऊपर चढ़ता है।

(२) उत्तर दिशा में तूफान होना प्रारम्भ हो तब एक दम ऊपर चढ़ता है।

(नीचे उतरने का कारण।)

(१) बेरोमीटर उठे तब थरमामीटर नीचे उतरता है।

(२) दक्षिण दिशा में तूफान होना प्रारम्भ हो तब एक दम नीचे उतरता है।

हाइग्रोमीटर—वायु स्निग्धता मापक—यन्त्र।

यह यन्त्र भी एक प्रकार का थरमामीटर है जिस से हवा की स्निग्धता वा रूक्षता मापी जाती है। जब हवा में स्निग्धता हो तब नीचे उतरता है और जब रूक्षता हो तब ऊपर चढता है। इस के दो भेद हैं—एक तो रात्रि में अधिक से अधिक कितनी स्निग्धता हुई सो बताता है और दूसरा जिस समय देखो उस समय की स्निग्धता वा रूक्षता बताता है।

(स्निग्धता रूक्षता बढने का कारण।)

(१) जब स्निग्धता बढ़े तब वर्षा की आशा होती है।

(२) जब रूक्षता बढ़े तब वर्षा की आशा नहीं होती है।

विंडवेन—वायु दिशा ज्ञापक—यन्त्र।

यह यन्त्र धातू का सूप के आकारका होता है उस को कहीं मकान के छत पर की दीवार पर आठों दिशाओं के चिन्ह करके बीच में खड़ा कर देते है। इससे हवा किस ओर की चलती है सो जानी जाती है। जिस ओर से हवा आवे उस ओर को इस की पीठ और जिस ओर को जावे उस ओर को इस का मुख रहता है।

एनीमोमीटर—वायु वेग मापक—यन्त्र ।

यह यन्त्र धातुका बनता है। इस के शिरे पर चौकड़ी के आकार ४ फुलड़ियें रहती हैं जो हवा के लगने से घूमा करती है। इन के घूमने से इस के नीचे जो एक घड़ी रहती है उस की सूई फिरा करती है जिस से हवा का वेग एक घंटे में कितने मील का है सो जाना जाता है। ऐसा अनुमान हमारे यहां वृक्षो के पत्ते आदि हिलने से कीया जाता था।

रेनगेज—वर्षा पानी मापक—यन्त्र।

यह एक काच की बोतल है जिस के मुख पर एक फुलड़ी रहती है। इस बोतल को मैदान में रख देते हैं। जब वर्षा होती है तो पानी इस बोतल में इकठ्ठा होजाता है। जब वर्षा हो चुके तब इस में का पानी मापने से मालूम हो जाता है कि इतने इंच वा सेंट पानी बरसा है। हमारे यहां पहिले वर्षा का पानी द्रोण आढ़क आदि से तोला जाता था।

वर्षा होने का उपाय।

अन्नाद्भवन्तिभूतानि पर्जन्यादन्न सम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः॥ १४८०॥

श्रीमद्भगवद्गीता के ३ रे अध्याय मे लिखा है कि सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते है, अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है, वर्षा अग्निहोत्रादि यज्ञ करने से होती है और यज्ञ वैदिक कर्म करने से होती है। अतः सुवृष्टि के लिये यज्ञ करने की परम आवश्यकता है।

यज्ञ प्रकरण।

सह यज्ञः प्रजा सृष्ट्वा पुरो वाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्टकामधुक्॥ १४८१॥

पूर्व काल में प्रजापतिने यज्ञ के साथ साथ प्रजारच के कहा

था कि हे मनुष्यो! इस यज्ञ रूपी वैदिक कर्म को करते रह के तुम बढते रहो। यह क्रिया तुम्हारे अभीष्ट सिद्धि को देने वाली है।

देवान् भावयतातेन ते देवा भावयन्तुवः।
परस्परम्भावयन्तः श्रेय परम वाप्स्यथ ॥ १४८२ ॥

अतः तुम लोग यज्ञ द्वारा देवों का संवर्द्धन करो, वे देवगण भी सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण, आरोग्य, धन, सन्तान आदि से तुम्हें बढ़ावेंगे। इसी प्रकार एक दूसरे का संवर्द्धन कर के तुम लोग परम कल्याण को प्राप्त होंगे।

अग्निहोत्रं च जुहुयादाद्यन्ते द्युनिशोः सदा।
दर्शेन चार्द्धमासान्ते पौर्ण मासेन चैवहि ॥ १४८३ ॥

इस लिये मन्वादि धर्म शास्त्रों में लिखा है कि ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल में ईश्वरोपाशना रूप सन्ध्या वन्दन करके वेद मंत्रों द्वारा अग्नि में आहुति देता रहे तथा प्रति मास की अमावस्या और पूर्णिमा को विशेष हवन करे। यहां तक कि प्रतिदिन अग्नि होत्र किये विना भोजन ही नहीं करे। क्योंकिः—

यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्व किल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मं कारणात ॥ १४८४ ॥

जो लोग अग्नि में आहुति दिये विना अपने ही लिये भोजन बनाते हैं वे पापी लोग पाप ही का भोजन करते है किन्तु यज्ञ की शेष बची हुई वस्तु खानेवाले श्रेष्ठ लोग सब पापों से छुट जाते हैं।

तात्पर्य इस का यह है कि मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हो के वायु और जल को बिगाड़ के अनावृष्टि, दुर्भिक्ष और महामारी आदि रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दुःख प्राप्त होता है। उतना पाप उस को अवश्य लगता है। इस लिये पाप के निवारणार्थ उतनी वा उस से अधिक सुगन्ध-वायु और जल में फैलानी चाहिये। किन्तु वह सुगन्ध विना अग्नि होत्र के सर्वत्र नहीं फैल सकती इस लिये

वैदिक पदार्थविद्या और आत्मविद्या के गूढ़ तत्व के जानने वाले महर्षियोंने अनेक प्रकार के यज्ञ करने का विधान कीया था। यहां तक कि मृतक का शरीर भी अग्निहोत्र द्वारा ही भस्म करने की आज्ञा दी हैं।

पुष्टं मिष्टं तथाऽऽरोग्यं सुगन्धिश्च समन्वितम्।
जुहूयात्छास्त्र विधिना ब्रह्माग्नौ सर्व कर्मणि ॥ १४८५ ॥

अतः प्राणि मात्र को सुख पहुंचाने के लिये यज्ञ द्वारा वैदिक अग्नि मे दुग्ध, घृत, तन्दुलादि पुष्टि कारक; मधु गुड़, शर्करादि मिष्टताकारक; ब्राह्मी, अमृता, सोमलतादि रोग नाशक और केशर, कर्पूर, चन्दनादि सुगन्धि कारक उत्तमोत्तम पदार्थ वेद मन्त्रो द्वारा हवन करे।

अग्नौ हुत्वा हुति सम्यगादित्य मुपतिष्ठते।
आदित्या ज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः ॥ १४८६

यज्ञ द्वारा विधि पूर्वक अग्नि में हवन करने से होमे हुये पदार्थ सूक्ष्म परमाणु (धूआं वा भाफ) रूप हो के वायु के द्वारा सूर्य मण्डल मे पहुंच के सूर्य का तेज (उष्णतादि) बढ़ा देते हैं जिस से समय२ पर पूर्वोक्त पदार्थों के गुणों से युक्त उत्तम जल की वर्षा होती है। सुवृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है और अन्न से प्रजा की रक्षा होती है अतः प्रजा की वृद्धि के लिये अग्नि होत्रादि यज्ञों का प्रचार अवश्य किया जाना चाहिये।

कर्म्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्राह्माक्षर समुद्भवम्।
तस्मात्सर्व गतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठतम् ॥ १४८७ ॥

इस यज्ञ रूपी कर्म को वेद से उत्पन्न जाने और वेद परब्रह्म से प्रकट हुये हैं इस लिये सर्व व्यापक परमात्मा ही सदा इस में व्यापक है। अतः प्राणी मात्र के कल्याणार्थ प्रतिदिन यज्ञ द्वारा ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये किः—

शंनो वातः पवता ॅ शंनस्तपतु सूर्यः।
शंनः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽभि वर्षतु ॥ १४८८ ॥

यजुर्वेद अ० ३६ मं. ११

"हे सर्व नियन्त ! हमारे लिये सदैव आनन्दकारक शतिल मन्द तथा सुगन्ध युक्त वायु चले, तथा सूर्य भी समयानुकूल सुखकारक तपे और मेघ भी सदैव काल काल में श्रेष्ठ गर्जना से युक्त सुख तथा सुभिक्ष कारक उत्तम जल की वर्षा करे"।

काले वर्षतु पर्ज्जन्यः पृथिवी शस्य शालिनी ।
देशो ऽयं क्षोम रहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ १४८९ ॥
सर्वे ऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥ १४९० ॥

"हे सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर-हमारे लिंये सदैव ही समय समयं पर उत्तम वर्षा हो, खेतियें अधिक उत्पन्न हों, देश में किसी प्रकार का उपद्रव न हो, ब्राह्मण निर्भय हों, सम्पूर्ण प्राणी सुखी, आरोग्य तथा एक दूसरे के कल्याण को देख कर प्रसन्न हों और कोई भी प्राणी किसी प्रकार से भी दुःखी न हों अर्थात् जगत् में सर्व प्रकार से सुख शान्ति वर्त्ते जिस से हम लोग सदा सर्वदा आप की प्रेम भाव से भक्ति किया करें"।

जिस समय इस देश में प्रतिदिन करोड़ों मनुष्यों से यज्ञ द्वारा परोपकार के लिये ईश्वर से इस प्रकारकी प्रार्थना की जाती थी उस समय यह देश सम्पूर्ण प्रकार के सुखो से परिपूर्ण था पर जब से यज्ञों का प्रचार घटता गया तबी से नाना प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। यदि अब भी यज्ञों का प्रचार पीछा किया जावे तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, महामारी आदि के दुःख मिट सकते है ।

अनावृष्टि आदि उपद्रवों का कारण ।

अति लोभादसत्याद्वा नास्तिक्याद्वाप्यधर्मतः ।
नरापचारान्नियत मुपसर्गः प्रवर्त्तते ॥ १४९१ ॥
ततोऽपचारो मर्त्यानामपरज्यन्ति देवताः ।
ते सृजन्त्यद्भुतान् भावान् दिव्यभूम्यन्तरिक्षजान् ॥ १४९२ ॥

गर्गादि महर्षियोंने लिखा है कि जब मनुष्यों की प्रवृत्ति अति लोभ, असत्य वा नास्तिकता मे हो जाती है तब धर्म को त्याग के अधर्म करने लग जाते हैं। इसलिये देवगण उन की रक्षा नहीं करते जिस से जगत् का नाश होता है। पर वह नाश किस प्रकार से होगा उस की सूचना देवगण पहिले से ही भौम, आन्तरिक्ष और दिव्य निमित्तों के उत्पात द्वारा कर देते हैं।

तान् शास्त्र निर्गमाद्विप्राः पश्यन्ति ज्ञान चक्षुषा।
प्रवदन्ति तु मर्त्येषु हितार्थं श्रद्धयान्विताः ॥ १४९३ ॥

परन्तु किस उत्पात के होने से कौन सा उपद्रव होगा सो परोपकारी ब्राह्मण लोग ज्योतिष शास्त्र रूपी ज्ञान नेत्रों से देख के श्रद्धा वाले मनुष्यों के हित के लिये पहिले से प्रकाशित कर देते है कि अमुक समय में अमुक उपद्रव होगा।

तेतुसम्बोधिता विप्रैः शान्तये मङ्गलानि च।
श्रद्दधाना प्रकुर्वन्ति न ते यान्ति पराभवम् ॥ १४९४ ॥
ये तु न प्रति कुर्वन्ति क्रियामश्रद्धयान्वितः।
नास्तिक्याद्‌थवा कोपाद्विनश्यन्तिचते ऽचिरात् ॥ १४९५ ॥

उन परोपकारी ब्राह्मणों के वचनो पर विश्वास कर के जो लोग उत्पातों की शान्ति कर देते है वे लोग दुःख से बच जाते है किन्तु जो लोग नास्तिकता से, क्रोध, अभिमान, लोभ आदि के कारण उनके वचनों पर श्रद्धा न करके शान्ति नहीं करते वे लोग उन उपद्रवों से तत्काल नाश को प्राप्त होते हैं। जैसे सं० १९५६ के वर्ष में ७ ग्रह एकत्र होने के योग आदि का अशुभ फल ज्योतिर्विदों द्वारा पहिले से प्रकाशित होने पर भी उन पर विश्वास न करने से लोगों को असहन कष्ट भोगना पड़ाथा। अतः ज्योतिशास्त्र के पूर्ण ज्ञाता व सत्यवक्ता विद्वानों के वचनों पर सदा सर्वदा ही विश्वास रखना चाहिये जिस में राजा तथा प्रजा दोनों ही का कल्याण है।

शान्ति का फल।

भौमं शान्ति हतं नाशमुपगच्छति मार्दवम् ।
नाभसं न शमं याति दिव्य मुत्पात दर्शनम् ॥ १४९६ ॥

विधि पूर्वक शान्ति करने से भौम निमित्त में का उत्पात तो बिलकुल शान्त हो जाता है, आन्तरिक्ष निमित्त में का उत्पात कम हो जाता है किन्तु कोई आचार्य कहते हैं कि दिव्य निमित्त में का उत्पात तो शान्ति करने से भी शान्त नहीं होता क्योंकि भौम की अपेक्षा आन्तरिक्ष और आन्तरिक्ष की अपेक्षा दिव्य उत्पात प्रबल होता है इसलिये अल्प शान्ति करने से कभीर उत्पात शान्त नहीं होते हैं।

दिव्यमपि समुपैति प्रभूत कनकान्न गो मही दानैः ।
रुद्रायतने भूमौ गो दोहात् कोटि होमाच्च ॥ १४९७ ॥

परन्तु बहुत सा सुवर्ण, बहुतसा अन्न, बहुत सी गायें, वा बहुत सी भूमि दान करने से अथवा महारुद्र की प्रसन्नता के लिये देश में की सम्पूर्ण गायों का दूध भूमि पर ही दोह देने से अथवा गायत्री मन्त्र द्वारा १ करोड़ आहुती अग्नि में हवन करने से दिव्य निमित्त में का उत्पात भी शान्त हो जाता है जिस से फिर किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता।

ब्राह्मण भोजनकी आवश्यकता।

यावद्विप्रान सन्तुष्टा तावतुष्टानचामरा ।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन ब्राह्मणान् तोषयेत्सदा ॥ १४९८ ॥

जहां तक ब्राह्मण सन्तुष्ट नहीं होते वहां तक देवता भी पूजा आदि को स्वीकार नहीं करते क्योंकि ब्राह्मण भूमि के देवता है। अतः स्वर्ग के देवताओं की प्रसन्नता के लिये सदैवही सर्व प्रकार से ब्राह्मणों को अवश्य सन्तुष्ट करें।

ब्राह्मणान् वेद विदुषः सर्व शास्त्र विशारदान् ।
तत्र वर्षति पर्जन्यो यत्रैतान्पूज्ययेन्नृपः ॥ १४९९ ॥

जिस राजा के राज्य में सदैव ही वेदादि सर्व शास्त्रों के ज्ञाता ब्राह्मणों का भोजनादिसे सत्कार किया जाता है उस राजा के राज्य में सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम, कल्याण, आरोग्य आदि से सुखों की वृद्धि होती है किन्तु अनावृष्टि आदि उपद्रव नहीं होते है। क्योंकि—

विद्या तपः समृद्धेषु हुतं विप्र मुखाग्निषु।
निस्तारयति दुर्गाच्च महतश्चैव किल्बिषात् ॥ १५०० ॥

मनुस्मृति में लिखा है कि विद्या और तप से समृद्धिवान् ब्राह्मणों की मुखरूपी अग्नि में आहुति देने (अर्थात् भोजन कराने) से मनुष्य सम्पूर्ण प्रकार के महान् दुःखों से बच जाते हैं।

यस्य राज्ञस्तु विषये श्रोत्रियः सीदतिक्षुधा।
तस्यापि तत् क्षुधाराष्ट्र मचिरेणैव सीदति ॥ १५०१ ॥

किन्तु जिस राजा के राज्य में वैदिक कर्म कर्त्ता ब्राह्मण भूखे मरें तो उस राजा का सम्पूर्ण देश भी तत्काल भूखे मरने लगे अर्थात् उस देश में शीघ्र ही दुर्भिक्ष पड़ जावे।

विद्वद्भोज्यमविद्वांसो येषुराष्ट्रेषु भुंज्यते।
तेऽप्यनावृष्टि मिच्छन्ति महद्वा जायते भयम् ॥ १५०२ ॥

क्योंकि राजा की असावधानी से उत्तम ब्राह्मणों का भोजन नीच शूद्रों को मिलने लगे जिस से ब्राह्मण लोग क्षुधा आदि से दुःख भोगें तब उस अपराध से स्वर्ग के देवता अप्रसन्न हो जाते हैं जिस के कारण उस राज्य में वर्षा नहीं होवे अथवा अन्य कोई महान् भयानक उपद्रव होवे।
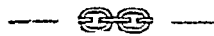
अनावृष्टि शान्ति प्रकरण।

पूर्वोक्त उत्पातों से अनेक प्रकार के उपद्रव होते है जिन कि *शान्ति प्राचीन शास्त्रों में विस्तार से लिखी है उन में से

* सम्पूर्ण उत्पातों की शान्ति का पूर्ण निर्णय मेरे बनाये "बृहद्धर्म मार्त्तण्ड" ग्रन्थ के 'उत्पातशान्ति' नामक अंक में किया है।

अनावृष्टिकारक उत्पातों की शान्ति के कुछ प्रयोग यहां लिखता हूं जिनका अनुष्ठान करने से उन उत्पातों का दोष शान्त होकर बहुधा वृष्टि हो जाया करती है।

वैदिक मत से वर्षा का प्रयोग।

वर्षा वर्षाने के लिये वेदादि शास्त्रों में अनेक प्रकार के प्रयोग लिखे हैं। उन सब में आत्मविद्या और पदार्थविद्या मिली हुई है जिस के प्रभाव से अवश्य वर्षा होती है। पर इस समय उस विद्या के जानने तथा साधने वाले बहुत ही कम विद्वान् मिलते हैं अतः यहां केवल संक्षेप से प्रयोगों का निर्देश मात्र करता हूं। यदि विस्तार पूर्वक लिखु तो यह भी एक मोटी पुस्तक हो जावे।*

ॐ महानिन्द्रेति मन्त्रस्य परजन्योर्षिरनुष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता वृष्टि शक्ति मुपयामामिति बीजं वृष्ट्यावाहनार्थे जपे विनियोगः। मन्त्राक्षरेण कराङ्ग न्यासं कुर्यात्। अथ ध्यानम्—

"ॐ परजन्य महादेवो महावृष्टेश्च कारकः।
तीव्रतापहरे देवः सर्वलोकहिताय च ॥"

मन्त्र—"महा २ इन्द्रोयवज्रमा पर्ज्जन्यो वृष्टि मा २ इवस्तो मैर्व्वर्त्तस्यव्त्रां वृधै। उपयाम गृहीतोसि महेन्द्रायत्त्वैषते योनिर्म्महेन्द्राम त्वा स्वाहा" ॥ १५०३ ॥ यजुः अ० ७ मं० ४०

प्रथम इस मंत्रका ११ लक्ष जप तथा दशांश हवन ब्राह्मण भोजन करके सिद्ध करे फिर अनावृष्टि के समय में निचे लिखे हुये प्रयोग करें तो वर्षा होवे।

(१) ग्यारे दिन तक प्रतिदिन एक एक हजार जप करे तो वर्षा होवे।

(२) इस मंत्र के अंत मे (इन्द्रेहि वरुणेहि वापि कूप त-

* वर्षा वर्षाने के सम्पूर्ण प्रयोग मेरे बनाये 'वृहदर्घ्य मार्त्तण्ड' ग्रन्थ के मंत्रप्रयोग' नामक अंक में सग्रह कीये है।

डाग शरितादि परि पूरेहि) इतना और मिला के जप करे तो शीघ्र वर्षा होवे।

(३) इस मंत्र का संपुट रुद्राऽध्याय के प्रत्येक मंत्र को देकर शिव लिग पर 'महारुद्राऽभिषेक' करे तो अवश्य वर्षा होवे।

"ॐ यथा प्रति शुको भूत्वा तमेव प्रति धावति।
पापं तमेव धावंतु द्रेष्टारं प्रतिँ गच्छतु" ॥ १५०४ ॥

"ॐ उत्वा मंदंतु स्तोम कृष्णष्य राधो अद्रिवः
अव ब्रह्म द्विषो जहि" ॥ १५०५ ॥

नाभिमात्रोदके स्थित्वा उदयास्तमयं जपेत्।
अष्टोत्तर सहस्रंतु दिनानां सप्त संख्यया ॥ १५०६ ॥
महा वृष्टिर्भवेत्सम्यक् नवग्रह विवर्जितः ।
समिद्भिर्वंजुलोद्भूतैर्होयमयेच्च विशेषतः ॥ १५०७ ॥

(१) इन दोनों मंत्रों मे से किसी एक मंत्र को ७ दिन तक नाभि मात्र जल में सूर्योदय से सूर्यास्त तक खड़ा रह के प्रतिदिन १००८ जपे तो वर्षा होवे।

(२) इन दोनों मंत्रों में से किसी एक मंत्र द्वारा ७ दिन तक वंजूल (बेत) की समिधा की अग्नि में ८००० आहुति प्रतिदिन दे तो वर्षा होवे।

(३) इन दोनों मंत्रों में से किसी एक मंत्र द्वारा महादेवजी पर सहस्रघट नामक अभिषेक करे तो वर्षा होवे।

"ॐ महान् इन्द्रो जवे जसेति० १५०८ यजु० अ० २१ मंत्र

इस मंत्र का सम्पुट 'इन्द्राक्षि स्तोत्र' के देकर नाभि मात्र जल में खडा होके १०० पाठ करे तो वर्षा होवे।

हुत्वायुतं वैतसीनां क्षीराक्तानां हुताशने।
तदावर्षा मवाप्नोति सूक्तेना छावदेन हि ॥ १५०९ ॥

वर्षा के लिये 'छावदे सूक्त' से वेत की समिधा में क्षीर की १०००० आहुती देवे तो महान् वर्षा होवे।

अथवा देवति सूक्तंतु वृष्टिकामः प्रयोजयेत्।
निराहारः क्लिन्नवासा अचिरेण प्रवर्षति ॥ १५१० ॥

इसी प्रकार उपवास धारण कर गीले वस्त्रों सहित 'देवाति सूक्त' का जाप करे तो शीघ्र वर्षा होवे।

†अनावृष्टि के समय नगर में के प्राचीन स्थान व प्रतिष्ठित मन्दर में के महादेवजी के लिंग को जल में अमुझावे अर्थात् मन्दिर के दरवाजे को आधा मूंद कर फिर लिंग पर इतना जल चढ़ावे कि जिस से वह लिंग जल में डूब जावे। और उस समय वर्षा वर्षाने वाले मंत्रों का भी ब्राह्मणों से जाप करावे तो अवश्य वर्षा होवे।

पुराणों से वर्षा का प्रयोग।

ॐ ऋषि शृंग महा प्राज्ञ शांत शांताधि नायकः।
व्रतानीमानि सर्वाणि सफलानि कुरुष्वमे ॥ १५११ ॥
ऋषि शृंगाय मुनये विभाण्डक सुताय वै।
नमः शांताधिपतये सद्यः सुवृष्टि हेतव ॥ १५१२ ॥
गणपो भास्कर श्चैव कंदर्पश्च दिवाकरः।
नंदिर्नारायण श्चैव बालखिल्या महा सुराः ॥ १५१३ ॥
द्विजाः सुराश्च सन्मान्या तथा मासोप वासिनः।
तेषां स्मरण मात्रेण सद्यः वृष्टिर्भविष्वति ॥ १५१४ ॥
एहिरिन्द्रां एहि वरुणां एहि पर्जन्यं एहि ३
पुरो वातं जनय जनया तस्या तव प्रमादयः प्रमादया १५१५

† ऐसा रुद्रविशेष मेरी सम्मति से सं. १९५५ के आश्विन वदि ५ को पाली के हाकिम श्रीमान् चादमलजी मणियार आदिने श्री सोमनाथजी के लिग पर करवाया था तब तीन दिन में (आश्विन वदि ८ को चार दिनके बजे) अच्छी वर्षा हुई थी। जिससे दुर्भिक्ष पडते २ रह गया।

मेघ पंङ्क्ति मुंच मुंच महद्वर्षय वर्षय
श्रावय श्रावय भोसुरानूरक्षया सर्वं तडागान्
परिपूर्णं कुरु २ सद्यः सुवृष्टिं देहि ॥ १५१६ ॥
सद्यः सुवृष्टि देहि सद्यः सुवृष्टिं देहि महा वासा सिंधुः
अजिराज्योति स्मृति नमेश्वरी सुफेना मित्रव्रताः ॥ १५१७ ॥

क्षत्रव्रताः सुराष्ट्रा इहमावता ५ इह वर्षतु ३
सुब्रह्मण्यों ३ इंद्र आगच्छ अरिव आगछ ॥ १५१८ ॥

मेधातिथे मेषण श्रमेने गौरा वस्कं दिन वर्त्तल्पाये जराः ।
कौशिक ब्राह्मण गौतम ब्राह्मण आवर्त्त ध्वंनिवर्त्तध्व
मृतवः परिवत्सरे ॥ १५१९ ॥ श्री शृंगी ऋषये नमः ॥

यह शृङ्गि ऋषि का पर्जन्य सूक्त है इस को ब्राह्मणों द्वारा ११ दिन में १। लक्ष पाठ करानें से अवश्य वर्षा होवे।

एरावतं समानीतो गजरत्नं पुरं दरात् ।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्च श्रवाहय ॥ १५२० ॥

मारकण्डेय पुराणोक्त चण्डि पाठे अ० ५ श्लोक ९४

प्रथम मृत्तिका का हाथी बनाकर सूखे तालाव में गाड दे फिर वहां ऊपर लिखे मंत्र का जाप करे, वा इस मंत्र का संपुट देकर सत चण्डी का प्रयोग करे तो वर्षा होवे।

तांत्रिक मत से वर्षा का प्रयोग ।

यदा मेघा न वर्षन्ति पार्वति शृणु चाऽऽदितः ।
आकर्षणं मन्त्र यन्त्र पूजा चैव वदाम्यहम् ॥ १५२१ ॥

जगत् के कल्याण के लिये परम दयालु श्री शिवजी पार्वति से कहते है कि दैवकोप से यदि मेघ वर्षा न करें तो वर्षावर्षाने के लिये मेघों को बुलाने का मन्त्र यन्त्र तथा पूजा की विधि कहता हूं जिस से अनावृष्टि के समय भी सुवृष्टि हो जावे।

नद्यां चैव वने गत्वा मेघाना वाहयेद् बुधः।
शिवालये तडागे वा वर्जयित्वा महानदीम् ॥ १५२२ ॥

गंगा यमुना आदि महानदी को छोड़ के किसी नदी के तट पर वा तालाव वा वन वा शिव के मन्दिर में जाके वहां मेघों का आवाहन करे।

कमलेऽष्टदले वृष्ट्यै प्रतिष्टाप्य पयो धरान्।
धूप दीपैश्च कुसुमैर्नैवेद्यैः परि पूजयेत् ॥ १५२३ ॥

कमल के आकार का अष्टदल का यन्त्र वना के उस में पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करे।

(मेघों के नाम और आवाहन मन्त्र।)

ॐ ह्रीं मेघ दूताय नमः आगछ २ स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं मेघ दूती कमलोद्भवायनमः आगछ २ स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं महानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगछ२स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगछ२ स्वाहा॥४
ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगछ२ स्वाहा५
ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामश्रृङ्गमेरु निवासाय मेघराजाय आगछ२स्वाहा
ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिण श्रृङ्ग मेरु निवासाय मेघराजाय आगछ२ स्वाहा" ॥ ७ ॥

प्रविश्यार्द्धजलेदेवि जपेन्मंत्र सहस्रकम् ॥
कुसुमं करवीरं च श्रीखंडागर गुग्गुलं ॥ १५२४ ॥

अष्टोत्तर शतं होम मधुरं मधु सर्पिषा।
वर्षते नात्र सन्देहो यथा रुद्रेण भाषितम् ॥ १५२५ ॥

फिर नाभि मात्र जल में खड़ा हो के ऊपर लिखे प्रत्येक

मंत्र को १००० । १००० जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत सी शहद तथा घृतकी १०८ । १०८ आहुति प्रत्येक मंत्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे। (इस की विशेष विधि 'रुद्रयामलोक्त' "रौद्रि मेघमाला"की हस्त लिखित प्राचीन पुस्तकमें देखो।)

"ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय स्वाहा" ॥

मंत्र जप करिष्येत्र दिनानामेक विंशति ।
होमे वेतस सम्भुते सांमद्धिर्वृष्टि दायकम् ॥ १५२६ ॥

ऊपर लिखे मंत्र का २१ दिन तक जप तथा बेत की सन्निधि में होम करे तो वर्षा होवे ।

"हुं श्रीं हुं" ।

नाभि मात्रे जले स्थितश्च जपेन्मन्त्रं प्रसन्न धीः ।
सपाद लक्ष मेकं च तदावृष्टिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ १५२७ ॥

इस मंत्र का नाभी मात्र जल मे खड़ा रहे के १२५००० जाप करे तो वर्षा होवे।

जैन मत से वर्षा का प्रयोग ।

परिणामोम्बुदादीनां प्रयोगाद्वा स्वभावतः ।
द्विविधश्चागमे प्रोक्तः श्रीवीरेणार्हता स्वयम् ॥ १५२८ ॥

जैन के शास्त्रकारोंने दो प्रकार से वर्षा होनी मानी है। एक तो मन्त्र प्रयोग से और दूसरी सृष्टि के स्वभाव से।

तेत्र वर्षार्थिना सर्वेऽप्याराध्यास्तु दिवौ कसः ।
विशेषाद्वज्रभृत् पाशी नागाभूताश्च गुह्यकाः ॥ १५२९ ॥

यदि सृष्टि के स्वभाव से वर्षा न हो तो मन्त्र प्रयोगद्वारा वर्षा वर्षाने के लिये आकाश के देवताओं की आराधना करे। उन में भी इन्द्र, नाग, भूत और गुह्यकों की विशेष करे।

जिनेन्द्र पूजिते सर्वे देवाः स्युर्भुवि पूजिताः ।
यस्माद्भागवती शक्तिः सर्वदेवेष्ववस्थिता ॥ १५३० ॥

जैन के शास्त्रों में लिखा है कि पृथ्वी के सम्पूर्ण देवताओं

में एक ही प्रकार की शक्ति विद्यमान है। जिस से जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करने से पृथ्वी के सब देवताओं की पूजा हो जाती है।

विवेचनाधिया कश्चिद्वैष्णवः शाङ्करोऽथवा।
नकरोति जिनार्चा चेत् तेन पूज्याः स्वदेवताः ॥ १५३१ ॥

किन्तु वैष्णव वा शैव आदि कोई मतावलम्बी अपने और जैन के देवताओं में भेद मान के जैन के देवताओं की पूजा न करे तो उन्हें अपने२ देवताओं की पूजा करनी चाहिये।

वैष्णवो जलशय्यायां मूर्त्तिं पूज्ययते हरेः।
शाङ्करो गङ्गया युक्तं हरमूर्त्ति घटान्वितम् ॥ १५३२ ॥
यवनोऽपिकरीमंच स्वस्वदेवं परोपिचेत्।
पश्चिमायां जलस्थाने पूजयेद्वृष्टि पुष्टये ॥ १५३३ ॥

वैष्णवों को जलशय्या सहित विष्णु भगवान् की, शैवों को गंगा सहित शिवजी की, यवनों को अपने पीरों की तथा अन्यों को अपने२ इष्ट देवताओं की पश्चिम दिशा में जल के स्थान पर जाके पूजा आदि उपासना करनी चाहिये:

सम्पूज्य भोगं निर्माय: जपः सूर्यस्य सन्मुखे।
विधायश्चातपे स्थित्वा जनैः स्वस्व गुरूदितः ॥ १५३४ ॥

पहिले अपने२ देवताओं की पूजा आदि उपासना कर के फिर सूर्य के सन्मुख धूप में खड़ा हो के अपने २ गुरुओं के बतलाये हुये इष्ट देवता के मंत्र का जाप प्रारम्भ करे।

एव नामानि सर्वेषां जाप्यानि वृष्टिहेतवे।
जपात् सन्तर्पिताः सर्वे देवा वृष्टिविधायिन ॥ १५३५ ॥

इस प्रकार अपने २ इष्ट देवताओं के मंत्र जपने से सर्व देवता गण प्रसन्न हो के अवश्य वर्षा करते हैं।

(जैन के इष्ट देवताओं के मंत्र)

ॐ ह्रीं नमो क्ष्म्ल्र्यूं मेघकुमारणां ॐ ह्रीं श्रीं नमो क्ष्म्ल्र्यूं मेघ कुमारिकाणां वृष्टि कुरु२ संवौषट् स्वाहा"

"ॐ ह्रीँ मेघकुमार आगच्छ २ स्वाहा" ।

इन मंत्रों को सिद्ध करने के लिये पहिले शुभ दिन में मध्यान के समय पवीत्र हो श्वेत वस्त्र तथा सुगंधित वस्तु धारण कर पूर्व वा उत्तर की ओर मुख करके आसन पर बैठ धूप खेवे प्रत्येक मंत्र का १० । १० हजार जाप कर दशांश हवन करे तब सिद्ध होवे । फिर वर्षा वर्षाने के लिये इन में से किसी एक मंत्र का १००८ जाप करने से वर्षा होवे । (इस का विशेष विधान 'वर्ष प्रबोध' की हस्तलिखित प्राचीन पुस्तक में है किन्तु उस पुस्तक के छापने वालोंने उसमें के ऐसे २ कई उपयोगी प्रकरण छोड दिये है ।)

(सावर मंत्र)

ॐ नमो भगवति जलदांत प्रत्यक्षो भवमेद्रुतम् ।

इस मंत्र का प्रथम १ लाख जाप कर ले फिर वर्षा वर्षाने के लिये १२००० जाप करे तो वर्षा होवे ।

ॐ ऐं किलि किली स्वाहा ।

इस मंत्र का प्रथम १ लाख जाप कर के फिर गूलर तथा पीपल की समिधा में आसगंध शहद, दही और घृत की १२००० आहुति देवे तब यह मंत्र सिद्ध होवे । फिर वर्षा वर्षानेके लिये इस मंत्र से पूर्वोक्त पदार्थों की १२००० आहुति देवे तो वर्षा होवे ।

अतिवृष्टि शान्ति प्रकरण ।

अतिवृष्टिरना वृष्टिर्दुर्भिक्षादि भयंमहत् ॥ १५३६ ॥

जैसे अनावृष्टि होने से सूखा दुर्भिक्ष पडता है वैसे ही अति वृष्टि से भी गीला दुर्भिक्ष पड़ जाता है अर्थात् अनावृष्टि और अति वृष्टि दोनों से दुर्भिक्ष आदि अनेक प्रकार के उपद्रव होते है । अतः जिस प्रकार अनावृष्टि के समय में वर्षा वर्षाने की आवश्यकता है उसी प्रकार अतिवृष्टि के समय में उसे वन्द करने के लिये भी यत्न होना चाहिये ।

ॐ ह्रीं वायुकुमार आगच्छ २ स्वाहा।
एतज्जाप विधानेन मेघस्तम्भो विधीयते।
मन्त्र तथैष्टिकायुग्मे लिखित्वा न्यस्यते भुवि ॥ १५३७ ॥

इस मन्त्र का जाप करने से अथवा २ ईंटों पर इस मंत्र को लिख के उन दोनों को परस्पर मिला के भूमिं में गाड़ कर मंत्र जप ने से वर्षते हुये मेघ स्तम्भित हो जावे।

"ॐ नमो हनवन्तवीर अञ्जनी पवन देवता की आण
जहू एसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फाट फूट
सत खण्ड जावसी" ॥

(१) अति वर्षाके समय इस मन्त्र का ७। ७ वार जप करके तीनवार ताली बजाकर आकाश की और मुख करके फूक मारने से अति वर्षा करते हुये मेघ भी तत्काल फाट जावे।

(२) इस मन्त्रको जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाडू से दूर करके उस झाडू को ऊभा खडा कर दे तो वर्षा वन्द होजावे।

"ॐ मेघान् स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा"।
इष्टकाद्वयमादाय श्मशानाङ्गार संपुटे।
स्थापयेद् वन मध्ये च मेघ स्थम्भन कारकम् ॥ १५३८ ॥

दो ईंटों के बीच में स्मशान के कोयले को रख के जंगल में गाड कर ऊपर लिखे मन्त्र का जाप करे तो अति वृष्टि वन्द हो जावे।

"ॐ ह्रीं खसमेकातिक्र हूं फट् स्वाहाः"।

प्रथम इस मंत्र को सिद्ध कर ले फिर अति वर्षा के समय इस मन्त्र का जाप करे तो वर्षा बंध हो जावे और जिस दिशा का स्मरण करे उसी दिशा की ओर वह वर्षा चली जावे।

अन्तिम प्रकरण।

सुभिक्षं वापि दुर्भिक्षं वृष्ट्याधिनं प्रजायते।
वृष्टि निमित्त निघ्नास्यात् निमित्तं च विलोकयेत् ॥ १५३९ ॥

संवत् का अच्छा बुरा होना वर्षा के आधीन है और न्यूनाधिक वर्षा होनी भौम अन्तरिक्ष और दिव्य के निमित्तों की अनुकूलता वा प्रतिकूलता के आधीन है। इसी लिये तीनों प्रकार के निमित्त देखने के विधान इस ग्रन्थ में विस्तार पूर्वक लिखे हैं।

भौमे देशप्रधानत्वं समीरं चान्तरिक्षके ।
दिव्ये सूर्यप्रधानत्वं प्रवलश्चोत्तरोत्तरम् ॥ १५४० ॥

यों तो प्रत्येक निमित्त अपने२ अनेक कारणों से बलवान् होते है, तथापि उन पृथक्२ निमित्तों में पृथक्२ मुख्य कारण अन्यों की अपेक्षा प्रधान होते हैं; अर्थात् भूमि के निमित्तों मे देशकी अन्तरिक्ष के निमित्तों में वायु की और दिव्य के निमित्तों में सूर्य की प्रधानता वा विशेषता है। इन में भी देशकी अपेक्षा वायु और वायु की अपेक्षा सूर्य विशेष बलवान् कारण है।

गर्गादि भङ्खान्त मुनि प्रणीताः श्री भारते ग्रन्थ चया महान्तः ॥
प्रावृड् विधिं चैव वदन्ति सम्यक् छात्र प्रबोधार्थ मुदेतथापि।१५४१।
वृष्टिप्रबोधे मय का मनोज्ञा नैमित्तिका भाविफलानु रूपाः ।
भौमान्त रिक्षौ खलुदिव्य मिश्रे चतुर्विधावै सरलाः प्रणीताः१५४२
प्राचीन सत्छास्त्र समुद्र मध्ये भ्रशोह्यमानां नितरां वटूनाम् ।
चतुःप्लवान्यत्र चतुर्षु दिक्षु पारं प्रवेष्टुं रचितानि तानि॥१५४३॥
यद्भेषजैर्वस्तुभिरत्र धीमान् यन्त्राद्यथार्कः प्रचिनोतिपात्रे ।
तद्वन्मयायं रचितः सुबोधो वृष्टिप्रबोधो द्रुत बोध सिद्ध्यै॥१५४४॥
वृष्टि प्रबोधाख्य मिदं च शास्त्रं पठेत् सदायः पुरुषोऽपि नियम् ।
सद्यः समाप्नोति समस्त सिद्धिं धान्यंधनं कीर्ति नृपेषु मान्यम् १५४५
मयोदितं तथ्यमितीह लोके ह्यासन्ति विद्वांस इदं सुमन्ये ।
ग्रन्थस्तदा चादरणीय एव वृष्टि प्रबोधो दयदा विधिज्ञैः ॥१५४६॥
वृष्टि प्रबोधे यदि हापि किंचिन्न्यूनाधिकं चर्म दृशा प्रभूतम्।
विज्ञाः प्रकुर्वन्तु समं ऋणी च विदा मिठालाल इहास्तितेषाम्१५४७

वृष्टि प्रबोध का परिशिष्ट भाग।

* भारत वर्ष के मुख्य २ नगरों के वर्षा का वार्षिक औसत।

गांव नाम.	इंच.	सेन्ट.
(१) बंगाल की खाड़ी के टापू.		
१ कालापानी	११७	६३
२ स्लीपर टापू		
(२) ब्रह्मा का निचला भाग.		
१ मरगुई	१६८	३७
२ टवोय	२०९	२८
३ मौलमीन	१८३	९२
४ रंगून	९६	७८
५ बेसीन	११२	—
६ डायमंड टापू	११६	०८
७ टौन्गो	७९	११
८ क्यूकप्यू		
९ एक्याब	१८९	२०
(३) ब्रह्मा का ऊपरीय भाग.		
१ थेयेटमो	३६	७२
२ मिन्बू	३१	८६
३ यमेथिन	३७	५६
४ मान्डाल्य	३२	३६
५ मोनीवा	२८	४०
६ लाशीयों	६१	२८
७ भामो	७३	३८
८ मिटकीना	७४	८४
(४) आसाम प्रान्त.		
१ डिबरुगढ	११४	९९
२ सिबसागर	९६	२१
३ तेजपुर	७१	६६
४ गौहाटी	६३	३९
५ धूबरी	९३	२८
६ सिलचर	१२४	८६
(५) पूर्व बंगाल प्रान्त.		
१ चिटगांव	९६	५२
२ बेरीसाल	७७	६०
३ नारायनगंज	६९	६०
४ मेमनसिंह	८७	५५
५ बोगरा	६७	१४
६ दिनाजपुर	७०	९९
७ जलपाई गुड़ी	१२३	२०
(६) बंगाल प्रान्त.		
१ सागर टापू	७२	२३
२ कलकत्ता	५९	५५
३ जैसोर	६४	०२
४ वर्द्वान	५७	०६
५ वरहामपुर	५५	१३
(७) उड़ीसा प्रान्त.		
१ वालासोर	६४	६८
२ फालसा किनारा	६५	६९
३ कट्टक	५९	७०
४ सम्बलपुर	६७	३९
(८) छोटानागपुर प्रान्त.		
१ चैवासा	५१	२९

* सरकारी 'डेली वेदर रिपोर्ट' के आधार।

अग्नयंगनन्द विधु सम्मति वैक्रमीये
मासे तपस्य उत शुक्ल दले नवम्याम् ।
जैष्ठे दिने प्रवर पालिपुरे तुमिष्ट
लालात्समाप्ति मगमन्मरु धन्वनीह ॥ १५४८ ॥

भारद्वाजकुलार विन्दतरणिर्माध्यन्दिनीयो द्विजो
नाना शास्त्रविचार मग्नहृदयो व्यासावटाङ्काङ्कितः ।
वास्तव्यो मरुमण्डले सुविदिते पालीपुरे धार्मिको
जात्यापौष्करणो महीधर सुतः श्रीमिष्टलालाभिधः॥१५४९

इति श्री मारवाड़ देशस्थ जोधपुर राज्यान्तरगत पाली नगर निवासी पुष्करणा ज्ञातीय सकल भुसुर वृन्द सम्मान्य भरद्वाज कुलकमल, माध्यन्दिनीय शखाध्यायी-शुक्ल यजुर्वेदी, व्यास पदवी समलङ्कृत श्रीमन्महीधर तनय नाना शास्त्र विचारणे सदा मग्न हृदय, ज्योतिर्विद वरिष्ठ 'प्राचीन ज्योतिः शास्त्र श्रमी, दैवज्ञ भूषण, ज्योतिष रत्न आदि पण्डित मीठालाल व्यास संगृहीत वृहदर्घमार्तंड' नाम्नो महतो ग्रंथादुद्घृत 'वृष्टि प्रबोध' उपनाम 'भारतका वायु शास्त्र वा 'हिन्दी वायु शास्त्र' स्वकृत आर्य्य भाषा विवर्ण व्याख्या सहितस्य द्वितीयोऽकः समाप्तः ॥

वृष्टि प्रबोध का परिशिष्ट भाग।

* भारत वर्ष के मुख्य २ नगरों के वर्षा का वार्षिक औसत।

गांव नाम.	इञ्च.	सेन्ट.
(१) बंगाल की खाड़ी के टापू.		
१ कालापानी	११७	६३
२ स्लीपर टापू		
(२) ब्रह्मा का निचला भाग.		
१ मरगुई	१६८	३७
२ टवोय	२०९	२८
३ मौलमीन	१८३	९२
४ रंगून	९६	७८
५ बेसीन	११२	—
६ डायमंड टापू	११६	०८
७ टौन्गो	७९	११
८ क्यूकप्यू		
९ एकयाव	१८९	२०
(३) ब्रह्मा का ऊपरीय भाग.		
१ थेयेटमो	३६	७२
२ मिनबू	३१	८६
३ यमेथिन	३७	५६
४ मान्डाल्य	३२	३६
५ मोनीवा	२८	४०
६ लाशीयो	६१	२८
७ भामो	७३	३८
८ मिटकीना	७४	८४
(४) आसाम प्रान्त.		
१ डिबरुगढ	११४	९९
२ सिवसागर	९६	२१
३ तेजपुर	७१	६६
४ गौहाटी	६३	३९
५ धूबरी	९३	२८
६ सिलचर	१२४	८६
(५) पूर्व बंगाल प्रान्त.		
१ चिटगांव	९६	५२
२ बेरीसाल	७७	६०
३ नारायनगंज	६९	६०
४ मेमनसिह	८७	५५
५ बोगरा	६७	१४
६ दिनाजपुर	७०	९९
७ जलपाई गुड़ी	१२३	२०
(६) बंगाल प्रान्त.		
१ सागर टापू	७२	२३
२ कलकत्ता	५९	५५
३ जैसोर	६४	०२
४ वर्द्वान	५७	०६
५ बरहामपुर	५५	१३
(७) उड़ीसा प्रान्त.		
१ बालासोर	६४	६८
२ फालसा किनारा	६५	६९
३ कट्टक	५९	७०
४ सम्बलपुर	६७	३९
(८) छोटानागपुर प्रान्त.		
१ चैबासा	५१	२९

* सरकारी 'डेली वेदर रिपोर्ट' के आधार।

गाव नाम.	इंच.	सेन्ट.
२ राची	५५	७९
३ हजारीबाग	५३	३९
(९) विहार प्रान्त.		
१ पुर्निया	६४	८८
२ दर्भंगा	५१	०७
३ पटना	४८	०४
४ गया	४७	००
(१०) युक्त प्रदेश का पूर्व प्रान्त.		
१ गोरखपुर	५२	०१
२ बनारस	४०	९९
३ प्रयागजी	४०	७३
४ कानपुर	३५	९४
५ लखनउ	३८	८९
६ वहराइच	४८	९१
(११) युक्त प्रदेश का पश्चिम प्रान्त.		
१ झांसी	३८	५१
२ आगरा	२८	४२
३ मैनपुरी	३१	७६
४ बरैली	४७	८६
५ मेरठ	३२	०७
६ रुड़की	४३	२२
७ दहरादून	८९	१९
(१२) पंजाब का ईशान प्रान्त.		
१ दिहली	२८	९
२ सिरसा	१४	४३
३ अम्बाला	३२	९६
४ लुधिपाना	२८	६७
५ लाहोर	२०	१०
६ स्यालकोट	३१	७५
७ रावलपिंडी	३३	९८

गांव नाम.	इंच.	सेन्ट.
(१३) पंजाब का नैऋत्य प्रान्त.		
१ खुसाव.	१४	१२
२ माउन्टगोमरी	१०	२५
३ मुलतान	७	३०
(१४) काशमीर देश,		
१ श्रीनगर	२४	५४
२ गुलमर्ग		
३ सोनमर्ग		
४ दरास	२१	७४
५ लेह	३	—
६ स्कारदू	७	४१
७ गिलगिट	४	८०
(१५) वायव्य प्रान्त.		
१ पेशावर	१३	०९
२ देरा इस्माइलखां	८	५३
(१६) बलूचिस्तान प्रान्त.		
१ केटा	१०	६८
२ चमन	६	२९
३ रोहट		
(१७) सिन्ध प्रान्त.		
१ जेकोबाबाद.	३	७८
२ हैदराबाद	६	९०
३ कराची	८	२६
(१८) राजपूताना पश्चिम प्रान्त.		
१ विकानेर	११	२९
२ जोधपुर	१३	१४
(१९) राजपूताना पूर्व प्रान्त.		
१ जैपुर	२६	०५
२ सांभर	२०	७४
३ अजमेर	२१	८०

गांव नाम.	इंच.	सेन्ट.
४ कोटा	२६	८३
५ उदयपुर	२१	३६
(२०) गुजरात प्रान्त.		
१ डीसा	२४	१२
२ भूज	१४	५२
३ द्वारका		
४ राजकोट	२८	१३
५ वेरावल	१८	२४
६ सुरत	४४	०३
७ अहमदावाद	३३	२४
(२१) मध्यभारत (मालवा) का पश्चिम प्रान्त.		
१ नीमच	३०	०८
२ इन्दोर	३३	६४
(२२) मध्य भारत—का पूर्व-प्रान्त.		
४ नौगांव	४४	९६
५ सतना	४५	८८
(२३) वड़ाड़.		
१ आकोला	३४	१६
२ अमरावती	३४	६३
(२४) मध्य प्रदेश पश्चिम.		
१ खंडवा	३१	३५
२ होशंगावाद	५२	०८
३ सागर	४८	५७
४ जवलपुर	५९	११
५ सिवनी	५५	२७
६ नागपुर	४९	४९
) मध्य प्रदेश पूर्व.		
१ पेन्दरा		
२ रायपुर	५०	६५

गांव नाम.	इंच.	सेन्ट.
३ चांदा	५५	७५
४ जगदालपुर		
(२६) कोकण प्रान्त.		
१ वंवई	७५	२१
२ रत्नागिरि	१०७	३५
३ गोआ	९८	४३
४ मारमूगोआ	९३	४३
५ कारवाड़	१२३	७८
(२७) वंवई का दखिण प्रान्त.		
१ मालेगांव	२४	०८
२ अहमदनगर	२२	४२
३ पुना	२७	८९
४ शोलापुर	३०	९८
५ विजापुर	२४	५८
६ वेलगांव	५०	१३
(२८) दक्षिण हैदरावाद का उत्तर प्रान्त.		
१ औरंगावाद	२७	८२
२ निजामावाद	४१	०७
(२९) द० हैदरावाद का दक्षिण प्रान्त.		
१ गुलवर्गा	३१	७६
२ रायचूर	३०	७४
३ हैदरावाद द०	३१	५६
४ हनूमान कुण्ड	३२	८६
(३०) मैसूर प्रान्त.		
१ चितलदूर्ग	२६	३३
२ वंगलोर	३५	०६
३ मैसूर	२०	९१
(३१) मालावार प्रान्त.		
१ मंगलोर	१२३	९४

गांव नाम.	इंच.	सेन्ट.
२ कालीकट	११५	११
३ कोचीन	११५	६३
४ त्रिवेन्द्रम	६२	७८
(३२) मद्रास का द. उ० प्रान्त.		
१ टिनेवली	२८	६३
२ पम्बन	३८	९७
३ मदूरा	३३	३०
४ निगापटम	५५	५६
५ त्रिचनापली	३२	५४
६ कोइमवटूर	२०	९०
७ सालेम	४०	५०
८ कुड्डालोर	५२	५८
९ मद्रास	५०	३९
(३३) मद्रास का दक्षिण प्रान्त		
१ कुडापा	३२	६९
२ बेलेरी	१९	७३
३ कुरनूल	२८	४०
(३४) मद्रास का उत्तरीय किनारा		
१ निल्लोर	३०	७३
२ मछलपिट्टम	४०	९१
३ कोकानाडा	३९	८४
४ विजगापट्टम	४३	५४
५ गोपालपुर	४७	५३

गांव नाम.	इंच.	सेन्ट.
(३५) पहाडी देश.		
१ चीरात	२४	४३
२ मूरी	५५	८५
३ शिमला	६३	५९
४ चकाता	७०	७१
५ मुकतेसर	४८	६७
६ दार्जिलिंग	१२४	३८
७ शिलोंग	७९	७२
८ *चेरापुर्जी	४३८	८५
९ मायम्यो	५९	००
१० पचमारी	७६	२१
११ आवू	६१	७३
१२ मरकेड़ा	१२५	९४
१२ ऊटकामंड	४६	६०
१३ कोडयाकनल	५९	८८
(३६) भारत के वाहरी प्रान्त.		
१ त्रिन्कोमाली	६२	३७
२ कोलम्वो	८९	५९
३ जस्क	४	४६
४ मस्कत	४	४३
५ बुसावर	१२	११
६ अदन	२	९७

---

* जगत्भर में सबसे अधिक वर्षा यही होती है।

एक प्रान्त की वर्षा से दूसरे प्रान्त की वर्षा का ज्ञान।

कई वर्षों के अनुभव से निश्चय हुआ है कि हमारे भारत वर्ष में कुछ प्राकृतिक नियम ऐसा है कि जिस से समान स्वभाव वाले अमुक दो प्रान्तों मे समान वर्षा हुआ करती है। यदि अमुक प्रान्त में वर्षा अधिक हो तो अधिक और कम हो तो कम होती है। जैसे-बराड़ तथा खानदेश में जैसी वर्षा हो वैसी ही मध्य प्रान्त के दक्षिण भाग में होती है। कौङ्कण और घाट प्रान्त की हैद्रावाद से समानता है। उडिसा और उत्तर प्रान्त से आसाम और पूर्व बंगाल। महसूर तथा बेलारी से कर्णाटक। युक्त प्रदेश से बिहार और दक्षिण के उत्तरीय भाग से हैदराबाद की समानता है।

एक प्रान्त की सुवृष्टि से दूसरे प्रान्त की वर्षा का ज्ञान।

प्रायः देखा गया है कि अमुक प्रान्त मे जिस वर्ष अच्छी वर्षा होती है उस वर्ष उस से भिन्न स्वभाग वाले प्रान्त में खंच जरुर रहती है आसाम से सिन्ध। पश्चिम बंगाल से हैद्राबाद। दक्षिण बंगाल से बराड़ और खानदेश ये उपरोक्त प्रान्त परस्पर भिन्न स्वभाव वाले है इन में यदि एक में अधिक वर्षा हो तो दूसरे में कम वर्षा होगी ऐसा कई बार देखा गया है। पाठक अनुभव करें।
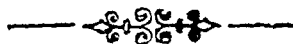
खेतियों की रक्षा का उपाय।
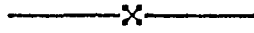
गन्धकं विषतैलं च भिलवातैलं समं समम् ।
धतूर बीज संयुक्तं सूक्ष्म चूर्णं तु कारयेत् ॥
सस्यवाहिर्वाहिर्क्षिप्तं मध्ये मध्ये च निक्षिपेत् ।
पलायन्ते मस्यातिस्का यथा युद्धेसु कातरा ॥
कीटीका टीडीकामुषा वराहमृग पक्षिणा ।
शलभा व्याघ्रजम्बूश्च पलायन्ते न संशय ॥
सस्यानां अन्नवृद्धिश्च न विघ्नं परिभूयते ।
यस्मैकस्मै न दातव्यं नान्यथासिद्धि रुच्यते ॥

गन्धक, सिंगी मोहोरे का तेल, भिलावे का तेल और धतूरे के बीज इन को समान भाग लेकर सूक्ष्म चूर्ण बना के फिर हरी खेतियों के चारों और बाहर तथा बीच बीच में थोड़ा२ चुरण बिखरदें तो खेतियों का नाश करनेवाले चिऊंटियें, टीडियें, चुहे, शूकर, मृग, शलभ, व्याघ्र, स्याल आदि सम्पूर्ण जन्तु और तोते आदि सर्व पक्षि खेतियों को छोड़कर दूर भाग जावें जिससे खेतियों की रक्षा हो जाने से उन में उत्पन्न होने वाले अन्न की बहुत वृद्धि ।

धान्य के नसुलने के उपाय।

मनुष्यों के जीवन के लिये अधिक धान्य संग्रह रखने की आवश्यकता महर्षियोंने बतलाई है। परन्तु धान्य का नाश करने वाले धमेडा आदि जन्तुओं का वंश बहुत बड़ता है अर्थात् धान्य में रहकर एक जन्तु एक समय में १५० इंडे देता है और वे इंडे ग्रीष्म ऋतु के अन्त की गर्मी और वर्षाकाल के आद्यकी उमच

धान्य को राख में रखेलकर भखार में डालने से नहीं सुलता है। ऐसेही राख में पारा मिलाकर फिर रखेलने से बिलकुल नहीं सुलता है। इसकी विधियों है धान्य मण २०) अंदाज हो तो राख सेर १० को थोड़ा पानीका छीटा देकर फिर पारा रुपया १०)भर मिलाके फिर वह राख धान्य में मिला दे अथवा धान्य बिछाता जावे उसके ऊपर पारेवाली राख थोडी२ डालता जावे ऐसा करने से फिर धान्य नहीं सुलेगा।

——×——

धान्य को राख में रखेलकर भखार में डालने से नहीं सुलता है। ऐसेही राख में पारा मिलाकर फिर रखेलने से विलकुल नहीं सुलता है। इसकी विधियों है धान्य मण २०) अंदाज हो तो राख सेर १० को थोड़ा पानीका छीटा देकर फिर पारा रुपया १०)भर मिलाके फिर वह राख धान्य में मिला दे अथवा धान्य विछाता जावे उसके ऊपर पारेवाली राख थोडी२ डालता जावे ऐसा करने से फिर धान्य नहीं सुलेगा।

——x——